# ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN PRAGATISHEEL CHETANA

(Thesis submitted to the University of Hyderabad for the award of a Ph.D. Degree in Hindi)

Research Scholar
**VIDYA VATHI (06HHPH01)**

**2015**

Department of Hindi
School of Humanities
University of Hyderabad
(PO) Central University, Gachibowli
Prof. C.R. Rao Road
(TELANGANA)
INDIA

# अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना

**(हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध)**

**शोधार्थी**

**विद्यावती (06HHPHO1)**

2015

**हिन्दी विभाग**

**मानविकी संकाय**

**हैदराबाद विश्वविद्यालय**

**(पी.ओ.) सेंट्रल युनिवर्सिटी, गच्चीबौली**

**हैदराबाद - 500046**

**(तेलंगाना)**

**भारत**

# D E C L A R A T I O N

I, VIDYA VATHI, hereby declare that this thesis entitled **"ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN PRAGATISHEEL CHETANA"** submitted by me under the supervision of **Prof. Noorjahan Begum** is a bonafide research work. Which is also free plagiarism. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

I hereby agree that my thesis can be deposited in Shodhganga/INFLIBNET.

Name :VIDYA VATHI

Date :

(Signature of the Student)
Regd. No. 06HHPH01

Countersigned

Signature of the Supervisor (s) :

# CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"ABHIMANYU ANAT KE UPANYASON MEIN PRAGATISHEEL CHETANA"**‘‘अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना’’submitted by **VIDYA VATHI** bearing Reg. No. 06HHPH01 in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in Hindi is a bonafide work carried out by her under my/our supervision and guidance which is plagiarism free thesis.

The thesis has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or Institution for the award of any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of the Supervisor

Head of the Department

Dean of the School

# अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना

## अनुक्रमणिका


**पृ.सं.**

**भूमिका** i-iii

**प्रथम अध्याय : अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ** **1-55**

1.0 जीवन वृत्त

1.1 परिस्थितियाँ और परिवेश

1.1.1 शिक्षा एवं संस्कार

1.2 संघर्ष

1.2.1 आर्थिक संघर्ष

1.2.2 भाषागत संदर्भ

1.3 साहित्य जीवन

1.3.1 साहित्य प्रेरणा

1.3.2 अनत की रचना प्रक्रिया

1.3.3 अभिव्यक्ति का संकट

1.4 कृतित्व

1.4.1 कहानी संग्रह

1.4.2 उपन्यास

1.4.3 नाटक

1.4.4 कविता संग्रह

1.4.5 अन्य साहित्यिक विधाएं

निष्कर्ष

**द्वितीय अध्याय : प्रगतिशीलता स्वरूप परिभाषा और तत्व** **56-84**

2.0 प्रगतिवाद की अवधारणा

2.1 प्रगतिशीलता का स्वरूप

2.1.1 परिभाषा

2.2 प्रगतिवाद और मार्क्सवाद

2.2.1 प्रगति की मार्क्सवादी धारणा

2.3 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

2.3.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

2.3.2 वर्ग संघर्ष

2.4 प्रगतिवाद के मूल तत्व

2.4.1 प्रगतिवाद का सैद्धांतिक पक्ष

2.4.2 प्रगतिवाद और प्रगतिशील

निष्कर्ष

**तृतीय अध्याय : अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व** **85-118**

3.1 पूँजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अनत का वैचारिक पक्ष

3.1.1 अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना

3.2 पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना

3.2.1 मानव मुक्ति का आह्वान

3.3 क्रांति की अभिव्यक्ति

3.3.1 सामाजिक यथार्थ का चित्रण

निष्कर्ष

**चतुर्थ अध्याय : अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ 119-196**

4.1 आर्थिक विघटन और समाज का स्वरूप

4.1.1 आर्थिक भेद

4.1.2 धर्मगत भेद

4.1.3 जातिगत भेद

4.1.4 प्रवासीगत भेद

4.2 साधारण जनमानस का महत्व

4.2.1 मजदूर किसानों की दुर्दशा

4.2.2 पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति

4.2.3 मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग

4.2.4 बेकारी की समस्या

4.3. भेदहीन समाज की कल्पना

4.3.1 जाति व धर्म का विरोध

4.3.2 शोषण की समस्या का रेखांकन

4.3.3 नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता

निष्कर्ष

**पाँचवाँ अध्याय : अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील मॉरिशस का समाज 197-282**

5.1 प्रगतिशीलता

5.1.2 शिक्षा का महत्व

5.1.3 हिन्दी भाषा का विकास

5.1.4 प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन

5.1.5 समन्वयवाद तथा हिन्दू मुस्लिम संबंध

5.2 स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट

5.2.1 सरकारी तंत्र और युवा असंतोष

5.2.2 राजनीति और साम्प्रदायिकता

5.2.3 राजनीति में स्त्री और उसका स्वरूप

5.3 मॉरिशसीय समाज के विविध रूप

5.3.1 मॉरिशस समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप

5.3.2 आधुनिक नर-नारी संबंध

5.3.3 पारिवारिक विघटन

5.3.4 संघर्षरत नारी

5.3.5 नशाखोरी का विरोध

निष्कर्ष

**उपसंहार** **283-286**

**संदर्भ ग्रंथ सूची** **287-291**

I. आधार ग्रंथ सूची

II. सहायक ग्रंथ सूची

III. पत्र-पत्रिकाएँ

# प्राक्कथन

प्रगति एक ऐसी प्राकृतिक गति है जिसका परिवर्तन संसार को गतिमान रखता है। परिवर्तन की इसी समझ एवं समाज की नवीन समस्याओं को दृष्टिगत रखना साहित्य का उद्देश्य होता है। आधुनिक युग के मानव की बुद्धिसंगत विचारधारा साहित्य को कल्पना लोक के स्वप्निल विचरण से मुक्त कर मानव को यथार्थ के ठोस धरातल पर लाती है। पूर्ववर्ती साहित्यिक अभिरुचि से भिन्न विशिष्टता प्रस्तुत करना प्रगतिशील साहित्य की विशेषता रही है जो अपने साहित्य के सामर्थ्य का परिचय देता है। इसी दृष्टि से प्रगतिशील साहित्य ने नये-नये कृतिकारों को अपनी परिधि में समेटा है। हिन्दी साहित्य की हर विधा में एक से एक नई एवं विशिष्ट भाव वाली कृति इस साहित्य ने हमें दी है। यदि साहित्य के सृजन को हम देखें तो साहित्य सृजन की भाव-भूमि और उसके सृजनकर्ता की मानसिक चेतना के बंधनों से देश के बंधनों से मुक्ति पाती हुई दिखाई देती है।

यह सर्वविदित है कि अभिमन्यु अनत केवल मॉरिशस या भारत के ही नहीं संपूर्ण जनमानस के यशस्वी साहित्यकार हैं। अनत की अनेक रचनाएँ हिन्दी के विविध विधाओं में प्रकाशित होकर अपनी अमिट छाप पाठकों के मन, मस्तिष्क पर छोड़ती है। इस विशेषता को लिए हुए इनके कथा साहित्य में उपन्यास को लेकर उसकी प्रगतिशीलता पर कार्य करने के लिए मुझे मेरी निर्देशिका प्रो. नूरजहाँ बेगम जी ने प्रेरित किया। साधारण जन मानस को महत्व, अन्याय, अत्याचार शोषण का विरोध परिवर्तन की कामना आदि प्रगतिशील गुण अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में विशष रूप से देखे गये। इस बात को लेकर यह शोधकार्य किया गया है। इसके प्रथम अध्याय - ''अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ'' में अभिमन्यु अनत के जीवन वृत्त को दिखाते हुए उनकी परिस्थितियाँ और परिवेश, शिक्षा एवं संस्कार से उनके जीवन में विशिष्टता को बतलाया है। उन्होंने आर्थिक रूप से विपन्नता को झेलते हुए किस प्रकार भाषा के संदर्भ में साहित्य जीवन में साहित्य के प्रति प्रेरणा बढ़ी है इस पर प्रकाश डालते हुए अनत की रचना प्रक्रिया पर चर्चा की है। किस प्रकार अभिमन्यु अनत को अभिव्यक्ति का

संकट झेलना पड़ा इस पर भी चर्चा की गयी है। अभिमन्यु अनत के कृतित्व, कहानी संग्रह, उपन्यास, नाटक, कविता संग्रह तथा अन्य साहित्यिक विधाओं का भी उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय - ''प्रगतिशीलता, स्वरूप परिभाषा और तत्व'' में प्रगतिशीलता के स्वरूप पर चर्चा की गयी है। प्रगतिवाद और मार्क्सवाद, प्रगति की मार्क्सवादी धारणा, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष, प्रगतिवाद के मूल तत्व, प्रगतिवाद का सैद्धांतिक पक्ष, प्रगतिवाद और प्रगतिशील आदि को लेकर चर्चा की गयी है।

तृतीय अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व'' में अनत के विचारों को अभिव्यक्त किया गया है जिसमें पूंजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अनत का वैचारिक पक्ष, अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना, पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना, मानव मुक्ति का आह्वान, क्रांति की अभिव्यक्ति, सामाजिक यथार्थ का चित्रण पर चर्चा की गयी है।

चतुर्थ अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ'' के अंतर्गत आर्थिक विघटन और समाज के स्वरूप को बतलाते हुए आर्थिक भेद, धर्मगत भेद, जातिगत भेद, प्रवासीगत भेद पर चर्चा की गयी है। साधारण जनमानस का महत्व, मजदूर किसानों की दुर्दशा, पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग, बेकारी की समस्या भेदहीन समाज की कल्पना, जाति व धर्म का विरोध, शोषण की समस्या का रेखांकन, नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता को बतलाते हुए प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशीलता व मॉरिशस के समाज का विविध रूप'' में प्रगतिशीलता, शिक्षा का महत्व, हिन्दी भाषा का विकास, प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन, हिन्दू-मुस्लिम समन्वय, स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट, सरकारी तंत्र और युवा असंतोष, राजनीति और साम्प्रदायिकता, राजनीति में स्त्री और उसके स्वरूप को बतलाते हुए विश्लेषण किया गया है। मॉरिशस के समाज के विविध रूप के अंतर्गत मॉरिशस के समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप, आधुनिक नर-नारी संबंध, पारिवारिक

विघटन, संघर्षरत नारी व नशाखोरी का विरोध का अध्ययन किया गया है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में अभिव्यक्त प्रगतिशील चेतना  और मॉरिशसीय समाज में प्रगति के साथ-साथ आधुनिकता, मॉरिशस के समाज पर उसका प्रभाव, आधुनिकता का विकृत रूप आदि को लेकर अभिमन्यु के उपन्यासों में इस चेतना को देखा गया है।

इस शोध कार्य के पूर्ण होने में मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुतों की सहायता मिली है। सर्वप्रथम मैं अपनी श्रद्धेय गुरु, पथ प्रदर्शक, शोध निर्देशिक तभा भूतपूर्व विभागाध्यक्षा प्रो. नूरजहाँ बेगम जी को तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके निर्देशन में यह शोध प्रबंध लिखा गया है। ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना'' विषय चयन से लेकर समापन तक वे महत्वपूर्ण  सुझाव एवं निर्देशन द्वारा मेरी सहायक रही हैं। उनसे मुझे जो कृपा, स्नेह एवं आत्मीयता मिली है, उसके लिए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ। ऐसी गुरु को आभार व्यक्त कर मैं ऋण मुक्त नहीं होना चाहती।

मैं हैदराबाद विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के सभी गुरुजनों की आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे प्रोत्साहन दिया। मेरे जीवन में महत्व व्यक्ति के रूप में मेरी माँ, मेरे पति एवं मेरे दो अनमोल रत्न होमाग्नि और लोहित्या का जो योगदान रहा है अविस्मरणीय है। इन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अलावा इस शोध को पूरा करने में मेरी मित्र पद्मा का विशेष सहयोग रहा है। वह स्वयं इतनी व्यस्त होते हुए भी मेरे साथ इस शोध कार्य के लिए कुछ अड़चनों में साथ देने के लिए हमेशा तैयार रही है जिसकी मैं बहुत ही आभारी हूँ। मित्रों में दिनेश जिसने मुझे शोध सामग्री उपलब्ध कराने में सहायता दी। खाण्डारे चन्दु भी हमेशा मेरे सहायक रहे हैं, इनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ। संतोष को भी इस शोध कार्य को सुगठित रूप देने के लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ। आशा और पूर्ण विश्वास के साथ अपने इस प्रयास को सुधीजनों के सम्मुख प्रस्तुत।

**विद्यावती**

# अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना

**(हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध सार)**

यह सर्वविदित है कि अभिमन्यु अनत केवल मॉरिशस या भारत के ही नहीं संपूर्ण जनमानस के यशस्वी साहित्यकार हैं। अनत की अनेक रचनाएँ हिन्दी की विविध विधाओं में प्रकाशित होकर अपनी अमिट छाप पाठकों के मन मस्तिष्क पर छोड़ती हैं। ऐसी ही यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति के महाकाव्य के रूप में अनत के उपन्यास साहित्य संसार में उपस्थित हैं, जो मॉरिशस के गिरमिटिया मजदूरों के इतिहास उनके संघर्ष को अभिव्यक्त करते हैं।

अभिमन्यु अनत की रचनाओं में शोषण, अत्याचार और दसात का यथार्थ चित्रण, भेद-भाव, अमानवीयता एवं अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति के प्रति विद्रोही स्वर है। इनकी रचनाओं में मानव मुक्ति की छटपटाहट, मॉरिशस की राजनीति, समाज, धर्म, संस्कृति को लेकर संघर्ष और उसकी स्थापना की यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति है। मॉरिशसीय समाज में व्याप्त संघर्ष, वर्ग भेद, आंदोलन, विद्रोह यातनाएँ, आधुनिक समाज का बदला परिवेश आदि जीवन सत्यों की अभिव्यक्ति को लेते हुए इनके उपन्यासों में व्याप्त प्रगतिशील चेतना को प्रस्तुत किया गया है। इनके जीवन संघर्ष तथा इनकी प्रगतिशील विचारधारा व आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक भेदों में बँटे समाज और उनके संघर्ष तथा स्वतंत्रता के उपरांत मॉरिशस का आधुनिक जीवन तथा विकृत संस्कृति, सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त कर उपन्यासों में प्रगतिशीलता को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय - ''अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ'' में अभिमन्यु अनत के जीवन वृत्त को दिखाते हुए उनकी परिस्थितियाँ और परिवेश, शिक्षा एवं संस्कार से उनके जीवन में विशिष्टता को दर्शाया गया है। उन्होंने आर्थिक रूप से विपन्नता को झेलते हुए किस प्रकार भाषा के संदर्भ में साहित्यिक जीवन में साहित्य के प्रति प्रेरणा बढ़ी है इस पर प्रकाश डालते हुए अनत की रचना प्रक्रिया पर चर्चा की गई है। किस प्रकार अभिमन्यु अनत को अभिव्यक्ति का संकट झेलना पड़ा इस पर भी चर्चा की गयी है। अभिमन्यु अनत के कृतित्व, कहानी संग्रह,

उपन्यास, नाटक, कविता संग्रह तथा अन्य साहित्यिक विधाओं का भी उल्लेख किया गया है। अनत जी के विस्तृत रचना संसार को यदि हम देखते हैं तो मॉरिशस के हिन्दी साहित्य रूपी वृक्ष के बीजारोपण से लेकर उसके एक विशालकाय वृक्ष में परिवर्तित होने में अभिमन्यु अनत का विशेष योगदान रहा है। अनत ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, काव्य संग्रह, संस्मरण, जीवनी आदि विविध विधाओं में लेखन कार्य किया है। हिन्दी साहित्य की हर विधा में इनका विशेष योगदान रहा है।

पढ़ने लिखने तथा साहित्य के प्रति लगाव जैसे गुण इन्हें माता-पिता से विरासत में मिले हैं। अनत के जीवन के व्यक्तिक अनुभव और जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालने पर इनकी सवाल करने की प्रवृत्ति, इनके बाल्य काल से ही इनमें छिपे लेखक को प्रेरित करती रही है। जिस परिवेश में वे पले-बढ़े उसमें अनत का अपनी संस्कृति अपनी भाषा के प्रति विशेष लगाव रहा। यही लगाव इन्हें साहित्य की ओर आकर्षित करता रहा जिसके कारण वह 17 वर्ष की आयु से ही साहित्य से जुड़े तथा नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता से लेकर लगभग साहित्य की सभी विधाओं में अपनी सिद्धहस्तता का परिचय दिया। इनकी अधिकतर रचनाएं आक्रोश तथा विरोध के स्वर से भरी होती है। ये अपनी कलम के माध्यम से अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। जनलोक की आवाज बनते हैं। ऐतिहासिक क्रूर शोषक वर्ग के नग्न यथार्थ का चित्रण बेबाक होकर किया है। अपने निजी जीवन में संघर्षरत रहते हुए इन्होंने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक त्रासदी का निकटता से अनुभव किया है। तभी तो इनकी रचनाओं में शोषण, अत्याचार और दासता का यथार्थ चित्रण है। मजदूरों के ये हिमायती हैं। किसान मजदूरों के आंदोलन उनकी दयनीय स्थिति के चित्रण की भरमार इनके साहित्य में है। इनकी रचनाएँ आधुनिक बोध लिए हुए हैं जो समाज में व्याप्त राजनैतिक, सामाजिक स्थितियों को स्पष्ट करती हैं। शायद इसी कारण से ही कुछ विद्वान इन्हें मॉरिशस का प्रेमचंद मानते हैं। क्योंकि ये जनसाधारण लोक से जुड़ने वाले रचनाकार हैं। इन्होंने न केवल अपनी लेखनी को समृद्ध किया अपितु मॉरिशस

के लेखक वर्ग को भी प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं अभिमन्यु अनत ने मॉरिशस के लेखकों को स्थापित किया। भारतेंदु जी की तरह नये लेखकों को प्रोत्साहित किया।

हिन्दी क्षेत्र में मॉरीशस की पहचान अभिमन्यु अनत की साहित्य विपुलता से ही हुई है। अनत के कृतित्व का अध्ययन करके हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे एक ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं जिन्होंने मॉरिशस के हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदान किया है। इनकी अधिकतर रचनाएं अन्याय तथा मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों की पीड़ा का स्वर बनी हैं। शोषण, अत्याचार का विरोध करने वाली नई चेतना जागृत कर प्रेरणादायक साहित्य समाज को देते हैं। इनकी रचनाएं बेहतर समाज और देश की प्रगति की कामना करने वाली रचनाएं हैं।

द्वितीय अध्याय - ''प्रगतिशीलता, स्वरूप परिभाषा और तत्व'' में प्रगतिशीलता के स्वरूप पर चर्चा की गयी है। प्रगतिवाद और मार्क्सवाद, प्रगति की मार्क्सवादी धारणा, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष, प्रगतिवाद के मूल तत्व, प्रगतिवाद का सैद्धांतिक पक्ष, प्रगतिवाद और प्रगतिशील आदि को लेकर चर्चा की गयी है।

इस अध्याय में प्रगतिवाद की अवधारणा और स्वरूप बतलाते हुए प्रगतिवाद से तात्पर्य, किसी विशिष्ट विचारधारा को ग्रहण करना। यह साहित्य के संदर्भ में राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित मार्क्सवादी दृष्टिकोण है जिससे प्रभावित होकर भारत देश में भी भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना और इन सात अधिवेशनों द्वारा साहित्य में एक नई यथार्थवादी चेतना की स्थापना की गयी। प्रगतिवाद का महत्व यह है कि उसने हिन्दी साहित्य को एक नई जीवंत चेतना प्रदान की। प्रगतिवाद के स्वरूप में जगत की सभी वस्तुओं में विरोधी तत्व का संघर्ष होता है। मार्क्स का यह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और आर्थिक चिंतन प्रगतिवादी साहित्य में समानता की भावना लिए हुए है। प्रगतिवादी साहित्य सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति तथा क्रांति व आंदोलन को महत्व देता है। मार्क्सवाद के प्रमुख तत्वों को द्वंद्वात्मक

भौतिकवाद, परिमाणात्मक और गुणात्मक परिवर्तन विरोधी वृत्तियों का संघर्ष और वर्ग-संघर्ष, ऐतिहासिक भौतिकवाद आदि प्रगतिवादी तत्व लिए हैं, इन सब में मार्क्सवाद और प्रगतिवाद का सार स्पष्ट होता है। प्रगतिवाद, मार्क्सवाद से उद्भूत और विकसित अपनी मौलिक दिशाएँ निश्चित करता हुआ एक पृथक विचार दर्शन बन गया। प्रगतिवाद जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, यह साहित्य की कर्मशीलता का द्योतक है, क्रांति के माध्यम से साम्यवाद लाना चाहता है। प्रगतिवाद के सैद्धांतिक पक्ष में प्रगतिवाद का मुख्य ध्येय सामान्य से समानता तथा मानव मात्र को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध कराना है। भविष्य के प्रति जागरूक रहकर प्रगतिवाद जीवन में, समाज में संघर्ष का चेतना का शाश्वत एवं सर्वकालिक महत्व प्रतिष्ठत करना चाहता है।

तृतीय अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व'' में अनत के विचारों को अभिव्यक्त किया गया है जिसमें पूंजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अनत का वैचारिक पक्ष, अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना, पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना, मानव मुक्ति का आह्वान, क्रांति की अभिव्यक्ति, सामाजिक यथार्थ का चित्रण पर चर्चा की गयी है।

इस अध्याय में अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील विचारधारा को दर्शाने का प्रयत्न किया है, जो कि उनके विचारों में तथा रचनाओं में प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है। अनत की विचारधारा काफी हद तक प्रगतिशील है। इस बात को तथ्यात्मक रूप से स्पष्ट करने के लिए अभिमन्यु अनत के कहे वक्तव्यों को लेते हुए उनकी प्रगतिशीलता तथा साहित्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील तत्वों को प्रस्तुत किया है जो अनत की प्रगतिशील विचारधारा को प्रगाढ़ व मजबूत बनाते हैं। अभिमन्यु अनत के साहित्य की लगभग सभी विधाओं में प्रगतिशील विचारधारा का परिचय मिलता है। अत: उनकी प्रगतिशील विचारधाराओं को अंकित करने के लिए उनके साहित्य से, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण सभी से कुछ प्रमुख प्रगतिशील विचारधारा प्रस्तुत करने वाले

अंशों से उद्धरण देते हुए समाज के प्रति पीड़ितों, शोषितों के प्रति उनकी संवेदना, उनमें क्रांति व इंकलाब की भावना जागृत करना, संघर्ष के लिए प्रेरित करना, नारी की व्यथा का यथार्थ आदि अनेक प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख तत्व इनके विचार तथा साहित्य से प्राप्त होते हैं। ये पीड़ितों, शोषितों के प्रति संवेदना रखते हैं। इनकी रचनाओं में मानव मुक्ति की छटपटाहट देखी गयी है।

आंदोलन, संगठन द्वारा क्रांति लाने की प्रेरणा है। अनत जी के साहित्य में मजदूरों के संगठन के शाषण की, अत्याचार के विरोध में एकजुट होकर क्रांति की अभिव्यक्ति है। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, जीवन के प्रत्येक मूल्यों में यथार्थ की अभिव्यक्ति इनके साहित्य में हैं। जो इनकी प्रगतिशील विचारधारा प्रस्तुत करती है। अनत कहते हैं कि वे अपनी रचनाओं द्वारा अन्याय का विरोध, शोषणकर्ताओं का, पूंजीवादियों का विरोध करते रहेंगे चाहे उसे किसी भी वाद से जोड़ा जाए। यहाँ प्रेमचंद के वक्तव्य की सार्थकता नजर आती है कि रचनाकार स्वभावत: प्रगतिशील हैं। इनकी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रवृत्ति को लेकर अन्य विद्वानों का भी मानना है कि क्रांति की अभिव्यक्ति, मानव मुक्ति का आह्वान तथा पीड़ितों, शोषितों के प्रति संवेदना आदि अनत के रचना साहित्य के प्रमुख गुण हैं जो कि प्रगतिशील विचारधारा लिए हुए हैं। जिसे स्पष्ट करने हेतु अन्य विद्वानों के मत को भी रखा है। जिस पर अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील विचारधारा का परिचय मिलता है जिस पर आने वाले अध्यायों में विस्तार से चर्चा की जाएगी। अनत की यह विचारधारा जो अन्याय और शोषण का विरोध करती है। वह एक प्रगतिशील लेखक के सिद्धांतों को अपने आप में लिए हुए हैं जिससे इनका साहित्य प्रमुखत: प्रगतिशील साहित्य के रूप में सामने आता है।

चतुर्थ अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ'' के अंतर्गत आर्थिक विघटन और समाज के स्वरूप को बतलाते हुए आर्थिक भेद, धर्मगत भेद, जातिगत भेद, प्रवासीगत भेद पर चर्चा की गयी है। साधारण जनमानस का महत्व, मजदूर किसानों की दुर्दशा,

पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग, बेकारी की समस्या भेदहीन समाज की कल्पना, जाति व धर्म का विरोध, शोषण की समस्या का रेखांकन, नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता को बतलाते हुए प्रकाश डाला गया है।

अभिमन्यु अनत के कथा साहित्य 'उपन्यासों' में मॉरिशस के जीवन, उनके समाज, संघर्ष, परिवर्तन, आंदोलन, अपने अस्तित्व को स्थापित कर उसकी रक्षा करने का संघर्ष अपने संपूर्ण यथार्थ के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। इनके प्रथम उपन्यास 'और नदी बहती रही' से अब तक के उपन्यास आसमान अपना आंगन, मेरा निर्णय आदि तक इन्होंने मॉरिशस समाज में, प्रवासी भारतीयों की जीवन गाथा का बड़ा ही सटीक चित्रण किया है। मॉरिशस वर्गों में बँटा है। गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस पहुँचे भारतीय दास प्रथा और अत्याचार शोषण से संघर्ष करते हुए पूंजीपतियों के साथ आर्थिक, धर्मगत, जातिगत भेद जो इनके प्रवासी होने के कारण इनसे किया जाता था उसके विरोध में जो संघर्ष किया है, उसकी अभिव्यक्ति इनके उपन्यासों में दर्ज हुई, उसका चित्रण अनत के उपन्यासों से प्राप्त उद्धरणों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अनत के अधिकतर उपन्यासों में साधारण जनमानस को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जिसके अंतर्गत मजदूरों, किसानों की दुर्दशा उनके द्वारा झेले गये संकट को अभिव्यक्त किया है। 'हम प्रवासी', 'आंदोलन', 'पर पगडंडी नहीं मरती' आदि कई उपन्यासों में इस प्रथा का चित्रण है तो 'और पसीना बहता रहा', 'लाल पसीना' एवं 'गांधी जी बोले थे' आदि में आंदोलन, जागरूकता, विरोध शिक्षा का महत्व संगठन आदि द्वारा प्रगति की ओर अग्रसर प्रवासियों के संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। 'कुहासे के दायरे', 'एक उम्मीद और', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'अचित्रता' आदि उपन्यासों में मध्यवर्गीय विडम्बना व उसमें अपने आपको स्थापित करने के संघर्ष में जूझता शिक्षित वर्ग जो इस देश को अपनी मेहनत, खून, पसीने को सींचकर आगे बढ़ना चाहता है, किन्तु नस्लभेद, रंगभेद के चलते प्रवासी भारतीयों को किस प्रकार भेदभाव झेलना पड़ता है  आदि का चित्रण है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इस देश के निर्माण

में किये गये अपने संघर्ष अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते, आधुनिक विचारधारा बदलता सामाजिक परिवेश इन सबके साथ शिक्षित वर्ग का बेरोजगारी के कारण खुद को स्थापित करने के लिए किस प्रकार भेदभाव और शोषण का सामना करना पड़ा इसके यथार्थ को अनत जी ने अपने उपन्यासों में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए इनके संघर्ष से समस्त संसार को अपने साहित्य द्वारा परिचित करवाया है। मेहनती भारतीय मजदूरों की गिरमिटिया मजदूर, दास से लेकर मॉरिशस को बनाने, उसे सँवारने वाले भारतीयों की गाथा को अभिव्यक्त किया है। जो कार्य इतिहासकारों द्वारा अधूरा रह गया था उसे अपनी रचना शैली द्वारा भाव व कल्पना के साहित्य यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है जिसमें प्रवासियों की पीढ़ियों के संघर्ष की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति इस अध्याय में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय - ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशीलता व मॉरिशस के समाज का विविध रूप'' में प्रगतिशीलता, शिक्षा का महत्व, हिन्दी भाषा का विकास, प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन, हिन्दू-मुस्लिम समन्वय, स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट, सरकारी तंत्र और युवा असंतोष, राजनीति और साम्प्रदायिकता, राजनीति में स्त्री और उसके स्वरूप को बतलाते हुए विश्लेषण किया गया है। मॉरिशस के समाज के विविध रूप के अंतर्गत मॉरिशस के समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप, आधुनिक नर-नारी संबंध, पारिवारिक विघटन, संघर्षरत नारी व नशाखोरी का विरोध का अध्ययन किया गया है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में अभिव्यक्त प्रगतिशील चेतना और मॉरिशसीय समाज में प्रगति के साथ-साथ आधुनिकता, मॉरिशस के समाज पर उसका प्रभाव, आधुनिकता का विकृत रूप आदि को लेकर अभिमन्यु के उपन्यासों में इस चेतना को देखा गया है।

इस अध्याय में प्रगतिशील समाज के विभिन्न प्रगतिशील सरोकारों को अभिव्यक्त किया गया है। किसी भी विकास की कामना के पीछे बेहतर जीवन की कामना होती है। वैसे ही अभिमन्यु अनत के उपन्यासों के अंतर्गत प्रगतिशील मॉरिशसीय समाज के विविध रूपों को देखा

गया है। जिसमें सर्वप्रथम प्रगतिशीलता को बतलाते हुए उस समाज की प्रगतिशीलता, जिसमें शिक्षा को कितना महत्व दिया है। समाज में व्याप्त विभिन्न अर्थ नीतियों को लेकर परिवर्तन और उसके लिए चलाए आंदोलन उनकी सफलता का हिन्दी भाषा का विकास के लिए किये गये संघर्षों को दिखलाया गया है। प्रवासी भारतीयों को अपनी स्थिति को सुधारने के लिए परिवर्तन लाने की कामना हेतु किये गये प्रयत्नों को दिखलाते हुए अनत के उपन्यासों में व्याप्त प्रगतिशीलता को दर्शाया है जिसमें समन्वयवाद तथा मॉरिशसियों हिन्दू मुस्लिम संबंधों में आपसी प्रेम तथा समानता का भाईचारे की अभिव्यक्ति को उपन्यासों के उद्धरणों से दर्शाया है। स्वतंत्रता के बाद मॉरिशस में राजनीति को लेकर लोगों के मन में उठी उदासीनता और राजनैतिक हथकंडों उसके कुचक्रों से समाज में व्याप्त उदासीनता को बतलाते हुए सरकारी गतिविधि और समाज में उसके प्रति निराश नेताओं के प्रति युवा वर्ग में विरोध की भावना को प्रस्तुत किया गया है। जिसके कारण राजनीति में सांप्रदायिकता जो फुटकल रूप में दिखाई देती है उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है और उसके विविध रूप, उसके प्रभाव आधुनिक जीवन में नर नारी संबंध, पारिवारिक विघटन की स्थिति नारी का संघर्ष आदि सामने आता है।

# अनुक्रमणिका


**भूमिका**

**प्रथम अध्याय : अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ**

1.0 जीवन वृत्त

1.1 परिस्थितियाँ और परिवेश

1.1.1 शिक्षा एवं संस्कार

1.2 संघर्ष

1.2.1 आर्थिक संघर्ष

1.2.2 भाषागत संदर्भ

1.3 साहित्य जीवन

1.3.1 साहित्य प्रेरणा

1.3.2 अनत की रचना प्रक्रिया

1.3.3 अभिव्यक्ति का संकट

1.4 कृतित्व

1.4.1 कहानी संग्रह

1.4.2 उपन्यास

1.4.3 नाटक

1.4.4 कविता संग्रह

1.4.5 अन्य साहित्यिक विधाएं

निष्कर्ष

**द्वितीय अध्याय : प्रगतिशीलता स्वरूप परिभाषा और तत्व**

2.0 प्रगतिवाद की अवधारणा

2.1 प्रगतिशीलता का स्वरूप

2.1.1 परिभाषा

2.2 प्रगतिवाद और मार्क्सवाद

2.2.1 प्रगति की मार्क्सवादी धारणा

2.3 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

2.3.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

2.3.2 वर्ग संघर्ष

2.4 प्रगतिवाद के मूल तत्व

2.4.1 प्रगतिवाद का सैद्धांतिक पक्ष

2.4.2 प्रगतिवाद और प्रगतिशील

निष्कर्ष

**तृतीय अध्याय : अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व**

3.1 पूँजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अनत का वैचारिक पक्ष

3.1.1 अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना

3.2 पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना

3.2.1 मानव मुक्ति का आह्वान

3.3 क्रांति की अभिव्यक्ति

3.3.1 सामाजिक यथार्थ का चित्रण

निष्कर्ष

**चतुर्थ अध्याय : अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ**

4.1 आर्थिक विघटन और समाज का स्वरूप

4.1.1 आर्थिक भेद

4.1.2 धर्मगत भेद

4.1.3 जातिगत भेद

4.1.4 प्रवासीगत भेद

4.2 साधारण जनमानस का महत्व

4.2.1 मजदूर किसानों की दुर्दशा

4.2.2 पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति

4.2.3 मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग

4.2.4 बेकारी की समस्या

4.3. भेदहीन समाज की कल्पना

4.3.1 जाति व धर्म का विरोध

4.3.2 शोषण की समस्या का रेखांकन

4.3.3 नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता

निष्कर्ष

**पाँचवाँ अध्याय : अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील मॉरिशस का समाज**

5.1 प्रगतिशीलता

5.1.2 शिक्षा का महत्व

5.1.3 हिन्दी भाषा का विकास

5.1.4 प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन

5.1.5 समन्वयवाद तथा हिन्दू मुस्लिम संबंध

5.2 स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट

5.2.1 सरकारी तंत्र और युवा असंतोष

5.2.2 राजनीति और साम्प्रदायिकता

5.2.3 राजनीति में स्त्री और उसका स्वरूप

5.3 मॉरिशसीय समाज के विविध रूप

5.3.1 मॉरिशस समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप

5.3.2 आधुनिक नर-नारी संबंध

5.3.3 पारिवारिक विघटन

5.3.4 संघर्षरत नारी

5.3.5 नशाखोरी का विरोध

निष्कर्ष

**उपसंहार**

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

I. आधार ग्रंथ सूची

II. सहायक ग्रंथ सूची

III. पत्र पत्रिकाएँ-

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## I. आधार ग्रंथ

| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| 1. | अचित्रित | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990 |
| 2. | अस्ति-अस्तु | अभिमन्यु अनत | प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 3. | आंदोलन | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 1971 |
| 4. | आसमान अपना आँगन | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000 |
| 5. | और पसीना बहता रहा | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993 |
| 6. | एक बीघा प्यार | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1972, चौथी आवृत्ति 2000 |
| 7. | एक उम्मीद और | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 8. | कुहासे का दायरा | अभिमन्यु अनत | राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978 |
| 9. | क्यों न फिर से | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 |
| 10. | गांधी जी बोले थे | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 |
| 11. | चलती रहो अनुपमा | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998 |
| 12. | चुन चुन चुनाव | अभिमन्यु अनत | अक्षरा प्रकाशन, नई दिल्ली, पुनर्मुद्रित 2001 |
| 13. | चौथा प्राणी | अभिमन्यु अनत | ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977 |
| 14. | जम गया सूरज | अभिमन्यु अनत | सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, संस्करण 1973 |
| 15. | पर पगडंडी नहीं मरती | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 16. | मेरा निर्णय | अभिमन्यु अनत | भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 |
| 17. | मार्क ट्वेन का स्वर्ग (दो उपन्यास इस पुस्तक में है) फैसला आपका | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983 |
| 18. | तीसरे किनारे पर | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 |
| 19. | लाल पसीना | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977 |
| 20. | लहरों की बेटी | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995 |
| 21. | शब्द भंग | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989 |
| 22. | हम प्रवासी | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 |

**II. सहायक ग्रंथ**

| **क्र.सं.** | **पुस्तक का नाम** | **लेखक** | **प्रकाशन** |
|---|---|---|---|
| 1. | अब कल आएगा यमराज (कहानी संग्रह) | अभिमन्यु अनत | ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 2. | अभिमन्यु अनत का उपन्यास जगत | जनार्दन कालीचरण | हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 |
| 3. | आधुनिक हिंदी आलोचना संदर्भ एवं दृष्टि | डॉ. रामचन्द्र तिवारी | विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संसकरण 1997 |
| 4. | आत्मविज्ञापन | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 |
| 5. | आलोचनात्मक लेखों का संग्रह | डॉ. देवराज | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 |
| 6. | आलोचना के प्रगतिशील आयाम | डॉ. शिवकुमार मिश्र | पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण 1987 |
| 7. | अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएँ | संपादक कमल किशोर गोयनका | नटराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 8. | गुलमोहर खौल उठा | अभिमन्यु अनत | ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994 |
| 9. | प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास | कर्ण सिंह चौहान | प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998 |
| 10. | प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन | हंसराज रहबर | विभूति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987 |
| 11. | प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य | रेखा अवस्थी | मेकमिलन इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978 |
| 12. | प्रगतिशील आलोचना | रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव | साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1962 |
| 13. | प्रगतिशील आलोचना की परंपरा और डॉ. रामविलास शर्मा | राजीव सिंह | विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संसकरण 2000 |
| 14. | प्रगतिशील कविता में सौंदर्य शास्त्र | डॉ. तनुजा तिवारी | भारतीय भाषा पीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987 |
| 15. | हिन्दी की प्रगतिशील कविता | डॉ. रणजीत | हिन्दी साहित्य संस्करण, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976 |
| 16. | मॉरिशस का इतिहास | प्रह्लाद राम शरण | समानांतर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988 |
| 17. | मॉरिशस का इतिहास | पं. आत्माराव विश्वनाथ | आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1923 |
| 18. | मॉरिशस में हिंदी साहत्य का उद्भव और विकास | डॉ. श्यामधर तिवारी | विनसर पब्लिशिंग, प्रथम संस्करण 1997 |
| 19. | मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य (एक परिचय) | डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि | हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996 |
| 20. | मार्क्सवादी साहित्य चिंतन इतिहास तथा सिद्धांत | शिवकुमार मिश्र | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010 |
| 21. | मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य | डॉ. रामविलास शर्मा | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994 |
| 22. | मार्क्सवाद और पिछड़े हुए समाज | रामविलास शर्मा | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 23. | मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र की भूमिका | रोहिताश्व | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991 |
| 24. | मार्क्सवाद | यशपाल | विप्लव प्रकाशन - 8, प्रथम संस्करण 1940 |
| 25. | वाद विवाद संवाद | नामवर सिंह | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989 |
| 26. | विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम | जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द | मेधा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005 |
| 27. | शब्द और कर्म | मैनेजर पाण्डेय | |
| 28. | साहित्य की समस्याएँ | शिवदान सिंह चौहान | स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कररण, 1959 |
| 29. | साहित्य समीक्षा और मार्क्सवाद | कुंवर पाल संह | पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985 |
| 30. | हिन्दी की विश्व यात्रा | डॉ. सुरेशा ऋतुपर्ण | गौरव प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996 |
| 31. | हिन्दी का विश्व संदर्भ | करुणाशंकर उपाध्याय | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008 |
| 32. | हिन्दी की प्रगतिशील आलोचना | श्याम कश्यप<br>डॉ. कमला प्रसाद<br>डॉ. खगेन्द्र ठाकुर | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986 |

**III. सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी)**

| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| 1. | Marxism & Literature | Raymond Williams | Oxford University Press, First Published 1977 |
| 2. | Marxist cultural movement in India chronicles and documents (1936-1947), Vol. I | Compiled and Edited by Sudha Pradhan | Published by Mrs. Santi Pradhan, Calcutta, First Edition July 1976 |

**IV. पत्र पत्रिकाएँ**


1. कल्पनांत, मुराली लाल त्यागी, फरवरी 2009
2. आलोचना, नन्द दुलारे वाजपेयी, जुलाई 1957
3. आलोचना, नामवर सिंह, 1969
4. आलोचना, परमानंद श्रीवास्तव, अप्रैल जनवरी 2001
5. आलोचना, अरुण कमल, अक्टूबर-दिसम्बर 2004
6. आलोचना, अरुण कमल, जनवरी-फरवरी 2005
7. वर्तमान साहित्य, कुंवर पाल सिंह, नवम्बर 2008
8. वर्तमान साहित्य, कुंवर पाल सिंह, जनवरी फरवरी 2006
9. भाषा, जगदीश चतुर्वेदी, अक्टूबर 1982

## प्रथम अध्याय

## अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ

1.0 जीवन वृत्त

1.1 परिस्थितियाँ और परिवेश

1.1.1 शिक्षा एवं संस्कार

1.2 संघर्ष

1.2.1 आर्थिक संघर्ष

1.2.2 भाषागत संदर्भ

1.3 साहित्य जीवन

1.3.1 साहित्य प्रेरणा

1.3.2 अनत की रचना प्रक्रिया

1.3.3 अभिव्यक्ति का संकट

1.4 कृतित्व

1.4.1 कहानी संग्रह

1.4.2 उपन्यास

1.4.3 नाटक

1.4.4 कविता संग्रह

1.4.5 अन्य साहित्यिक विधाएं

निष्कर्ष

## प्रथम अध्याय

## अभिमन्यु अनत : जीवनवृत्त एवं कृतियाँ

मारिशस के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार होने के साथ-साथ हिन्दी के अंतर्राष्ट्रीय लेखन में मॉरिशस को सर्वोपरि स्थान प्राप्त करवाने वाले हिन्दी प्रेमी भी हैं। हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करने में मॉरिशस की विशेष भूमिका रही है। इस सृजनात्मक समृद्धि में विशेष योगदान अभिमन्यु अनत के विपुल साहित्यिक रचनाओं का रहा है। जिससे हिन्दी के साहित्य जगत में इस देश के साहित्य की एक पृथक पहचान बनी है। भारतीय भाषा, भारतीय संस्कृति को इन्होंने अपनी रचनाओं में संजोया है। अपनी संस्कृति और भारतीयता पर इनकी अटूट श्रद्धा है। अनत के साहित्य की दूसरी प्रमुख विशेषता यह रही है कि इनकी रचनाओं में मुख्य स्वर शोषण, अत्याचार, दासता का विरोध, समानता का भाव तथा भेदभाव को दूर कर समस्त संसार को जागृत करने वाला रहा है। इनके साहित्य में मानवतावादी दृष्टिकोण है जो इनके साहित्य को प्रगतिशील बनाता है।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि मनुष्य के जीवन में उसके विचार और मानसिकता पर उसके परिवेश का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। जिसके चलते मनुष्य अपनी सोच विचार, जीवन जीने का ढंग अपनी समझ तथा बौद्धिकता को विकसित करता है। अभिमन्यु अनत जी का जीवन भी कठिनाइयों से भरा संघर्षपूर्ण रहा है। जिसमें केवल संघर्ष ही संघर्ष निरंतर रहा है। परदेश में अपने अस्तित्व के लिए प्रवासी भारतीय गिरमिटया मजदूर के रूप में पहुंचे अपने पूर्वजों का अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष, संस्कृति की रक्षा, भाषा की रक्षा, अपने अधिकारों की रक्षा आदि के लिए संघर्ष तो दूसरी ओर आर्थिक रूप से तंगहाली तथा भेदभाव वाली नीति के विरूद्ध मानसिक द्वंद्व जिसकी अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अनत ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन में कर्मठता से अपनी लेखनी में तन्मय होकर, साहित्यिक रुचि को सदैव प्रज्वलित रखा है। अनत की इस संघर्षपूर्ण गाथा को जीवन वृत्त् एवं कृतियों को इस अध्याय के

अंतर्गत जीवन संघर्ष, भाषागत संघर्ष, परिस्थितियाँ और परिवेश, साहित्य यात्रा तथा संघर्ष आदि के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार अभिमन्यु अनत अधिकतर साहित्यिक विधाओं में अपना लेखन कार्य कर रहे हैं। इसका भी संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है। उनकी साहित्यिक साधना अभी तक जारी है जो कि प्रगतिशील तत्व लिए हुए है। यह तत्व इनकी लेखनी में जगह-जगह दिखाई दे जाते हैं।

## 1.0 जीवन वृत्त

हिन्दी के अंतर्राष्ट्रीय लेखन में मॉरिशस का स्थान सर्वोपरि है। मॉरिशस में हिन्दी सृजनात्मक संसार अत्यंत समृद्ध है। इस सृजनात्मकता की समृद्धि में अभिमन्यु अनत का विशेष योगदान रहा है। अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इनकी रचनाओं में इतिहास की यातनापूर्ण गाथाओं की यथार्थ अभिरुचि है, तो कहीं आधुनिक भाव बोध है, राजनीतिक दांव पेंच भ्रष्टाचार, भेदभाव तथा संघर्षपूर्ण आंदोलन है। तभी तो इन्हें मॉरिशस के हिन्दी साहित्यकारों में मूर्धन्य साहित्यकार के रूप में जाना जाता है। डॉ. कमल किशोर गोयनका के शब्दों में "अभिमन्यु अनत अपने देश की सीमाओं को पार करके भारत तथा विश्व के अन्य देशों में, मॉरिशस के सबसे अधिक सशक्त हिन्दी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित और मान्य ही नहीं हुए, बल्कि डॉ. शिवसागर रामगुलाम के समान साहित्य संसार में तथा भारत के लोक मानस में मॉरिशस के प्रतीक के रूप में स्वीकृत हुए। इसका यह अर्थ नहीं है कि अभिमन्यु अनत की पूर्व पीढ़ी के और उनके समकालीन तथा बाद की पीढ़ी के हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य-साधना कम की थी, लेकिन अभिमन्यु अनत जैसी बहुमुखी प्रतिभा, साहित्य और जीवन में एकरूपता, अस्मिता और संस्कृति की रक्षा का युद्ध सत्ता से जुझारू संघर्ष, आम आदमी के सुख-दुख के प्रति इतनी कठोर प्रतिबद्धता, देश के समकालीन एवं युवा लेखकों की पीढ़ी को सहयोग, विश्व मंच पर प्रतिष्ठा तथा भारत में लोकप्रियता किसी अन्य हिन्दी साहित्यकार ने इतने ठोस रूप में अभी तक नहीं प्राप्त की थी। अभिमन्यु अनत की लगभग चार दशकों तक निरंतर साहित्य-साधना तथा 21वीं

शताब्दी के आगमन तक साहित्य रचना में प्रवृत्त रहना भी उनके वैशिष्टय का प्रमाण है।"[1] लगातार साहित्य साधना में लीन रहने वाले ऐसे महान रचनाकार का जन्म 1 अगस्त 1937 को मॉरिशस के त्रिओले ग्राम में हुआ था। उनका जन्म भले ही मॉरिशस में हुआ, वे स्वयं को देशों की उपज मानते हैं। क्योंकि इनके पूर्वज भी भारतीय प्रवासी के रूप में भारत से मॉरिशस पैसा कमाने की चाह लिए पहुंचे थे। इतनी लम्बी समुद्री यात्रा की कठिनाइयों को पार कर कड़े संघर्ष और यातनाओं के साथ अपनी संस्कृति को बनाए रखा जिस कारण इनका लगाव भारत भूमि से बना रहा। दरअसल अभिमन्यु अनत के दादा अनत सिंह आगरा से थे। दादी बंगाल से एवं नाना-नानी जवाहिर सिंह चडेंल गांव राजस्थान के थे। दलालों के बहकावे में आकर अपना वतन छोड़ मेहनत कर अपनी गरीबी को दूर करने का अरमान लिए मॉरिशस की धरती पर गिरमिटिया मजदूर के रूप में पहुंचे थे। गिरमिटिया मजदूर यानी वो भारतीय कुली मजदूर जिसे शर्तों पर लाया जाता था जिसे कहीं आजादी से घूमने फिरने की इजाजत नहीं थी। मॉरिशस के इतिहास के अनुसार इस प्रथा का अर्थ इस प्रकार है "शर्तबंद प्रथा को गिरमिटि प्रथा भी कहा जाता है। इस प्रथा के अनुसार प्रत्येक भारतीय प्रवासी को नौकरी करने से पहले एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करना होता था। उनकी शर्तें देखने में आकर्षक होती थी, पर वास्तव में उनकी दशा कृत-दासों के समान हो जाती थी।"[2] मजदूर रूप में आये उनके पूर्वजों ने काफी यातनाएं सही थी। पिता पति सिंह और माता सुभागिय मजदूर से खेतिहर बने। इनके दानी स्वभाव तथा सिद्धांतों एवं दयावान होने के कारण अभिमन्यु अनत का जन्म अभावग्रस्त स्थितियों में हुआ, इस कारण इन्हें अपने जन्म से लेकर जवानी तक अपनी गरीबी से लगातार संघर्ष किया। जिस कारण इन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। अभावग्रस्त जीवन में पेट भर भोजन प्राप्त करने के लिए इन्हें गांव-बस्ती, शहर की खाक छान चुकने के बाद भी काम और पैसे का अभाव झेलना पड़ा। संपन्न

[1] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएं, डॉ. कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 12

[2] मॉरिशस का इतिहास - प्रह्लाद रामशरण, पृ.सं. 64

घर में  जन्म लेकर भी परिस्थितियों के मारे अनत का जीवन छोटी आयु से ही काफी संघर्षों से भरा था जिसकी झलक उनके कई पात्र में भी पाते हैं।

## 1.1 परिस्थितियां और परिवेश

मॉरिशस के अन्य भारतीय परिवारों की तरह अभिमन्यु अनत के पूर्वज (दादा) को भी भी गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस में कुली बनाकर लाया गया था जो दलालों के फांसे में आकर मजदूरी कर अपने जीवन को बेहतर बनाने की कामना लिए यहां पहुंचे थे। उस समय अंग्रेजों ने मॉरिशस को फ्रांसीसियों से जीत लिया था और दास प्रथा की समाप्ति के कारण मेडागास्कर से आये हुए दास, ईख के खेतों में काम करने को, मजदूरी करने को तैयार नहीं थे। फ्रांसीसियों की कोठियों और खेतों में काम करने के लिए भारतीय मजदूरों को झूठे प्रलोभन देकर लाया गया था।

मॉरिशस पहुंचे इन गिरमिटिया मजदूरों को बहुत कुछ सहना पड़ा। जिन शर्तों और अत्याचारों ने उनका जीवन नरक तुल्य कर दिया था। सप्ताह भर के काम के लिए बारह आने से गुजारा करना पड़ता तथा दो डिबिया चावल दाल से परिवार का पेट भर पाना कठिन होता। विरोध करने पर चाबुकों और बांसों की बौछार होती थी। अपनी संस्कृति को छोड़ धर्म परिवर्तन पर बल दिया जाता था। रामायण और हिन्दी पढ़ना मना था।  ईसाई धर्म स्वीकार लेने पर थोड़ी सी इज्जत मिल जाती थी। मजदूर से दफ्तरों में नौकरी का लालच दिया जाता, जो इसका विरोध करता उसे यातनाएं दी जाती थी। ऐसे परिवेश में अनत के पूर्वजों ने भी बहुत कुछ सहा था, किंतु अपनी संस्कृति तथा भारतीय संस्कारों को जीवित रखा। अनत ने अपने एक साक्षात्कार में बतलाया है "मेरे दादा विद्रोही स्वभाव के थे। कोठी के गोरों के साथ उनकी कई बार मुठभेड़ होती रही थी। मेरे पिताजी बताते थे कि मजदूरों को संगठित करने और उनकी दास-नियति को समाप्त करने के लिए उन्होंने अनेक प्रयास किये।"[1] शर्तिया मजदूर रूप में मॉरिशस पहुंचे भारतीयों ने लगातार संघर्ष कर

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 27

अपनी संस्कृति और अस्मिता को बचाने की लड़ाई जारी रखी। वे अपना खून-पसीना एक कर मेहनत करते रहे। तिजोरी गोरे मालिकों की भरी जाती और वे रोटी कपड़े के लिए मोहताज होते। चोरी छिपे अपनी संस्कृति और भाषा को सीखते-सीखाते संजोकर रखा गया। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद ये भारतीय गिरमिटिया मजदूर अपने अधिकार पाने में सिर उठाकर जीने में सफल हुए। इन्हीं परिस्थितियों के चलते अनत का बाल्य काल गरीबी में बीता। अभिमन्यु अनत के पिता का नाम पति सिंह और मां का सुभागिया मॉरिशस में जन्मे इन दोनों का विवाह भी यहीं मॉरिशस में हुआ था। अनत के पिता हिन्दी, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा का भी ज्ञान रखते थे। वे सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर अपना योगदान देते थे। वे लोगों को कानूनी सुझाव भी देते रहते तथा कई सभाओं के मंत्री एवं प्रधान भी रह चुके थे। अभिमन्यु अनत का बाल्य काल माना कि आर्थिक रूप से तंग हाल था किन्तु बौद्धिक और सामाजिक स्तर पर परिश्रमी तथा जागरूक विचारधारा वाले पिता की छत्रछाया में रहा। अनत की माता ने भी अपने भाई जो कि गांव के बच्चों को हिन्दी सिखाता था, उसे देख स्वयं ही लिखना पढ़ना सीखा था। वह रामायण पाठ कर लेती थी। ग्यारह वर्ष की आयु में ही इनकी शादी हो गयी थी। इनके ग्यारह संतान हुए जिसमें केवल चार बचे अभिमन्यु अनत, इनकी दो बड़ी बहनें और एक छोटा भाई। गरीबी की हालत में वह खेतों में मजदूरी करती और गाय बकरियां पालती थी। पढ़ने में इन्हें विशेष रुचि थी। वह धार्मिक ग्रंथों पर चर्चा करती, उनके पठन में लीन हो जाती। अनत मानते हैं कि अपने मां के इस गुण को उन्होंने संस्कार के रूप में प्राप्त किया है। अभिमन्यु अनत बचपन से ही कमजोरी के चलते अधिक बीमार रहते थे और अपने पिता की बीमारी के चलते घर में तंग हालत गरीबी के कारण उनकी शिक्षा दीक्षा भी कई अंतराल और दिक्कतों के चलते ठीक ढंग से नहीं हो पाई। तेरह वर्ष की आयु में आम तोड़ते हुए पन्द्रह फीट की ऊंचाई से गिरने के कारण छाती में गहरी चोट लगी थी। इस वजह से कभी-कभी हीमोपटीजिस का दौरा पड़ता है। कमजोरी और बीमारी के चलते वे चाहकर भी वह भारी काम नहीं कर पाते। जिस कारण आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए वह छोटी मोटी नौकरी

करते वह भी छूट जाती। अभिमन्यु अनत ने सरीता नामक अनाथ लड़की से विवाह किया। वह पढ़ी-लिखी नहीं थी। विवाह उपरांत उन्होंने हिन्दी पढ़ना-लिखना सीखा और अनत की रचनाएं पढ़ती तथा उनकी रचनाओं की प्रतिलिपि करने में उनका सहयोग देती। अभिमन्यु अनत अपने व्यक्तिगत जीवन पर बात करते हुए अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं कि उनकी पत्नी सरीता का उनके साहित्य जीवन में विशेष योगदान रहा है। अभिमन्यु अनत तथा उनकी पत्नी सरीता का वैवाहिक जीवन एक आदर्श रहा है जिसने अनत के लेखन कार्य में हमेशा सृजन का बल दिया है। इनकी अपनी कोई संतान नहीं है। वे अपने एक भांजे तथा दो भतीजों सुनील, तस्क्ष और रत्नेश को ही अपनी संतान मानते हैं। वे भी उनसे माता-पिता सा प्यार पाते हैं व प्यार देते हैं। अनत के जीवन में काफी उतार चढ़ाव रहे। कहीं गरीबी, तंगहाली की आंधी तो कहीं अपने उसूलों के लिए सत्ता से विरोध कर जीवन में आने वाले तूफानों से भी टकराने की क्षमता को दृढ़ करती आत्मशक्ति। इनका कभी न झुकने वाला भाव जो कि खाने के लाले पड़ने पर भी चापलूसी जी हुजूरी के खिलाफ रहा। "लेखक अगर सियासत की बंदूक से मरता तो आज शायद ही कोई लेखक जीवित रह पाता: लेखकों की बात कर रहा हूं चिलमभरूओ, चारणों और प्रशस्ति गान करने वालों की नहीं। यह वर्ग तो उस समय तक जीवित रहेगा, जब तक उसके आकाओं के तलुओं से शहद की बूंदे टपकती रहेगी। लेखक तो शहद पीकर नहीं जहर पीकर जिंदा रहता है।"[1] अनत बचपन से ही इन जहर के घूंटों को पी-पीकर अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने वाले रचनाकार के रूप में उभरकर सामने आये हैं।

### 1.1.1 शिक्षा एवं संस्कार

अनत के परिवार में धार्मिक ग्रंथ के पाठ करने के लिए पिता पति सिंह द्वारा हिन्दी को चोरी-छिपे पढ़ाया व पढ़ा जाता जिससे इनकी माता जी ने भी हिन्दी का पठन पाठन किया। पिता को हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी, फ्रेंच का ज्ञान था। पढ़ने में विशेष रुचि रखते थे साहित्य से लगाव

[1] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 78

था। मां परिश्रमशील होने के साथ-साथ अनुशासन प्रिय थी। दोनों के यह संस्कारों का अनत के जीवन में विशेष योगदान रहा है। अनत जी को पठन प्रवृत्ति में तल्लीन होने की विरासत अपनी मां से मिली। आम आदमी के प्रति रूझान जैसे श्रेष्ठ संस्कार अपने पिता से मिले हैं।

आरंभ से ही घर परिवार में माता-पिता दोनों की हिन्दी के प्रति गहरी श्रद्धा व रुचि थी। घर पर हिन्दी का वातावरण होने के कारण उनमें बचपन से ही हिन्दी पढ़ने लिखने में रुचि रही। अनत के पिता अपनी कम आमदनी वाली छोटी सी दुकान की काम चलाऊ आय में से भी कुछ पैसा पुस्तक खरीद कर पढ़ने में लगाते थे। उनके घर की आलमारी में शरतचन्द्र और प्रेमचंद की कई पुस्तकें थी जिनको अभिमन्यु अनत छिपा-छिपा कर पढ़ते थे। इस तरह बचपन से ही उनमें कथा साहित्य की ओर रूझान बढ़ा। अभिमन्यु अनत भारत से, भारतीय साहित्य से बचपन से ही प्रभावित रहे हैं। घर पर महाभारत, रामायण के अलावा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, शिवाजी, महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के जीवन चरित्रों को इन्होंने 11 वर्ष की उम्र से ही पढ़ना शुरू कर दिया था। जो इनके जीवन संघर्ष में प्रेरणादायक रहे तथा इसी क्रम में इनकी रुचि साहित्य की ओर बढ़ी। साहित्य के प्रति अपनी प्रगाढ़ता के कारण ही प्यारेलाल आवारा से लेकर देहाती पुस्तक भंडार के सभी उपन्यासों को पढ़ डाला। तारा शंकर विमल, भगवती बाबु विशेषकर फणीश्वर नाथ रेणु से ये प्रभावित हुए। अभिमन्यु अनत का कहना है कि "एक लेखक हो सकने का विश्वास मेरे अपने भीतर बहुत पहले से था। तब से जब मैं घर के लोगों से छुपाकर अपनी पाठ्य पुस्तकों के बीच प्रेमचंद और शरतबाबू की पुस्तकें पढ़ता रहता था। फजीहत बहुत होती थी, फिर भी अपनी बहनों की लायी हुई पुस्तकें चोरी चुपके पढ़ ही लेता था। जिस दिन चरित्रहीन पढ़कर पूरा किया उस दिन मैंने प्रण कर लिया था कि मैं भी लेखक बनकर रहूंगा।"[1] अभाव दरिद्रता के कारण अनत का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। जिस कारण शिक्षा क्रम में कई विराम आये तथा माध्यमकि शिक्षा अधूरी रही किन्तु हिन्दी का अध्ययन स्वअध्ययन द्वारा निरंतर

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 7

जारी रखा। अपने अभावग्रस्त जीवन से उन्होंने उस यथार्थ को जाना था जहां बहुत अधिक असमानताएं थी। जिसके खिलाफ आवाज उठाने की, प्रश्न करने की प्रवृत्ति बचपन से ही इनमें थी। अनत अपने एक साक्षात्कार में बतलाते हैं कि "मैं बस अपने समाज और अपने इर्द-गिर्द की सत्ता और अवस्था से जो प्राय: अव्यवस्था होती है, प्रश्न करता हूं यह प्रश्न मेरा तब से जारी है, जब मैं नौ-दस साल का था और स्कूल जाते समय जब मेरी मां मुझे अन्य बच्चों की तरह बिना पेबंदी से भरे कपड़े देने में असफल होती थी। मेरा पहला प्रश्न था, जो मुझे आज भी याद है, "मां उन लोगों को इतने अच्छे कपड़े कहां से मिल जाते हैं।"[1] बचपन से झेले अभाव के कारण अनत के मस्तिष्क को बेचैन करने वाले प्रश्नों ने उन्हें कुछ कर गुजरने की असमानता पर निर्भय होकर सवाल उठाने की प्रेरणा प्रदान की।

18 साल की उम्र में कॉलेज की पढ़ाई अधूरी रह गयी। माता-पिता की लंबी बीमारी के चलते घर पर खाने के लाले पड़े थे। अभिमन्यु अनत अपने संस्मरण मैं जब चरित्रहीन पढ़ रहा था में बतलाते हैं कि किन परिस्थितियों में उनकी कॉलेज की पढ़ाई पूरी नहीं हो पायी।

"घर में अभाव और मोहताजी इस कदर बढ़ आये थे कि मेरी मां मुझे पढ़ा लिखाकर कुछ बनाने के अपने प्रण को भी तिलांजली दे देने को विवश हो चली थी। आस-पास के सारे जंगलों के खेतों में परिवर्तित हो जाने के बाद गाय पालकर परिवार का पालन-पोषण एकदम कठिन हो चला था। ऊपर से कर्जा ......... गुलामी। मेरा बाप भी चारपाई पर बीमार पड़ा हुआ था।

रात देर तक यह सोचते रह जाने में कि मैं किस तरह घर के छ: सदस्यों का पेट पालने में मां की मदद कर सकता था।"[2] इन्हीं कारणों से अनत को गांव की कोठी में मजदूरी भी करनी पड़ी। किन्तु अनत के जन्म के समय हालात कुछ और थे। उन्होंने आर्थिक रूप से संपन्न परिवार में जन्म लिया था जिनके पास घोड़ा गाड़ी और मोटरकार भी थी। अनत की देखरेख के लिए परिचारिका 'मादाम लेबों' को रखा गया था। पिता की बीमारी व दयालु स्वभाव के चलते परिस्थितियां बदल

---

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 3

[2] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 166

गई। वरन जन्म के बाद कुछ साल अनत का बचपन बड़े ठाठ का रहा। इनका परिवार चाहे कैसे ही हालात से क्यों न गुजरा हो लेकिन अपनी भारतीय संस्क्रति और परंपरा को बनाए रखा। ये इक्ष्वाकु गौत्र के थे। नामकरण से लेकर अन्नप्रशन, जनेऊ संस्कार आदि सभी परंपराओं को प्रतिबंधित जीवन बिताते हुए भी निभाया था। अपनी संस्कृति की रक्षा का भाव इन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिला था क्योंकि उन्होंने यातनापूर्ण जीवन जीते हुए भी अपनी संस्कृति को संजोकर रखा। रामायण, भगवतगीता, आलाह, फागुण आदि के गीत व पाठ के द्वारा अपनी भाषा द्वारा अपनी संस्कृति को बचाए रखा। अनत हिंदी भाषा हिन्दू संस्कृति को अपनी पहचान मानते हैं किन्तु रूढ़ियों का विरोध करते हैं। "वे हिन्दू संस्कृति के भक्त हैं, उसके मूल्यों एवं जीवन पद्धति को महत्वपूर्ण मानते हैं तथा विसंस्कृतिकरण की समस्या को सर्वाधिक विकट समस्या मानते हैं, लेकिन अन्य धर्मों के प्रति उनका दृष्टिकोण सहिष्णुता एवं समभाव का है। वे हिन्दी के लेखक हैं, हिन्दी को अपना जीवन मानते हैं, लेकिन अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाओं का साहित्य पढ़ते हैं और उनसे सीखने की बराबर चेष्टा करते हैं।"[1] अनत के अपनी शिक्षा और संस्कार से प्राप्त विशेष गुण हमें उनके साहित्य में प्राप्त होते हैं। इनकी भारतीयता, अपने देश मॉरिशस के प्रति लगाव व प्रेम इन्हें दोनों देशों की उपज स्वीकारने के लिए बाध्य करते हैं।

## 1.2 संघर्ष

मनुष्य का संघर्षशील होना ही उसके जीवित होने का प्रमाण है। निरंतर संघर्षशील होना ही उसकी चेतना का द्योतक है। चेतना से युक्त व्यक्ति ही संघर्ष करता है। अपना पेट भरने के लिए जानवर भी संघर्ष करता है तब जाकर उन्हें भोजन प्राप्त होता है। मनुष्य जैसे श्रेष्ठ पाणी का संघर्ष केवल पेट भर भोजन प्राप्ति तक कैसे सीमित हो सकता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इस समाज में निर्वाह करने के लिए उसे अपने जीवनयापन से लेकर अपनी रक्षा, संस्कृति की रक्षा, अपने सिद्धांतों की रक्षा आदि हेतु कई संघर्ष करने पड़ते हैं। ऐसे ही संघर्षों से भरा अभिमन्यु अनत

[1] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएं- कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 341

का जीवन आज भी उन्हें संघर्षशील बनाए हुए है। अनत से पहले उनके अपनों का मॉरिशस जैसे देश में अपनी एक नई पहचान बनाने का संघर्ष, अपने अस्तित्व की रक्षा का संघर्ष जो काफी यातनाओं भरा रहा। जिसने कई अत्याचार सहते हुए रामराज्यवादी नीतियों गुलामी की प्रथा का विरोध कर अपना संघर्ष जारी रखा। अपने अस्तित्व अनत के पूर्वज तथा अनत ने अपनी भारतीय संस्क्रति अपनी अस्मिता की पहचान बनाने के लिए दमनकारी नीतियों का विरोध कर अपनी भाषा का संरक्षण कर उसका प्रचार प्रसार कर दमित, शोषित लोगों को अपनी स्थिति से अवगत करवाया तथा गिरमिटिया मजदूरों के द्वारा इस देश को संवारने उसे समृद्ध करने वाले अपने पूर्वजों के संघर्ष को लुप्त होने से बचाने का संघर्ष अपने साहित्य के माध्यम से किया है। इनका व्यक्तिगत जीवन संघर्षों से भरा रहा है। आर्थिक संकट, जीवन यापन का संघर्ष, कमजोरी, खराब स्वास्थ्य के चलते अधिक परिश्रम वाले काम न कर पाना तथा पारिवारिक दायित्व, कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए नौकरी की तलाश के लिए संघर्ष। पैसा कमाने की मजबूरी के कारण शिक्षा भी रूक-रूक कर हुई। कॉलेज की पढ़ाई अधूरी रोक देनी पड़ी। कई दिनों तक हालात से जूझते हुए संघर्षशील रहे तो दूसरी ओर देश की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति विसंस्कृतिकरण, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद आदि अनेक समस्याओं पर बौद्धिक स्तर पर संघर्ष करते हुए अपने विचारों को अपनी लेखनी में ढाला और वर्तमान परिस्थितियों की दमनकारी नीति, साम्राज्यवादी, उपनिवेशवादी नीतियों के विरूद्ध अपनी कलम के द्वारा संघर्ष जारी रखा है। वे अपने देश मॉरिशस के प्रति ही नहीं अपितु अपनी मूल जड़ों के प्रति भी उतना ही गहरा लगाव रखते हैं। प्रवासी भारतीयों की अपनी पहचान अपनी मातृभाषा हिन्दी के प्रति इनका गहरा लगाव रहा है। इस भाषा के संरक्षण के लिए विदेश में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए वे आज तक संघर्षशील हैं।

अभिमन्यु अनत एक अध्यापक, लेखक, संपादक, मुख्य रूप से एक ईमानदार व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते रहे हैं। उनके जीवन में कहीं व्यवस्था से संघर्ष कहीं सहकर्मियों की चाटुकारिता के विरूद्ध खुद को बनाए रखने का संघर्ष अपने सिद्धांतों पर अटल

होकर चलने के लिए इनका जीवन केवल संघर्षों से ही भरा हुआ रहा है। खुद की एक पहचान बनाकर भी वे आज भी उन तमाम प्रवासी भारतीयों की आवाज बन सारे मॉरिशस के निर्माण में उनके दिये गये बलिदान और उनके गौरव की रक्षा के लिए लगातार संघर्षशील हैं। वे उम्र के इस पड़ाव में भी थककर बैठना नहीं चाहते। वे अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में व्याप्त शोषण, अत्याचार जातिगत भेद, रंग भेद, प्रवासीगत भेद, भाषागत भेद, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, चाटुकारिता, आतंकवाद आदि कई सामाजिक, राजनैतिक मुद्दों पर संघर्ष जारी रखे हुए हैं। जिस कारण इनकी एक विशिष्ट पहचान बनी है। अपने इस निजी जीवन में इन संघर्षों के चलते इन्हें कई दर्दनाक मानसिक आघात पहुंचाने वाले परिणामों से गुजरना पड़ा, लेकिन वे कभी रूके नहीं। अपनी कलम को और तेज करते गये और अपनी लेखनी द्वारा अपना संघर्ष जारी रखा। अपने देश की समस्याओं को लेकर वह चिंतन करते हुए कहते हैं "मॉरिशस में बहुभाषा, बहुधर्म और बहुनस्ल कभी भी समस्या नहीं रही। इसे मैं मॉरिशस की विशेषता मानता हूं, लेकिन समस्याएं खड़ी की जा रही हैं, साम्राज्यवादियों द्वारा जिनके पांव राजनीतिक साम्राज्य से उखड़ गये हैं। ये लोग मॉरिशस में एक भाषा की लाश पर एक दूसरी भाषा को जीवित रखना चाहते हैं। एक नस्ल को दूसरी नस्ल के नीचे दबा देना चाहते हैं। एक धर्म को मटियामेट करके दूसरे की ध्वजा को नीचे दबा देना चाहते हैं। उपनिवेशवादी का यह नया तरीका है जो आज मॉरिशस के लिए समस्या बना हुआ है। मॉरिशस की संस्कृति की सार्थकता और संपूर्णता सभी संस्कृतियों के संगम में है न कि एक संस्कृति की जड़ उखाड़कर उस स्थान पर दूसरी संस्कृति के पौधे को रोपने में।"[1] अनत के इस वक्तव्य में समानता का भाव है जो कि भेद भाव का विरोध कर सब को समान अधिकार, स्वतंत्रता तथा सम्मान प्राप्त करने के भाव पर विशेष बल देते हैं। भेद हीन समाज के द्वारा अनेकता में एकता का भाव लाकर खुशहाल मॉरिशस की कामना करते हुए विरोधी तत्वों के खिलाफ जागरूकता लाते हैं। अनत के इस वैचारिक, बौद्धिक संघर्ष ने उनके व्यक्तित्व को अति विशेष

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 37

बना दिया है। इनके व्यक्तित्व की इस विशेषता के पीछे इनके निज जीवन में इनके द्वारा किये गये संघर्षों की आग में तपकर खरे सोने के समान निखरी इनकी सोच और इनके जीवन से जुड़े अनेक प्रकार के संघर्षों पर आगे संक्षिप्त रूप से चर्चा करते हुए उनके संघर्षशील जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा, जो कि अभिमन्यु अनत के व्यक्तित्व निर्माण में विशेष महत्व रखता है। निरंतर संघर्षशील रहते हुए ही वे आज हिन्दी साहित्य जगत को इतना विपुल साहित्य प्रदान कर पाये हैं।

### 1.2.1 आर्थिक संघर्ष

आर्थिक असमानता मानव को वर्गों में विभक्त करती है शोषक और शोषित वर्ग। शोषक वह पूंजीपति वर्ग जो मजदूर वर्ग, निम्न वर्ग को अपनी आर्थिक संपन्नता तले दबाता चला जाता है, उनका शोषण करता है। शोषित वर्ग अपने जीवन में सुधार लाने के लिए लगातार संघर्ष करता है। मजदूरों का आर्थिक शोषण सदैव होता आया है। इस शोषण का शिकार भारतीय मजदूर वर्ग जो अपने जीवन में अर्थ की इस असमानता को मिटाने की खातिर मॉरिशस जैसे द्वीप में पहुंचकर अपनी आर्थिक संपन्नता की कामना लिए निरंतर परिश्रम करके भी शोषण का शिकार रहा और उसका लगातार आर्थिक संघर्ष जारी रहा। रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव का मानना है कि "मार्क्सवाद के अनुसार आर्थिक ढांचे में परिवर्तन होने के कारण ही राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विचारों में परिवर्तन होता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि मार्क्स अधिक नियंत्रण मात्र को ही समाज की प्रगति का निर्देशक मानता है। समाज के विकास में अन्य उपकरण भी अपनी कुछ सत्ता रखते हैं, पर प्रमुख होने के कारण निर्णायक शक्ति आर्थिक तत्व ही होता है।"[1] अपनी आर्थिक अवस्था में बदलाव लाने के लिए अपने विकास, अपनी संस्कृति के विकास, अपने आत्मसम्मान के लिए भारतीय मजदूर लगातार संघर्ष करते रहे और इस अर्थगत संघर्ष की दुखद गाथा अनत अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करते रहे हैं क्योंकि आर्थिक विषमता को मिटाने की अपने जीवन में बेहतरी

---

[1] प्रगतिशील आलोचना - रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, पृ.सं. 208

लाने की कामना में इन्होंने आर्थिक संघर्ष की अपने जीवन में तीव्र अनुभूति की है, जिसे वह अपनी रचनाओं में विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करते हुए अपने आर्थिक संघर्ष को ही अभिव्यक्त करते हैं। अनत ने अपने जीवन में लगातार इस आर्थिक असमानता को झेलते हुए अपनी एक विशेष पहचान बनाई है।

भारत से मॉरिशस पहुंचे कुली मजदूरों से भेदभाव तथा शोषण वाली नीति के चलते चाहकर भी इनकी परिस्थितियों में सुधार आने में काफी समय बीत गया। लगातार आर्थिक संघर्ष झेलते हुए केवल आर्थिक विषमता ही नहीं अपितु शोषण, अत्याचार, असमानता, कभी न खत्म होने वाली दासता का सामना करना पड़ा। दाने-दाने को मोहताज होकर गुलामी सहनी पड़ी। जिस कारण मॉरिशस के विकास में उसे सुख संपन्न बनाने के इतिहास में इनका विशेष योगदान होते हुए भी कुछ पूंजीवादी दबंग लोगों की कूटनीतियों के चलते इतिहास में इन्हें अनदेखा किया गया। ऐसे ही कई भारतीय मजदूर जो की गिरमिटिया मजदूर कहलाए उन्हीं में से एक अनत के पूर्वज भी रहे हैं। इन सब यातनाओं को अनत ने इन्हीं के द्वारा अधिक निकटता से जाना और स्वयं भी इस आर्थिक विषमता को झेला है। समानता का भाव अपने अस्तित्व, अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए अपने व्यक्तित्व का उत्थान करना आर्थिक रूप से संपन्न होना अनिवार्य था और इसके लिए अनत के दादा फिर पिता व अनत का जीवन निरंतर संघर्षपूर्ण रहा है। अभिमन्यु अनत के पिता एक छोटी से दुकान चलाते थे। उस छोटे से व्यापार से अपने परिवार का भरण-पोषण करना ही कठिन होता। वे अपने दयालु स्वभाव के कारण लोगों को उधारी देकर स्वयं खस्ता हाल हो बैठे थे। अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करते हुए वे बीमार रहने लगे। मां भेड़-बकरियों से परिवार की गुजर बसर करने का प्रयत्न करती जिससे पेट भर भोजन का जुगाड़ कर पाना कठिन हो जाता। अनत छुटपन से ही घर में गरीबी का संकट झेलने के कारण बड़ी ही कठिनाइयों से शिक्षा ग्रहण कर पाए जो बिना प्रमाण पत्रों के अभाव में खेत मजदूरी, सहनी बेचना, बोझा ढोना (अनाज के बोरे उठाना) जैसे काम कर अपने परिवार के पालन पोषण में मदद करते। इन्होंने बस कंडक्टरी का

कार्य भी किया। कहीं अपने दयालु स्वभाव के चलते, कहीं आत्मसम्मान की रक्षा के लिए इन नौकरियों से भी हाथ धोना उड़ा किन्तु वे लगातार संघर्ष करते रहे। उन्होंने छोटे से छोटा कार्य कर अपने और अपने परिवार के जीवन यापन के लिए संघर्ष करते हुए अपनी पढ़ाई तथा लेखन कार्य जारी रखा। अनत का अधिकतर समय अभावग्रस्त स्थितियों में बीता। इस कारण इन्हें अपने जन्म से लेकर जवानी तक अपनी गरीबी से लगातार संघर्ष किया है। अनत बतलाते हैं "मां-बाप लंबी बीमारी झेल रहे थे। घर पर हम लोग मकई, कंद, फ्रीआपें (विलायती कटहल) और रोटी फल (जिसे उबालकर खाया जाता है) खाकर दिन गुजार रहे थे। मेरे कॉलेज की पढ़ाई तीसरी कक्षा के बाद बंद हो गयी थी। घर पर बहन और भाई थे। मांग विवश होकर कह देती कि मैं कोई नौकरी क्यों नहीं करता।"[1] अनत ने अपने बलबूते पर मेहनत कर आगे बढ़ने के लिए निरंतर संघर्ष किया। अनेक संकट झेले किन्तु साहित्य के प्रति अपने रूझान को मिटने न दिया। हालात की आंधी और अपने कर्मठ स्वभाव ने अनत को चट्टान सा बलिष्ट बना दिया। जिसकी अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देती हैं। वे अपने चट्टानी इरादे लिए सत्ता से, व्यवस्था से टकराने से नहीं चूकते। परिस्थितियों की आंधी ने उन्हें बलवान बनाया है। "तब मैं अध्यापक था। पिताजी की रहमदिली और हरिश्चन्द्री स्वभाव के कारण घर के वे अच्छे दिन गायब हो चुके थे। यहां तक कि जिस जमीन पर हम रह रहे थे, वह भी घर के सभी हकदारों की न रहकर बड़े भाई की जायदाद बन गयी थी। शहर जा बसे मेरे भाई से मोहलत पाकर हम लोग वहीं पर टिके हुए थे कि 180 मील प्रति घंटे की रफ्तार से आया हुआ तूफान पूर्वजों के उस भव्य घर को भी धराशायी कर गया था। वक्त की उस प्रथम चुनौती को स्वीकारते हुए किसी तरह मैं अपने ही बाप की जमीन को अपने बड़े भाई से खरीद सकने में सफल रहा। फिर उसी जमीन को गिरवी रखकर छह व्यक्तियों के लिए दो कमरों का एक घर बना पाया था।"[2] सन 1959 में उन्हें सरकारी हिन्दी अध्यापक की नौकरी मिली तब आर्थिक स्थिति में थोड़ा सुधार आया। हिन्दी पत्रिका वसंत का संपादन किया।

---

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 35

[2] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 177

आगे युवा मंत्रालय के नाट्यकला विभाग से भी जुड़े तथा महात्मा गांधी संस्थान में हिन्दी के अध्यापन को आगे बढ़ाने में निरंतर प्रयत्नशील रहे। अपनी कर्मठता के बल पर उन्होंने जीवन में हर तरह की परिस्थितियों का सामना किया। इनका घर ईख के सूखे पत्तों के छाजन का था। इस कारण भयंकर तूफान में अपना घर ध्वस्त होने से अनत की अनेक रचनाएं नष्ट हो गयी। यहां तक कि इनके पहले उपन्यास की पांडुलिपि करोल तूफान में तहस-नहस हो गयी। फिर भी इन्होंने संघर्ष से हार नहीं मानी। वे अपने जीवन में दो-दो लड़ाई लड़ रहे थे। निजी जीवन में अपनी निर्धनता से और साहित्यकार के रूप में समाज से व्यवस्था से निरंतर संघर्षशील रहे हैं। इनके आर्थिक संघर्ष को लेकर गोयनका के शब्दों में "अनत का जीवन समतल नहीं रहा, उसमें आंधियां हैं, तूफान हैं, ज्वार भाटे हैं, शांत किनारे हैं परंतु बहुत कम उसके जीवन में प्रश्न हैं, विरोध है, अस्वीकृति है, सत्ता से टकराने की क्षमता है, लेकिन चापलूसी और जी हुजूरी से जीने की इच्छा नहीं। शरीर से वह रोगी है और प्रेम रोग भी उसे लगा, परंतु इसकी कथा अकथनीय बनी हुई है। वह गृहस्थी है, सरिता जैसी पत्नी है, तरूण तथा रत्तेश जैसे बेटे हैं और भाई बहनों तथा रिश्तेदारों के अनेक परिवार हैं। इस पारिवारिक जीवन की एक लम्बी कहानी है - प्रेम कटुता, असहमति, सहमति, सहयोग, विरोध आदि से भरी हुई अधिकार तथा त्याग से परिपूर्ण। इस पारिवारिक जीवन में गरीबी और अमीरी के असंख्य दृश्य हैं - माता-पिता के, अपने तथा अपने परिवार के। आजीविका के लिए अनेक रूप ग्रहण करने पड़े, लेकिन सेवामुक्ति उच्च पद से हुई।"[1] अभिमन्यु अनत के जीवन में आर्थिक संघर्ष के साथ-साथ कई  संघर्ष रहे, जिसमें संस्कृत की रक्षा का संघर्ष है, सिद्धांतों के टकराव का संघर्ष है आदि किन्तु वे कभी झुके नहीं। परिस्थितियों का सामना निर्भर होकर किया। अपने निज जीवन में झेले संघर्षों की तटस्थता हमें इनकी रचनाओं में भी दिखाई देती है जो इन्हें अन्य साहित्यकारों से विशेष बनाती है।

[1] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएं, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 15-16

### 1.2.2 भाषागत संघर्ष

मॉरिशस में स्वयं को स्थापित कर पाने में भारतीयों ने कठिन परिस्थितियों को झेलते हुए बड़े संघर्ष के साथ अपना वट स्थापित किया है। अपनी भाषा अपनी संस्कृति को बचाए रखने के लिए वे लगातार संघर्ष करते रहे हैं। फ्रेंच, क्रिओली चीनी, अंग्रेजी, उर्दू, भोजपुरी आदि कई भाषाएं हैं। इनमें क्रिओली मेडागास्कर से आये हुए लोगों द्वारा मानिगई उनकी मातृभाषा है। भोजपुरी भारत से आये हुए लोगों की मातृभाषा है क्योंकि भारत से गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस पहुंचने वालों में अधिकतर कुली बिहार प्रांत से थे। मॉरिशस के अधिकतर गांवों में भोजपुरी भाषा का प्रयोग होता है। इसके साथ-साथ हिन्दी के प्रति इनका गहरा लगाव रहा है। यही लगाव अनत को अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। जिसको लेकर अनत का कहना है "हिन्दी में, केवल हिन्दी में इसलिए लिखता हूं क्यांकि यह भाषा मेरी अपनी धमनियों में दौड़ते रहने वाली भाषा है। अंग्रेजी-फ्रेंच में न लिखकर हिन्दी में इसलिए लिखता हूं क्योंकि इस भाषा को मैंने स्कूल-कॉलेजों में नहीं सीखा यह मुझे मेरे वंश से मिली है। जब मैं सोचता भोजपुरी और हिन्दी में हूं तो किस ईमानदारी से फ्रेंच और अंग्रेजी में लिख पाऊंगा? हिन्दी में इसलिए भी लिखने को विवश हूं क्योंकि भोजपुरी और हिन्दी मेरे देश की मिट्टी की सौंधी गंध अपने में लिए हुए है। इन्हीं भाषाओं में इतिहास की आहें निकली हैं। मेरी हिन्दी भारत की हिन्दी नहीं है। यह मॉरिशस में जन्मी फली-फूली हिन्दी है।"[1] जिसको बनाए रखने के लिए अनत लगातार संघर्ष करते रहे हैं। अनत एक अध्यापक के रूप में हिन्दी पढ़ाने की शुरूआत करते हुए हिन्दी भाषाके महत्व, अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति छात्रों में सजगता लाते हैं, हिन्दी के प्रति रूझान पैदा करते हैं। इतना ही नहीं हिन्दी पत्रिका वसंत के संपादक के रूप से भी हिन्दी के बहुत बड़े हितैषी रहे हैं। इसकी उन्नति के लिए हमेशा संघर्षशील रहे। वसंत पत्रिका के संपादकीय द्वारा हिन्दी की वर्तमान अवस्था पर चिंतन करते हुए अनत लिखते हैं "हमारी विरासत और इतिहास तो यह कहता है कि हमारे लोग

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 16

अस्मिता के मूल और उसके साधन सूत्रअपनी भाषा हिन्दी को बनाये रखने के लिए उस अवरोध से भी लड़े। अधभूखे और अधनंगे रहकर, असुविधा और शोषण के बीच भी उन लोगोंने अपनी संस्कृति से अपने को बांधे रखा। उन्होंने 'आल्हा-खण्ड', 'रामायण', 'महाभारत' जैसे गंथों के बल पर ही इस अभियान को बरकरार ही नहीं रखा, बल्कि देवकीनंदन खत्री से लेकर प्रेमचंद की पुस्तकें भी खरीदी। उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो विरासत में हमें अपनी पहचान, अपने अधिकारऔर अपनी अभिव्यक्ति के लिए मर मिटने का यह हौसला नहीं मिलता होता। हमारे पूर्वजों ने जीवन के संत्रास और त्रासदी के बीच भी हमारे लिए जिस ज्योति का विस्तार किया, उसी के प्रकाश में आज हमारी अपनी कोई हैसियत बन पायी है।"[1] अभिमन्यु अनत का हिन्दी के प्रति रूझान हिन्दी की स्थापना का संघर्ष बन पड़ा, वे एक अध्यापक, साहित्यकार, संपादक के रूप में हर प्रकार से हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए संघर्ष करने लगे। इनकी रचनाओं में भी हिन्दी भाषा एक आंदोलन की भाषा, दमित शोषितों के बीच रागात्म उत्पन्न करने वाली आपसी दुख बांटने वाली, अपनी भाषा के रूप में दिखाई जाती है। जिसके पात्र अपना दुख-दर्द इस भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। अपनी पहचान अपनी संस्कृति की वाहिनी हिन्दी भाषा को बचाने के लिए अपने पूर्वजों के किये गये प्रयत्नों, बठकों में रामायण, गीता पाठ के बहाने हिन्दी का पठन-पाठन अपने अस्तित्व को बनाये रखने का प्रयत्न इसी हिन्दी के माध्यम से हुआ है, जिसकी अभिव्यक्ति अनत के उपन्यासों में अधिकतर दिखायी देती है। अभिमन्यु अनत ने अपना जीवन एक सेनापति के समान अपनी भाषा की रक्षा हेतु निरंतर संघर्ष में बिताया है। जब-जब विश्व के संदर्भ में हिन्दी भाषा के उत्थान की चर्चा होती है, तब-तब मॉरिशस तथा अभिमन्यु अनत का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। "150 वर्षसे हिन्दी मॉरिशस की मिट्टी के साथ जुड़ी रही है। मजदूरों के सारे संघर्षों की वह अभिव्यक्ति रही है। सांस्कृतिक आंदोलन से लेकर पहचान को बरकरार रखने की स्वर बुलंदी भी हिन्दी की ही है। अगर ऐसा न होता तो मॉरिशस आज एक स्वतंत्र राष्ट्र

[1] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएं, कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 327

के रूप में अपनी पहचान न बना पाता। डेढ़ सौ साल से हिन्दी इस धरती की सांस्कृतिक, सामाजिक, औद्योगिक और राजनीतिक  गतिविधियों और विकास के साथ जुड़ी रही है। उस पर कोड़े भी बरसे हैं और उसने सामंती गोलियों को भी झेला है। बहिष्कृत हो-होकर भी हिन्दी ने इस देश के स्वतंत्रता अभियान में जो भूमिका निभायी,  उसे भी बिसार देने की कृतघ्नता सामने आ ही गयी।"[1] इस वक्तव्य से अभिमन्यु अनत का भाषा के प्रति लगाव, उनका बेबाकपन सामने आता है जो भाषा के संघर्ष के लिए व्यवस्था से भी टकराने से पीछे नहीं हटता। वे राजनीतिक पार्टियों की कलई खोलते हैं कि भाषा को चुनाव का मुद्दा बनाने वाले राजनेता इसके दबाये जाने पर विरोध करने से ककतराते हैं। अनत चाहते हैं कि भाषा की रक्षा हेतु वैचारिक क्रांति लाने की आवश्यकता है। वे भाषा की रक्षा के लिए आंदोलन आरंभ करने की बात करते हैं। अपनी संस्कृति अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु अनत सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। अनत मानते हैं यदि हिन्दी मिट जाती है तो अपनी पहचान भी मिट जाएगी। अपनी संस्कृति गयी तो अस्तित्व ही गया। क्योंकि संस्कृति के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व ही नहीं होता, उसकी संस्कृति उसकी भाषा ही उसकी पहचान है। इसीलिए अनत ने हिन्दी की रक्षा को अपने संघर्ष का मुख्य उद्देश्य माना। इसी उद्देश्य के अंतर्गत मारिशसीय भारतीयों के सुख-दुख की दासता हिन्दी के माध्यम से हिन्दी कथा साहित्य एवं साहित्य लेखन के माध्यम से हिन्दी भाषा की अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बनी है। अनत का मानना है। "भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का साधन नहीं हुआ करती। वह तो पूरी जाति, एक पूरे राष्ट्र की अपनी अस्मिता, अपनी गरिमा होती है। उसके बिना संस्कृति विकलांग और गूंगी होती है। राजनीतिक शक्ति का स्रोत भी भाषा होती है। हम इस साम्राज्यवादी नारे को कैसे भूल सकते हैं कि अगर एक जाति को मिटाना हो तो पहले उसकी भाषा को मिटा दो। इस साम्राज्यवादी षड्यंत्र से हमें मानसिक स्तर पर गुलाम बनाने की प्रक्रिया आरंभ हुई है।"[2] अनत का मानना है कि हिन्दी आम आदमी की गरीबों की उन कुली मजदूरों की अभिव्यक्ति की भाषाह

[1] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 195
[2] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 197

है जिसकी मेहनत से ही देश प्रगति करता है, किंतु इस जन अभिव्यक्ति को यहां के चंद साम्राज्यवादी रोक रहे हैं। हिन्दी को प्रोत्साहित करना इस भाषा का प्रयोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही आम जनता की आवाज को बुलंद कर पायेगी। अपने इस प्रयास को सशक्त करने हेतु अनत एक साहित्यकार, संपादक आदि अनेक रूप से हिन्दी प्रेमियों के प्रेरणा स्रोत बने जो सत्ता से टकराने की क्षमता रखते हुए भाषा का संघर्ष जारी रखे हुए हैं। तभी तो साहित्य जगत में ये अपनी विशेष पहचान बना पाये हैं। जगदीश प्रसाद के अनुसार "मॉरिशस में व्याप्त भारतीयता को देखकर उसे लघु भारत की भी संज्ञा दी गई है। एक छोटे से देश में हिन्दी अपने चरम पर पुष्पित-पल्लवित हो रही है। हिन्दी के उन सेवियों में एक विशिष्ट नाम है अभिमन्यु अनत का, जिन्होंने हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं में अपना वर्चस्व स्थापित किया है।"[1] अनत युवा मंत्रालय के नाट्यकला विभाग से भी जुड़े तथा हिन्दी नाटकों को प्रोत्साहित करने के लिए अनत ने अजन्ता आर्ट्स नामक संस्था की स्थापना की जिसके लिए वे नाटक लिखते तथा निर्देशन भी करते हैं। मॉरिशस की हिन्दी कहानी कविता, उपन्यास तथा अन्य विधाओं में लेखन के अतिरिक्त मॉरिशस के प्रतिभावान रचनाकारों को लेकर हिन्दी पुस्तकों का संपादन भी किया है। बनरवाल के अनुसार "अनत का अतीत संघर्ष का रहा है। संघर्ष ने उन्हें डिगाया नहीं अपितु उन्हें भविष्य की प्रकाश-किरण का एक उपहार प्रदान किया है। वह भारतीयों के लिए भी हिन्दी विकास की दिशा में प्रेरक बनना चाहते हैं। उनका कहना है कि "संघर्ष के दिनों में मैंने मजदूरी की, गन्ने काटे, बस कंडक्टरी की, रंग कर्म किया और अब जीवन के नए कुरूक्षेत्र में प्रवेश कर रहा हूँ। जहाँ मैं भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी भाषा के लिए संघर्ष करूंगा। मैं हर वर्ष हिन्दुस्तान आकर भारतीयों को अपनी संस्कृति तथा भाषा के सम्मान के लिए झकझोर कर जाऊंगा।" हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय विस्तार देने के लिए उन्होंने मॉरिशस की धरती पर दो-दो विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित कराने में मुख्य भूमिका निभाई है।"[2] अनत पूर्णत: हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित हैं। अनत का चाहे अपनी

[1] विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम - जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द, पृ.सं. 164
[2] विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम - जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द, पृ.सं. 173

भारतीय यात्रा में हो या फिर मॉरिशस में हिन्दी का प्रचार प्रसार के लिए किया गया प्रयत्न हो, वे विसंस्कृतीकरण तथा भाषा का अपमान सह नहीं सकते। हिन्दी भाषा के दम पर अपना पेट भरने वाले जब अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को हेय मानकर अन्य भाषा का सहारा लेने में गौरव अनुभव करते हैं। उनका कड़े शब्दों में विरोध करते हैं। जैसे अनत शोषित वर्ग के हितैषी हैं वैसे ही गरीबों की भाषा शोषितों की गरीबों की भाषा हिन्दी को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम हमेशा बनाए रखना चाहते हैं। चाहे वह राजनैतिक, सामाजिक या व्यवस्था से संघर्ष क्यों न हो। हिन्दी भाषा तथा शोषित वर्ग के लिए इनका अथक संघर्ष इन्हें घुटन, त्रास, पीड़ा से दो चार करवाता रहा है। फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी और अपनी लेखनी तथा संपादकीय भाषण आदि हर तरह से वे हिन्दी की हिमायत करते रहे हैं। डॉ. कमलेश्वर प्रसाद भट्ट के अनुसार "भारतीय समाज की भांति मॉरिशस भी औपनिवेशिक शक्तियों के प्रपंचों एवं यंत्रनाओं का शिकार रहा। यद्यपि आजादी के पश्चात भी फ्रेंच और अंग्रेजी का वर्चस्व एवं हिन्दी भाषा भाषी लोगों पर उपनिवेशवादी मनोवृत्ति का शिकंजा और मजबूत होता गया, तथापि हिन्द महासागर के इस नवोदित राष्ट्र ने साम्राज्यवादी के विरूद्ध जितना लंबा संघर्ष किया, हिन्दी भाषा ने भी उससे कहीं अधिक अनवरत संघर्षक कर अपनी पहचान बनाने में कामयाबी हासिल की है।"[1] इस संघर्ष में एक सिपाही के समान अनत भाषा तथा ससंस्कृति की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष करते रहे हैं।

## 1.3 साहित्य जीवन

अभिमन्यु अनत का पारिवारिक परिवेश माता-पिता का हिन्दी भाषा तथा साहित्य के प्रति रूझान इन्हें साहित्य की ओर आकर्षित कर रहा था। शरतचन्द्र, प्रेमचंद जैसे महान रचनाकारों को पढ़कर अनत के मन में भी लेखक बनने की कामना हिलोरे लेने लगी। जैसे-जैसे इनकी पढ़ने में रुचि बढ़ती गयी वैसे-वैसे ही इन्होंने देश विदेश के सभी रचनाकारों को पढ़ा। अभिमन्यु अनत का साहित्यिक यात्रा की ओर प्रेरित होने का एक और प्रमुख कारण है, उपन्यास के विरूद्ध आवाज

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. भूमिका vi

उठाने की प्रवृत्ति व चुपचाप अन्याय सहते आए शोषितों को जगाने की चाह ये रखते हैं। अपने अधिकार के लिए भाषा के लिए संघर्ष, शोषितों के प्रति संवेदना तथा मॉरिशस के परिवेश का प्रभाव भी इनकी व्याधर कर देता है। इस विरोध को दर्शाने के लिए वे मॉरिशस में दबाई जाने वाली अपनी भाषा, हिन्दी भाषा के माध्यम से अपनी लेखनी द्वारा अभिव्यक्त करते चले आ रहे हैं।

"हिन्दी को एक लम्बे संघर्ष से गुजरना पड़ा है। ऐतिहासिक संघर्ष,आर्थिक व्यवस्था और स्वतंत्रता अभियान में हिन्दी-भोजपुरी-खड़ी बोली ने जन-जन में सम्मान प्राप्त किया है। गांधीजी, मणिलाल डॉक्टर, पं. आत्माराम विश्वनाथ तथा आर्य समाज के अग्रदूतों ने हिन्दी को जन आंदोलन का रूप देकर राजनीतिक चेतना विकसित करने तथा मॉरिशस के समाज में रूपांतरण का नया आयाम प्रदान करने में ठोस भूमिका निभायी है। मॉरिशस में हिन्दी ने विभिन्न समुदायों, प्रवासियों एवं शोषितों को एकजुट करने में सफलता प्राप्त की तथा फ्रेंच व अंग्रेजी शोषकों को घुटने टेकने को मजबूर किया। हालांकि उनका यह शोषण चक्र अब भी आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर नये-नये तरीके से जारी है, जिसको हटाने के लिए मॉरिशस के हिन्दी साहित्यकार सतत संघर्षरत हैं।"[1] ऐसे ही रचनाकारों की श्रेणी में अभिमन्यु अनत का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। जो अपने रचनाओं के माध्यम से अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का माध्यम साहित्य को बनाकर अपनी कलम से शोषणकर्ताओं की खबर ली है।

मॉरिशस 12 मार्च 1968 ई. को स्वतंत्र हुआ। संघर्ष भरे दिन समाप्त होने के साथ-साथ असमानता, विषमता का भाव बेकारी की समस्या, मोह-भंग, भ्रष्टाचार आदि स्थितियों से छुटकारा पाने की प्रबल इच्छा पूर्ण नहीं हुई। साथ ही विसंस्कृतिकरण का भय इन विसंगतियों से साधारण मनुष्य संघर्षरत रहा। ऐसी स्थिति में बेहतर समाज के निर्माण हेतु साहित्यकार प्रयत्नशील रहे। क्योंकि अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना था। डॉक्टर मणिलाल द्वारा

---

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. भूमिका से उद्धृत

सन 1909 में हिन्दुस्तानी प्रेस की स्थापना तथा हिन्दुस्तानी पत्रिका के साप्ताहिक तथा दैनिक प्रकाशन से प्रवासी भारतीयों के जीवन में एक नये युग का सूत्रपात्र हुआ। सन 1910 में हिन्दी में भी रचनाएं प्रकाशित होने लगी। "इसी क्रम में 1911 में मॉरिशस आर्य तथा 1912 में ओरिएंटल गजट नाम की पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित हुई।"[1] और इन पत्रिकाओं के माध्यम से लेख, कविता आदि हिन्दी में प्रकाशित हुए। मॉरिशस की प्रथम प्रकाशित हिन्दी रचना के रूप में होली काव्य तथा सत्यहोली गद्य लेखन को माना जाता है जो कि 2 मार्च 1913 ई. में हिन्दुस्तानी पत्रिका में छपी थी। यहां से शुरू हुई इस साहित्य परंपरा को आगे बढ़ाने की परंपरा में पं. आत्माराम, पं. लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी, श्री जयनारायण राय,पं. हरि प्रसाद रिसाल मिश्र, पं. यदुनंदन शर्मा, पं. कन्हैयालाल, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, ब्रजेंद्र कुमार भगत, मधुकर सोमदत्त बखौरी, मुनीश्वरलाल चिंतामणी, अभिमन्यु अनत, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव धुरंधर आदि विशेष उल्लेखनीय नाम माने जाते हैं। इन रचनाकारों में अनत अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। अनत का रचना संसार साहित्य की सभी विधाओं से युक्त है। नाटक, कहानी, उपन्यास, एकांकी, लघुकथा काव्य जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, भेंट वार्ता आदि हैं। मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में गद्य लेख सन 1921 में पं. आत्माराम विश्वनाथ का 'मॉरिशस का इतिहास'[2] पुस्तक प्रथम गद्य रचना के रूप में प्रकाशित हुई तथा मॉरिशस का प्रथम लघु उपन्यास 1960 में प्रकाशित लालकृष्ण बिहारी कृत उपन्यास 'पहला कदम'[3] माना जाता है। 1933 में प्रकाशित तपेश्वरनाथ चतुर्वेदी की कहानी 'इन दो प्रथम कहानी'[4] के रूप में देखा जाता है।" '1941'[5] में जयनारायण राय का जीवन संगिनी नाटक को प्रथम नाटक माना जाता है। 1951 में प्रकाशित श्री ब्रजेन्द्र कुमार भगत मधुकर की एकांकी 'आदर्श बेटी'[6] प्रथम एकांकी। तदुपरांत

---

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 46
[2] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 47
[3] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 137
[4] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 179
[5] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 226
[6] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्याम धर तिवारी, पृ.सं. 258

साहित्य लेखन का सिलसिला चलता रहा कई महत्वपूर्ण रचनाएं रची गयी कई महत्वपूर्ण रचनाकार हुए। उन रचनाकारों में मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य के विस्तार में अनत का नाम देश की सीमाओं को लांघते हुए न केवल मॉरिशस के साहित्यकारों में अपितु भारतीय प्रमुख हिन्दी साहित्यकारों में भी अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। मॉरिशस हिन्दी साहित्य की यात्रा भाषा के लिए संघर्ष इन सबको अनत ने काफी निकटता से झेला है और उनकी यह संवेदना उन्हें एक अच्छा साहित्यकार बनाती है जो कि मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य के विकास में विशेष भूमिका निभाते हैं।

अनत एक अच्छे साहित्यकार होने से पहले एक अच्छे चित्रकार भी थे। उनकी चित्रकारी में रुचि थी। फिर भी उनकी चित्रकला में उनका ध्यान इस सुन्दर देश की प्राकृतिक छटा, उसी सुंदरता के वर्णन की ओर केन्द्रित न होकर अपने आसपास घटित शोषण और यातनाओं का चित्रण अधिक था। जिस कारण वे अपने मन मस्तिष्क में चलने वाले  द्वंद्व अन्याय, अत्याचार, शोषण, असमानता के विरूद्ध अपनी व्याघ्रता को साहित्य के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति देते हैं। अनत कहते हैं "मेरी पहली चित्र प्रदर्शनी दर्द के रंग से भरे चित्रों में ही हुई थी। एक अधिक विस्तृत कैन्वस पर अपने विचारों को रखने के लिए लेखन की ओर झुका क्योंकि देख रहा था कि कला एक वर्ग विशेष के विलासी जीवन का अंग बनती जा रही है। कला तो महान शाश्वत और सुन्दर रही है लेकिन वह महानता वह शाश्वत रूप वह सुंदरता धन के बल पर महलों के डेकोरेटिव पीस बनकर रह जाती थी। कला जब अनुभूति और सौंदर्य के आनंद देने की विधा से कटकर पजेशन की चीज बन गयी तो मैंने उसे कट जाना ही हितकारी समझा। कला को मात्र संग्रह की चीज बनाने की इस प्रक्रिया को मैं स्वीकार नहीं कर सका। शुरू में रंगों को छोड़कर विचारों के लिए शब्दों की तलाश में कठिनाई जरूर हुई पर आप देखेंगे मेरी रचनाओं में रंग की मिलावट और रेखाओं का समन्वय आज भी उपस्थित है।"[1] अनत एक सच्चे कला प्रेमी हैं। वे अपनी

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 485

बेचैनी, व्यथा शोषण और शोषितों के प्रति आक्रोश व पीड़ा को लेकर अपनी लेखन प्रक्रिया द्वारा कविता, कहानी, उपन्यास के माध्यम से पहुंचाने का रास्ता अपनाते हैं। अनत बहुत कम उम्र से ही लिखना आरंभ कर चुके थे। 17 वर्ष के थे तभी उन्होंने नाटक का मंचन किया था। अभिमन्यु अनत का साहित्यिक जीवन नाटक लेखन से ही आरंभ हुआ है। इन्होंने "1954 में अजंता आर्ट्स की स्थापना की और अपने सामाजिक नाटक 'परिवर्तन' का मंचन त्रिओले के महेश्वर मंदिर के प्रांगण में किया।"[1] अनत की पहली रचना रेडियो नाटिका थी। फिर कहानी लिखना आरंभ किया। अभिमन्यु अनत की पहली प्रकाशित रचना है 'टूटी प्रतिमा' कहानी जो कि पंडित दौलत राम शर्मा के संपादन में मॉरिशस से निकलने वाली 'अनुराग' पत्रिका में शबनम उपनाम से 1960 में प्रकाशित हुई। आरंभ में अभिमन्यु अनत 'शबनम' उपनाम से भी रचनाएं किया करते थे। भारत में प्रकाशित होने वाली अनत की पहली रचना कहानी थी 'लहरें कराह उठी' शीर्षक से 1965 में शनी पत्रिका में छपी थी। इसके बाद सुषमता, नवनीत, सरिता, धर्मयुग, सारिका में सिलसिला चलता रहा। एक प्रसिद कहानीकार के रूप में ही नहीं वे एक चर्चित कथाकार, एक सिद्धहस्त उपन्यासकार रहे हैं। "और नदी बहती रही" उनका पहला उपन्यास है जो 1970 में छपा था जिसे मॉरिशस का आधुनिक हिन्दी उपन्यास माना गया। जो कि राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। तदुपरांत 'लाल पसीना', 'लहरों की बेटी', 'पसीना बहता रहा' और 'गांधी जी बोले थे' आदि अनेक उपन्यास इनके प्रसिद्धि पाप्त उपन्यास रहे हैं।

हिन्दी साहित्य में अनत अपना विशेष महत्व रखते हैं। वे सभी विधाओं में अपनी साहित्यिक प्रतिभा प्रदर्शित कर चुके हैं। हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं में आत्मकथा, लघुकथा, संस्मरण, जीवनी, यात्रा वृतांत, लेख, भेंटवार्ता आदि विशेष महत्व रखते हैं। इसके अतिरिक्त काव्य के क्षेत्र में 'नागफनी में उलझी सांसें', 'एक डायरी बयान', 'कैक्टस की दांत' आदि कविता संग्रह रचकर कविता के क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त की है। काव्य लेखन उन्होंने अन्य विधाओं के

[1] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएं - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 28

बाद ही आरंभ किया था। इनकी पहली कविता' पसीना किसी का फसल किसी की' नवभारत टाइम्स के संपादक को मॉरिशस में अनत से भेंट होने पर प्राप्त हुई जिसे उन्होंने अपने अखबार में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित किया था। इनके उपन्यास, कहानी, नाटक की तरह ही कविताओं में मजदूर मालिक के बीच की दरार आक्रोश, भावुकता, व्यथा, पीड़ा के चित्रण का आधिक्य है।

संपादक के रूप में भी अभिमन्यु अनत ने मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य के विकास में विशेष योगदान दिया है। वे मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य में ही नहीं अपितु हिन्दी के विश्व साहित्य में अपनी विशेष पहचान बनाते हुए न केवल विशेष लेखन कार्य किया है अपितु लेखक वर्ग को प्रोत्साहित करते हुए मॉरिशस के लेखकों को भी स्थापित किया है। वे मानते हैं कि "कला, कला के लिए नहीं जीवन मूल्यों के लिए और साहित्य भी उन्हीं जीवन मूल्यों की सार्थकता और महानता के लिए है।"[1] ऐसे ही उच्च जीवन मूल्य इनके साहित्यिक जीवन में दिखाई देते हैं। इन्होंने न केवल अपनी रचनाओं को भारत में प्रकाशित किया अपितु अपने देश के अन्य लेखकों की रचनाओं को भी भारत में प्रकाशित करवाने में सहायता की।

"आरंभ से ही मैंने चाहा था कि मॉरिशस के सभी अच्छा लिखने वालों की ओर से भारत में मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व हो। इस दिशा में सबसे पहला सहयोग मुझे कमलेश्वर जी का मिला। मेरे अनुरोध पर वे मॉरिशस का एक विशेषांक निकालने को तैयार हो गये थे। 'सारिका' के उस विशेषांक में कई मॉरिशसीय लेखकों को पहली बार छपने का अवसर मिला। इस सिलसिले को धर्मयुग ने भी आगे बढ़ाया। कुछ और लोगों ने अपना सहयोग दिया। मैंने अपने सभी प्रकाशकों से भी इस ओर ध्यान देने की मांग की। मैं अपने सहयात्रियों की पांडुलिपियां लेकर कई प्रकाशकों तक पहुंचा। एक-दो ने छापा एक दो ने स्वीकारा और एक-दो ने इनकार किया।मेरा यह विश्वास है कि मॉरिशस का हिन्दी साहित्य मात्र एक अभिमन्यु से नहीं बन सकता। उनके लिए हमें बहुत से नये लेखक को आगे आने का अवसर पैदा करने होंगे।"[2]

[1] आत्मविज्ञापन अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 71

[2] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 24

मॉरिशस के हिन्दी साहित्य की प्रसिद्धी में अभिमन्यु अनत का विशेष योगदान रहा है। नूतन रचनाकारों को प्रोत्साहित करते हुए विभिन्न विधाओं में साहित्य रचना करते हुए वे वसंत के संपादक के रूप में भी सक्षम रहे। मॉरिशस की हिन्दी कविता, मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि,हिन्दी कहानी आदि का संपादन किया। आत्मविज्ञापन में अपनी विशेष प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन किया। इतिहास ग्रंथ 'मॉरिशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास' तथा जीवनी साहित्य जैसे जन आंदोलन के प्रणेता प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल की जीवनी आदि रचनाओं से अपनी सिद्धहस्त होने का परिचय दिया।

साहित्य एवं कलात्मक गतिविधियों में संलग्न रहने के कारण अभिमन्यु अनत विश्व भर की तीस यात्राएं कर चुके हैं। संसार के रीति रिवाज तथा संस्कृतियों का केवल अध्ययन ही नहीं अपितु वैज्ञानिक प्रौद्योगिक प्रगति को समझा। अपने इन जीवन अनुभवों की अभिव्यक्ति की है। इनकी अब तक की कृतियों में 35 उपन्यास, 8 कहानी संग्रह, 7 कविता संग्रह, 6 नाटक, 2 इतिहास ग्रंथ, 2 जीवनियों और 4 विविध ग्रंथों की रचना की है। जीवन के 75वें साल में भी पूर्ण सक्रियता से विदेश में हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित अभिमन्यु अनत की अनेक साहित्य कृतियों पर भारत की कई साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं ने इन्हें समलंकृत किया है। जैसे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने इन्हें 'प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान से सम्मानित किया है। 20 वर्ष से अधिक वसंत के संपादक के रूप में कार्यरत रहे। अनत अपने अथक प्रयासों से विदेश में रहते हुए भी हिन्दी की सेवा में लगे रहते हैं।

### 1.3.1 साहित्य प्रेरणा

साहित्य हो या कला किसी भी सृजनात्मक कार्य में प्रेरणा का विशेष योगदान होता है। किसी विशिष्ट व्यक्तित्व या स्थिति से प्रेरित सृजनकर्म श्रेष्ठ होता है। अभिमन्यु अनत एक साहित्यकार बनने की प्रेरणा के रूप में अपने पारिवारिक संस्कार और देश की तत्कालीन परिस्थितियों को मानते हैं। अनत कहते हैं "प्रेरणा को मैं अनिवार्य मानता हूं। मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा

इतिहास की यातना, उससे उपलब्ध आम आदमी की वह दयनीय स्थिति और उसका उस स्थिति के सामने कभी न टूटने का संकल्प रहा है। इसी ने मुझसे मेरी रचनाएं लिखवायी हैं।"[1] एक साहित्यकार के लिए परिवेश व परिस्थितियों व्याकुल होकर उनकी आवाज बन अन्याय के विरूद्ध उनके संघर्ष को उनकी स्थिति को साहित्य केमाध्यम से समाज में उजागर करना ही उसका प्रमुख लक्ष्य होता है।

समाज में निर्धन मजदूर, शोषित, पीड़ितों के दुख दर्दों को उजागर करना साहित्यकार का परम कर्तव्य है। एक लेखक होने के नाते रचनाकार का शोषित पीड़ित जनता की पुकार व्यवस्था तक अपनी रचना के माध्यम से पहुंचाने का दायित्व होना चाहिए। यदि अनत को शोषित दमितों का लेखक माना जाए तो इसमें कोई दो राय नहीं है। अनत का लेखन दमित शोषित, किसान मजदूरों की हिमायत करता है और ऐसे विशेष रचनाकार इनके प्रेरणाश्रोत रहे जो ि‍क अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं और दमितों के हिमायती हों। वे मानते हैं कि "मैंने इस बात को प्रेमचंद से सीखा है। इसके विक्टर ह्यूगो और जॉन स्टेनवेक से सीखा है। नैट हेमसन और यूसीनारा कावनाता से सीखा है। पर्ल बक और एर्सकीन काल्डवेल से सीखा है। लू-शून और चेखोव से सीखा है और इसी रूप में साहित्यिक रचना की कोशिश की है।"[2] जनता के दुख दर्दों को वाणी देने वाले ऐसे महान रचनाकारों से प्रेरणा प्राप्त अभिमन्यु अनत की साहित्यिक प्रेरणा उनका अपना तथा अपने पूर्वजों का संघर्ष तथा वहां की परिस्थिति और परिवेश रहा है जिसके अनुरूप वे संघर्ष की आग में तपकर सोना बनकर चमक उठे।

मॉरिशस में भारतीयों पर जो शोषण, अत्याचार होते थे और उन अत्याचारों के फलस्वरूप आज भी विभिन्न रूपों में भाषा, संस्कृति आदि के लिए संघर्ष बन आज भी भुगता जा रहा है जिसे अनत मानसिक स्तर पर निरंतर झेलते रहे हैं। अभिमन्यु अनत के जीवन में इस मानसिक स्तर पर झेली गयी ऐतिहासिक यातनाओंके द्वंद्व, निर्धनता, संघर्ष आदि की प्रतिक्रिया स्वरूप वे लेखक

---

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 56

[2] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 15

बनने का निर्णय करते हैं। अनत स्वीकारते हैं कि भारत के प्रति इनका विशेष लगाव रहा है, भारत से इन्हें सदैव प्रेरणा मिली है। बचपन में माता पिता से भारत के बारे में सुन-सुन कर प्रेरणा मिलती रही। 11 साल की उम्र में ही रामायण, महाभारत के अतिरिक्त वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, झांसी की रानी, विवेकानंद जैसे महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र से प्रेरित होते रहे। महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों की जीवनियां पढ़ने का अवसर इन्हें घर पर ही प्राप्त हुआ जो कि इनके पारिवारिक परिवेश में पनपी भारतीय संस्कृति और साहित्य प्रेम का प्रभाव रहा है। जिसे पढ़कर अनत अपने अंदर एक स्फूर्ति पाते, साहस से रोमांचित हो जाते। भारत के प्रति विशेष प्रेम भारतीय होने का गर्व उन्हें भारतीय साहित्य की ओर आकर्षित करने लगा। अनत ने चंद्रकांत से लेकर शरतचन्द्र और प्रेमचंद की सभी पुस्तकें पढ़ डाली। एक लेखक होने का मानो बीजारोपण यही से हो चला था। साहित्य का अध्ययन करते हुए ही अनत के मन में साहित्यकार बनने की तीव्र कामना जागृत होने लगी। "चंद्रकांता के बाद प्रेमचंद साहित्य और फिर शरत बाबू की कोई भी पुस्तक न छोड़ने का प्रण जागा और जैसा कि पहले भी कह चुका हूँ, शरत बाबू का 'चरित्रहीन' पढ़ते वक्त से ही खुद को रचनाकार बनाने का पागलपन सिर पर सवार हो गया। धीरे-धीरे आधुनिक साहित्यकारों की रचनाओं के संपर्क में भी आता गया। यही नहीं, पढ़ने की सनक में प्यारे लाल आवारा से लेकर देहाती पुस्तक भंडार तक के सभी जासूसी उपन्यासों को भी चबाता गया। दूसरी ओर बंकित बाबू और बाद में ताराशंकर, विमल मित्र, भगवती बाबू और विशेषकर रेणु जी से प्रभावित हुआ।"[1] अनत लगातार साहित्य साधना में लीन होने चले गये। इन्होंने न केवल भारत के प्राचीन  ग्रंथ व महान क्रांतिकारियों, रचनाकारों की जीवनी तथा रचनाओं से प्रेरणा प्राप्त की अपितु अपने समय के रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ा उनसे भी प्रेरणा प्राप्त की। वे मानते हैं कि वे मॉरिशस की उपज हैं किन्तु भारतीयता उनकी धमनियों में दौड़ता है, इसलिए उनके साहित्यकार होने में भारत उनकी प्रेरणा का स्रोत रहा है। "मैं तो अंग्रेजी-

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 42-43

फ्रेंच की पुस्तकों के बीच छिपाकर जैनेन्द्र, यशपाल को पढ़ता रहता और बहुत बाद में राकेश, कमलेश्वर, भारती, यादव, मुक्तिबोध, धूमिल इन सहयात्रियों की रचनाओं से प्रेरणा पाता रहा। प्रोफेसर राम प्रकाश के संपर्क में आकर मैंने नयी दिशा पायी जो लेखक के रूप में मैंने पाया, वही मनुष्य के रूप में भी भारत से पाया है। अपने देश के पंडित वासुदेव विष्णुदयाल से मैं सबसे अधिक प्रभावित और प्रेरित रहा हूँ। फिर जयनारायण राय सोमदत्त बखोरी जैसे हिन्दी प्रेमी व्यक्तियों का सहयोग मिला। रोबर्ट एडवर्ड हार्ट, मार्सेल काबों, मात्कोम दे साजाल को चाव से पढ़ा। अपनी पीढ़ी के नेमा, धुरंधर, जीबोध असगर अली, देव वीरास्वामी आदि के विचारों का आदर करता हूँ।

जिन भारतीय लेखकों के साहित्य एवं विचार की दिशा में चलकर मैंने अपने रास्ते ढूंढे उनमें कुछ नाम पिछले उत्तर में दे चुका हूँ। उसी तरह भारत से बाहर के लेखकों में स्टेनबेक, माम, हेमिंग्वे, ह्यूगो, कामू स्रार्ट, काफका, ब्रकेट, वेकेट, टालस्टाय, दॉस्टोवस्की, पुश्किन, नैट हमसन, कावाबाता, लू शून, नेली, नेस्दा, मान, मोशविया, कलीवर, फेनन आदि से बहुत कुछ सीखा।"[1] अनत ने न केवल भारत या मॉरिशस के हिन्दी या अहिन्दी लेखकों से मात्र प्रेरणा ही नहीं पायी अपितु विश्व के प्रमुख लेखकों और विचारकों को पढ़ा और उनके विचारों का आदर करते हैं। उनकी रचनाओं के प्रति समन्वय भाव रखते हैं। इन सबके मानवतावादी मूल्यों से अनत प्रभावित रहे हैं। इन महान रचनाकारों की तरह अनत की रचनाओं में भी अपने समाज के इर्द गिर्द के दुख-दर्द, व्यथा, शोषण, अत्याचार के यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है। समाज में किसान, मजदूर, व्यथितों की पीड़ा अनत को बेचैन कर देती है, यह मानसिक यातना युक्त प्रेरणा ही उन्हें लेखन की ओर प्रवृत्त करती है। अनत मार्क्स और महात्मा गांधी दोनों के विचारों को विकास के लिए उपयोगी मानते हैं। मार्क्स के संसार में आर्थिक संतुलन देने की बात तथा महात्मा गांधी की सामाजिक संतुलन की बात फ्रायड के मानव के मानसिक संतुलन की बात इन तीनों महान

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 43

चिंतकों के इस प्रमुख चिंतन को समाज के लिए कल्याणकारी माना है। गांधी जी के विचारों से वे विशेष रूप से प्रभावित रहे कि उनके विचारों का समर्थन करते हुए शिक्षा तथा राजनैतिक हिस्सेदारी वाले बिन्दु को लेकर गांधी जी बोले थे, उपन्यास की रचना कर डाली। आंदोलन, चुनचुन, चुनाव,लाल पसीना और पसीना बहता रहा आदि में मार्क्स के विचारों को देखा जा सकता है जिसमें मालिक मजदूरों के संबंध दर्शाये हैं। फ्रायड के मानसिक संतुलन का प्रभाव भी 'मेरा निर्णय', 'चलती रहो अनुपमा' आदि कई उपन्यासों में दिखाई देता है। इन महान व्यक्तियों को अनत अपने गुरू के रूप में मानते हैं। "मैंने प्रेमचंद और शरतचंद्र से बहुत कुछ पाया है। एक तो आम आदमी को समझने की सीख और दूसरे एक कलाकार की दृष्टि। इन दोनों द्रोणाचार्यों से इस एकलव्य ने जो कुछ सीखा है उन सभी को आप मेरी रचनाओं में परख पायेंगे। विश्वविद्यालय में ज्ञानार्जन का अवसर न मिलने का मेरा एक बहुत बड़ा लाभ यह भी रहा कि मैंने अपनी पंसद से गुरू चुने। मेरा गुरू कभी विश्व का कोई महान लेखक रहा है तो कभी गली का अक्षरहीन आदमी भी।"[1]

इन प्रभावों के प्रभाव से अनत की एक रचना दृष्टि है जो उन्हें मॉरिशस के गणमान्य रचनाकारों में विशिष्ट बनाती है। उनकी हर रचना में एक विशेषता होती है। जो मॉरिशस के यातना भरे इतिहास को दर्शाती है तो कहीं मजदूर मालिकों का आपसी टकराव आंदोलन विरोध संघर्ष तो कहीं समाज के अनछुए पहलुओं को उजागर कर उनके कठोर जीवन के मर्म की अभिव्यक्ति करते हैं। इनकी लेखनी आधुनिकता लिए हुए हैं। तभी तो अनत अपने देश में तीन दशकों से हिन्दी साहित्य की रचनात्मकता के केन्द्र में रहे हैं।

### 1.3.2 अनत की रचना प्रक्रिया

अनत के उपन्यासों में मजदूरों, किसानों की स्थिति, आर्थिक विपन्नता, विरोध, आक्रोश, आंदोलन, यातनाएं आदि के ऐतिहासिक पीड़ादायक स्वर हैं तो दूसरी ओर राजनीतिक परिदृश्य,

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 190

मॉरिशसीय नारी के विविध रूप, सरकारी तंत्र तथा असंतोष आदि को लेकर ज्वलंत प्रश्नों को उठाया गया है। इन स्थितियों को यातनाओं को अनत अपने मन मस्तिष्क में महसूस करते हैं, इन सवालों से जूझते हैं कि यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई, क्या कारण है आदि प्रश्नों का मंथन करते हुए कथा को आगे बढ़ाते चलते हैं। अनत कहते हैं कि "रचना का बीजारोपण तो बिजली की तरह कौंधकर उसी वक्त हो जाता है जब स्थिति सामने आती है या वह आदमी सामने आता है जो आगे चलकर रचना का वह विशेष पात्र होता है जिसके लिए उसकी दुनिया के साथ-साथ मुझे उसके चरित्र और उसके संघर्ष को अधिक स्पष्ट करने के लिए एक समानांतर दुनिया का आविष्कार करना पड़ता है, जिसे मैंने हमेशा यथार्थ  के साथ कला का समन्वय माना है। सारे भाव-विचार, पात्र दर्शन मेरे अपने देश के होते हैं, लेकिन जो देश-विदेश की समस्याओं के साथ जुड़ते जरूर हैं।"[1] अनत के अनुसार रचनाकार यही किसी रचना का निर्माण नहीं करता लेखन कार्य के लिए उसे विशेष प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, उस पीड़ा की तीव्र अनुभूति को हर क्षण जीता है तब जाकर रचना अपना सार्थक रूप लेती है। वह किसी घटना या पात्र के बाहरी (ऊपरी) परिवेश पर नहीं उसकी आंतरिक पीड़ा को अनुभूति करता है। अनत कहते हैं कि "साहित्यकार ईजाद करता है, अपने ढंग से एक बेहतर संसार का आविष्कार करता है। वह सपना नहीं देखता, कल्पना नहीं करता। जो कुछ जीता है, जो कुछ भोगता है, उसी के बल पर आविष्कार करता है।"[2] अनत के अनुसार लेखन प्रक्रिया में मानवीय भाव, यातना, कड़वाहट, आक्रोश आदि के साथ उनकी स्थितियों को उनकी मानसिकता को रचनाकार झेलता है। लेखन की इस मानसिक व्याकुलता, छटपटाहट, उस पीड़ा को अनत मानसिक प्रसव मानते हैं। "रचना से पूर्व जब रचना का पहला विचार जेहन में कौंधता है तथा सृजन प्रक्रिया के दौरान जब उस विचार को मानसिक स्तर झेलता हूँ और रचना की समाप्ति पर जब प्रसव पीड़ा से मुक्त होता हूँ ये ही तीन क्षण मेरे

---

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 9

[2] आत्म विज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 74

जीवन के सबसे अधिक आनंद और संतोष के क्षण होते हैं।"[1] अनत अपनी रचना प्रक्रिया में स्वयं को समाज से, लोक से, उनकी अनुभव की गयी यातनाओं से जोड़ते हैं। अनुभूति की तीव्रता से ही उनके मन मस्तिष्क में ये सारे सवाल कौंधते हैं। जिसे वे लेखनी में ढालते हैं। माना कि उन यातना भरे क्षणों को उन्होंने अनुभव नहीं किया। फिर भी अपने परिजनों की यातना भरी दासतां अपने माता-पिता के मुख से सुन-सुनकर इनका मन पसीज जाता था। इस तीव्र अनुभूति को वे अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करते हैं जिसमें किसान मजदूर के जीवन संघर्ष का यथार्थ दिखाया गया है। अनत अपने उपन्यास 'लाल पसीना की लेखन प्रक्रिया में बस्ती-बस्ती घूमे तथा यातना शिविर में रह चुके वृद्ध लोगों से भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की झेली हुई यातनाओं को सुना वे सारे दर्दनाक जुर्म सह चुके वृद्ध तथा उनके वंशजों से मिलकर उनके संघर्ष के इतिहास को न केवल दर्ज किया, अपितु उनके एक-एक क्षण को मानसिक रूप से जीया व गहराइयों से अनुभव किया है। इस संघर्षपूर्ण व्यथा का यथार्थपूर्ण चित्रण कर उस गूंगे इतिहास को अभिव्यक्त किया है जो कि इनकी अनुभूति की तीव्रता का परिणाम रहा है कि इनकी रचना साहित्य जगत में उस ऊँचे दर्जे पर पहुंच कर इनकी विशेष पहचान बनाती है। जैसे कि प्रेमचंद ने 'साहित्य का उद्देश्य' में कहा है "साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गयी हो जिसकी भाषा प्रौढ़ परिमार्जित एवं सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसकी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयां और अनुभूतियां व्यक्त की गयी हो।"[2] अनत की वैचारिक अनुभूति और रचनाओं की अभिव्यक्ति, यथार्थ तथा मार्मिकता इस वक्तव्य की कसौटी पर खरी उतरती है। अनत मानते हैं कि किसी भी रचना के पीछे लेखक का एक उद्देश्य होता है। कुछ लेखक अलंकार, उपमा युक्त यशोगान से ही अपनी योग्यता मानते हैं। स्वयं को बड़ा रचनाकार मानते हैं किन्तु लेखक तो विचारों के मंथन में जीता है। उसी के माध्यम से सत्य को उजागर करता है। वर्तमान अवस्था में उसकी स्थिति को

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 8

[2] साहित्य समीक्षा और मार्क्सवाद - संपा. कुंवरपाल सिंह, पृ.सं. 155

अभिव्यक्त करता है। यथार्थ से समाज को परिचित करवाता है। जनता से, लोक से जुड़ने वाला लेखक निरंतर पीड़ा से गुजरता है, उसकी वह पीड़ा छटपटाहट व्यक्तिगत न होकर लोक कल्याण का भाव लिये होती है जो कि अपनी लेखनी द्वारा अराजकता, शोषण, घुटन, भेदभाव त्रासदी, विपन्नता के विरोध में आवाज उठाता है। विरोध तथा आंदोलन की चिंगारी से प्रगति की मशाल जलाता है। अपनी रचना प्रक्रिया के विषय में अनत कहते हैं कि "मैं शांति की खोज में नहीं रहता - यह दूसरी बात है कि पूरे अंतरिक्ष और पूरे विश्व की शांति की कामना मेरे भीतर हमेशा होती है। अपनी अशांति को मैंने हमेशा चाहा है। उसकी अकुलाहट में ही तो लिख लेता हूँ या फिर हलाहल का गिलास हाथ में ले लेता हूँ। क्षण भर की बेसुधी के लिए। मैंने अपनीसभी रचनाओं - कविता, कहानी, नाटक, लेख, उपन्यास आदि में यही चाहा है कि आदमी और आदमी के बीच संवाद हो सके, रिश्ते बन सके। चाहे वह मजदूर और मालिक के बीच का हो, राजनीतिज्ञ और अवाम के हो, ग्राहक और बनिया के हो, गुरू और शिष्य के हो, वेश्या और समाज के हो.......बस सभी के बीच मानव मूल्यों के आधारपर सही रिश्ता बन सके।"[1] अनत की रचनाओं में भेदभाव मिटाने की बात है। शोषण का अंत कर मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त करने की कामना है। वे मानते हैं कि आज समय की मांग अधिकार की लड़ाई है, जो समाज में सर्वदा व्याप्त रहेगी। बराबरी तथा बेहतरी के लिए संघर्ष दमन, शोषण, अराजकता का विरोध अधिकार की लड़ाई सर्वत्र है, जिसे साहित्य ने अपना स्वर बनाया है। जो जनता की आवाज, जनता का साहित्य बनता है। अनत अपना साहित्य सृजन, समाज तथा पाठकों को ध्यान में रखकर करते हैं। इसीलिए इनकी रचनाएं कला मात्र के लिए नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों को लिए हुए हैं। इसी में वे रचना की सार्थकता मानते हैं।

"रचना प्रक्रिया के दौरान अपने पात्रों के जीये जाने वाले हर लम्हें को भीतर ही भीतर जीता रहा था उनमें मेरे अपने भी स्पंदन थे, जिन्हें बिना किसी शिल्प के चक्कर में पड़े, बिना

---

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 36 एवं 40

किसी साहित्यिक दावे के अपनी टूटी-फूटी पर अपनी निजी भाषा में मैं लिख गया।"[1] इस आंतरिक पीड़ा को झेलने वाली रचना प्रक्रिया से गुजरते हुए अनत ने एक से बढ़कर एक उपन्यास साहित्य जगत को दिये हैं। जिसमें संघर्ष, आंदोलन, विरोध, सुख-दुख, शोषण, अत्याचार,प्रेम, त्याग, साहस, जीवन के हर रंग होते हैं। जो अपने आस-पास के यथार्थ को जीवंत कर अभिव्यक्त करते हैं। अपनी धरती से जुड़ी व्यथा पीड़ा को अनत ने विश्वव्यापी स्वर दिया है। जो विश्व की पीड़ा से संसार से जुड़ती है। इसीलिए अनत का साहित्य हिंदी संसार में विश्वव्यापी बन पड़ा है।

### 1.3.3 अभिव्यक्ति का संकट

अभिव्यक्ति का संकट इस समस्या से हर सच्चे रचनाकार को दो चार होना पड़ता है। लेखन की आजादी होते हुए भी रचना को व्यवस्था का हस्तक्षेप हमेशा झेलना होता है। कहीं राजनैतिक दांव पेंच के चलते, कहीं वोट बैंक के चलते। इस समस्या का सामना तो बड़े-बड़े रचनाकारों द्वारा इतिहास में भी किया गया है। आज भी आधुनिक युग में प्रेमचंद आदि महान रचनाकारों से लेकर सलमान रश्दी, तसलीमा नसरीन व अन्य को इस संकट के बुरे परिणाम झेलने पड़े।वैसे ही संकट अनत को भी झेलना पड़ा। व्यवस्था के हस्तक्षेप का विरोध का शिकार अनत की रचनाएं भी रही हैं। जहाँ सत्य व्यवस्था की कलई खोलता है वही अभिव्यक्ति का संकट होता है। इसीलिए शायद 'लाल पसीना' उपन्यास पर फिल्म बनाने की इजाजत सत्ता ने नहीं दी क्योंकि अनत के इस ऐतिहासिक यथार्थ को अपने मालिकों के विरूद्ध पाया गया। अनत कहते हैं "कहने को तो अभिव्यक्ति की आजादी हर जगह है, लेकिन हर जगह दिन-दहाड़े लेखक को व्यवस्था की बंदूक के सामने होना पड़ता है और रचना कैंची और आग के हवाले होती है। अमरीकी संविधान तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का तकाजा करता है पर वहाँ भी तो रचनाकार को अदालत तक जाना पड़ा है। रूस में आजादी होती तो 'सामिजदात' प्रकाशन क्यों होता? खैर, किस देश ने किस व्यवस्था ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है? हाँ कुछ लेखक जरूर होते हैं जिन्हें इस संकट का

---

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 67

सामना नहीं करना पड़ता। कोई तो रहे चारण युग का प्रतिनिधित्व करने के लिए! मैं तो अपने देश के उभरते लेखकों को कवि की यह पंक्ति सुनाता हूँ :

ठूंठी डाल पर अकेली बैठी कोयल कर गयी कूक
बाल न बांका कर सकी व्यवस्था की बंदूक।"[1]

अपने बेबाकपन और निर्भीकता के कारण अनत को साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं जीवन में एक संपादक के रूप में भी अभिव्यक्ति के संकट को झेलना पड़ा। अनत संघर्षपूर्ण जीवन जीने को तैयार है किन्तु झुकने के लिए नहीं। शायद इसीलिए इनकी रचनाओं में यथार्थ अभिव्यक्त होता रहा है। शोषण का विरोध प्रवासी भारतीयों की संघर्षपूर्ण गाथा का सत्य मन की गहराइयों को छू जाता है।

"वसंत कभी भी प्रशस्ति का मंच नहीं रहा यही कारण है कि उसे नेस्तनाबूद करने की कोशिशें बार-बार हुई, भीतर से भी और बाहर से भी। उस पर निगरानी रखने के लिए योद्धाओं का चक्रव्यूह भी बना था कभी। उस पर सेंसर की कैंची भी चली और उसे संपादकीय को जब्त करके जलाया भी गया, पर बावजूद इसके 'वसंत' जीवित रहा, अपने देश में भी और अपने देश के बाहर भी। उसकी रचनाओं की चर्चा भारत और विदेश के कोई पचहत्तर देशों के विश्वविद्यालयों में होती रही। युग के सभी श्रेष्ठ हिन्दी के लेखकों ने वसंत को चाहा और सहारा भी।"[2] मॉरिशस में महात्मा गांधी हिन्दी संस्थान की नींव ही हिन्दी तथा अन्य भारतीय  भाषाओं के साथ-साथ प्रवासी भारतीयों की संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए ही डाली गयी थी। किंतु जब अनत के द्वारा संस्थान की पत्रिका में हिन्दी के साथ हो रहे भेदभावव अन्याय पर संपादकीय लिखे जाने लगे तो उसे जला दिया गया। कभी तो पत्रिका के अंक से इनका संपादकीय ही उड़ा दिया जाता, इनकी लिखी रचनाओं को व्यवस्था विरोधी रचनाएं कहकर जब्त कर लिया गया क्योंकि इनकी रचनाएं कभी निदेशक के क्रोध का शिकार होती तो कभी प्रधानमंत्री तक की नाराजगी अनत को सहनी

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 20
[2] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएं, डॉ. कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 333

पड़ती, कभी समझौते के लिए मजबूर किया जाता तो कभी इस्तीफा तक देने को विवश किया जाता। किन्तु अनत ने कभी हार नहीं मानी। अपने जलाये गये संपादकीय को 'धर्मयुग' पत्रिका में छपवाया, चाहे उसे भारत की पत्रिकाओं का माध्यम ही क्यों न चुनना पड़ा हो किन्तु अपने लेखक होने के कर्तव्य से विमूढ़ नहीं हुए। अपनी लेखकीय अभिव्यक्ति को किसी के दबाव में रोका नहीं उसे निरंतर जारी रखा। अनत की 'एकलव्य' और 'शकुंतला' लघुकथाएं को आपत्तिजनक बताते हुए रोक दी गयी। किन्तु फिर भी अनत ने सत्ता के ठेकेदारों के सम्मुख घुटने नहीं टेके और अन्याय अत्याचार के खिलाफ बेबाक होकर रचना करते रहे। अभिमन्यु अनत द्वारा रचित 'मरिशा गवाह देना' नाटक के प्रसारण के बाद पूंजीवादी दमनकारियों के क्रोध के परिणामस्वरूप इन्हें टेलीविजन से हटा दिया गया। अनत स्वयं को समाज की अमानत मानते हैं, सत्ता की नहीं इसलिए वे समाज में फैले अंधकार, अज्ञानता को दूर करने हेतु अपनी रचना द्वारा लोगों को जगाना चाहते हैं। उन्हें यथार्थ से परिचित करवाते हैं। कमल किशोर गोयनका को दिये अपने साक्षात्कार में उन्होंने बतलाया है कि किस प्रकार अभिव्यक्ति का संकट उन्हें झेलना पड़ा। "साफ जाहिर है कि लेखक को सत्ता के सामने समाज का कवच बनकर खड़ा होना पड़ता है। अभिव्यक्ति का संकट उसे झेलना पड़ता है। मुझे देशद्रोही का खिताब भी मिला। मेरा एक नाटक 'कोप भवन' एक ही प्रदर्शन के बाद खतरनाक घोषित कर दिया गया और टेलीविजन कार्यक्रम में तय होकर भी प्रसारित नहीं हो सका। 'वसंत' पत्रिका के एक अंक की सभी प्रतियां जला दी गयी थीं क्योंकि उसमें मेरे संपादीय को व्यवस्था पचा नहीं पा रही थी। टेलीविजन पर मेरा 40 मिनट का पाक्षिक साहित्यिक कार्यक्रम चलता था। उसे भी आपत्तिजनक कहकर रोक दिया गया जबकि कलात्मक स्तर पर कुछ ही दिन पहले विभाग का निदेशक उसे स्थानीय टेलीविजन का सबसे बेहतरीन कार्यक्रम मान चुका था। व्यवस्था के भीतर रहकर भी मैंने कभी अपनी अभिव्यक्ति को गिरवी नहीं रखा।"[1] इन सारी बातों से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि साहित्यकार के रूप में

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 19

अपनी यात्रा के दौरान अपमान, शोषण, उपेक्षा आदि की निरंतर पीड़ा सहते हुए इन सारे कष्टों को यातनाओं को अपना साथी बनाकर वे निर्भीक बेबाक होकर दो टूक बात कहने की प्रवृत्ति अपनाकर एक साधक की तरह अपनी लेखन साधना में लीन रहते हैं।

वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक प्रगति को समझ अपने जीवन अनुभवों की अभिव्यक्ति को अपनी चौसठ से अधिक कृतियों में अभिव्यक्त किया है, वे आज भी साहित्य साधना में लीन हैं तथा संघर्षशील रहे हैं। चाहे वह भाषा का या फिर साहित्य लेखन में अभिव्यक्ति का संघर्ष हो वह निरंतर संघर्ष करते रहे हैं। आज भी वह अपनी लेखनी द्वारा आधुनिक मूल्य, व्यवस्था विसंस्कृतिकरण तथा समाज का बदलता स्वरूप बेरोजगारी, राजनैतिक दांव-पेंच, मानवता का हनन आदि पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं किंतु किसी भी संकट की स्थिति में अपनी कलम का साथ नहीं छोड़ा, अपनी रचनाधर्मिता निभाते चले आ रहे हैं।

## 1.4 कृतित्व

मॉरिशस में हिन्दी लेखकों की जो परंपरा रही है उनमें पं. आत्माराम, पं. लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी, पं. हरिप्रसाद, मुनीश्वरलाल चिंतामणी, प्रह्लाद रामशरण, रामदेव घूरंधर, सोमदत्त बखारी, पूजानंद नेमा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें अभिमन्यु अनत का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। मॉरिशसीय साहित्यकारों में भारत के हिन्दी साहित्य में भी अपनी पहचान बनाने वाले तथा मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य को भारत में लोकप्रिय बनाने वाले रचनाकार अभिमन्यु अनत ही हैं। अनत विशेष रूप से हिन्दी की सेवा में संलग्न हैं। वे मॉरिशस के शीर्षस्थ हिन्दी लेखक हैं। डॉ. श्यामाधर तिवारी लिखते हैं कि "अनत जी को मॉरिशस का कथा सम्राट एवं प्रेमचंद कहा जाता है। दूसरे शब्दों में अनत जी भारत में मॉरिशस के प्रेमचंद हैं। मॉरिशस के हिन्दी जगह में आपके पूर्ववर्ती साहित्यकार भी आपका सम्मान करते हैं। समवर्ती लोग आपकी साहित्यिक उत्कृष्टता अग्रगण्यता को स्वीकार करते हैं तथा परवर्ती लोग आपके लेखन से

प्रेरणा ग्रहण करते हैं।"[1] महासागर का मोती माने जाने वाले मॉरिशस द्वीपकी चमक, उसकी आभा को हिन्दी साहित्य जगत में अनत ने निखारा है। इनकी रचनाओं ने भारत में भी अपनी साख बना ली है जो आज भारत के हिन्दी साहित्य का चिरस्थायी अंग बन गयी है।

मॉरिशस के साहित्यकार होने के नाते से उनकी रचनाओं में अपने देश की व्यथा, जन पीड़ा की करहाट ही नहीं अपितु जन मुक्ति का स्वर भी गूंजता है। मानवीय पीड़ा, शोषण, अत्याचार सहते हुए पूर्वजों का रक्तीम बलिदान, अपने समय की अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, समाज में फैला अंधकार तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना हेतु संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति व्यापकरूप से इनकी रचनाओं में देखी जा सकती है जो संपूर्ण विश्व की अभिव्यक्ति बन देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करती है। उनकी रचनाओं में व्याप्त शोषण, अत्याचार और दासता का यथार्थ चित्रण, भेदभाव वाली भावना, अमानवीयता, अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति के प्रति विद्रोही स्वर तथा मानव मुक्ति की छटपटाहट की यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति है। मॉरिशस की राजनीति समाज, धर्म, संस्कृति आदि के जीवंत सत्य इनके साहित्य को प्रगतिशील साहित्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। शिवमंगल सिंह सुमन के अनुसार "अभिमन्यु स्वयं अपने कथा साहित्य में प्रेमचंद और मोहन राकेश के छोरों को जोड़ते से प्रतीत होते हें। वह जन्मजात विद्रोही हैं, राष्ट्र जागरण का संक्रमण काल उसकी वाणी में पूर्ण भावानिवेश में स्पंदित है।"[2] अनत के साहित्य में प्रगतिशील साहित्य के तत्व दिखाई देते हैं जिसमें रचना लोक से, समाज से, साधारण मानव से जुड़ी हुई है। मानव मुक्ति का स्वर है। समाज का यथार्थ है। आंचलिकता है, गांव है, किसान मजदूरों की दयनीय स्थिति का सत्य है। अधिकारकी लड़ाई है, पूंजीवाद का विरोध है। ये जनता के लेखक हैं, इनकी लेखनी के कारण ही इन्हें हिन्दी साहित्य जगत के महान लेखकों की श्रेणी में गिना जाता है।

---

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास -डॉ. श्यामधर तिवारी, पृ.सं. 85

[2] नागफनी में उलझी सांसें काव्य संग्रह की भूमिका से -लेखक अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 5

कमल किशोर गोयनका ने इन्हें मॉरिशस का प्रेमचंद माना है। "अनत केवल दर्द और पीड़ा, शोषण और अत्याचार के वर्णन तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने प्रेमचंद के समान मानव मुक्ति का शंखनाद भी किया है। वे अपने उपन्यासो, कहानियों, कविताओं आदि में निर्धन एवं अशिक्षित के शोषण की कथा कहते हैं। अमानवीय परिस्थितियों एवं असमाजिक चरित्रोंका उद्घाटन करते हैं, लेकिन इसके साथ अपने पात्रों एवं उनके विचारों में मानसिक, सांस्कृतिक, आर्थिकदासत्व की परिस्थितियों को छिन्न-भिन्न एवं ध्वस्त करने के लिए क्रांतिकारी बेचैनी तथा सक्रियता उत्पन्न करते हैं। उनकी यह विशेषता उन्हें जन पीड़ा के साथ जनमुक्ति का लेखक बना देती है। उनकी इस सर्वाधिक सशक्त विशेषता के कारण ही उनका साहित्य पढ़ते समय मुझे प्रेमचंद की याद बराबर आती रही। कुछ सीमाओं को ध्यान में रखते हुए प्रेमचंद और अभिमन्यु अनत में अंतर करना कठिन ही होगा।" अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। साहित्य की हर विधा में इनकी लेखनी विशेष महत्व रखती है। मॉरिशस के साहित्य को प्रोत्साहित करने हेतु मॉरिशस की कविता तथा कहानियों का संकलन कर संपादकीय भूमिका भी बखूबी से निभाई है।

अभिमन्यु अनत की लेखन प्रतिभा देखने से स्पष्ट विदित होता है कि मॉरिशस के हिन्दी साहित्य के विकास में इनका सर्वाधिक योगदान रहा है। मॉरिशस के डॉ. मुनीश्वर लाल चिंतामणी ने अपने साहित्य के इतिहास में अनत को मॉरिशसका सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकार बतलाते हुए कहा है "परिणाम और गुण दोनों की दृष्टि से अनत मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कहानीकार सिद्ध होते हैं।"[1] अनत जी की सबसे पहली रचना रेडियो नाटिका थी। फिर अन्य सभी विधाओं में लेखन शुरू किया। यदि प्रकाश की दृष्टि से देखा जाए तो अनत की सबसे पहली प्रकाशित रचना कहानी है 'टूटी प्रतिमा' तब से अनत साहित्य की विविध विधाओं में निरंतर सक्रिय होते चले गये। अभिमन्यु अनत ने साहित्य के क्षेत्र में एक कहानीकार के रूप में पदार्पण किया था। अत: इनके

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 10

कहानी संग्रह से ही इनकी साहित्यिक रचनाओंका विवरण आरंभ कर इसी क्रम में प्रस्तुति इस प्रकार है :

### 1.4.1 कहानी संग्रह

मॉरिशसीय कहानी के विकास में द्वितीय चरण का विशिष्ट महत्व रहा है। इसी विकास काल में कहानियों में अभिमन्यु अनत के कहानी संग्रहों खामोशी की चीत्कार इंसान और मशीन का प्रकाशन हुआ जो नवचेतना लिए हुए थी। जिसके द्वारा अधिकार के लिए संघर्ष, सांस्कृतिक संरक्षण, राजनैतिक दांव पेंच, सामाजिक आर्थिक विसंगतियों की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। भेदभाव वाली नीति का विरोध कर नवचेतना जागृत की है। मॉरिशसीय हिन्दी कहानी लेखन का विकास सर्वाधिक रूप से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सारिका, हिन्दुस्तानी कल्पना, कादम्बिनी, सुषमा, धर्मयुग आदि में भी मॉरिशसीय कहानियां छपी हैं। जो भारत में लोकप्रिय रही हैं जो मॉरिशसीय व्यवस्था की सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों तथा उससे जूझते मनुष्य का यथार्थ है।

सन 1976 में अभिमन्यु अनत की लघु कथाओं का संकलन

1. 'खामोशी के चीत्कार' प्रकाशित हुआ। यह अनत का प्रथम कहानी संग्रह है। इसके अंतर्गत इनकी 13 कहानियां संग्रहित हैं। खामोशी की चीत्कार, जहर और दवा, माथे का टीका आदि।

2. इंसान और मशीन - 1976 में कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ इसमें कुल 44 लघु कथाएं संकलित हैं। जिनमें एकलव्य, अखबार, मशीन की मृत्यु, मुट्ठी में बंद उजाला आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों के माध्यम से अनत ने सांस्कृतिक विभेद, रंग भेद तथा राजनैतिक दांव पेंच आदि पर करारा व्यंग्य कसा है।

3. 'वह बीच का आदमी' 1981 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में 18 कहानियां संग्रहित हैं। इनमें बादलों के बीच, वह बीच का आदमी, मान रक्षा, जीत, पुनर्जन्म आदि उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में मनुष्य के जीवन मूल्य तथा अतीत और वर्तमान से जुड़ते हुए समाज में शोषित,

दमितों के इतिहास की यातनाओं को झेलने वाले मनुष्यों की संघर्षपूर्ण दुखद गाथा है। इनमें पनपे विरोध तथा आंदोलन को अनत ने वाणी दी है।

4. 'एक थाली समंदर' 1987 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल 24 कहानियां संग्रहित हैं। इनमें आवाज, एक थाली समंदर, क्षितिज, नदी, तलाश आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें सामाजिक यथार्थ नारी के विभिन्न रूप और संवेदना की अभिव्यक्ति है।

5. 'अब कल आएगा यमराज' 2003 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल 22 कहानियां हैं। इनमें वह आजादी, रिश्ते, पत्रकार की प्राथमिकता, अब कल आएगा यमराज, कड़वी रोटी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में मानवीय चेतना है, राजनीतिक छलावे संवेदनहीनता स्त्री के अस्तित्व के बदलते यथार्थ तथा मानवीय चेतना है।

6. मातमपुरसी 2007 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में 24 कहानियां हैं। इन कहानियों में समय, झंकार, निर्णय, मातमपुरसी विशेष उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में समयबोध है जो कि अपने समय का प्रतिनिधित्व करती है। मनुष्य जीवन की विडम्बनाओं का त्रासद वर्णन है। यातनाग्रस्त मनुष्यों की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। जिसमें समाज के मजदूर वर्ग, मध्य वर्ग, स्त्री आदि हैं।

अनत की सोलह कहानियों का एक कहानी संग्रह फ्रेंच भाषा में भी प्रकाशित हो चुका है। इनकी लगभग तीन सौ से अधिक कहानियां प्रकाशित हुई हैं।

### 1.4.2 उपन्यास

मॉरिशस के शीर्षस्थ हिन्दी उपन्यासकार के रूप में अभिमन्यु अनत का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। अनत ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन कार्य किया परंतु मॉरिशस के कथा सम्राट अभिमन्यु अनत उपन्यासकार के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे हैं। वे मॉरिशस के उपन्यास सम्राट हैं। एक के बाद एक लगातार उपन्यास लिखकर न केवल अपने विषय वैविध्य एवं शिल्प प्रयोग की विशिष्टिता का परिचय दिया अपितु अपने संख्यात्मक तथा गुणात्मक उपन्यासों की भरमार से मॉरिशसीय उपन्यासों का सूत्रपात्र ही नहीं बल्कि उसे प्रगतिगामी भी बनाया।

मॉरिशस के हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदानकरने में उनके उपन्यासों का विशेष योगदान रहा है। वे इस विधा के प्रबल पोषक के रूप में जाने जाते हैं। अब तक इनके 35 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। मॉरिशस का हिन्दी उपन्यास लेखन सन 1960 में 'पहला कदम' उपन्यास से आरंभ होता है, किन्तु आधुनिक उपन्यासों की दृष्टि से 1970 में प्रकाशित अभिमन्यु अनत का उपन्यास 'और नदी बहती रही' से हिन्दी उपन्यास का वास्तविक उद्भव और विकास होता है।

1970 में राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित होने वाला अनत जी का पहला उपन्यास 'और नदी बहती रही' किसी बहुत बड़ी उपलब्धि से कम न था। इनकी पहली रचना ने भारतीय पाठकों में खूब प्रशंसा बटोरी थी। तदुपरांत संख्या और श्रेष्ठता की दृष्टि से इनके कई उपन्यास भारतीय पाठकों तक पहुंचे तथा सराहे गये। इनके उपन्यासों की कथावस्तु समाज में व्याप्त अत्याचार और शोषण के विरूद्ध आंदोलन और संवेदना से ओत-प्रोत होती है। जिसमें मॉरिशस के वर्तमान समाज एवं राजनीतिक जीवन में अवसरवाद तथा भाई भतीजावाद, पूंजीवाद का विरोध करता युवा वर्ग,जाति-पाति के भेदभाव के प्रति विरोधी भाव, आप्रवासियों के संघर्ष त्रासदी एवं शोषण पूर्ण जीवन की करूण गाथा तथा संघर्ष रहा है। बेरोजगारी की समस्या, मजदूरों का संघर्ष, धनी-निर्धन, शोषक-शोषित, काले गोरेके बीच का द्वंद्व तथा संघर्ष युक्त आधुनिक नारी वेश्यावृत्ति जैसे ज्वलंत प्रश्नों को उठाया है। अभिमन्यु अनत का मानना है "मेरी प्रेरणा हमेशा मेरे अपने इर्द गिर्द के दुख-दर्द के बीच से आती है। इस प्रेरणाकी मानसिक यातना ने ही मुझे उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त किया और उसी का फल है यह मेरा पहला उपन्यास 'और नदी बहती रही'।"[1] अभिमन्यु अनत ने समाजकी विविध समस्याओं को अति निकटता से अनुभव किया है जिसे वे अपने उपन्यासों में प्रतिबिंबित करते हैं।

अभिमन्यु अनत की औपन्यासिक कृतियां इस प्रकार हैं:

---

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 9

1. 'और नदी बहती रही' 1970 में भारत से राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होने वाला यह अनत जी का पहला उपन्यास है जिसमें मॉरिशस के समाज का यथार्थ चित्रण है। मजदूरों के संघर्षरत जीवन से जुड़ी कई समस्याओं को उजागर किया है। उनकी दयनीय स्थिति, शोषण, दमन, गरीबी तथा महाजनों के ऋण तले दबे दीनों की करूण गाथा है। अनत का यह उपन्यास नारी जीवन की विवशताओं को भी प्रस्तुत करता है। समग्र दृष्टि से यह उपन्यास सामाजिक उपन्यास है। इनकी इस पहली रचना ने भारतीय पाठकों में खूब प्रशंसा बटोरी थी। तदुपरांत इनकी एक से बढ़कर एक अनेक उपन्यासों की कड़ी जुड़ती गयी। जिससे इन्हें भारत में लोकप्रिय बनाया।

2. आंदोलन 1971 नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास मॉरिशस के वर्तमानसमाज एवं राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालता है जिसमें पूंजीवाद, अवसरवाद तथा भाई-भतीजावाद आदि के चलते बेकारी की समस्या के विरूद्ध युवा वर्ग की तीव्र प्रतिक्रिया के रूप में उनके संघर्ष को उजागर किया है तथा धर्म, जाति-पाति के बंधनों पर प्रकाश डालते हुए समाज में बदलाव लाने की कामना की है।

3. एक बीघा प्यार 1972 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित यह आंचलिक उपन्यास है। इसमें ग्रामीण जनजीवन की अभिव्यक्ति है। मजदूर का अपनी जमीन से लगाव एवं उसके श्रम, साहस तथा निष्ठा की कहानी है। इसमें अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष तथा सामाजिक कटुताओं को दर्शाया है।

4. जम गया सूरज 1973 में सूर्य प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित यह श्रमिकों के संघटित होकर अपने अधिकार की आवाज उठाने वाला उपन्यास है। जाति अहंकार प्रेम विवाह, समाज के बंधन उसकी कठोरता स्त्री की स्थिति का चित्रण है।

5. तीसरे किनारे पर 1976 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित यह सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में छात्रों के बीच प्रेम प्रसंग राजनीतिक स्थिति तथा मजदूरों की समस्या को स्पष्ट किया है।

6. चौथा प्राणी 1977 में ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास पहले भारत में आजकल पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इस सामाजिक उपन्यास में आर्थिक स्तर पर बंटे समाज का चित्रण तथा जाति-पाति को लेकर भेदभाव की स्थिति को उजागर किया है। ऐसी भेदभाव वाली रूढ़ियों को विरोध द्वारा कुछ स्तर तक घटता हुआ दिखलाया गया है।

7. लाल पसीना 1977 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास पहले धारावाहिक उपन्यास के रूप में 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हो चुका था। जो कि अनत के ख्याति प्राप्त उपन्यासों की श्रेणी में सर्वोच्च है। जिसे साहित्य जगत में खूब सराहा गया है। यह एक प्रगतिशील उपन्यास के रूप में बहुचर्चित है। लाल पसीना उपन्यास भारतीयों तथा उनके पूर्वजों के जीवन संघर्षतथा त्रासदी एवं शोषणपूर्ण जीवन की करूण गाथा के रूप में दो खंडों में बंटा है। पहले खंड में उपन्यास के नायक कुंदनका गोरों के विरूद्ध संघर्ष शोषितों का अधिकार दिलाने का प्रयास तथा पारंपरिक संगठन लाने का प्रयत्न है। खंड में किसन सिंहका मजदूरों के नेता के नेता के रूप में संघर्ष है जो कि आर्थिक स्थिति में सुधार का संघर्ष ही नहीं अपितु भाषा संस्कृति धर्म की रक्षा का संघर्ष लिये हुए है। यह एक ऐतिहासिक महाकाव्यात्मक उपन्यास है जिसमें हम 1850 से 1900 तक के आप्रवासियों के संघर्षमय जीवन से परिचय पाते हैं।

8. तपती दोपहरी 1977 में सरस्वती विहार दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास बेरोजगारी एवं किसान मजदूरों की समस्याओं पर प्रकाशडालता है जिसमें बेरोजगारी की समस्या तथा शोषित समाज की व्यथा का चित्रण ही नहीं अपितु किसान मजदूरों का संगठन और संघर्ष बतलाया गया है।

9. कुहासे का दायरा 1978 में राजपाल एंड संस नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ पर आधारित आंचलिक विशेषता युक्त उपन्यास है। इसमें वर्ण, वर्गभेद से दूषित राजनीतिक समस्या, आर्थिक वैषम्य युक्त मॉरिशस की व्यथा का यथार्थ रेखांकन किया गया है।

10. शेफाली 1979 में सरस्वती विहार दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास वेश्या जीवन की मार्मिकता पर आधारित है जो की समाज के अंधकारमय वेश्या जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत करता है। समाज के दायित्व को लेकर वेश्यावृत्ति जैसी ज्वलंत समस्या पर सवाल उठाता यह सामाजिक उपन्यास है।

11. हड़ताल कल होगी 1979 में सरस्वती विहार दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में मॉरिशसीय समाज के मजदूरों का संघर्ष तथा काले-गोरे, धनी-निर्धन, शोषक-शोषित आदि के द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। जो कि मजदूर संगठनों की स्थिति राजनीतिक षड्यंत्र आदि को अनत ने समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

12. चुन-चुन चुनाव 1981 में पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास भ्रष्ट चुनाव व्यवस्था तत्कालीन मॉरिशस के चुनाव की घपलेबाजी के दांव पेंच अनैतिक मूल्यों की बढ़ती प्रवृत्ति को उजागर किया है। हिन्दी भाषा के प्रति उपेक्षा आदि के प्रति विरोधी स्वर उठाया है। समाज में नई चेतना जागृत कर उसे स्वाधीकार के लिए संघर्श कर स्वार्थी मूल्यों को बदलने की चाह इस उपन्यास में है।

13. अपनी ही तलाश 1981 में अक्षर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में अस्मिता की तलाश है जो काले धंधों में फंसकर जीवन के सच्चे सुख को छोड़ भौतिक जीवन के नर्क में धंसता जाता है।

14. पर पगडंडी नहीं मरती 1983 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित लाल पसीना के बाद यह अनत का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। चार खंडों में विभक्त इस उपन्यास में मजदूरों का संघर्ष है। ऐतिहासिक यातनाएं, कोठी मालिकों के दुर्व्यव्हार, जातीय अहंकार का रूढ़ियों का विरोध और संगठन तथा आंदोलन से बेहतर जीवन जीने का प्रयत्न है।

15. अपनी-अपनी सीमा 1983 में राजपाल एंड संस दिल्ली से प्रकाशित यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन हुआ है।

16. गांधी जी बोले थे 1984 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास को लाल पसीना की अगली कड़ी के रूप में माना जाता है। खेत मजदूर के शोषण के प्रवासी भारतीय मजदूरों के शोषण के विरूद्ध संघर्ष का चित्रण है। ज्ञान, शिक्षा के माध्यम से क्रांति के प्रकाश को फैलाकर गांधी जी के परामर्श अनुसार विधानसभा तक अपनी आवाज बुलंद करने हेतु संघर्ष की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में है।

17. मार्क ट्वेन का स्वर्ग 1986 में प्रभारत प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित यह एक सामाजिक उपन्यास है। प्राकृतिक सौंदर्य युक्त मॉरिशस को एक आंतरिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है जिसमें आर्थिक असमानता, काले गोरे का भेद, जीवन मूल्य, नैतिक मूल्यों का हनन है तो दूसरी ओर अन्याय के विरूद्ध संघर्ष भेदभाव का विरोध, न्याय की स्थापना आदि इस उपन्यास का मुख्य स्वर रहे हैं।

18. फैसला आपका 1986 से प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में अफीम की तस्करी की समस्या और उसके मूल में बंधे मतलब साधने वाले बंधनों में बंधी जेल में कैद युवती की कहानी है जिसका फैसला अनत जी ने पाठक वर्ग और समाज पर छोड़ा है।

19. मुडिया पहाड़ बोल उठा 1987 में प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों का चित्रण है। भ्रष्टाचार के विरोध में नायिका का मजदूर नेता के रूप में संघर्ष है।

20. शब्द भंग 1989 में प्रभात प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित यह एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में अनत ने राजनैतिक दांव पेंच वाले आधुनिक जीवन की विसंगतियों को रूपायित किया है। ऊंचे पद पर आसीन काले धंधे करने वाले सफेद पोश लोगों का पर्दाफाश करना ही शब्द भंग है। जिसमें भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्षरत नायक को उसकी अधूरी क्रांति के साथ खामोश कर दिया जाता है।

21. अचित्रिता 1991 में किताब घर, नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में सामाजिक तथा राजनैतिक असंगतियों का यथार्थ चित्रण है जिसमें वेश्या व्यवसाय की अनैतिकता व नैतिकता को वाणी के माध्यम से उजागर किया है जो देश के लिए अच्छा काम करना चाहती है।

22. और पसीना बहता रहा 1993 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास को लाल पसीना तथा गांधी जी बोले थे की आगे की कहानी के रूप में रचा गया है। इन तीनों रचनाओं को एक दूसरे से जोड़ते हुए अनत ने इन उपन्यासों को एक कड़ी के रूप में माना है। इन्होंने और पसीना बहता रहा उपन्यास में लिखा है कि ये मजदूरों के संघर्ष की त्रिकथा है।

23. लहरों की बेटी 1995 में प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस उपनयास में मॉरिशस के गिरमिटिया का संघर्ष उस व्यवस्था के प्रति है जो इनकी मेहनत पर राज करती है। कड़ी मेहनत करके भी उसके मुनाफे से उन्हें वंचित रखा जाताहै और वे अपने हक की लड़ाई के लिए संघर्ष करते हैं। भेदभाव रहित को-ऑपरेटिव सभा के द्वारा सभी को समान अधिकार की बात करते हैं।

24. चलती रहो अनुपमा 1998 में किताब घर प्रकाशन नयी दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में नायक अभिजीत की दत्तक पुत्री अनुपमा के स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली जीवन शैली के साथ-साथ अपनी अस्मिता को मिटने नहीं देती निरंतर संघर्षशील रहती है।

25. आसमान अपना आंगन 2000 में प्रकाशत प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में राजनीतिक चुनावी दांव पेंच हैं। एक कलाकार का समाज और उसकी प्रगति के लिए चिंतन है।

26. एक उममीद और 2003 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में प्रकृति और पर्यावरण के विघटन की समस्या को लेकर समकालीन जीवन में सामाजिक प्राकृतिक प्रदूषण पर वैचारिक चिंतन को आधार बनाते हुए गर्भस्थ शिशु को नैरेटर बनाकर कथन आगे बढ़ाया है।

27. अस्ति अस्तु 2003 प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में मॉरिशस की वर्तमान स्थिति के सामाजिक राजनीतिक जीवन के पतन का सूक्ष्म चित्रण है।

28. क्यों न फिर से 2004 में किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में नारी मुक्ति की बात एवं आधुनिक नारी का चित्रण है।

29. हम प्रवासी 2004 में प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों द्वारा भोगे गये नारकीय जीवन तथा उस नरक को स्वर्ग में परिवर्तित करने की संघर्षमयी गाथा है।

30. मेरा निर्णय 2009 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास में स्त्री की आंतरिक पीड़ा है जो कि आधुनिकता और परंपरा के द्वंद्व में अपना निर्णय लेने के मानसिक द्वंद्व से गुजरती है।

अनत के अन्य उपन्यास में 31. अपना मन उपवन 32. लहलहाती पुकार 33. घर लौट चलो वैशाली 34. जयगांव का बहादुर आदि में प्रकृति प्रेम, वर्तमान समाज की स्थिति तथा विसंस्कृतिकरण पर यथार्थ है। अभिमन्यु अनत पूरी दक्षता के साथ केवल मॉरिशसीय समाज की ही नहीं अपितु भारत एवं विश्व भर की समस्याओं के प्रति चिंतित हैं। वे अपने उपन्यासों द्वारा केवल मॉरिशसीय समाज की ही नहीं अपितु भारतएवं विश्व भर की समस्याओं के प्रति चिंतित है। वे अपने उपन्यासों द्वारा केवल शोषण, अत्याचार, बेकारी की समस्या आदि का चित्रण ही नहीं अपितु सभी के लिए बेहतर जिंदगी की कामना करते हैं। डॉ. श्यामधर तिवारी के अनुसार "वस्तुत: स्वतंत्रता के पश्चात ही मॉरिशस के सभी उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है। इन प्रकाशित उपन्यासों में भी सर्वाधिक लेखन कार्य संख्यात्मक एवं गुणात्मक विषय वैविध्य एवं शिल्प प्रयोग की दृष्टि से मॉरिशस के कथा सम्राट अभिमन्यु अनत ने ही किया है। अत: इस युग को अनत युग की संज्ञा देना सार्थक एवं समीचीन होगा। अनत जी ने ही स्वतंत्रता के पश्चात उपन्यास विधा की मौलिक उद्भावना उसके पल्लवन, पुष्पन, विकसन और उसकी समृद्ध परंपरा को पुष्ट किया। अत: उपन्यास के सूत्रपात एवं वैविध्यकारिणी विकास परम्परा के पोषक के नाम पर स्वतंत्रोत्तर उपन्यास साहित्य का नामकरण (अनत युग) के रूप में करना मॉरिशस के उपन्यास साहित्य को

गौरवान्वित करना ही है।"[1] अनत जी की औपन्यासिक विशिष्टता समग्र रूप से उन्हें मॉरिशस का श्रेष्ठ उपन्यासकार स्थापित करती है।

### 1.4.3 नाटक

मान जाता है कि मॉरिशस में नाटक विधा उतनी ही पुरानी है जितने की मॉरिशस में रह रहे भारतीय पूर्वज। मॉरिशस के 'यूथ हाउस' के लगभग 65 साल पहले अंग्रेजी, फ्रेंच और बाद में कभी-कभी हिन्दी के नाटकों का मंचन भी होता था। अभिमन्यु  पहली साहित्यिक रचना रेडियो नाटिका थी। 17 वर्ष की आयु में 'परिवर्तन' शीर्षक से अपना पहला नाटक महेश्वर नाथ मंदिर के भवन में प्रस्तुत किया। इस नाटक के द्वारा परंपरागत नाअकों की मानसिकता को बदलते हुए एक नयी दिशा नए विचारों की ओर दर्शकों को आकर्षित किया।

"मॉरिशस में परंपरागत नाटक का युग समाप्त हो चुका था। राजा हरिश्चन्द्र और रामायण, महाभारत संबंधी नाटकों का उस समय बोलबाला था। उस परंपरा की समाप्ति के कोई बीस-पच्चीस साल बाद मैंने हिन्दी रंगमंच को जीवन देना चाहा। आधुनिक समस्याओं पर नाटक लिखकर प्रस्तुत करने से पहले मैं झिझकता रहा कि कहीं उन धार्मिक नाटकों के दर्शक उन्हें गलत न करार दें। शिवालय के प्रांगण में मैंने परिवर्तन नाम से अपना पहला  नाटक प्रस्तुत किया, उस दिन हजारों दर्शकों ने नियमित नाटक की मांग की।"[2] 1973 में पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी नाटक प्रतियोगिता का मंचन भी हुआ था। जिसमें इस विधा को बल मिला। अभिमन्यु अनत जी के नाटकों में सन 1977 में पहला नाटक 'विरोध' प्रकाशित हुआ।

1. विरोध 1977 में प्रकाशित अभिमन्यु अनत का पहला नाटक है। इसका पहला मंचन लखनऊ में हुआ था और सर्वाधिक सफल भी रहा। इसमें बेरोजगारी की समस्या है। युवा वर्ग की विद्रोहपूर्ण वाणी है। सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य कसा है।

---

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्यामधर तिवारी

[2] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 103

2. तीन दृश्य 1981 में प्रकाशित इस नाटक में तीन एकांकियां प्रस्तुत की है। स्वतंत्रता के बाद के मॉरिशस की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण है, आर्थिक विषमताओं से जूझता आम आदमी है। इस नाटक में तीन दृश्य हैं 'मूंगफली का छिलका', 'सोना और धूल' और 'कौन हो तुम' जो कि कथावस्तु में भिन्न होते हुए भी एक दूसरे से मेल खाते हैं, जुड़ते हैं। इसका मंचन भारत में बहुत हुआ है।

3. गूंगा इतिहास - 1984 में प्रकाशित इस नाटक में आप्रवासी भारतीय मजदूरों पर ढाये गये अत्याचार और उनके परिश्रम को अनदेखा कर चुप्पी साधने वाले मॉरिशस के इतिहास को गूंगा इतिहास कहा गया है। इसमें तीन अंक हैं। तीनों अंकों में अन्याय, अत्याचार, संघर्ष, विरोध, विद्रोह का स्वर है।

4. रोक दो कान्हा - 1986 में प्रकाशित इस नाटक में महाभारत के पात्रों के द्वारा आधुनिक समाज की ज्वलंत समस्याओं पर प्रश्न किये हैं। जिसमें कटाक्षपूर्ण संवादों की भरमार है। इसमें महाभारत युद्ध और उसके परिचय को समझाने हेतु प्राचीन पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

5. भरत सम भाई 1990 में प्रकाशित इस नाटक का आधार रामचरित मानस है। इस नाटक को लिखने के साथ-साथ इसका मंचन निर्देशन अनत ने ही किया था। इस नाटक के माध्यम से राजा प्रजा के संबध को उजागर किया है तथा राम एवं भरत के जीवन से जोड़ते हुए प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त देख कबीरा हांसी 1995 में प्रकाशित हुआ है।

अनत ने रेडियो के लिए भी नाटक लिखे हैं तथा अजंता मंच से अनत ने टेलीविजन के लिए कई नाटक लिखे तथा निर्देशन भी किया है। 1983 में मरिशा गवाह देना प्रकाशित हुआ। इस नाटक का विरोध होने के कारण अनत जी के टेलीविजन कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगा था। फिर भी अनत अपनी बात जनता तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम नाटक को मानते हैं।अनत ने टेलीविजन के लिए तीस से अधिक नाटक लिखे हैं।

एकांकियों में 'जारी रही तलाश', 'विज्ञान की खोज', 'बेहतर से बेहतर पाने की तलाश में विज्ञान वरदान से कैसे अभिशाप बनता है' उसके विध्वंसकारी स्वरूप को भी प्रस्तुत किया है।

### 1.4.4 कविता संग्रह

अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं।वे केवल एक सफल तथा समर्थ उपन्यासकार ही नहीं अपितु कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, अनुवादक, संपादक होने के साथ-साथ समर्थ कवि भी हैं। अपने साक्षात्कार में वे कहते हैं "कविताएं मैंने सभी विधाओं के बाद लिखी। मेरी पहली कविता का शीर्षक था 'पसीना किसी का फसल किसी की'। यह अपने में कई कविताओं के लिए हुए एक कविता थी।" उस समय नवभारत टाइम्स के संपादक महावीर अधिकारी मारिशस आये हुए थे। उन्हें कविता पसंद आयी थी और उन्होंने उस कविता को अपने अखबार में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया था। जहां तक उसकी वस्तु की बात है उसमें मजदूर जो कि मैं रह चुका था और मालिक के बीच की दरार पर मैंने सवाल उठाये थे। पहली कविता होने के कारण आक्रोश में भावुकता कुछ अधिक ही थी।"[1] यही से इनके विस्तृत रचना संसार का एक कवि का सफर आरंभ होता है। अनत जी की कविताओ में आक्रोश, विरोध, संघर्ष का स्वर गूंजता है।

1. नागफनी में उलझी सांसें 1977 इस काव्य संग्रह में 40 कविताओं को संग्रहित किया है। सम सामयिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए आर्थिक विषमता, राजनीतिक कटुता, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य किया है। मॉरिशस को संवारने में पूरा योगदान देने वाले गिरमिटिया मजदूरों पर ढाये गये जुल्मों की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

2. कैक्टस के दांत 1982 में प्रकाशित अनत जी का दूसरा काव्य संग्रह है। इसमें श्रमिक वर्ग की हीनावस्था को लेकर मजदूर मालिक के संबंधों के बीच पटी खाई पर प्रश्न उठाये गये हैं।

[1] अभिमन्यु अनत एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 5

3. एक डायरी बयान 1985 में प्रकाशित तीसरा काव्य संग्रह है। इसमें अधिकतर कविताएं डायरी लेखन के रूप में है। इन कविताओं में अनत जी ने अपने विचारों को कविता में ढाला है।

4. गुलमोहन खिल उठा 1994 में प्रकाशित हुआ। इसमें आम आदमी की पीड़ा और मुक्ति की कामना है तथा पीड़ा से मुक्ति को लेकर विरोध और संघर्ष का स्वर गूंजता है।

### 1.4.5 अन्य साहित्यिक विधाएं

प्रतिनिधि संकलन के अंतर्गत काव्य संग्रह के रूप में प्रवासी स्वर का प्रकाशन हिन्दी परिषद द्वारा सन 1971 में किया था जिसमें अभिमन्यु अनत और अन्य कवियों को मिलाकर 11 श्रेष्ठ कवियों की ही रचनाएं रखी गयी थी।

निबंध साहित्य मॉरिशस में हिन्दी निबंध साहित्य का उदय पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से हुआ है। पत्र-पत्रिका में लेखकों के माध्यम से प्रकाशित इन निबंधोंके विकास के क्रममें हिन्दुस्तानी पत्रिका का योगदान विशेष रहा है। मॉरिशस की आर्य पत्रिका का भी समान योगदान रहा है। मॉरिशस में निबंध साहित्य की शुरूआत में पत्रिकाओ में सम सामयिक राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विषय पर लेख निकलते थे। तदुपरांत निबंध संग्रह प्रकाशित होने लगे। अभिमन्यु अनत का आत्म विज्ञापन 1987 में प्रकाशित हुआ। इसमें अनत जी के चार लेख व निबंध हैं। मॉरिशस हिन्दी महासागर में एक नवोदित राष्ट्र 1988 में प्रकाशित हुआ।

संपादन मॉरिशस की हिन्दी कहानी 1976 मॉरिशस की हिन्दी कविता और मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि 1988 मॉरिशस की हिन्दी एकांकी 1990 मॉरिशस के हिन्दी कहानियां 1987 आदि सभी महात्मा गांधी हिन्दी संस्थान मॉरिशस की ओर से संपादक के रूप में इन रचनाओं को प्रकाशित कर अनत ने अपनी संपादन कुशलता का भी परिचय दिया है।

जीवनी - जीवनी साहित्य के अंतर्गत जन आंदोलन के प्रणेता प्रो. वासुदेव विष्णु दयाल की जीवनी 1986 में महात्मा गांधी संस्थान मोक मॉरिशस से प्रकाशित हुई। मजदूर नेता रामनारायण 1988 नटराज प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई। अनुवाद-मॉरिशस में भारतीय

प्रवासियों का इतिहास 1978 मैकमिलन दिल्ली से प्रकाशित हुआ। लेख रिपोर्ताज निबंध के संदर्भ में अनत कहते हैं "लेख, रिपोर्ताज या निबंध ये चीजें शायद ही मैंने कभी अपनी पसंद से लिखी हो। हर बार संपादकों के अनुरोध पर ही यह कठिन काम कर पाया हूँ.....मेरे ये लेख भी मेरे सभी लेखों 'रिपोर्ताजों' की तरह मेरी अपनी पसंद की उपज कभी नहीं रहे। इससे ज्यादा सफाई और क्या दूं।"[1] इस वक्तव्य से विदित होता है कि अनत जी के निबंध लेख रिपोर्ताज की संख्या कम होने का कारणइस ओर उनका कोई विशेष लगाव नहीं होना रहा है। किन्तु इस ओर कोई विशेष रुचि का न होना अनत रूपी सूर्य की आभा को कभी कम नहीं कर सकता है। अनत की साहित्यिक संपन्नता में कभी कोई कमी नहीं रही। गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों ही दृष्टि से अनत जी मॉरिशस के हिन्दी साहित्य के ही नहीं अपितु भारतीय साहित्यकारों में भी श्रेष्ठ रचनाकारों की श्रेणी में गिने जाते हैं।

**निष्कर्ष**

अनत जी के विस्तृत रचना संसार को यदि हम देखते हैं तो मॉरिशस के हिन्दी साहित्य रूपी वृक्ष के बीजारोपण से लेकर उसके एक विशालकाय वृक्ष में परिवर्तित होने में अभिमन्यु अनत का विशेष योगदान रहा है। अनत ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, काव्य संग्रह, संस्समरण, जीवनी आदि विविध विधाओं में लेखन कार्य किया है। अपवाद छोड़कर हिन्दी साहित्य की हर विधा में इनका विशेष योगदान रहा है।

पढ़ने लिखने तथा साहित्य के प्रति लगाव जैसे गुण इन्हें माता-पिता से विरासत में मिले हैं। अनत के जीवन के व्यक्तिक अनुभव और जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालने पर इनकी सवाल करने की प्रवृत्ति, इनके बाल्य काल से ही इनमें छिपे लेखक को प्रेरित करती रही है। जिस परिवेश में वे पले-बढ़े उसमें अनत का अपनी संस्कृति अपनी भाषा के प्रति विशेष लगाव रहा। यही लगाव इन्हें साहित्य की ओर आकर्षित करता रहा। जिस कारण वह 17 वर्ष की आयु से ही

[1] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 185

साहित्य से जुड़े तथा नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता से लेकर लगभग साहित्य की सभी विधाओं में अपनी सिद्धहस्तता का परिचय दिया। इनकी अधिकतर रचनाएं आक्रोश तथा विरोध के स्वर से भरी होती है। ये अपनी कलम के माध्यम से अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। जनलोक की आवाज बनते हैं। ऐतिहासिक क्रूर शोषक वर्ग के नग्न यथार्थ का चित्रण बेबाक होकर किया है। अपने निज जीवन में संघर्षरत रहते हुए इन्होंने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक त्रासदी का निकटता से अनुभव किया है। तभी तो इनकी रचनाओं में शोषण, अत्याचार और दासता का यथार्थ चित्रण है। मजदूरों के ये हिमायती हैं किसान मजदूरों के आंदोलन उनकी दयनीय स्थिति के चित्रण की भरमार इनके साहित्य में है। इनकी रचनाएं आधुनिक बोध लिए हुए हैं जो समाज में व्याप्त राजनैतिक, सामाजिक स्थितियों को स्पष्ट करती हैं। शायद इसी कारण से ही कुछ विद्वान इन्हें मॉरिशस का प्रेमचंद मानते हैं। क्योंकि ये जनसाधारण लोक से जुड़ने वाले रचनाकार हैं। इन्होंने न केवल अपनी लेखनी को समृद्ध किया अपितु मॉरिशस के लेखक वर्ग को भी प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं अभिमन्यु अनत ने मॉरिशस के लेखकों को स्थापित किया। भारतेंदु जी की तरह नये लेखकों को प्रोत्साहित किया।

हिन्दी क्षेत्र में मॉरीशस की पहचान अभिमन्यु अनत की साहित्य विपुलता से ही हुई है। अनत के कृतित्व का अध्ययन करके हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे एक ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं जिन्होंने मॉरिशस के हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदान किया है। इनकी अधिकतर रचनाएं अन्याय तथा मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों की पीड़ा का स्वर बनी है। शोषण अत्याचार का विरोध करने वाली नई चेतना जागृत कर प्रेरणादायक साहित्य समाज को देते हैं। इनकी रचनाएं बेहतर समाज और देश की प्रगति की कामना करने वाली रचनाएं हैं।

## द्वितीय अध्याय

## प्रगतिशीलता स्वरूप परिभाषा और तत्व

2.0 प्रगतिवाद की अवधारणा

2.1 प्रगतिशीलता का स्वरूप

2.1.1 परिभाषा

2.2 प्रगतिवाद और मार्क्सवाद

2.2.1 प्रगति की मार्क्सवादी धारणा

2.3 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

2.3.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

2.3.2 वर्ग संघर्ष

2.4 प्रगतिवाद के मूल तत्व

2.4.1 प्रगतिवाद का सैद्धांतिक पक्ष

2.4.2 प्रगतिवाद और प्रगतिशील

निष्कर्ष

## द्वितीय अध्याय

## प्रगतिशीलता स्वरूप, परिभाषा और तत्व

प्रगति एक ऐसी प्राकृतिक गति है, जिसका परिवर्तन संसार को गतिमान रखता है। साधारण अर्थ में प्रगति अर्थात आगे बढ़ना। प्रगति का सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि मानव समाज की स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है। वह लगातार अभिष्ट दिशा में, किसी महान लक्ष्य की पूर्ति की ओर बढ़ रहा है। अत: यह भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण है क्योंकि प्रगति के कारण ज्ञान की बढ़ोत्तरी और लोगों के विचारों और दृष्टिकोणों में विशेष और उच्च परिवर्तन दिखाई देते हैं। परिवर्तन की इसी समझ एवं समाज की नवीन समस्याओं को दृष्टिगत रखना ही साहित्य का उद्देश्य होता है। वास्तव में प्रगतिवादी धारणा का इतिहास आधुनिक विज्ञान की प्रगति, बुद्धिवाद के विकास और आज़ादी तथा बराबरी के लिए होने वाले राजनैतिक, सामाजिक संघर्षों के इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। जो साहित्य विकास तथा आपसी सद्भावनाओं को पैदा करता है, वही प्रगतिशील साहित्य है। ''प्रगतिशील साहित्य अंग्रेजी के प्रोग्रेसिव लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी साहित्य में इस शब्द का प्रचार 1935 ई. के आस-पास विशेष रूप से हुआ जब ई.एम. फार्स्टर के सभापतित्व में पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ। हिन्दुस्तान में उसके दूसरे साल डॉ. मुल्क राज आनंद और सज्जाद जहीर के उद्योग में जब उस संस्था की शाखा खुली और प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ में उसका प्रथम अधिवेशन हुआ तो यहाँ 'प्रोग्रेसिव लिटरेचर' अथवा

'प्रगतिशील साहित्य' का प्रचार हो गया। कालक्रम अथवा प्रकारांतर से यही प्रगतिवाद हो गया।''[1]

साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी आंदोलन मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित है। जिसका प्रेरक आधार मार्क्सवादी जीवन दर्शन है। इसमें अतिमानव या अलौकिक शक्ति की आवश्यकता को नकार कर यह घोषित किया है कि मनुष्य सर्वोपरि है। इन विचारों के फलस्वरूप द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की प्रतिष्ठा हुई और विज्ञान के नेतृत्व द्वारा नूतन समाज की कल्पना स्पष्ट हो गई, जिसमें कोई वर्ग नहीं, कोई धर्म नहीं, सब समान हो गये हैं। यही समानता वाली दृष्टि साहित्य के माध्यम से समाज की अवस्था को अभिव्यक्त कर रही थी। मार्क्सवादियों की दृष्टि में सच्चा साहित्य वही है जो वर्ग संघर्ष में सहायक हो। इससे प्रभावित प्रगतिवाद अपने जनवादी रूप में निखकर कर सामने आया और जन जीवन के दु:ख-सुख, आशा-निराशा, संघर्ष तथा उसकी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाये गये साहित्यिक आंदोलन से हुई है, जिसका लक्ष्य मार्क्सवाद और भौतिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करना था। आधुनिक युग के मानव की बुद्धिसंगत विचारधारा साहित्य को कल्पना लोक के स्वप्निल विचरण से मुक्त कर मानव को यथार्थ के ठोस धरातल पर लाती है। इतना ही नहीं, पूर्ववर्ती साहित्यिक अभिरुचि से भिन्न विशिष्टता प्रस्तुत करना प्रगतिवादी साहित्य की विशेषता रही है। डॉ. रामविलास शर्मा 'प्रगति और परंपरा नामक अपने लेख में कहते हैं - ''प्रगतिवाद की दृष्टि से कला या साहित्य (जिसका तात्पर्य हमेशा श्रेष्ठ कला या साहित्य ही होता है) और प्रगतिशील कला या प्रगतिशील साहित्य की दो भिन्न परिभाषाएं नहीं हो सकतीं, क्योंकि वस्तुत: दोनों एक हैं। उनमें किसी अंतर्विरोध या भेद का तो प्रश्न ही नहीं उठता। कला और साहित्य के

---

[1] आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ -नामवर सिंह, पृ.सं. 60

आगे 'प्रगतिशील' विशेषण लगाने का उपयोग केवल तब है जब हम कला या साहित्य के आनंददायी मूल्यों का नहीं, बल्कि विशेष रूप से चेतना विकासी नैतिक मूल्यों का ही निर्देश करना चाहें, अन्यथा इस विशेषण को जोड़े बिना भी काम चल सकता है। अन्य देशों के प्रगतिवादी भी किसी विशेष संदर्भ में बात करते समय ही प्रोग्रेसिव शब्द का प्रयोग करते हैं अन्यथा साधारणतया यह स्वीकार किया जाता है कि प्रगतिशीलता भी सच्चे साहित्य का सामान्य गुण है।''[1]

## 2.0 प्रगतिवाद की अवधारणा

प्रगति अंग्रेजी के प्रोग्रेस का रूपांतर है, जिसका अर्थ है, आगे बढ़ना, उन्नति की ओर अग्रसर होना है, वाद से अभिप्राय है किसी विशिष्ट विचारधारा को आग्रहपूर्वक ग्रहण करना। साहित्य के संदर्भ में इसका अर्थ केवल प्रगति से न लेकर राजनीति से प्रभावित एक विशेष विचारधारा से लिया गया है। यह एक ऐसी विचारधारा है जो जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल सकती है। इसका आधार मार्क्सवादी दृष्टिकोण है। यह एक विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा का द्योतक है जो कि कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक वस्तुवाद पर आश्रित है। मार्क्स और एंगिल्स के कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो के पश्चात जितनी समाजवादी विचारधाराएं उभरी उनमें सर्वाधिक प्रभावशाली मार्क्सवाद रहा है। वास्तव में यह सामाजिक व्यवस्था के आर्थिक दृष्टिकोण से संबंधित है किंतु इसका लक्ष्य इस मान्यता पर आधारित है कि मानव समाज की स्थिति में निरंतर सुधार हो, वह लगातार अभीष्ट दिशा में, किसी महान लक्ष्य की पूर्ति की ओर बढ़े।

इस वाद का जन्म भले ही यूरोप में सन् 1917 की रूसी क्रांति के पश्चात् और भारतीय साहित्य में सन् 1936 के भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम

---

[1] साहित्य की समस्याएँ - शिवदान सिंह चौहान, पृ.सं. 78

अधिवेशन के साथ हुआ। किंतु इसका जन्म कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह धीरे-धीरे बढ़ते हुए एक विशाल वृक्ष का रूप ले रहा था। पुरानी सड़ी-गली रूढ़ियों वाली मान्यताओं और सिद्धांतों के प्रति विरोध भाव तथा वर्तमान अवस्था को बदलने का समर्थन करता हुआ प्रगति की ओर अग्रसर हाता है। मनुष्य के बौद्धिक विवेक को व्यापक बनाता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति बुद्धिवाद के विकास और आज़ादी तथा बराबरी के लिए होने वाले राजनैतिक सामाजिक संघर्षों के साथ जीवन संग्राम में आगे बढ़ने का साहस देता है, नई चेतन जागृत करता है, वही प्रगतिशील है। यह ऐसी विचारधारा है जिसमें मानव को उसकी वास्तविक स्थिति से परिचित कर उसके उत्थान की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, उसमें मानवता जगाता है, वही प्रगतिशील साहित्य है।

## 2.1 प्रगतिशीलता का स्वरूप

आरंभ से ही मानव सभ्यता विकासशील रही है। मनुष्य जीवन में सदैव अग्रगामी रहा है, प्रगतिशील रहा है और जो शक्तियां इसके आगे बढ़ने में सदैव सहायक रहती है वही प्रगतिशीलता है। मनुष्य में बौद्धिकता के द्वारा विकास की क्षमता और सामाजिक प्रवृत्ति से जुड़ी मानव सभ्यता रही है। रिनेसंयुग से ही प्रगति की धारणा के अनुरूप मानवीय विवेक और आत्म विश्वास को महत्व दिया है। अंधविश्वासों का विरोध तथा प्रयोग को महत्वपूर्ण माना है, जिससे ज्ञान-विज्ञान और कलाओं के क्षेत्र में प्रगति हुई है।

"1948 की फ्रेंच क्रांति का मूल सिद्धांत ही प्रगति का सिद्धांत था। क्रांति में लगी हुई सभी शक्तियों और उसके समर्थक सभी विचारकों की अगर कोई एक सामान्य धारणा थी, तो वह प्रगति की धारणा ही थी। फ्रेंच क्रांति के समय प्रगति की धारणा के साथ उसकी दिशा के बारे में यह दृष्टिकोण बहुत प्रबल रूप से सामने आया कि प्रगति

की सच्ची दिशा समानता है, वर्ग भेदों की समाप्ति है। इस धारणा को, जो जनवादी शक्तियों के सभी नेताओं में सर्वमान्य थी।"[1]

प्रगति की मार्क्सवादी धारणा ही मुख्य रूप से प्रगतिशील साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि है। सामाजिक अवस्था में भी मार्क्स ने आर्थिक व्यवस्था को देखा है। मार्क्सवाद के अनुसार विश्व का निर्माण भौतिक पदार्थों के संगठन से संभव हुआ। मनुष्य की सामाजिक प्रगति वस्तुओं के उत्पादन की शक्तियों के विकास पर ही आधारित है। राजनीतिक और सामाजिक प्रगति के मूल में भी उत्पादन शक्ति ही कार्य करती है। इस वस्तु उत्पादन शक्ति की कमी के कारण ही समाज में आर्थिक विषमता है जो वर्गवाद अथवा द्वंद्वात्मक स्थिति की जन्मदात्री है और यह द्वंद्वात्मक वस्तुवाद एक ऐसा व्यापक सिद्धांत है जो न केवल सामाजिक विकास के नियमों की खोज करता है, अपितु उसे मात्र चिंतन की एक पद्धति एक दृष्टिकोण से आगे सामाजिक परिवर्तन को प्रभावशाली बनाकर प्रगति की ओर अग्रसर करता है। मार्क्सवादी दर्शन के अनुसार जगत की सभी वस्तुओं में विरोधी तत्वों का संघर्ष होता रहता है और इसके फलस्वरूप विभिन्न पदार्थ, उनकी शक्तियों और अस्तित्वों का अनवरत विकास होता रहता है। मार्क्स का यह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और आर्थिक चिंतन प्रगतिवादी साहित्य में सर्वहारा का पक्ष लेकर समाजवादी शक्तियों का संवर्धन करता है।

अत: प्रगतिवादी साहित्य समाज के सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति को महत्व देता है। समष्टि की रक्षा में प्रवृत्त होता है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार प्रगतिशील का अभिप्राय उस साहित्य से लिया है, जो समाज को आगे बढ़ाता है, मनुष्य के विकास में सहायक होता है। "कलात्मक सौष्ठव के साथ-साथ उस साहित्य में व्यक्ति और समाज के विकास और प्रगति में सहायक होने की क्षमता भी होनी चाहिए। तभी वह

---

[1] हिन्दी की प्रगतिशील कविता - डॉ. रणजीत, पृ.सं. 26

अभिनंदनीय हो सकता है, हम चाहे जिस नाम से उसे पुकारें।"[1] अर्थात जो साहित्य प्रगति और विकास की कामना करता है, तर्क और बौद्धिकता को लेकर चलता है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है, वही प्रगतिशील साहित्य है क्योंकि यह साहित्य समाजवादी विचारधारा तथा यथार्थ पूर्ण चेतना पर आधारित है।

प्रगतिवादी लेखक, अभिव्यक्ति समाज में जन जीवन से ग्रहण करता है और उसे यथावत प्रस्तुत करता है। जिसके प्रभाव से सामाजिक यथार्थ भावना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रूढ़ियों और शोषण का विरोध क्रांति की चेतना, वर्ग वैषम्य आदि प्रगतिवादी दल किसान मजदूरों के जनवाद, समाजवाद के मुद्दों को उठाते हैं। भारत के संदर्भ में प्रगतिवाद/प्रगतिशील का स्वरूप हम देखते हैं तो पता चलता है कि भले ही प्रगतिवाद का आरंभ मार्क्स और एंगिल्स की मान्यताओं तथा मार्क्सवादी चिंतन से माना जाता हो, भारत भूमि पर जिस प्रगतिवाद ने जन्म लिया उसका कारण मार्क्सवादी चिंतन अवश्य रहा किंतु फिर भी 1936 के कुछ वर्ष पूर्व या 1936 के आस-पास दिखाई देने वाला समाजवाद द्वितीय महायुद्ध के परिणामस्वरूप बिगड़ता आर्थिक, राजनीतिक, संकट, महंगाई, बेकारी सन् 1942 की क्रांति, उसका दमन, मजदूरों की ऐतिहासिक हड़तालें और उनके जागृत अभियान तथा बंगाल का अकाल आदि कारण रहे हैं। जिसके कारण हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को अपनी निरंतर चेष्टा से मात्र राजनीतिक ही नहीं आर्थिक स्वाधीनता के प्रति सक्रियता प्राप्त हई। "प्रगतिशील आंदोलन कोई एकाकी घटना नहीं है, वह समस्त भारतीय साहित्य में आए हुए प्रगतिशील आंदोलन की ही एक विशेष अभिव्यक्ति है और भारतीय साहित्य का यह प्रगतिशील आंदोलन वास्तव में भारतीय जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक

---

[1] मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 30

और सांस्कृतिक मुक्ति आंदोलन का ही एक अंग है।"[1] इन्हीं परिस्थितियों ने साहित्यकारों को भी प्रेरित किया, जिसके चलते साहित्य अपनी युगीन परिस्थितियों का प्रतिबिंब बन यथार्थ की अभिव्यक्ति करने लगा। जनमानस की आशाओं-आकांक्षाओं, संघर्ष तथा दरिद्रता, शोषण के प्रति विद्रोह तथा समानता के भाव से साहित्य आगे बढ़ा। साहित्य में एक नवीन विचारधारा का आविर्भाव हुआ जो यथार्थ के धरातल पर प्रगतिशील रचना करते हुए देश की राष्ट्रीय जागृति तथा साम्राज्यवाद विरोधी स्वर ने प्रगतिवाद को जन्म दिया।

### 2.1.1 परिभाषा

काष्ट के विचारों में "प्रगति एक योजना निहित है इसकी मौलिक प्रवृत्ति बौद्धिकता और नैतिकता का विकास है और यह विकास अज्ञान, स्वार्थ, वासना आदि तामसिक वृत्तियों और उनके विरूद्ध चलने वाले मानवीय संघर्ष का परिणाम है।"[2] काष्ट का प्रगति दर्शन उसके अंतिम कारण या प्राकृतिक उद्देश्य की परिकल्पना पर आधारित है। डॉ. रागेय राघव ने प्रगतिवाद को एकमात्र बाह्य न मानते हुए पूर्ण मानवीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है। इसीलिए उनकी मान्यता है कि "प्रगतिवादी साहित्य के मानदंड केवल राजनीति में समाप्त नहीं हो जाते, वरन् मनुष्य जीवन को व्यापकता का स्पर्श करते हैं।"[3] इन्होंने प्रगतिवाद को मानव जीवन की व्यापकता से जोड़ा है।

श्री शिवदान सिंह चौहान प्रगतिवाद शब्द को मार्क्सवादी सौन्दर्य सिद्धांत का पर्याय मानते हैं और इसलिए इस शब्द का प्रयोग साहित्य की किसी धारा के लिए करना उचित नहीं समझते। वे कहते हैं - "प्रगतिवाद साहित्य की धारा नहीं है। साहित्य

---

[1] हिन्दी की प्रगतिशील कविता - डॉ. रंजीत, पृ.सं. 106

[2] इतिहास दर्शन, बुद्ध प्रकाशन, पृ.सं. 159

[3] प्रगतिशील साहित्य के मानदंड - रंगेय राघव, पृ.सं. 16

का मार्क्सवादी दृष्टिकोण है। अत: प्रगतिवाद को सौन्दर्य शास्त्र (ऐस्थेटिक्स) संबंधी मार्क्सीय दृष्टिकोण का हिन्दी नामकरण समझना चाहिए।"[1]

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार "ऐतिहासिक तथ्य यह है कि प्रगतिशील लेखकों में कम्युनिस्ट और गैर कम्युनिस्ट दोनों तरह के लेखक रहे हैं। अत: प्रगतिशील लेखक मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं। लेकिन यह प्रभाव भिन्न प्रकार का है।"[2] मार्क्सवाद का उद्भव वस्तुगत रूप से सामाजिक विकास क्रम के अंतर्गत हुआ है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रगतिवाद को विश्वव्यापी जागरण के रूप में देखते हैं। "साहित्य में प्रगतिवाद का आंदोलन जनता की नई शक्ति का एक संकेत है। यह विश्वव्यापी है और साहित्यकार की जागरूक सामाजिक चेतना का प्रकरण है। यह आंदोलन सिद्ध करता है कि भारतीय लेखक अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सजग हैं। प्रगतिवाद ने साहित्य की विचार-भूमि को पुष्ट करने का प्रयत्न किया और साहित्य के क्षेत्र में हासमूलक प्रवृत्तियों के विरूद्ध कलाकार को चेतावनी दी। यह कहना अनुचित न होगा कि छायावाद का साहित्यिक उत्तराधिकार प्रगतिवाद के समर्थ कंधों पर आ पड़ा है जिसे उसने संभाला है।"[3]

नामवर सिंह के दृष्टिकोण में "इस संबंध में मेरा अपना दृष्टिकोण यह है कि मार्क्सवादी सौन्दर्य चिंतन और दार्शनिक विवेचन में प्रगति की धारणा को भी प्रगतिवादी या प्रगतिशील दृष्टिकोण मार्क्सवादी जीवन दर्शन से अनुप्राणित साहित्य को प्रगतिवादी साहित्य और इस साहित्य सहित इसके आस-पास के उस समस्त आधुनिक साहित्य मूलत: मानववादी और अग्रगामी है- चाहे उसके स्रष्टाओं का दार्शनिक

---

[1] प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 54

[2] प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 144

[3] आधुनिक हिन्दी समीक्षा (समीक्षात्मक निबंध संग्रह) संपादक : निर्मला जैन, प्रेम शंकर, पृ.सं. 177

दृष्टिकोण कुछ भी हो।"[1] रूस के प्रमुख विचारक लेनिन के अनुसार "प्रगतिवादी साहित्य युगों-युगों के शोषण, अत्याचार एवं क्षति से दमित-कुंठित मानव की विरासत है। यह प्रगतिवादी साहित्य बंधनहीन है।"[2] डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय "प्रगतिवाद शब्द को केवल मार्क्सी सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टि तक सीमित न रखकर इस दृष्टिकोण के आधार पर लिखे हुए साहित्य को भी उसमें सम्मिलित कर लेते हैं।"[3] मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार "प्रगतिवाद एक सामाजिक सिद्धांत है और वह हर समय क्रियाशील है, था और रहेगा। मैंने प्रगति का सामाजिक सिद्धांत कहा, इसका अर्थ यह नहीं कि वह और क्षेत्रों में लागू नहीं होता। मैंने इसलिए उसे एक सीमित रूप में कहा है कि हमारे वर्तमान विषय प्रगतिशील साहित्य से इसका सीधा संबंध है।"[4] अर्थात पूर्ववर्ती साहित्य से भिन्न विशिष्टता प्रस्तुत करना इस साहित्य की विशेषता है, जो अपने साहित्य सामर्थ्य का परिचायक है। इसी दृष्टि से प्रगतिवादी साहित्य नये-नये कृतिकारों को अपनी परिधि में समेटता है तथा हिन्दी साहित्य की हर विधा में एक से बढ़कर एक कृति इस साहित्य ने दी है। क्योंकि यह साहित्य समाज और सामाजिक चेतना से अनुप्राणित है। समाज की सामूहिक प्रगति का पक्षधर है।

## 2.2 प्रगतिवाद और मार्क्सवाद

प्रगतिवादी विचारधारा समसामयिक गतिविधियों की देन थी। उस काल विशेष में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक गतिविधियाँ आदि अनेक परिप्रेक्ष्यों से परिपूर्ण मानव साहित्य अब बदल रहा था। डॉ. कृष्ण लाल ने अपनी पुस्तक प्रगतिवादी काव्य में कहा है कि "प्रगतिवादी साहित्य का जन्म सर्वप्रथम सन् 1907 में इटली में हुआ, जबकि मारनेति ने 'भविष्यवाद' नामक एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया। उसने

[1] आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ - नामवर सिंह, पृ.सं 57

[2] भारतीय साहित्य में प्रगतिवाद -गौरीशंकर ओझा, पृ.सं. 127

[3] आधुनिक हिन्दी कविता सिद्धांत और समीक्षा - डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, पृ.सं. 379 एवं 380

[4] प्रगतिवाद की रूपरेखा - मन्मथनाथ गुप्त, पृ.सं. 5 एवं 6

कहा कि संसार अब एक नये रूप में परिवर्तित हो चुका है, सामाजिक व्यवस्था संबंधी मान्यताएं बदल चुकी हैं। अत: उसके साहित्य की मान्यताएं अपरिवर्तित नहीं रखी जा सकती। उसके मूल्य और मापदंड में भी नवीन दृष्टिकोण आवश्यक है। उसने रूढ़िवादी विचारों का ही विरोध नहीं किया, पर साहित्यिक परंपराओं में भी अभूतपूर्व परिवर्तन की घोषणा कर दी। छंदों की श्रृंखला भंग कर दी गयी और व्याकरण के नियमों की तिलांजजि दे दी। उसने कहा अब चन्द्र और कमल में सौंदर्य दर्शन न कर यंत्रों में किया जाना चाहिए।"[1] उसकी इस विचारधारा से साहित्य की प्राचीन मान्यताओं के स्थान पर नयी मान्यता स्थापित होने लगी। मारतेन की यह भविष्यवादी विचारधारा प्रगतिवाद के वर्तमान मानव समाज में भविष्य के दर्शन और मानव के महत्व का प्रतिपादन है। जिन साहित्यकारों ने प्रगतिवाद में समय के तत्व को पहचाना, उन्होंने मार्क्सवाद भ्रामक अर्थ को नहीं लिया। शाश्वत सत्य को पुष्ट  किया और उसे प्रगतिवाद का स्थायी स्वरूप दिया। किन्तु मार्क्सवाद से भिन्न अर्थ लेकर प्रगतिवाद का स्वरूप कल्पित करना भी असंगत है क्योंकि "मार्क्सवाद से अनुप्राणित रूसी साहित्य का हिन्दी साहित्य पर विशेष प्रभाव पड़ा। रूसी साहित्य में प्रगतिवादी प्रवृत्तियों का निरंतर सूत्रपात होता गया। प्रगतिवाद के स्वरूप को रूसी साहित्य की उन प्रवृत्तियों ने और विकसित किया। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी लेखकों ने न्यूनाधिक प्रेरणा उन प्रवृत्तियों से ग्रहण की।"[2] मार्क्स ने संघर्ष में प्रगति के दर्शन किए और समाज हित के लिए सर्वसामान्य कल्याण के तत्वों को प्रगतिवाद में ग्रहण किया और मार्क्सवाद की जटिलताओं को खूनी क्रांति, लाल ध्वजा के गुणगान वाले हिस्से का त्याग किया। वर्ग संघर्ष क्रांति की प्रेरणा जरूर ली किन्तु मार्क्सवाद में बंधकर नहीं। अपनी परिस्थिति और अपने देशकाल के अनुरूप प्रगतिवाद मार्क्सवाद से कुछ भिन्न है। मार्क्सवादी

[1] प्रगतिवाद काव्य - डॉ. कृष्णलाल हंस, पृ.सं. 13

[2] हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास : एक अध्ययन - सुशील कान्त सिंह, पृ.सं. 26

दृष्टिकोण में राजनीतिक पक्ष की कट्टरता लाल सेना का आह्वान देश की सांस्कृतिक परंपरा और आध्यात्म पर अनास्था, लाल झंडे का गुणगान, उग्रता वर्ग-संघर्ष संसार के श्रमिकों का संगठन नारेबाजी, खूनी क्रांति युक्त आंदोलन की यह सब कट्टरतावादी जटिलताएं ही है, यह मार्क्सवाद को प्रगतिवाद से कुछ पृथक करती है। श्री मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार "प्रगतिवाद की विशेषता यह है कि मनुष्य को अपना कच्चा माल मानने पर भी वह भावुकतामय मानवतावाद में बहकर वर्ग-संघर्ष के प्रति अंधा नहीं है केवल इतना ही नहीं, वह इस संघर्ष में क्रांतिकारी कार्य की ओर भी हाथ बढ़ाता है।"[1] सन् 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति। रूस में जारशाही का अंत मार्क्सवादी बोलशेविक दल की सत्ता का स्थापित होना। रूसी काव्य जगत में रूप के स्थान पर यथार्थ का महत्व मार्क्सवादी दृष्टिकोण रहा है। इस सारे ऐतिहासिक क्रम ने रूस की क्रांति ने विश्व पर गहरा प्रभाव डाला और इसी प्रभाव ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण को व्यापक रूप दिया। सामाजिक यथार्थवाद, शोषण का विरोध, श्रमिकों में क्रांति की भावना जागृत करना, आंदोलन तथा बौद्धिकता के स्तर पर मनुष्य को ही सर्वोपरि मानना आदि गुणों से ही हिन्दी साहित्य जगत में प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है।

### 2.2.1 प्रगति की मार्क्सवादी धारणा

मार्क्सवाद के अनुसार समाज के विकास और परिवर्तन के नियम मनुष्य की चेष्टाओं के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। समाज की श्रेणियों के बीच चल रहे परस्पर संघर्ष से ही यह विकसित हो पायेंगे। प्रगति की यह मार्क्सवादी धारणा ही मुख्यत: हिन्दी की प्रगतिशील रचना की वैचारिक पृष्ठभूमि है। मार्क्सवाद तर्क और बौद्धिकता के साथ आधुनिक बोध को भी साथ लेकर चलता है, जिसमें वैज्ञानिक मानववाद है, राजनीतिक और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में समाजवाद और साम्यवाद, दर्शन के क्षेत्र में

---

[1] प्रगतिवाद की रूपरेखा - श्री मन्मथनाथ गुप्त, पृ.सं. 2

द्वंद्वात्मक वस्तुवाद और समाजशास्त्र तथा इतिहास के क्षेत्र में ऐतिहासिक वस्तुवाद है। मार्क्सवाद का उद्भव वस्तुगत रूप से सामाजिक विकास क्रम के अंतर्गत हुआ। सत्रहवीं शताब्दी के बाद से होने वाली वैज्ञानिक उन्नति को धीरे-धीरे परिवर्तित कर रही थी। मनुष्य का अंधविश्वास टूटने लगा था और तर्क पर उसकी आस्था बढ़ रही थी। फलत: अब मनुष्य की मानसिकता कठिन परिश्रम कर कठिनाइयों से टकराने की हो चली थी। ऐसे में कार्ल मार्क्स के मार्क्सवादी दर्शन का आगमन और उसकी घोषणा सर्वोपरि रही। जिसने मानव और समाज को विकासोन्मुख किया। मार्क्स के विश्व को सर्वहारा संघर्ष का मूलमंत्र दिया और मार्क्स के विचारों का समष्टि रूप ही आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद के नाम से प्रचलित हुआ। मार्क्सवाद के अनुसार "प्रत्येक व्यक्ति इतिहास का निर्माता है, परंतु इतिहास का निर्माण अतीत की समालोचना करके भविष्य के अनुसार होना चाहिए।"[1]

रूस की क्रांति से भारत भी अप्रभावित न रह सका। उस समय भारत में एक ओर अंग्रेजी के शासन का दमन चक्र तीव्र गति से चल रहा था और दूसरी ओर यहाँ का पूंजीवादी दल श्रमिकों पर शोषण बढ़ा रहा था। सन् 1925 में कुछ भारतीय युवाओं ने साम्यवादी दल की स्थापना की और उसके मार्क्सवादी सिद्धांतों का प्रचार आरम्भ हो गया। इन दिनों डॉ. मुल्क राज आनंद, सज्जाद जहीर, भवानी चट्टाचार्य, जे.सी. घोष, राम सिंह आदि नवोदित लेखकों ने 1935 में लंदन के नैनकिंग होटल में की गयी सभा में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ नामक संस्था की स्थापना की। मार्क्सवाद विचारों से परिपूर्ण इसके उद्देश्य और योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए परिपत्र द्वारा भारत के साहित्यकारों को प्राचीन रूढ़िवादी विचारों का विरोध कर क्रांति की भावना को जागृत करने का आग्रह किया गया। प्रेमचंद ने इस विचारधारा का

[1] हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास : एक अध्ययन - सुशील कांत सिन्हा, पृ.सं. 16

स्वागत किया। 1936 में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ में हुआ। इसमें दिये गये प्रेमचंद के भाषण से इस व्याख्यान की प्रगतिवादी दृष्टि से साहित्य में अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता की भावना हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"[1] यह घोषणा प्रगतिशील साहित्य के निर्माण का आग्रह करती है। जो देश के वास्तविक जनजीवन की अभिव्यक्ति करता हो, जो शोषण मानवता के उत्थान का प्रगति का संदेश देने में सक्षम हो, जो समाज में व्याप्त जनजीवन की विषमताओं, आपदाओं और अभावों का अंत कर प्रगति के पथ पर बढ़े। यहाँ मार्क्सवादी दृष्टिकोण से प्रगतिवाद का पोषण होता है।

प्रगति के इसी क्रम में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का द्वितीय अधिवेशन सन् 1938 में कलकत्ता में रवीन्द्र नाथ टैगोर की अध्यक्षता में हुआ। इसमें देश की तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक एवं साहित्य की स्थिति पर प्रकाश डाला गया। लेखकों से अनुरोध किया गया कि वे साहित्य में वैज्ञानिक बुद्धिवाद का समावेश कर देश में सामाजिक क्रांति की भावना को विकसित करे। ऐसी साहित्यिक दृष्टि का विकास करे जो धर्म काम युद्ध आदि अनेक समाज के ज्वलंत प्रश्नों तथा रूढ़िवादी मान्यताओं का, साम्प्रदायिक भावना का, जाति द्वेष का कड़ा विरोध करना चाहिए। सन् 1942 में दिल्ली में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के तृतीय अधिवेशन में सन् 1939 के द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभाव और फासिज्म का विरोध इसका प्रमुख उद्देश्य था। इस संघ का चतुर्थ अधिवेशन सन् 1943 में बम्बई में श्रीपाद अमृत डांगे की अध्यक्षता में

[1] साहित्य का उद्देश्य - प्रेमचंद, पृ.सं. 26

हुआ। इसका उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता और देश की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था के सुधार के लिए संघर्ष था। संघ का पांचवां अधिवेशन भी बम्बई में सन् 1950 में अण्ण भाऊ साठे की अध्यक्षता में हुआ। छठा अधिवेशन सन् 1953 में हुआ। संघ का अंतिम और सातवां अधिवेशन सन् 1968 में दिल्ली में डॉ. निहार रंजन की अध्यक्षता में हुआ। इन अधिवेशनों द्वारा भारतीय लेखकों में एक नवीन सृजनात्मकता का संचार हुआ। द्वितीय अधिवेशन से देश के विभिन्न लेखकों में प्रगतिवादी चेतना का व्यापक प्रसार हुआ। प्रगतिवादी चिंतन केवल काव्य तक ही सीमित नहीं रहा अपितु गद्य की अन्य विधाएँ भी इससे प्रभावित हुई। इन अधिवेशनों से प्रगतिवाद का मार्क्सवादी दृष्टिकोण साहित्य में समाहित होता गया किन्तु अपने देश, काल, परिस्थितियों के अनुकूल। अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के अनुकरण पर ही 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रगतिशील लेखक संघ' का भी निर्माण हुआ जिसका प्रथम अधिवेशन सन् 1947 में पंडित राहुल सांकृत्यायन की अध्यक्षता में हुआ। सांकृत्यायन जी ने प्रगतिवाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था "प्रगतिवाद कोई कलट या संकीर्ण सम्प्रदाय नहीं है। प्रगतिवाद का काम है प्रगति के रास्ते खोलना उसके पथ को प्रशस्त करना। प्रगतिवाद कलाकार की स्वतंत्रता का नहीं, परतंत्रता का शत्रु है। प्रगति जिसके रोम-रोम में भीज गई है, प्रगति ही जिसकी प्रकृति बन गयी है, वह स्वयं सीमाओं का निर्धारण कर सकता है। उसकी सीमा अगर कोई है तो यही कि लेखक और कलाकार की कृतियाँ प्रतिगामी शक्तियों की सहायक न बने। प्रगतिवाद कला की अवहेलना नहीं करता। यह तो कला और उच्च साहित्य के निर्माण में बाधक रूढ़ियों को हटाकर सुविधा प्रदान करता है। यह रूढ़िवादी और कूप मण्डूकता का विरोधी है।"[1] इन विचारों में मार्क्स के दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है।

[1] आधुनिक हिन्दी कविता और आलोचना - कमला प्रसाद, पृ.सं. 237

समाज में पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना और जागरूकता प्रकट करना प्रतिक्रियात्मक माना जाता रहा है। इस दर्शन में व्यवहार व्यवस्था है, यह केवल इतिहास दर्शन नहीं, कर्म दर्शन भी है। मार्क्स ने मनुष्य की दैनिक प्रवृत्तियाँ और कटुहीनताओं का बड़ा सूक्ष्म अध्ययन किया था। सुख और उपलब्धि के समन्वय से विशिष्ट बनने वाले मनोविज्ञान की व्यवहारिक व्याख्या प्रस्तुत की। समाज की रूढ़िगत धर्म भावनाओं की अनुपयोगिता पर अधिक बल दिया है, जिससे मुक्त होकर मानवता का विकास संभव है। इस विचार में प्रगतिवादी मूल प्रेरणा का संकेत मिलता है। जिस कारण प्रगतिशील या प्रगतिवादी साहित्य व्यापक रूप में विकसित होता गया।

मार्क्स ने समकालीन जन सामान्य की व्यवस्था में रहने वाले उन मूल विकारों को खोजने का प्रयास किया जो प्रगति में बाधक थे तथा निम्न वर्ग को अपनी प्रगति के लिए स्वयं जागृत एवं सचेत किया। जहाँ तक साहित्य में क्रांति लाने का प्रश्न है, साहित्य संसार की अनुप्राणित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसलिए रूढ़ियों, आडंबरों, दकियानूसी विचारधारा का विरोध करता है। इस प्रकार मार्क्सवाद पर आधारित प्रगतिवादी साहित्य समाज की प्रगतिशील शक्तियों को पहचान कर उसके अनुकूल समाज को बदलने की प्रेरणा देता है।

## 2.3 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

मार्क्सवादी दृष्टिकोण यथार्थ तथा मानव के महत्व को स्थापित करने वाला दृष्टिकोण है। यह विकास का दर्शन है। मार्क्सवाद के इस दार्शनिक दृष्टिकोण को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं। "द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का अर्थ यह है कि वस्तुओं का अध्ययन उनके विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया के संदर्भ में किया जाए। किसी वस्तु के विशेष गुणों को उसके नए संबंधों के प्रकाश में देखना और इन संबंधों में वास्तविकता ने जो नया रूप धारण कर लिया है, उसके अनुरूप अपने विचारों को

ढालने का नाम ही द्वंद्ववाद है।"[1] द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की मान्यता है कि संसार का मूलाधार पञ्चभूत है - वैसे ही मेटर (Matter) पदार्थ के सभी दृश्य रूप पदार्थ से ही बने हुए हैं। पदार्थ को ही विश्व की समस्त गतिविधियों का संचालक माना गया है। मार्क्सवादी दर्शन, द्वंद्वात्मक दर्शन कहलाता है। "यूनान में पहले 'डायलेक्टिक' शब्द का प्रयोग सत्य पर पहुँचने की उस पद्धति के लिए होता था जिसे दो विरोधी दल वाद-विवाद और खंडन-मंडन द्वारा अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते थे। परन्तु हीगल ने इस शब्द का प्रयोग एक विभिन्न अर्थ में किया था। हीगल के अनुसार 'डायलेक्टिक' पद्धति द्वारा उत्पति, परिवर्तन और विकास के सिद्धांत को समझा जा सकता है।"[2] हीगल विचार को प्रमुखता देकर बाह्य जगत को उसी का प्रत्यक्षीकरण मानते थे। निरपेक्ष ब्रह्म की कल्पना भी इसी पर आधारित थी। मार्क्स ने उत्पति, विकास और परिवर्तन का सिद्धांत स्वीकार किया। मार्क्स का मानना था कि इतिहास की व्याख्या निरपेक्ष ब्रह्म के आधार पर ही संभव है। मार्क्स ने निरपेक्ष ब्रह्म की कल्पना को न मानते हुए हीगल के विपरीत विचार को प्रमुखता न देकर बाह्य जगत को प्रमुख माना।

मार्क्स से पूर्व एक जर्मन विद्वान फायरबाख ने सृष्टि के विकास में प्रकृति पदार्थ को प्रथम स्थान दिया और मनुष्य को प्राकृतिक विकास की ही एक इकाई माना। हीगेल के सिद्धांत के विपरीत भौतिकवाद के सिद्धांत की स्थापना की। फायरबाख के प्रकृति विकास में मनुष्य के महत्व वाले विचार का समर्थन करते हुए मार्क्स भी मनुष्य के चेतन रूप को मानते हैं। उसे वातावरण और परिस्थिति को बदलने में सक्षम मानते हैं। मार्क्स की विचारधारा हीगेल और फायरबाख से मिलती है। इसमें हीगेल की द्वंद्वात्मक प्रणाली और फायरबाख के प्रकृतिवाद का समन्वय था।

---

[1] प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन - हंसराज रहनर, पृ.सं. 80

[2] साहित्यिक निबंध - राजनाथ शर्मा, पृ.सं. 504

संसार को जानने की दो प्रणालियाँ मानी जाती है। एक सामान्य तर्क प्रणाली या फिर जिसे मार्क्सवादी शब्दावली में पराभौतिक मैटाफिज़िकल कहते हैं और दूसरी द्वंद्वात्मक प्रणाली। इस प्रणाली के अर्थ में द्वंद्वात्मक की प्रक्रिया के तीन सोपान माने जाते हैं। वाद (Thesis), प्रतिवाद (Anti thesis) तथा संवाद (Synthesis)। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद हर एक परिवर्तन को द्वंद्वात्मक दृष्टि से देखता है। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की कुछ मूलभूत मान्यताएँ हैं। इसकी पहली मान्यता यह है कि हर एक वस्तु का विरोध उसी वस्तु में सीमित रहता है। किन्तु वे कुछ काल तक दबे रहते हैं। इस परिस्थति को वाद कहते हैं। इसकी दूसरी मान्यता यह है कि कालांतर में वाद-परिस्थिति का विरोध वे ही तत्व करने लगते हैं, जो उसमें सन्निहित थे। इस परिस्थिति को प्रतिवाद कहते हैं। द्वंद्व सिद्धांत के अनुसार किसी भी नई परिस्थिति का जन्म दो विरोधी परिस्थितियों के संघर्ष से होता है। जब वाद और प्रतिवाद का संघर्ष होता है तो एक तीसरी परिस्थिति की सर्जना होती है, जो उन दोनों परिस्थितियों से भिन्न होती है और जिसमें दोनों परिस्थितियों के कुछ अच्छे अंश उपस्थित रहते हैं। इस तीसरी परिस्थिति को संवाद अथवा प्रतिवाद का प्रतिवाद कहते हैं। अत: वाद में संवाद तक का विकास मात्रात्मक से गुणात्मक परिवर्तन की ओर होता है।

मार्क्सवाद के मतानुसार संसार में दो प्रकार के पदार्थ हैं स्वीकारात्मक और नकारात्मक। इन दोनों तत्वों के संघर्ष का नाम ही जीवन है। जिसका आधार वस्तु है। वस्तु में निहित विरोधी तत्व का निरंतर संघर्ष ही चेतना को जन्म देता है क्योंकि यह चेतना द्वंद्वात्मक होती है। इसी आधार पर मार्क्स के इस सिद्धांत को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहा गया है।

मार्क्स ने भौतिकवाद को मानव समाज के क्षेत्र में लागू किया, उसके सामाजिक विकास के नियमों की खोज की, उसे मात्र चिंतन की एक पद्धति एक दृष्टिकोण से आगे

बढ़ाते हुए सामाजिक परिवर्तन में प्रभावकारी रूप दिया जो केवल संसार की व्याख्या का ही नहीं उसे बदलने का उपकरण बना।

### 2.3.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

मानव विकास के इतिहास के अनुसार मनुष्य आरंभ से ही साम्यवादी था। उस समय व्यक्तिगत रूप से किसी भी वस्तु का संग्रह नहीं किया जाता था। मनुष्य झुंड या कबीले में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा संग्रहित वस्तु पर पूरे कबीले का समान अधिकार रहता था। विकास के साथ मनुष्य क्रमश: पशुपालक, कृषक आदि बनता गया और इसी के साथ उसमें व्यक्तिगत अधिकार की भावना आयी। इसी भावना ने संघर्ष को जन्म दिया। जैसे जैसे मनुष्य सभ्य से सभ्यतर बनता गया और उसमें वर्ग संघर्ष की भावना भी बढ़ती गयी। जमीन और स्थायी रूप से एक ही स्थान पर बसने के लिए संघर्ष उत्पन्न हुए। इसी क्रम में राज्यों का जन्म हुआ और उनके विस्तार के लिए युद्ध आरंभ हुए। विजयी शासक बने और पराजित शासित।

अर्थ की न्यूनता तथा शासकों का प्रजा पर आर्थिक और मानसिक शोषण के कारण मानव समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया। शोषक और शोषित वर्ग के बीच संघर्ष का मूल कारण अर्थ था। कुछ हद तक, समय के साथ-साथ दासता प्रथा परास्त कर दी गई मगर फिर भी निर्धन और भी अधिक निर्धन होते चले गये और धनी और भी अधिक धनवाद। कारण व्यापारी वर्ग का उत्पादन पर अधिकार। मजदूरी की कीमत कम और उत्पादन की मनमानी कीमत पर निम्न वर्ग को उत्पादन बेचने लगे। अधिक धनी बनने की इस स्पर्धा का परिणाम प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध जिसमें गरीब और बर्बाद हो गये। ऐसी अवस्था में मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद इन दोनों वर्गों के संघर्ष पर आधारित है।

मार्क्स स्वयं को संपूर्ण विश्व का नागरिक मानते थे। विश्व स्तर पर ही उन्होंने सर्वहारा वर्ग, व्यक्ति के ध्येय, समाज हित, सर्वसामान्य का कल्याण आदि तथ्यों का अध्ययन किया। मार्क्स के इस विचार दर्शन को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की संज्ञा दी गयी। इस दर्शन में किसी स्थिति या विधा को बदलने का अर्थ होता है उसे हटाकर दूसरी अवस्था  लाना। प्रत्येक व्यक्ति के समान अधिकार हेतु संघर्ष अनिवार्य है। मार्क्स ने संघर्ष में ही प्रगति के दर्शन किये। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार "द्वंद्वात्मक भौतिकवाद सम्यक दर्शन है। इस दर्शन का भौतिक हथियार सर्वहारा है, सर्वहारा का बौद्धिक हथियार दर्शन है। अर्थात द्वंद्वात्मक भौतिकवादी दर्शन की अनुमति से ही सर्वहारा वर्ग समाप्त हो सकता है।"[1] स्पष्ट है कि श्री राहुल प्रगतिवाद के दार्शनिक आधार के रूप में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को व्यावहारिक रूप देने में सर्वहारा वर्ग को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझते हैं। वस्तुत: सर्वहारा कल्याण ही प्रगतिवाद का मुख्य ध्येय है।

### 2.3.2 वर्ग संघर्ष

मार्क्स ने वर्ग संघर्ष का सिद्धांत चार्ल्स हाल से ग्रहण किया। चार्ल्स हाल का मत था कि सभ्यता के साथ ही सम्पति और शोषक तथा शोषित का जन्म और विकास हुआ। इसी से वर्ग संघर्ष की भावना का आविर्भाव हुआ। मार्क्स ने हीगेल से द्वंद्वात्मक तर्क पद्धति ली, फायरबाख से भौतिकवाद लिया और हाल से वर्ग संघर्ष अपनाया। इन सिद्धांतों को अपनाते हुए उनका क्षेत्र विस्तृत करते हुए अपना नया सूवेबसतित सिद्धांत प्रचारित किया जिसने सबको अपनी ओर आकर्षित किया। जो साम्यवादी विचारधारा के रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत हुआ। इस सिद्धांत के अंतर्गत मार्क्स ने सृष्टि में दो तत्वों को प्रधान माना है स्वीकारात्मक (Positive) और नकारात्मक (Negative)।

[1] कार्ल मार्क्स - राहुल सांकृत्यायन, पृ.सं. 53

इन दोनों तत्वों के संघर्ष का नाम ही जीवन (Matter) है। दोनों तत्वों के पदार्थ में उपस्थिति पर परस्पर संघर्ष होता है जिससे नई चेतना उत्पन्न होती है। यह चेतना द्वंद्व का परिणाम है। इसी आधार पर मार्क्स के इस सिद्धांत को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहा जाता है।

प्रतिषेध का प्रतिषेध के रूप में द्वंद्वात्मक वस्तुवाद के अनुसार पुरानी वस्तु में से उद्भुत नई वस्तु उस पुरानी वस्तु का प्रतिषेध करती है। निरंतर प्रक्रिया के रूप में विरोधियों के संघर्ष के सिद्धांत की यह स्वाभाविक परिणति है। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का संबंध हर प्रकार के प्रतिषेध से नहीं द्वंद्वात्मक प्रतिषेध से है, जो उस वस्तु के विकास में सहायक होता है और इसमें पुरानी वस्तु का केवल विनाश नहीं होता उसकी विशेषता की रक्षा भी होती है जो उपयोगी और मूल्यवान है। इसलिए विकास की प्रक्रिया प्रगतिशील है। जैसे समाज की प्रगति उसकी उत्पादन शक्ति पर निर्भर करती है। उसके विकास पर आधारित रहती है। जिस समाज में वस्तु उत्पादन की शक्ति जितनी अधिक परिमाण होगी, वह समाज राजनीतिक और सामाजिक प्रगति में उतना ही आगे बढ़ेगा। इसकी कमी के कारण आर्थिक विषमता उत्पन्न होती है, जो वर्गवाद अथवा द्वंद्वात्मक स्थिति को जन्म देती है। इस द्वंद्व की स्थिति का चरम अवस्था पर पहुँचना ही वर्ग संघर्ष का अंत है तब ही एक वर्ग-विहीन समाज का निर्माण हो सकता है।

वर्ग संघर्ष में समस्त मानव समाज वर्गों में बंट जाता है। एक वर्ग वस्तु उत्पादक होता है, दूसरा उसका उपभोक्ता होता है। एक ओर उपभोक्ता वर्ग की अधिकार लालसा तो दूसरी ओर पूरा मेहनताना ना मिलने पर उत्पादक वर्ग में असंतोष, रोष और विरोध उत्पन्न होता है व वर्ग संघर्ष पनपने लगता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुरूप इस संघर्ष का अंत कर साम्यवादी समाज की व्यवस्था कर ऐसे समाज की स्थापना करना है जिसमें समान अधिकार, समान विचारधारा, समान प्रयत्न एक समान

सुख-साधन हो। इसके लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए वर्ग संघर्ष का निर्धारित रूप से गतिमान रहना अनिवार्य है। इस संघर्ष के अंतर्गत केवल श्रमिकों का शोषण करने वाले पूंजीपति ही नहीं, पर वे धर्म के ठेकेदार पंडे, पुरोहित, मौलवी, पादरी आदि भी हैं जो जनमानस में अंध श्रद्धा और अंध विश्वास की भावनाओं को बढ़ावा देते हैं। इतना ही नहीं, धर्म संप्रदाय के नाम पर अनुचित लाभ उठाने वाले राजनीतिक हैं जो अपनी कूटनीति के चलते इन्हें हवा देते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं। ऐसी ही कितनी समाज विरोधी प्रवृत्तियों का विरोध प्रगतिवादी साहित्य करता है।

दो वर्गों के संघर्ष पर ही मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद आधारित है, यही वाद प्रमुख रूप से प्रगतिवाद के उद्भव का मूल आधार है। मार्क्स की इस विचारधारा के अनुसार संसार के समस्त राष्ट्र भी दो दलों में बंटे हैं। एक दल आर्थिक विषमता एवं वर्ग संघर्ष का अंत कर संसार में साम्यवाद व्यवस्था को लाना चाहता है तथा दूसरा दल पूंजीवादी अवस्था के द्वारा वर्ग संघर्ष की श्रृंखला को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। इस विचारधारा का समर्थक और प्रचारक साहित्य ही प्रगतिवादी साहित्य है।

## 2.4 प्रगतिवाद के मूल तत्व

प्रगतिवाद मूलत: मार्क्सवाद पर आधारित होते हुए भी यह वाद व्यक्ति को मात्र आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं वरन् जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वाधिकार के लिए संघर्षोन्मुख कर राजनीति और समाजशास्त्र वर्ग-विहीन समाज की स्थापना को लेकर चलता है। साहित्य में जीवन की इन शक्तियों और प्रवृत्तियों की क्रांतिकारी अभिव्यक्ति होती है। प्रगतिवाद एक विश्वव्यापी साहित्यिक आंदोलन के रूप में साहित्यकारों में जागरूक सामाजिक चेतना का विस्तार करता है। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने "प्रगति को जीवन प्रक्रिया के रूप में ग्रहण किया है। प्रगति जन कल्याण है। इसका निर्धारण प्रगतिशीलता के

मानदंड कर सकते हैं।"[1] प्रगतिवाद प्रमुखत: मानव कल्याणार्थ प्रवृत्त रहने के कारण मानवतावादी रहा है।

1. प्रगतिवाद जीवन के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो सर्वथा वैज्ञानिक है। वह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का विश्लेषण कर अर्थ को ही सम्पूर्ण विषमताओं का कारण और समाज में उसके समान विभाजन को प्रमुखता देता है।
2. प्रगतिवादी साहित्य कर्मशीलता का द्योतक है, शोषण का विरोधी स्वर इसमें मुखरित है तथा संघर्ष और क्रांति के माध्यम से साम्यवाद लाना चाहता है।
3. प्रगतिवाद में मानव के महत्व के प्रति अमिट विश्वास और समाज की अनिष्टकारी शक्तियों के विरूद्ध कठोर व्यंग्य है।
4. प्रगतिवाद का दृष्टिकोण पूर्णत: भौतिकवाद पर आधारित है। उसका ईश्वर, आत्मा और दार्शनिक भावनाओं से कोई संबंध नहीं है। वह इन बातों को मान्यता नहीं देता। आध्यात्मिकता का विरोध कर मनुष्य की कर्म शक्ति का समर्थन करते हुए संसार में मनुष्य को समाज केन्द्रित मानते हैं।
5. प्रगतिवाद का उद्देश्य पूँजीवाद, सामंतवाद जैसे सभी प्रतिक्रियावादी तत्वों से संबद्ध सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध कर ऐसे समाजवादी समाज की स्थापना करना है जिसमें सबको उन्नति का और जीवन की सुख-सुविधाओं को भोगने का समान अवसर और अधिकार प्राप्त हो।
6. कला को वह अभिव्यक्ति का साधन मानकर उसका सहज सरलतम रूप अपनाने पर बल देता है ताकि उसे सर्वसाधारण जनता भी समझ सके।

---
[1] प्रगतिवाद क्यों? उपेन्द्रनाथ अश्क, लेख, हंस, पृ.सं. 587

7. साहित्य में वह समाज को विशेष महत्व प्रदान करता है और व्यक्ति पर उसके नियंत्रण की आवश्यकता अनुभव करता है।
8. प्रगतिवाद का लक्ष्य साहित्य के माध्यम से प्रगति पथ के बाधक मूल विकारों जैसे रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, अज्ञानता, भ्रम, आडम्बरों का खंडन शोषण का विरोध कर कर्म और पुरूषार्थ को महत्व देना है।

इन तत्वों में पुरानी रूढ़ि-रीतियों से जर्जर समाज को नवीन साहित्य देने का आग्रह है, जिसमें वैज्ञानिक विचारों व आदर्शों से पुष्ट लेखन हो जो सारी जनता के कल्याण का साधन बन सके। एक ऐसे नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा करना है जो जाति, वर्ग देश की सीमाओं को तोड़कर मानव मात्र की उन्नति की कामना करता हो।

### 2.4.1 प्रगतिवादी का सैद्धांतिक पक्ष

प्रगतिवाद हिन्दी में मार्क्सवाद की साहित्यिक अभिव्यक्ति तथा साहित्य संबंधी मार्क्सवादी दृष्टिकोण का नाम है। प्रगतिवाद मार्क्सवाद से उद्भूत और विकसित होकर अपनी मौलिक दिशाएँ निश्चित करता एक पृथक विचार दर्शन बन गया है। प्रगति का स्वरूप विकास की ओर अग्रसर होना और बौद्धिक चेतना से जागरूक होने के साथ-साथ संवेदना और कलात्मक सौष्ठव के सामंजस्य में है। भारतीय दर्शन और धर्म में निहित प्रगतिवादी सूत्रों की ओर श्री हरिदत्त शर्मा कहते हैं कि "मार्क्स के द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के अंकुर भारतीय दर्शन में निहित रहते हैं।"[1] वास्तव में प्रगतिवाद की परंपरा हमारे साहित्यिक इतिहास में अनिर्दिष्ट रूप से चली आ रही थी। परंतु उसमें वैसी उग्र चेतना या यथार्थ का आह्वान संभव न हो पाया जैसे मार्क्सवाद से प्रेरित क्रांति द्वारा मुक्त हुए देशों में संभव हो सकी। लेकिन हमारे देश में अशिक्षा, निर्धनता, रूढ़िवादिता तथा हीनता की प्रवृत्तियाँ प्रारंभ में प्रगति पथ में अवरोधक थी।

[1] हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास : एक अध्ययन - सुशील कांत सिन्हा, पृ.सं. 26

"मार्क्सवाद से अनुप्राणित रूसी साहित्य का हिन्दी साहित्य पर विशेष प्रभाव पड़ा। रूसी साहित्य में प्रगतिवादी प्रवृत्तियों का निरंतर सूत्रपात होता गया। प्रगतिवाद के स्वरूप को रूसी साहित्य की उन प्रवृत्तियों ने और विकसित किया। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी लेखकों ने न्यूनाधिक प्रेरणा उन प्रवृत्तियों से ग्रहण की।"[1] मार्क्स ने संघर्ष में ही प्रगति के दर्शन किए हैं। मार्क्सवाद के समाज हित तथा सर्वसामान्य कल्याणकारी तत्वों को प्रगतिवाद ने ग्रहण किया है। प्रगतिवाद मूलत: मार्क्सवाद पर आधारित है, किंतु यह अपनी पृथक विशेषताएँ रखता है जैसे :

1. प्रगतिवाद केवल अतीत के उन्मूलन और वर्तमान के यथार्थ दर्शन की ही नहीं, वरन भविष्य के प्रति जागरूक रहकर जीवन एवं समाज में संघर्ष चेतना का शाश्वत एवं सर्वकालिक महत्व प्रतिष्ठित करना चाहता है। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता लाना चाहता है।
2. प्रगतिवाद का प्रमुख ध्येय जन सामान्य में समानता, मानव मात्र को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध कराने की बात है। सामान्य जनता के जीवन की विषमताओं किसानों के, मजदूरों के, दलितों के कष्ट भरे जीवन, उनकी दुखद गाथा को लेकर प्रगतिवाद का आविर्भाव हुआ जो समानता का हितैषी रहा।
3. मार्क्सवाद के केन्द्र में आर्थिक अवस्था का संतुलन है और इसे बनाये रखने के लिए राजनैतिक संघर्ष की ओर जनसामान्य को प्रेरित करते हैं। मानव जीवन के भौतिक आधार को महत्व देते हैं परंतु प्रगतिवाद केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वाधिकार के संघर्ष की ओर प्रेरित करता है। उसे संघर्षोन्मुख करना चाहता है। प्रगतिवाद का ध्येय मार्क्सवाद के दार्शनिक एवं राजनैतिक ध्येय की अपेक्षा कहीं व्यापक एवं सर्वोन्मुखी रहा है।

[1] हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास : एक अध्ययन - सुशील कांत सिन्हा, पृ.सं. 26

4. प्रगतिवाद में जो वर्ग-संघर्ष चित्रित होता है, उसका क्षेत्र केवल सामंत पूंजीपति, शोषक और शोषित एवं श्रमिक वर्ग तक ही सीमित नहीं, वह समाज के हर वर्ग जैसे जातिगत, व्यवसायगत यहाँ तक कि पारिवारिक क्षेत्र में भी चलने वाले परोक्ष रूप से या फिर प्रत्यक्ष रूप से शोषण की समस्याओं को उजागर करता है। शोषण के प्रति सहानुभूति और जागरण लाने का प्रयास करता है।
5. अतीत और वर्तमान समाज व्यवस्था के प्रति असंतोष तथा मार्क्सीय सिद्धांतों का प्रचार कर उनके प्रतिफलन की आकांक्षा के साथ समाज का यथार्थवादी चित्रण प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्ति रही है।
6. साम्राज्यवाद, सामंतवाद और पूंजीवाद के प्रति विद्रोह। नवीन व्यवस्था का आह्वान तथा बौद्धिकता के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
7. इतना ही नहीं प्रगतिवाद कर्म एवं पुरूषार्थ को ही सफलता का आधार मानता है और शोषण के पीछे विभिन्न आदर्शों, संस्कारों, रूढ़ियों तथा यथार्थ परिस्थितियों एवं विषमताओं का मूलोच्छेन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से करने में प्रयत्नशील रहता है।

### 2.4.2 प्रगतिवाद और प्रगतिशील

प्रगतिशील और प्रगतिवाद शब्द को लेकर हिन्दी के प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी साहित्यकारों में वैचारिक मतभेद वाला संघर्ष दीर्घकाल तक चलता रहा है किंतु आज हिन्दी के प्रगतिशील और मार्क्सवाद विरोधी साहित्यकारों द्वारा इन दोनों शब्दों का प्रयोग कहीं-कहीं एक ही अर्थ में किया जा रहा है, तो कहीं प्रगतिशील शब्द का प्रयोग समष्टि रूप से विकासशील प्रवृत्ति के द्योतक रूप में तथा प्रगतिवाद शब्द का प्रयोग मार्क्सवादी विचारधारा विशेष से सम्बद्ध साहित्य की धारा के लिए हो रहा है।

प्रगतिशीलता को किसी वाद विशेष से नहीं बांधा जा सकता और प्रगतिवाद मार्क्सवाद के सैद्धांति पक्षों में बांधा गया है। इन दोनों में अंतर वहाँ पैदा होता है जहाँ मार्क्सवाद के राजनीतिक पक्ष की कट्टरता को हटा दिया जाए तो वह प्रगतिशील ही रहता है। लाल झंडे या लाल सेना का आह्वान देश की सांस्कृतिक परंपरा और आध्यात्म पर अनास्था, नास्तिकता, उग्रता, वर्ग संघर्ष, मार्क्सवादी द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का समर्थन करना संसार के श्रमिकों का संगठन आदि ऐसी बातें प्रगतिशील में भी मिलती है। मार्क्सवाद या प्रगतिवाद कहने से एक तरह से दायरा सीमित हो जाता है और केवल आधुनिक काल से जुड़ जाता है। लेकिन यही बात प्रगतिशील के बारे में लागू नहीं होती क्योंकि प्रगतिशीलता के दर्शन प्राचीन काल में भी पा सकते हैं। जैसे कबीर अपने काल के प्रगतिशील कवि थे। कबीर तक ही सीमित न रहकर यह कहा जा सकता है कि निर्गुणवाद की ज्ञानमार्गी शाखा और उसके कवि प्रगतिशील थे। उन सभी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अत्याचार, दुराचार, रूढ़ि अंधविश्वास, जात-पात, छुआछूत सभी का विरोध किया। जैसे आधुनिक काल में अहिंसा का नाम गांधी जी से जुड़ गया लेकिन यह शब्द गौतम बुद्ध से आरंभ हुआ था। ऐसे ही मार्क्सवाद से प्रभावित प्रगतिवाद भी केवल आधुनिक काल से जुड़ गया लेकिन इसकी जड़ें हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में देखी जा सकती है। डॉ. प्रभाकर माचवे ने प्रगतिवाद की व्याख्या करते हुए प्रगतिवाद को अपने देश की युगानुरूप विकसित विचारधारा के रूप में ग्रहण किया - "प्रगतिवाद ऐतिहासिक आवश्यकताओं से उत्पन्न वस्तु है वह विदेशी चीज नहीं-हम प्राचीन का यथोपयोग अंधों की तरह पूजन नहीं चाहते।"[1] कोई भी कार्य अचानक आरंभ नहीं होता है, उसकी अपनी एक भूमिका होती है। इसके अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं, जैसे आज़ादी हमें 15

[1] हंस, जून 1949

अगस्त 1947 में मिली लेकिन इसकी भूमिका 1857 के विद्रोह से पहले शुरू हुई। ऐसे ही प्रगतिशीलता को मार्क्सवाद से प्रभावित प्रगतिवाद के दायरे में बांधने की कोशिश की गई है। लेकिन जो मार्क्स को नहीं जानता या प्रगतिवाद से भी परिचित नहीं है, वह भी परिस्थितियों तथा संदर्भ के अनुसार प्रगतिशील विचार रखता है। रामविलास शर्मा के विचारानुसार "ऐतिहासिक तथ्य यह है कि प्रगतिशील लेखकों में कम्युनिस्ट और गैर कम्युनिस्ट दोनों तरह के लेखक रहे। अत: प्रगतिशील लेखक मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं। लेकिन यह प्रभाव भिन्न-भिन्न प्रकार का रहा है।"[1] रामविलास शर्मा जी के अनुसार प्रगतिवाद और प्रगतिशील साहित्य में कोई अंतर नहीं है और वे उन्हें एक-दूसरे के पर्याय की तरह प्रयुक्त करते हैं। स्वयं प्रेमचंद जी का यह मानना था कि "श्रेष्ठ साहित्य और महान साहित्यकार स्वभावत: प्रगतिशील होते हैं।"[2] अपने इस मंतव्य से प्रेमचंद ने प्रगतिशील साहित्य को काफ़ी व्यापक अर्थ देता है।

**निष्कर्ष**

इस अध्याय में प्रगतिवाद की अवधारणा और स्वरूप बतलाते हुए प्रगतिवाद से तात्पर्य, किसी विशिष्ट विचारधारा को ग्रहण करना। यह साहित्य के संदर्भ में राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित मार्क्सवादी दृष्टिकोण है जिससे प्रभावित होकर भारत देश में भी भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना और इन सात अधिवेशनों द्वारा साहित्य में एक नई यथार्थवादी चेतना की स्थापना की गयी। प्रगतिवाद का महत्व यह है कि उसने हिन्दी साहित्य को एक नई जीवंत चेतना प्रदान की। प्रगतिवाद के स्वरूप में जगत की सभी वस्तुओं में विरोधी तत्व का संघर्ष होता है। मार्क्स का यह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और आर्थिक चिंतन प्रगतिवादी साहित्य में समानता की भावना लिए हुए है। प्रगतिवादी साहित्य में सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति

---

[1] प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 144

[2] प्रगतिवाद की समस्याएँ, पृ.सं. 54

तथा क्रांति व आंदोलन को महत्व देता है। मार्क्सवाद के प्रमुख तत्वों को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, परिमाणात्मक और गुणात्मक परिवर्तन विरोधी वृत्तियों का संघर्ष और वग-संघर्ष, ऐतिहासिक भौतिकवाद आदि प्रगतिवादी तत्व लिए हैं, इन सब में मार्क्सवाद और प्रगतिवाद का सार स्पष्ट होता है। प्रगतिवाद, मार्क्सवाद से उद्भूत और विकसित अपनी मौलिक दिशाएँ निश्चित करता हुआ एक पृथक विचार दर्शन बन गया। प्रगतिवाद जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, यह साहित्य की कर्मशीलता का द्योतक है, क्रांति के माध्यम से साम्यवाद लाना चाहता है। प्रगतिवाद के सैद्धांतिक पक्ष में प्रगतिवाद का मुख्य ध्येय सामान्य से समानता तथा मानव मात्र को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध   कराना है। भविष्य के प्रति जागरूक रहकर प्रगतिवाद जीवन में, समाज में संघर्ष का चेतना का शाश्वत एवं सर्वकालिक महत्व प्रतिष्ठत करना चाहता है।

# तृतीय अध्याय

# अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व

3.1 पूँजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अनत का वैचारिक पक्ष

3.1.1 अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना

3.2 पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना

3.2.1 मानव मुक्ति का आह्वान

3.3 क्रांति की अभिव्यक्ति

3.3.1 सामाजिक यथार्थ का चित्रण

निष्कर्ष

# तृतीय अध्याय

# अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील वैचारिक तत्व

साहित्य कभी सीमा, सरहद में बंधने वाला नहीं है, वह मनुष्य की चेतना का प्रतीक है। वह मनुष्य से, समाज से जुड़ा है। जिसके नित नये रूप को यह अभिव्यक्त करता आया है। साहित्य सीमातीत है। वह देश, परदेश, काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर जनमानस को प्रभावित करता है। संसार में साहित्य नई क्रांतियों का वाहक बन जागृति लाता है। ऐसी कई क्रांतियाँ तथा आंदोलन इसके प्रमाण रहे हैं।

समाज की विकाशील चेतना युक्त गति को प्रगतिशील माना गया है। नई चेतना वाले विचार तथा समय के साथ समाज में आए वह परिवर्तन जो परंपरावादी रूढ़ियों का खंडन कर ऐसी चेतना उत्पन्न करते हैं जो विकास और प्रगति की ओर ले जाती है, यही प्रगतिशील साहित्य का उद्देश्य है। प्रगतिशील साहित्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक माहौल उससे निरंतर चले आए परिवर्तन को साहित्य में समाहित करता है। ऐसा ही कुछ हम मॉरिशस के हिन्दी लेखक अभिमन्यु अनत की लेखनी में देखते हैं। वे अपने साहित्य के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के संघर्ष और यातनाओं से भरी जीवनगाथा तथा देश की संस्कृति के प्रति उनके लगाव का बड़ी ही मार्मिकतापूर्ण नई चेतना से युक्त अभिव्यक्त करते हैं। इनकी रचनाओं में प्रवासी भारतीयों का यथार्थपरक दर्शन है। प्रवासी जीवन शैली को सूक्ष्म तथा बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

## 3.1 पूँजीवादी दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अभिमन्यु अनत का वैचारिक पक्ष

जो साहित्य विकास तथा आपसी सद्भावना को पैदा करता है, वही प्रगतिशील है। चाहे हम प्रगतिशीलता को आधुनिकता से जोड़कर देखें प्रगति की कामना हमेशा से ही मनुष्य जीवन में सर्वोपरि रही है। मनुष्य जीवन सदैव अग्रगामी रहा है, प्रगतिशील रहा है। जो शक्तियाँ इसके

आगे बढ़ने में सदैव सहायक रहती है वही प्रगतिशील है। जिसे हर युग और हर काल के साहित्य में देखा जा सकता है। प्रगतिशील साहित्य में रूढ़िवादी, सामंतवादी, शोषक, अत्याचारी, कट्टरपंथियों का विरोध है, जो हमारे साहित्य के हर काल में देखा गया है। ये सारे प्रगतिशीलता के तत्व हमें सूफी संत कवियों की रचनाओं में भी मिल ही जाते हैं। जो कि इस बात का द्योतक है कि हर आंदोलन के पीछे प्रगति की कामना है। प्रगति की यह विचारधारा हमेशा चाहती है कि मानव समाज तथा उसकी स्थिति में निरंतर सुधार होता रहे। वह किसी महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए निरंतर आगे बढ़ता रहे। यह विचारधारा भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखती है। ऐसा ही दृष्टिकोण हमें अभिमन्यु अनत के साहित्य में उनके विचारों में दिखाई देता है। वे वर्तमान व्यवस्था को बदलने का समर्थन करते हैं ताकि उसे समाज के लिए और अधिक उपयुक्त तथा तर्कसंगत बनाया जा सके। वे समाज के निम्न मजदूर वर्ग, वंचित वर्गों की उन्नति के अवसर प्रदान करवाने के पक्षधर रहे हैं। अभिमन्यु अनत के साहित्य में उनकी कविता, कहानी, नाटकों तथा लेखों में भी शोषण तथा अत्याचार का विरोध, समष्टि हित मजदूर ताकि ग्रामीण जीवन का यथार्थ पूँजीवाद का विरोध कड़े शब्दों में देखा जाता है। वे सामान्य जनजीवन मजदूर वर्ग, शोषित वर्ग एवं उनकी दयनीय स्थिति का मार्मिक वर्णन अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करते हैं।

इनकी रचनाएँ प्रगतिशील साहित्य का व्यापक अर्थ लेकर चलती है जो निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा लिए हुए है। मानवीयता तथा आदर्श को साथ लेकर आगे बढ़ते हैं। अत्याचार के प्रति विरोध, आंदोलन, क्रांति, मजदूरों पर, दलितों के प्रति संवेदना के साथ-साथ मानवता और आदर्श को साथ लेकर चलते हैं। इनके साहित्य को पढ़ने से प्रगतिशील विचारधारा व्यापक रूप से दिखाई देती है। इस व्यापकता को दर्शाने के लिए इस अध्याय में उनके साहित्य में प्रगतिशील विचार रखने वाले तत्वों को देखते हुए कविता, कहानी, लेख आदि के उद्धरण उनकी विचारधारा को प्रस्तुत करने के लिए उद्धरित किए हैं। जैसे कि शोध का विषय उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना जिसे आगे आने वाले अध्याय में बताया जाएगा।

अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य के माध्यम से उपन्यास के खिलाफ खुलकर आवाज़ उठाई है तो कहीं अपनी संस्कृति तथा भाषा की रक्षा के लिए आवाज़ उठाई है, तो कहीं कठिन परिस्थितियों में भी इनके पात्र धैर्य के साथ यातनाओं को सहते हुए दिखाई देते हैं। प्रगतिशील होने के साथ-साथ इनकी विचारधारा कहीं-कहीं गाँधीवादी तथा मार्क्सवादी भी लगती है। जो उनके साहित्य में क्रांति और आक्रोश की भावना के साथ साहस और जागृकता के साथ प्रगति की ओर स्वस्थ प्रेरणा युक्त बल प्रदान करती है। जिस कारण इनकी रचनाओं में स्पष्ट तथा व्यापक रूप में प्रगतिशील चेतना देखी जाती है। अपनी पुस्तक आत्मविज्ञापन में अनत जी कहते हैं "शोषित मानव शोषण का आदी होकर उसे जीवन की स्वाभाविकता मान लेता है और उस लिजलिजेपन को संतोष के साथ जीता रहता है। लेखक उसके कानों में सिर्फ इतना ही कहता है कि जिसे वह भाग्य का लेखा समझता है वह कानून नहीं, उसे तोड़ना है। यह चेतना होती है। इसके बाद उपाय और सक्रियता आदमी की अपनी जिम्मेदारी होती है।"[1] वे अपने विचारों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त कर लोगों में नई चेतना जागृत करते हैं। उनके जीवन को बेहतर बनाने के संकेत मात्र में ही अपनी रचना की सार्थकता मानते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि आदमी को अपनी बेहतरी का उपाय खुद ढूंढना है। कमल किशोर गोयनका जी के अनुसार "प्रेमचंद और अभिमन्यु अनत जैसे साहित्यकार अपने हस्तक्षेप तथा सरोकारों में एकदम प्रत्यक्ष रहते हैं। वे मनुष्य और मनुष्यता के शत्रुओं के विरूद्ध कलम की लड़ाई लड़ते हैं।"[2] दमन, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता, आम आदमी की दुर्दशा के मनुष्य के दोहरे चेहरे विसंस्कृतिकरण आदि पर गहरा व्यंग्य करके समाज को जागृत करते हैं। वे मजदूर वर्ग के सच्चे पक्षधर हैं। अनत जी स्वयं कहते हैं "मैं पार्टियों में जाने से कतराता हूँ। मुझे इससे चिढ़ है। पहला कारण तो यह है कि उसे फिजूलखर्ची मानता हूँ। हर पार्टी के उन हजारों रुपयों के व्यंजन और शराब को मैं मजदूरों का खून बहना मानता हूँ। सामंतों के उस मनोरंजन और ऐय्याशी के वक्त बाहर हजारों भूखे तड़पते हैं। दूसरा कारण यह है कि भोज उन

---

[1] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 70

[2] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ-कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 17

लोगों को दिया जाता है जिनके पास पहले ही खाने-पीने को अगाध होता है। मैं उस पार्टी में जाने को तैयार हूँ और वह भी टाई बांधकर, जहाँ वर्ष में चाहे एक ही बार, देश को निर्मित करने वाले मजदूरों को दावत दी गई हो।"[1] यह मंतव्य अनत जी की मजदूरों के प्रति संवेदनशीलता तथा समाज में गरीबों की स्थिति को लेकर सामंतवादी सत्ता के प्रति आक्रोश स्पष्ट दिखाई देता है जो कि अभिमन्यु अनत के प्रगतिशील विचारों को उजागर करता है। जैसे प्रगतिशील साहित्य जनहितैषी है। जनता के हित से ओत-प्रोत नई जागृति लाने वाला साहित्य है। इन्हीं गुणों को समाहित किए हुए अनत जी की रचनाएं शोषित जनता के संघर्ष को अभिव्यक्त ही नहीं बल्कि उसके संघर्ष में नए प्राण फूंकती है। वे अपनी कलम को अत्याचार, रूढ़ियों तथा शोषण से जकड़ी जनता की मुक्ति का अस्त्र बना समाज विरोधी सामंतवादी सत्ता के प्रति विरोध कर निरंतर संघर्षशीलक रहे हैं।

'गोर्की' ने अपने एक लेख में कहा था "हवा की बनी हुई तोप से सचमुच के बमगोले नहीं फेंके जा सकते-हालांकि हवा भी पदार्थ है। विषय वस्तु का जितना ही अधिक सामाजिक महत्व होगा, उतनी ही अधिक आवश्यकता इस बात की होगी कि उसका रूप सुघढ़, उपयुक्त और स्पष्ट हो।"[2]

अभिमन्यु अनत श्रमिक वर्ग, उनकी संस्कृति, उनके समाज में व्याप्त लोकगीत, बिरह कजरी आदि को उनके दर्द की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके अभाव को उजागर करते हैं। वे साधारण जनमानस की जीवन शैली पर आधारित मुहावरों तथा लोकगीतों के माध्यम से साम्राज्यवादी, पूंजीवादी और सामंतवादी व्यवस्था के सताये हुए मजदूरों के संघर्ष का चित्रण करते हैं।

1) "न आटा न पाटा है

मैं का बेलूं सजनी, मैं का बेलूं!

---

[1] आत्मविज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 73

[2] आलोचना का जनपक्ष- डॉ. चद्रबली सिंह, पृ.सं. 215

तोर घर के आटा गीला होयले

मौर चूल्हा रोए जार-बेजार

..........सजनी मैं का बेलूं!"[1]

2) "तोहे का मिलेला ओ राजा

गरीबन के रोवा दुखवा के?

खेतवा तोहर होवे

पसीना हमार बहे

फिर भी राजा

हमार तोहार साझा ना होवे

तोहे का मिलेला ओ राजा

हमार हकवा के मार के.........."[2]

सामंतवाद के खिलाफ मज़दूर वर्ग पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने की समर्थता, लोकभाषा में विरोध का स्वर उठाते हैं ताकि सभी साधारण जनमानस इसे आसानी से समझ सकें और चारों ओर अत्याचार, अन्याय के विरोध का स्वर गूंज उठे क्योंकि अपनी इस अवस्था की पहचान कर उसके विरोध में साम्राज्यवादी सत्ता से प्रश्न किया जाना प्रगतिशीलता का द्योतक है। डॉ. कमल किशोर गोयनका के शब्दों में "अभिमन्यु अनत मॉरिशस के वास्तविक भूमि पुत्र तथा इस जातीय परंपरा के राष्ट्रीय उपन्यासकार हैं। मॉरिशस की भूमि वहाँ की भू-संस्कृति, भूमि-पुत्र भू-श्रमिक, भू-अंचल अनत की आत्मा के अंग हैं। यही कारण है कि उनके अधिकांश उपन्यासों का रंगमंच प्राय: कोई-न-कोई ग्रामांचल है तथा उनमें किसानों और श्रमिकों

[1] लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं.

[2] लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं.

के जीवन के संकट और चुनौतियाँ हैं।"[1] अभिमन्यु अनत की रचनाओं में मूल्यहीनता, विसंस्कृतिकरण, विसंगति का चित्रण ही नहीं, अपितु अधिकतर रूप से विषमता, विघटन, शोषण, दमन, भ्रष्टाचार आदि पर चिंतन तथा करारा व्यंग्य है जो कि जन मानस में जागृति लाता है। इनकी यही मानवीय चेतना और यथार्थ को रूपायित करने का सामर्थ्य ही प्रगतिशीलता की पहचान है। इन्होंने बचपन से ही अभाव और संघर्षपूर्ण जीवन जीया है। अमीरी-गरीबी के अंतर को बहुत निकटता से अनुभव किया है। कहीं-कहीं इनके पात्रों में इनकी ही छवि दिखाई देती है, चाहे वह 'लाल पसीना' का मदन हो चाहे 'और पसीना बहता रहा' का हरि या फिर 'गाँधी जी बोले थे' का परकाश, 'चलती रहो अनुपमा' का अभिजीत जैसे कई पात्रों में भी अभिमन्यु अनत के संघर्षपूर्ण जीवन की झलक दिखाई देती है। अपने साक्षात्कार में अनत जी ऐसी कई घटनाओं का वर्णन किया है जो कि उनके लेखन की प्रेरणा बनी।

"ईख की कटाई हो रही थी। कड़कती धूप में पसीने से तर मजदूरों के बीच मैं भी हाथ में गड़ांसा लिए छूटे हुए गन्ने बटोर रहा था कि कोठी का भीमकाय मालिक मेरे पीछे से आकर मुझे गाली दे गया। मैं चुप रहा। आगे बढ़कर उसने आग के लिए पुलियाँ बटोरती एक औरत को भी गाली दी। मैं चुप ही रहा। फिर सामने जो मजदूर था उसे अपने छाते से पीट-पीटकर उसकी माँ-बहन पर उतर आया। एक तो उस कड़कती धूप का सताया हुआ था, थकान भी उतनी ही थी। मालिक की उस हरकत ने मेरे खून को खौला दिया और उसकी दिशा में अपने गड़ांसे को चलाकर मैं मुंडेर पर खड़ा हो गया। उसके सहम जाने पर मैं पगडंडी से होकर घर लौट आया इस बार उस प्रण के साथ कि मैं मजदूरों के लिए गड़ांसा तो नहीं चलाऊंगा, पर उनकी ओर से सवाल जरूर करूंगा। अपना शब्द-स्वर उछालूंगा।"[2] तब से अन्याय के खिलाफ सवाल उठाते हुए अनत जनता की आवाज, सामंतवादी, पूंजीवादी वर्ग तक पहुंचा रहे हैं। सर्वहारा वर्ग जनवाद तथा वर्ग संघर्ष का स्पष्ट चित्रण इनके उपन्यास तथा अन्य साहित्य में कूट-कूट कर भरा है जो प्रगतिशील परंपरा

---

[1] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ-कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 21
[2] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 35

का निर्वाह करता है। वे स्वयं कहते हैं "मेरी समस्त रचनाएँ आम आदमी के संघर्ष और उसकी जिजीविषा को लेकर लिखी गई है।"[1] वे आम आदमी के लिए लगातार आज भी संघर्षरत हैं। वे अब भी मॉरिशसीय आम आदमी की भाषा अपने प्रसासी भारतीयों के अपने देश, अपनी भाषा, संस्कृति के लिए संघर्षरत हैं। वे हिन्दी के अस्तित्व की रक्षा के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। वे प्रवासी विद्वानों में हिन्दी भाषा सेवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। जो मॉरिशस में हिन्दी का परचम बड़े गर्व के साथ फहरा रहे हैं। अंग्रेजी, फ्रेंच, कियोली आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता होने के साथ-साथ इन भाषाओं पर अधिकार प्राप्त है। फिर भी हिन्दी भाषा और अपनी जड़ों से जुड़े होने के कारण अपने विचारों की अभिव्यक्ति ये प्राय: हिन्दी में ही करते हैं। जो सहज, सरल, मार्मिक तथा मुहावरे और लोकोक्तियों से युक्त अपनी विशेष महत्वता से पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। जिसमें यथार्थ का मर्मस्पर्शी चित्रण मानव संवेदना को जागृत करता है।

मॉरिशस में व्याप्त भारतीयता को देखकर उसे लघुभारत की भी संज्ञा दी गयी है और इस मॉरिशस स्थित लघु भारत के दर्शन हमें अभिमन्यु अनत के साहित्य से प्राप्त होते हैं। मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में अनत जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सिद्धहस्त हैं शायद इसीलिए विदेशी हिन्दी साहित्यकारों, विद्वानों में मॉरिशसीय साहित्यकारों का विशेष योगदान है। एक छोटे से देश में हिन्दी अपने चरम पुष्पित और पल्लवित हो रही है। हिन्दी के उन सेवियों में एक विशिष्ट नाम है अभिमन्यु अनत का जिन्होंने हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। वे हिन्दी के अतिरिक्त स्पेनिश, फ्रेंच, अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी लिखने की क्षमता रखते हैं, किंतु हिन्दी को ही उन्होंने अपने लेखन का आधार बनाया। उनका कहना है कि "भारतीय भाषाओं को छोड़कर अन्य भाषाओं में भी लिख सकता था, किंतु इसके कई कारण थे। पहला कारण हिन्दी इस द्वीप के गाँवों की भाषा रही है। उन गरीब मजदूरों की भाषा रही है जिन्होंने अपने घोर परिश्रम और दु:ख-दर्दों के बीच

[1] विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम - जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द, पृ.सं. 165

अपनी भाषा को पराई भाषा के हाथों नीलाम नहीं किया। दूसरों की भाषा का आदर किया, पर अपनी भाषा के लिए हर वक्त जान देने के लिए तैयार रहे। दुनिया के बहुत कम देश ऐसे होंगे जहाँ एक भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इतना भुगतना पड़ा हो। फिर भी उन शोषित मजदूरों ने उस वर्चस्व को धर्म निष्ठा के साथ पूरा किया। वह एक भारी सांस्कृतिक निष्ठा भाषा के प्रति गौरव का भाव था जिससे सुबह-शाम गन्ने के खेतों में तपते सूरज को सहते हुए गोरे मालिकों के कोड़ों की बौछारों को झेलने के बाद भी वे अपनी बस्ती में हिन्दी के पठन-पाठन में लग जाते।"[1]

अभिमन्यु अनत की विचारधारा किसी अन्य प्रगतिशील लेखक से कम नहीं है। वे समाज में दमित, शोषित, मजदूरों की आवाज ही नहीं, अपितु अपनी कलम के माध्यम से भाषा साहित्य में नए परिवर्तन किए जो कि प्रगति की ओर संकेत करते हैं। उन्होंने भाषिक, साहित्यिक, सामाजिक, जनलोक, मजदूरों से जुड़ी समस्याओं को खूब उकेरा है। जिसमें उनकी प्रगतिशील विचारधारा के दर्शन होते हैं। समाज, साहित्य की सभी दमनकारी शक्तियों का विरोध कर उसके महत्व को बतलाया है जिससे जनमानस तथा देश प्रगति की ओर आगे बढ़ेगा।

### 3.1.1 अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील चेतना

समाज में विकासशील चेतना युक्त गति लाने वाले साहित्य को प्रगतिशील साहित्य माना गया है। यह साहित्य समाज के उस वर्ग का साथ देता है, जो प्रतिक्रियावादी है। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बेड़ियों के विरूद्ध क्रांति उपस्थित कर परंपरावादी रूढ़ियों का खंडन करता है। प्रगतिशील साहित्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी चेतना उत्पन्न करना है जो विकास और प्रगति की ओर ले जाती है।

प्रगतिशील साहित्य में मानव मुक्ति का संदेश निहित है जो संघर्षशील रहने की प्रेरणा देता है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार "प्रगतिशील आलोचकों ने अनुभव किया कि ऐसे समय जबकि सामाजिक संकट गहरा हो गया हो, साहित्य के ब्रह्मानंद की चर्चा करना, साहित्य में शुद्ध आनंद

---

[1] विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम - जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द, पृ.सं. 165

लेने का उपदेश देना उसका अपमान करना है। इसलिए प्रगतिशील लेखकों ने आवाज लगायी कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य है जनता को संघर्ष के लिए शक्ति देना तथा उस संघर्ष में विजय प्राप्त करके मुक्त होने के लिए मार्ग दिखाना।"[1] ऐसी ही कई प्रमुखताएँ अभिमन्यु अनत के साहित्य में नजर आती हैं। अनत जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। इनके द्वारा रचित सभी साहित्यिक विधाओं में इनकी प्रगतिशील चेतना के दर्शन होते हैं। चाहे वह कहानी, संस्मरण, काव्य नाटक या फिर उपन्यास हो। इनकी रचनाओं में समाज से जुड़ी समस्या उजागर की जाती है। वे अपने देश में व्याप्त सामंतवादी, पूंजीवादी, विदेशी साम्राज्यवादी व्यवस्था के द्वारा किये गये शोषणों की दुखद गाथा तथा गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा का मार्मिक चित्रण करते हैं। पूंजीवादी दमनकारी नीतियों का विरोध करते हैं। इनकी रचनाओं में किसान मजदूर शोषण का विरोध, नारी स्वतंत्रता, नई विचारधारा, नई चेतना के साथ क्रांतिकारी विचारधारा है जो आंदोलन को प्रेरणा देती है। डॉ. कमल किशोर गोयनका के शब्दों में "वह मानव के मूलभूत अधिकारों का समर्थक एवं प्रचारक हैं। उसे सत्ता से घृणा है परंतु आम आदमी से प्रेम है। आम आदमी के सुख-दुख के लिए सत्ता से प्रश्न करने का साहस रखता है।"[2] वे समाज में कहीं भी सर्वहारा वर्ग के साथ शोषण और अन्याय, अत्याचारा का खुलकर विरोध करते हैं। वे साम्राज्यवादी, पूंजीवादी सत्ता पर अपने तीखे प्रश्नों से सत्ता प्रदत्त सरकार को भी फटकारने से नहीं चूकते। भले ही उनकी रचनाओं को जब्त कर लिया गया हो। वह निडर होकर दो टूक बात करते हैं। यही विचारधारा उनके साहित्य को नई प्रेरणा प्रदान करती है। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व किसी से अर्जित किया या किसी से मांगा हुआ नहीं है। यह उनके निजी जीवन में आये अभाव, संघर्ष के साथ परिस्थितियों की आंधी तूफान से टकराकर भी निर्भीक, फक्कड़ तथा विद्रोही प्रवृत्ति इनमें है। हाँ, प्रेमचंद और शरतचंद्र का प्रभाव इन पर खूब दिखाई देता है। ये स्वयं स्वीकारते हैं कि आम आदमी को समझने की दृष्टि

---

[1] हिन्दी आलोचना की प्रगतिशील चेतना - रूस्तमराय , आजकल अगस्त-सितंबर 1986, पृ.सं. 46

[2] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएँ - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 16

इन्हें प्रेमचंद से मिली है और कलाकार की दृष्टि शरतचंद्र से। इस पथ पर आगे बढ़ अनत जी सर्वहारा के हितैषी रचनाकार बन उचित हुए।

"समाज में सत्ता रस एवं सत्ता प्रदत्त रस के आस्वादक तो बहुतेरे मिलेंगे, पर सत्ता-प्रदत्त चुनौती के कड़वे फल को चखने वाले विरले ही होते हैं। अनत जी उन्हीं विरले में से एक हैं। विश्व हिन्दी साहित्य लेखकों में किसी मॉरिशसीय लेखक को सम्मानित करने का प्रश्न उठेगा तो अनत जी का नाम कनिष्ठिकाधिष्ठित रहेगा।

स्वाभिमान का अंश अनत जी के व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरा है, पर अहंकार का अनु अंश लेशमात्र भी उनमें नहीं है। साहित्य में भी पंदे-पंदे यह भाव देखने को मिलेगा।"[1] मॉरिशस का बौद्धिक वर्ग सह रचनाकार भी अनत जी की रचनाधर्मिता की प्रशंसा करने से नहीं चूकता। इनका स्वाभिमान, क्रांतिकारी भावना हमें उनकी रचनाओं में प्रचुर रूप से दिखाई देगी। उदाहरणार्थ अनत द्वारा रचित नाटक के पात्र एक मजदूर होने के साथ-साथ अपने सम्मान की रक्षा हेतु मनुष्य को अपनी इज्जत और हक के लिए अपने गीतों के माध्यम से उन्हें एहसास दिलाना चाहते हैं कि वे भी मनुष्य हैं। इज्जत से जीना उनका समान अधिकार है। जहां प्रगतिशील विचारधारा स्पष्ट दिखाई देती है क्योंकि प्रगतिशील लेखक अपने आस-पास घटित शोषण अत्याचार को अनदेखा नहीं करता, वह उसके विरोध में आवाज जरूर उठाता है।

"ये लोग नहीं चाहते कि गुलामों की तरह जिंदगी बसर करने को मजबूर ये मज़दूर अपने अधिकारों को पहचानकर उसका तकाजा करे। मैं भागता फिर रहा हूँ-अपने प्राण की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि अपने उन गीतों की हिफाज़त के लिए, जिनमें मेरे अपने प्राण हैं। अपने अधिकार की पहचान और अभिव्यक्ति है।"[2] अनत जी अपने मजदूर वर्ग में नई चेतना जागृत करने हेतु लोक जीवन से जुड़े गीतों के माध्यम से उनमें क्रांति की चिंगारी भड़काते हैं जो एक आंदोलन बनकर अन्याय का, अत्याचार का विरोध करने में सक्षम भूमिका निभायेगा। समानता का भाव, अपने

---

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्यामधर तिवारी, पृ.सं. 86

[2] आत्म विज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 96

मनुष्य होने के महत्व को पहचानना अत्याचार का विरोध खुलकर करेगा। समानता का भाव, अपने मनुष्य होने के महत्व को पहचान, बुद्धि विवेक के बल पर हित और अहित की पहचान, अत्याचार का विरोध आदि अनेक प्रगतिशील तत्व इनकी रचनाओं में खुलकर प्रदर्शित होती है। अनत जी द्वारा रचित मरिशा गवाही देना नाटक के कारण साम्राज्यवादी मानसिकता रखने वालों ने अनत द्वारा संचालित साहित्यिक टेलीविजन कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगवा दिया गया क्योंकि अनत जी की रचना लोगों में एक नई सोच, एक नया विवेक, एक नए प्रकाश के साथ अन्याय का विरोध करने की शक्ति का संचार करने में समर्थ है। इनके ये सारे विशेष गुण स्पष्ट रूप से इनके उपन्यासों में निखर कर आते हैं। 'लाल पसीना' को इसका प्रमाण साहित्यकारों ने माना है। ऐसे ही कई उपन्यास जो कि प्रगतिशील तत्वों से ओत-प्रोत हैं, उन्हें अगले अध्याय में स्पष्ट किया जाएगा। उपन्यास लेखन में अनत का स्थान श्रेष्ठ है किंतु हम देखते हैं कि इनके नाटक तथा लघुकथाओं में भी जीवन का यथार्थ रूपायित होता है। विघटन-विभेद, शोषण, दमन, दयनीयता, भ्रष्टाचार, आम आदमी की दुर्दशा, अत्याचार आदि पर करारा व्यंग्य करते हुए पाठकों में जागरूकता लाने का प्रयत्न है। गोयनका जी को दिए गए साक्षात्कार में पूछे गये सवाल पर कि आपने शोषित एवं गूंगे वर्ग की पीड़ा पर लिखा है। क्या आप स्वयं को शोषितों का लेखक कहलाना चाहेंगे? इस पर अनत का जवाब है "मैं किसी प्रतिबद्धता का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहता फिर भी मेरा लेखन एक समर्पित लेखन है। मैं उन सभी वर्गों की पीड़ा को शब्द देने का प्रयास करता हूँ जिनकी आवाज़ें जब्त हैं। मेरे पात्रों में वह फाइलों के नीचे दबता हुआ क्लर्क भी है, अफसरों की गुलामी को स्वीकारे हुए चपरासी भी है, मंत्री को चुनाव के दौरान बैलेट पर छोटा सा क्रास देकर अब ईसा का क्रास पीठ पर लिये दबा जा रहा आदमी भी है, मालिकों के लिए जमीन पर उगी फसल काटता हुआ गरीब मजदूर भी है, वह औरत भी है जो वेश्या है पर जो भोगने वालों की नजर में औरत नहीं है। वास्तव में, मैं उन बहरों तक उनकी आवाज पहुंचाने की चेष्टा करता हूँ जो इनकी आवाजों को न सुन पाने का स्वांग रचे होते हैं। इसके बाद आप मुझे किसी का भी

लेखक कह लें।"[1] अनत जी की रचनाओं में आर्थिक दुर्व्यवस्था मजदूरों के शोषण और उन पर किए गए जुल्मों का, उनकी व्यथा का यथार्थ चित्रण है। आम आदमी से जुड़ी सामाजिक विसंगतियां और अंतर्विरोधों के बीच अत्याचार और शोषण सहने वाले दीन-हीन लोगों की समस्या को उजागर किया है। इनके अधिकतर उपन्यासोंके प्रमुख पात्र या उसकी कहानी निर्धन मजदूर वर्ग के जीवन की व्यथा उसके संघर्ष का चित्रण है। जैसे 'और नदी बहती रही' उपन्यास में खेतिहर मजदूरों की व्यथा का बड़ा ही मर्मस्पर्शी यथार्थवादी चित्रण है तो कहीं 'आंदोलन' उपन्यास में मॉरीशस के वर्तमान समाज में बिगड़ी राजनीतिक व्यवस्था, पूंजीवादी, अवसरवादी व्यवस्था के विरूद्ध युवा वर्ग का संघर्ष है तो कहीं जात-पात के नाम पर सांप्रदायिकता की बेड़ियों को तोड़ने का प्रयत्न है। 'एक बीघा प्यार' में अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष है। 'लाल पसीना' में सामाजिक चेतना तथा जागरण एवं संगठन के लिए इतिहास के उस छुपे हुए यथार्थ का चित्रण है जिसमें भारतीय गिरमिटिया मजदूरों पर ढाई गई यातनाओं का नग्न यथार्थ है। जो खुद भुखे प्यासे यातनाओं को सहते रहे और अपना खून पसीना बहाकर अपने लिए आत्मसम्मान भी नहीं बचा पाते और उधर मालिक की तिजोरियों में इनका खून पसीना व्यथा अधिकार सब कुछ लूटकर भरी जाती रही। इसी तरह के इनके उपन्यास एक संघर्ष की दासता की कड़ी के रूप में जुड़ते गये। जैसे 'लाल पसीना' और 'पसीना बहता रहा', 'गाँधी जी बोले थे' आदि। 'चौथा प्राणी' में जात-पात का एवं ऊंच-चीन के भेदभाव के बीच संघर्षशील नारी की कहानी है जो संघर्ष कर समाज में अपनी एक नई पहचान बनाती है। जो अबला की उक्ति को मिटाकर सबला है, अपने बल पर आगे बढ़ने की क्षमता रखती है। प्रगतिशील साहित्य ऐसे ही प्रमुख तत्वों को इनके उपन्यास कुहासे के दायरे में वर्ण भेद, वर्ग भेद, आर्थिक वैषम्य और मालिक और मजदूर के अंतर का यथार्थ है। समाज में नारी के उत्थान, उसकी स्थिति को लेकर प्रगतिशील साहित्य अधिक प्रयत्नशील रहा है और इन्हीं प्रगतिशील तत्वों को अपने साहित्य में समाहित किए हुए अनत जी अपने उपन्यासों में जैसे

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 15

'मेरा निर्णय', 'अचित्रिता', 'एक उम्मीद' और 'फैसला आपका' आदि उपन्यासों में कहीं नारी शोषण, अत्याचार, समाज में उनकी स्थिति के साथ-साथ स्त्री को कहीं स्वाभिमानी नई वैचारिक क्रांति वाली विचारधारा युक्त वाचर है तो कहीं समाज में उसके प्रति बदलते दृष्टिकोण है तो कहीं वेश्यावृत्ति में नरक झेलती स्त्री के मन की पवित्रता है। नारी के विविध रूप के साथ उस पर किये गये अत्याचार और शोषण के विरोध के साथ-साथ परिस्थितियों से लड़ने का उसके संघर्ष का यथार्थ पूर्ण चित्रण है। ऐसे ही अनेक प्रगतिशीलि विचार इनकी रचनाओं के माध्यम से तथा इनके लेख व साक्षात्कार में कहे गये इनके विचारों से स्पष्ट रूप में उजागर होते हैं किंतु अनत जी किसी वाद या सीमा में सीमित न होकर क्रांति और प्रगति की मशाल हमेशा जलाए रखना तथा शोषित और व्यथितों की व्यथा को उजागर कर उनके लिए इंसाफ़ की गुहार लगाते रहने में विश्वास रखते हैं। इनके ऐसे ही अन्य प्रगतिशील विचार जो इनके उपन्यासों में उभरकर दिखाई देते हैं उन पर चर्चा आने वाले अध्याय में विस्तार से की जाएगी।

"मालिक-मजदूरों में सामाजिक-आर्थिक भेदभाव और तज्जन्य संघर्ष को अनत जी ने अपने अनेक उपन्यासों में उपजीव्य बनाया है। प्रारंभिक भारतीय अप्रवासी समाज के कुली मजदूरों ने विविध यातनाओं तथा दंडों को सहते हुए अपनी मेहनत से, अपने प्रस्वेद बूँदों से मालिक की तिजोरी को भरा, किंतु अपने हक के लिए, अपनी अस्मिता, प्रतिष्ठा एवं अस्तित्व के लिए तथा बेहतर समाज के लिए सदैव संघर्ष करते रहे।"[1] समाज की बेहतरी और प्रगति ही देश को प्रगति की ओर ले जाती है और आज के युग में प्रगतिशील होना ही मनुष्य के जीवन की प्राथमिकता है। अनत की प्रगतिशील विचारधारा ही उन्हें देश में व्याप्त सामाजिक तथा आर्थिक विषमताओं को मिटाकर समानता का भाव लाना चाहते हैं। शोषितों को न्याय दिलाना चाहते हैं। इसीलिए वह लगातार आज तक इस प्रगतिशील विचारधारा को लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से नित नए सवाल खड़े करते हैं। पूंजीवादी व्यवस्था के विरोध में अपनी कलम के संघर्ष को 74

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और िवकास - डॉ. श्यामधर तिवारी, पृ.सं. 151

वर्ष की आयु में भी लगातार जारी रखा है। अब तक जुटाए गये साक्ष्यों की जानकारी के अनुसार 62 से अधिक रचनाओं के माध्यम से समाज से, देश से, संसार से जुड़ी समस्या और उसके जलते प्रश्नों को लगातार उठाते चले आ रहे हैं।

कविता के संदर्भ में अभिमन्यु अनत कहते हैं "शिवमंगल सिंह सुमन जी के लिए मेरा कथा साहित्य जहां प्रेमचंद और मोहन रोकेश के छोरों को जोड़ता-सा प्रतीत होता है वहीं मेरी कविताओं का शब्दशोधन उन्हें रूस के क्रांतिकारी कवि मायकोव्यस्की की याद दिलाता है और मेरी कभी नव न होने की आन उन्हें निराला के सर्वहारा स्वाभिमान की याद दिला जाती है।

आपको मेरी कविताएं अगर आज के सियासती व्यूह में आम आदी की उस खामोश यातना की याद दिला दे तो उनके कविता न होने पर भी मैं उनकी सार्थकता स्वीकार लूंगा।"[1] अभिमन्यु अनत की कविताओं में आम जनता की व्यथा, उसके संघर्ष ही नहीं, अत्याचार और शोषण को मिटाने का आह्वान भी है। वे देश और समाज की वर्तमान स्थिति को लेकर बड़े ही कड़े शब्दों में उसका खंडन करते हैं, विरोध करते हैं। आर्थिक विषमता जो मानव को छोटा-बड़ा, ऊंचा-नीचा वाले अंतर पैदा करती है। पूंजीवादी व्यवस्था की बनाई हुई यह मालिक और मजदूर की खाई को पाटना कठिन कार्य प्रतीत होता है, फिर भी इस भेद को मिटाने के लिए रचनाकार निरंतर प्रयत्नशील है क्योंकि प्रगतिशील का अर्थ केवल प्रगति यथार्थ का चित्रण, व्यथा का चित्रण कर नई चेतना जागृत करना ही नहीं, इसके साथ श्रम तथा उसके सौंदर्य को प्रस्तुत करना है, भ्रष्टाचार का विरोध करना मुख्य उद्देश्य है। समाज में जागृति पैदा कर, साम्राज्यवादी, सामंतवादी शक्तियों का विरोध कर आंदोलन छेड़ना तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषमता का यथार्थ प्रस्तुत कर एक नई चेतना जागृत करना है। उदाहरणार्थ इनका काव्य संग्रह 'नागफनी में उलझी साँसें'

"रोटी तुम्हारे पास भी है

[1] आत्म विज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 127

रोटी मेरे पास भी है

फर्क बस इतना ही है

मैं अपनी रोटी

अपने ही आँसुओं में बोरकर खा लेता हूँ

तुम अपने घी की रोटी

मेरे जम आये खून में बोर-बोर कर खा लेते हो।"[1]

अपनी धरती के संघर्ष और समाज के वैषम्य को उजागर करते हुए बतलाया है कि उनके देश के सूरज अभिजात वर्ग के प्रलोभनों में फंसकर जन जीवन के दुख-दर्द को भूल अपने कर्त्तव्य से विमूढ़ हो गया है। वे प्रतीकात्मक रूप से पूंजीवादी व्यवस्था की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति जो पैसे के बल पर सब कुछ खरीद सकती है, कहकर समाज के इस अंतर पर व्यंग्य कसा है।

"जिस दिन सूरज को

मजदूरों की ओर से गवाही देनी थी

उस दिन सुबह नहीं हुई

सना गया कि

मालिक के यहाँ की पार्टी में

सूरज ने ज्यादा पी ली थी।"[2]

अनत जी इतिहास को झूठा मानते हैं क्योंकि इस इतिहास में केवल जमींदार और पूंजीपतियों के, बड़े लोगों के नाम हैं। इतिहास में इस देश को बसाने वाले प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों को भूला दिया है जिसने अपने खून पसीने को बहाकर यातना सहते हुए इस बंजर भूमि को उर्वर बनाया। ऐसे मजदूर वर्ग की अनदेखी उनके लिए असहनीय है, क्योंकि इससे आम आदमी के दु:ख को इस देश को समृद्ध करने के लिए उन पर ढाये गए जुल्म को अनदेखा कर दिया गया।

---

[1] नागफनी में उलझी साँसें - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 40

[2] गिरवी पड़ी किरणें - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 9

"अपने सीले आक्रोश की तरह
अपने प्रसुप्त संघर्ष की तरह
अपनी विकलांग छटपटाहट की तरह
समुद्र की थपथपाती लहरों पर डगमगाती
लकड़ी कि किश्ती डूबने से इनकार करती"[1]

लगातार शोषण सहते हुए भी क्रांति की ज्वाला मन में जलाए आंदोलन को रूकने नहीं दिया और व्यवस्था से अभिमन्य अनत का संघर्ष निरंतर चला आ रहा है। यह अपने समाज की संस्कृति, अस्मिता की आजादी अपनी पहचान के संघर्ष की अत्याचार और अन्याय की यथार्थ गाथा है जो इनके साहित्य को प्रचुर मात्रा में प्रगतिशील दर्शाता है।

## 3.2 पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदना

समाज में सामान्य जन जीवन के दुख-दर्द तथा दलितों की पीड़ा को समझने में प्रगतिशील साहित्य अग्रगण्य है। यह साहित्य समाज की विकृत स्थिति को पहचानकर उसे बदलकर नई व्यवस्था लाने की कामना रखता है। इसी दिशा में वह संघर्ष करते हुए लोगों में नई चेतना भरता है, प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है क्योंकि प्रगतिशील लेखक वह है जो समाज में शोषितों के प्रति गहरी संवेदना रखता है। उन्हें अपनी स्थिति से अवगत करा अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है। जैसे श्री अभिमन्यु अनत अपनी रचनाओं में मॉरिशस के इतिहास में गिरमिटिया मजदूरों पर हुए अत्याचार और शोषण के प्रति गहरी संवेदना रखते हैं।

अनत जी की रचनाओं में अधिकतर मजदूरों पर हुए शोषण व अत्याचार की यथार्थ अभिव्यक्ति है जो आत्मा को झकझोर देती है। व्यथा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण इनके साहित्य में देखा जाता है। कुछ विद्वान तो अनत जी को मजदूरों की दुखद गाथा का गायक मानते हैं तो कुछ इनकी रचनाओं को दमित शोषित मजदूर वर्ग की आवाज मानते हैं। "मॉरिशस का हिन्दी उपन्यास

[1] गुलमोहर खिल उठा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 42

समग्रता : आप्रवासी भारतीयों की दुर्दशा का महाख्यान है। स्वतंत्रता से पूर्व फ्रांसीसी एवं अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियों ने यदि उनका शोषण किया है तो स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के झीने आवरण तले ढके इन्हीं राष्ट्रों की कुसित पूंजीवादी नीतियों ने भारतीयों को गिरमिटिया संतान के अभिशाप से मुक्त न होने देने का मुहिम चला रखी है। मॉरिशस का प्रत्येक संवेदनशील, प्रबुद्ध व्यक्ति अपने अतीत और वर्तमान को लेकर असुरक्षित है। .......गुलामी के दौरान मालिकों के तमाम उत्पीड़न-दमन के बीच सिर पर कफ़न बांधकर राजनीतिक, आर्थिक-सामाजिक स्वतंत्रता की विकट लड़ाई मानसिक-नैतिक दृढ़ता का प्रमाण भी। इसलिए मॉरिशस के बेहतरीन हिन्दी उपन्यास वही बन पड़े हैं जहाँ इतिहास में गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा-कथा संघर्ष का बाना पहनकर पृष्ठ-दर पृष्ठ वर्तमान जीवन की खानगी शामिल हो गयी है। इस दृष्टि से तीन उपन्यास विशेष उल्लेखनीय हैं - 'लाल पसीना' और 'गाँधी जी बोले थे' (अभिमन्यु अनत), 'इस माटी से' (रामदेव धुरंधर)।"[1] भारत से जो खेतिहर मजदूर बेहतर जीवन जीने की कामना मन में लिए मॉरिशस गये थे किन्तु वहाँ पहुँचकर उनकी इस बेहतरी की लालसा का मोहभंग फ्रांसीसी गुलामी से हो गया, जहाँ लगातार केवल अत्याचार और शोषण था। चौबीसो घंटे अथक परिश्रम, ऊपर से कोड़ों की मार तथा आधा पेट भोजन, वह भी सड़ा हुआ आदि अनेक मर्मस्पर्शी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति अभिमन्यु अनत की रचनाओं में अंकित है। मॉरिशस में भारतीय मज़दूरों की अति दयनीय अवस्था और अनदेखा किया जाना अत जी को बहुत खलता था। यह विषय उन्हें निरंतर बेचैन करता है कि मॉरिशस के इतिहास में उनके संघर्ष उन पर ढाये गये जुल्मों को अनदेखा किया है। यहाँ तक कि उनकी भाषा लोकगीत, सांस्कृतिक, धार्मिक ग्रंथ सब की खूब दबाया जाता रहा है। गिरमिटिया मजदूरों की इतनी दयनीय स्थिति थी कि मालिकों के कानून उनको दबाने के लिए ही बनते थे। उनके अपने मान तथा अस्तित्व से जुड़ी हर चीज़ को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाता था। यह उनके जीवन की दुखमय विडम्बना ही है कि उनके लिखे हस्तलिखित

[1] आलोचना अक्तूबर-दिसंबर 2004, जनवरी-मार्च 2005

दस्तावेजों को प्राप्त करना लेखक के लिए अति दुष्कर तथा कठिन कार्य साबित होता है जिस पर अभिमन्यु अनत जी कहते हैं-

"मॉरिशस की अपनी तारीख में आम आदमी के संघर्ष और उसके इतिहास बनाने और बंजर पड़ीभूमि को स्वर्ग में परिवर्तित कर देने वालों के अभियान का नामोनिशान भी नहीं। इस देश के इतिहास में कुलियों और गुलामों के खरीददारों और मालिकों की चर्चा है। शोषक और गरीब मज़दूरों के पसीने की बून्दों को तिजोरियों में इकट्ठा किये जाने वालों की कहानियाँ हैं। उनकी भी कहानियाँ हमारे इतिहास में हैं जो इतिहास के पन्नों को खरीद सकने की ताकत रखते थे और जिनमें दम था। चारणों से अपना गुणगान करवा लेने का।

यही कारण है कि मॉरिशस में भारतीय आप्रवासियों के आगमन, उनके संघर्ष, उनकी यातनाओं, दारूण दंडों की कहीं कोई सही चर्चा नहीं मिलती। हमारे इतिहासकारों ने पूंजीपतियों के द्वारा लिखाये गये इतिहास उनके द्वारा संग्रहित तथ्यों को ही सही इतिहास मानकर आज तक उसी ऐतिहासिक झूठ को गिंजा है।"[1] इसी कारण अभिमन्य अनत इस इतिहास को गूंगा इतिहास मानते हैं जिसने आम आदमी को अनदेखा कर साम्राज्यवादी, पूंजीवादी वर्ग का गुणगान किया है। जुल्म, शोषण, अत्याचार, पीठ पर कोड़े खाकर दर्दनाक दंडों से भरी नारकीय दुखद गाथा अब सुनने वाला भी कोई नहीं बचा। उनके साथ उनकी व्यथा तथा संघर्ष की दुखद गाथा भी मिटती रही। जिसकी टीस अनत जी को निरंतर कचोटती रही। जिस कारण उनकी लेखनी दमितों, शोषितों, पीड़ितों की आवाज बन उनकी व्यथा को अभिव्यक्त करने लगी।

"जीवन का चरम सुख मेरे लिए आदमी पर से आदमी के शोषण का अंत हो जाने से क्या होगा। उसे ही अपने लिए और पूरी मानव जाति की चरम उपलब्धि मानंगा। कृष्ण के व्यक्तित्व से प्यार करता हूँ। मैं शांति की खोज में नहीं रहता- यह दूसरी बात है कि पूरे अंतरिक्ष और पूरे विश्व की शांति की कामना मेरे भीतर हमेशा होती है। अपनी अशांति को मैंने हमेशा चाहा है। उसकी

---

[1] अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएँ - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 322

अकुलाहट में ही तो लिख लेता हूँ या फिर हलाहल का गिलास हाथ में ले लेता हूँ, क्षण भर की बेसुधी के लिए।"[1] इस कथन से यह सिद्ध होता है कि अनत शोषितों, पीड़ितों के प्रति गहरी संवेदना रखते हैं और मनुष्य को समय के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए अधिकारों के लिए लड़ाई जारी रखने का संदेश देते हैं। वे हताशा, निराशा को त्यागकर आदमी-आदमी के बीच के अंतर को अस्मिता के हनन को रोकने के लिए आक्रोश तथा क्रांति की भावना जगाकर समाज में नई चेतना जागृत करना चाहते हैं जो इस दयनीय अवस्था से बाहर निकलने में सहायक सिद्ध हो और आंदोलन जारी रहे। अनत जी मानते हैं कि संघर्ष करके अपने अस्तित्व को कायम रखना प्रत्येक प्रगतिशील समाज की चाह है क्योंकि तभी प्रगति संभव है। गरीब मजदूरों के प्रति संवेदना रखते हुए अनत जी ने मजदूरों, दलितों, छोटे किसानों की निर्धनता दयनीय अवस्था उसमें पिसता समाज का निर्धन तबका उसके व्यथा का यथार्थ चित्रण किया है। अत्याचार सहने की उनकी पीड़ा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। ये मानवतावादी चेतना को जागृत करने वाले रचनाकार हैं। अनत जी के पर पगडंडी नहीं मरती उपन्यास को लेकर डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि कहते हैं "इस उपन्यास में अनत ने भले ही क्रांति का कोई नारा नहीं उछाला है, न ही श्रमिकों का कोई संगठन ही पूंजीवादियों से सीधे टकराया है अपितु इसमें मानवीय संवेदना की अर्थवत्ता पाई जाती है।"[2] अनत जी की रचनाओं में शोषितों के प्रति दु:ख और संवेदना ही अनत को बेचैन कर देती है व्यवस्था से सवाल करने के लिए। जिससे वह मजदूरों की मुक्ति की छटपटाहट और मालिकों के अत्याचारों, यातनाओं का यथार्थ गढ़ते हैं। अपनी रचना प्रक्रिया को लेकर अनत जी का मानना है कि "मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा इतिहास की यातना, उससे उपलब्ध आम आदमी की वह दयनीय स्थिति और उसका उस स्थिति के समाने कभी न टूटने का संकल्प रहा है। इसी ने मुझसे मेरी रचनाएं लिखवाई है।"[3] अनत की यह विचारधारा रचना प्रक्रिया तथा उनकी प्रेरणा सभी

---

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 36
[2] मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य : डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, पृ.सं. 65
[3] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 56

प्रगतिशील साहित्य के प्रमुख तत्वों को लिए हुए है जिसमें संघर्ष क्रांति के साथ-साथ पीड़ितों, शोषितों के प्रति अगाध संवेदना है, जिसका पुट इनके उपन्यासों तथा अन्य विधाओं में अनायास ही दिखाई दे जाता है जो पाठकों के मर्म को छू जाता है, समाज में प्रगति की नई चेतना जगाता है। इनके साहित्य को प्रगतिशीलता की ओर ले जाता है, जिसके हिमायती प्रेमचंद थे।

### 3.2.1 मानव मुक्ति का आह्वान

प्रगतिशील साहित्य सर्वहारा तथा सामान्य जनमानस की मुक्ति का साहित्य है। दमितों, शोषितों की वेदना आक्रोश, निराशा, अत्याचार को भोगते जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

प्रगतिशील विचारधारा साहित्य के माध्यम से जनता की समस्याओं को उजागर कर उसे प्रशस्ति के मार्ग पर ले जाती है। जिससे साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज में जागृति लाता है। समाज में पूंजीवादी व्यवस्था तले दबे शोषित, दमित मनुष्य का पक्षधर बन शोषणकारी प्रवृत्तियों से मुक्त कराता है। ऐसी ही दमनकारी नीतियों से मुक्ति की छटपटाहट अनत जी के साहित्य में विद्यमान है। शिवमंगल सिंह सुमन के शब्दों "मॉरिशस के विदग्ध कथाकार अभिमन्यु अनत का यह काव्योच्छवास महज काव्य संकलन नहीं है, वरन इसमें घुटन और संत्रास से त्रस्त व्ययासिकत परिपार्श्व को वाणी देने के लिए अभिव्यक्ति की तलाश और नए मुहावरे के प्रयोग की आकुलता है।"[1] अनत जी की रचनाओं में प्रमुखत: शोषण, अत्याचार तथा दासता की त्रासदी का यथार्थ लिए हुए है। इनमें मानवतावादी सूक्ष्म दृष्टि है तथा भेदभाव वाली प्रवृत्ति के प्रति विद्रोही स्वर है। ये विश्व जनीय समस्याओं के विरोध में आक्रोश और संघर्ष व्यक्त करते हैं। संघर्ष युक्त क्रांति में प्राण फूंकते हैं। जगदीश प्रसाद के अनुसार "उपन्यास लेखन के क्षेत्र में तो वह किसी स्थापित भारतीय उपन्यासकार से भी बढ़कर साबित होते हैं। उनके समस्त उपन्यासों में भोगे हुए यथार्थ की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। ध्वंस और निर्माण पीड़ा और उपचार का अद्भुत सम्मिश्रण कथानक की क्रमबद्धता को बरकरार रखने में सहायक सिद्ध होता है।"[2] अनत अपने उपन्यासों के

[1] नागफनी की उलझी साँसें - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 11
[2] विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम - जगदीश प्रसाद बनरवाल कुन्द, पृ.सं. 167

माध्यम से मॉरीशस के वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का चित्रण करते हुए पूंजीवादी विकृतियों का विरोध कर अन्याय के खिलाफ अधिकारों की लड़ाई, मानव मुक्ति की चाह आदि लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हमेशा जागृति का स्वर बुलंद किया है। इनकी रचनाओं में श्रमिक वर्ग की हीनावस्था, उसके शोषण, उत्पीड़न और समाज में व्याप्त विषमता, शोषक और शोषित के बीच का द्वंद्व अधिकार की लड़ाई, स्वतंत्रता की कामना लिये हैं। ये एक नई जागृतियुक्त चेतना लाने का, आगे बढ़ने का प्रगतिशील होने का द्योतक ही है। चाहे वह कविता, कहानी या फिर उपन्यास के माध्यम से ही हो। जैसे पहले भी इस बात का उललेख किया गया है कि अनत जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। इनके साहित्य की सभी विधाएं इनकी प्रगतिशील विचारधारा को अभिव्यक्त करती है। जिसमें प्रगतिशील तत्व समाहित भले ही अभिमन्यु अनत जी किसी वाद में न बँधना चाहते हों, किन्तु उनके साहित्य में, विचारधारा में जनता की आवाज बनने की उसकी व्यथा को उजागर करने की जो कसक है, जिस यथार्थ को वे प्रस्तुत करते हैं, उसमें संघर्ष, द्वंद्व, क्रांति, विरोध, नई चेतना, जागृकता, आंदोलन सभी कुछ है जो इनके साहित्य को श्रेष्ठ बनाता है। इसी कारण इन्हें मॉरिशस के लेखकों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वे श्रेष्ठ हिन्दी रचनाकारों की श्रेणी में अग्रगण्य हैं। इसलिए इनके द्वारा रचित साहित्य श्रेष्ठ साहित्य माना जाता है। जिस कारण इनकी रचनाएं भारत में भी अपनी अलग पहचान बनाती है। जिससे हम हमारे देश के गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा की अनुभूति का मर्मस्पर्शी चित्रण ही नहीं उनके संघर्षपूर्ण यथार्थ से भी परिचित होते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि इनके प्रचुर साहित्य और उसमें निहित विशेषताओं को देखते हुए साहित्य के इतिहास में एक युग इनके नाम से अनत युग होना चाहिए। हिन्दी भाषा को लेकर किया गया अनत का संघर्ष, इनकी हिन्दी भाषा के प्रति सजगता अपनी संस्कृति और भाषा की रक्षा के लिए अपनी निजी पहचान तथा भारतीय गिरमिटिया मजदूर की अस्मिता का संघर्ष है।

"दुनिया के बहुत कम देश ऐसे होंगे जहाँ एक भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इतना कुछ भुगतना पड़ा हो। फिर भी उन शोषित मजदूरों ने उस वर्चस्व को धर्म, निष्ठा के साथ पूरा किया।

वह एक भारी सांस्कृतिक निष्ठा, भाषा के प्रति गौरव का भाव था, जिससे सुबह-शाम गन्ने के खेतों में तपते सूरज को सहते हुए गोरे मालिकों के कोड़ों की बौछारों को झेलने के बाद भी वे अपनी बस्ती में हिन्दी के पठन-पाठन में लग जाते।"[1] अर्थात मानव मुक्ति का आह्वान इनकी रचनाओं में भाषिक स्तर से लेकर अन्याय विरोधी क्रांति के रूप में मुहावरे, लोकोक्ति से सजी अपनी सादगी युक्त आम जनता की भाषा उनके ही अंदाज में अभिव्यक्त करते हैं। अपनी अस्मिता की रक्षा मजदूर वर्ग की पूंजीपतियों से रक्षा हेतु समाज की हर बुराई को उखाड़ फेंकने का जय घोष कर शोषित दलित, स्त्री, भाषा, सभी की मुक्ति की कामना रखते हैं।

"मार्क्स ने जहाँ पूंजीपति प्रथा का नकारा, वहाँ फ्रायड ने आदमी को व्याधि ग्रस्त होने से बचाया। उसी आर्थिक, मानसिक और सामाजिक नवचेतना और विकास के अंतर्गत महात्मा जी ने नये मानव की तलाश की और उसकी मुक्ति की प्रक्रिया आरंभ की। मार्क्स ने उस कानून, शख्सियत और मजहब को नकारा जो सामंतों के पक्ष में होकर आम आदमी को दुह लेता है। इन तीनों चिंतकों को डर था कि कहीं मानव का अमानवीयकरण न होने लग जाए। इस स्वर को आगे चलकर 'कफन' कहानी में प्रेमचंद ने बड़े सही ढंग से बुलंद किया है।"[2]

अनत जी की रचनाओं में सामंतों का विरोध किया गया है। गुलामी की बेड़ियों से मानव मुक्ति की कामना की है। जैसे इनके उपन्यास 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' की नायिका नेहा पूंजीपतियों द्वारा किये गये शोषण का विरोध कर श्रमिकों को भी स्वामित्व में भागीदार बनाती हैं। उन्हें गुलामी से मुक्त कराती हैं तो गाँधी जी बोले थे उपन्यास में परकाश मजदूरों के हित में उनकी आर्थिक, मानसिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु आंदोलन करता है। मजदूरों की गुलामी से मुक्ति, आर्थिक स्थिति में सुधार, समाज में उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए संघर्ष करता है। दासता से मुक्ति की कामना के साथ-साथ संघर्ष, क्रांति की सक्रियता अनत को जनमुक्ति का लेखक बनाती है।

---

[1] हिन्दी की विश्व यात्रा, पृ.सं. 109

[2] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 44

"अनत मॉरिशस की धरती के लेखक हैं। वे अपने देश की जन-पीड़ा एवं जन मुक्ति के साहित्यकार हैं और इस अर्थ में वे मॉरिशस के प्रेमचंद हैं। उनकी यह जन-पीड़ा जितनी पूर्वजों के रक्त की लालिमा लिए है, उतनी ही अपने समय के मॉरिशसीय समाज के अंधकारपूर्ण भविष्य की कालिमा को ओढ़े हुए है। अर्थात् उनका साहित्य अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों की मानवीय पीड़ा शोषण, अत्याचार, नियति, विवशता आदि को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है। अनत की यह बड़ी सफलता है वे वे मॉरिशस की जन-पीड़ा एवं नियति को सम्पूर्ण मानवता की पीड़ा एवं नियति के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। इससे वे अपने छोटे से देश की लघु सीमाओं से निकलकर विश्व में फैली मानव जाति के लेखक बन गये हैं।"[1] अनत की रचनाओं में गुलामी और उत्पीड़न से मुक्ति का स्वर गूंजता है। इनके साहित्य में शोषण, दमन, उत्पीड़न से ही मानव मुक्ति की कामना नहीं है अपितु मज़दूरों की व्यथा-कथा युक्त संघर्षपूर्ण जीवन जीते हुए बंजर भूमि को धरती का स्वर्ग बनाकर स्वयं शोषण और बदहाली के दिन काट रहे मजदूरों की ये स्वयं अपनी आवाज बनें। समस्त शोषितों, पीड़ितों के व्यथित जीवन की आवाज़ बनकर अनत सामने आये हैं। ये जन मुक्ति की कामना रखते हैं। जन कल्याण का आह्वान करते हैं।

कमल किशोर गोयनका के अनुसार "वह मूलत: स्वाधीनता और मानव मुक्ति का लेखक है। यह मुक्ति बीसवीं सदी का सत्य है। यह मुक्ति आदमी की बंधनों और भेदों से मुक्ति है, हर प्रकार की दासता, एकल तानाशाही और विचारधारा के आतंक से मुक्ति है। इस सदी के मुक्ति संघर्ष को हिन्दी भाषा से भी लड़ा गया है। हिन्दी और स्वाधीनता दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। मॉरिशस में भी भारत के समान, हिन्दी मुक्ति के लिए संघर्ष की भाषा रही है। अभिमन्यु ने भी अपनेदेश के अतीत, वर्तमान और भविष्य के मनुष्य की मुक्ति का संघर्ष हिन्दी भाषा में साहित्य की रचना करके ही किया और अभिव्यक्ति के संकट के बावजूद वह अपनी कलम से मनुष्य और

[1] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 340

मनुष्यता के कल्याण की लड़ाई बराबर लड़ता रहा।"[1] यह मंतव्य सिद्ध करता है कि अनत की रचना में मानव मुक्ति का आह्वान है।

## 3.3 क्रांति की अभिव्यक्ति

प्रगतिशील साहित्य में समाज में व्याप्त शोषण का विरोध, ग्रामीण जीवन का यथार्थ, रूढ़िवादी अंधविश्वासों का विरोध, पूंजीवाद का विरोध, किसान एवं मजदूरों के पक्ष को महत्व तथा समष्टिहित की अभिव्यक्ति है क्योंकि यह विचारधारा समाज की उन समस्त कृतियों का विरोध करती है जिनमें धर्म, ईश्वर और अन्य शोषण एवं दमनकारी प्रवृत्तियाँ सहायक हों। क्योंकि रूढ़ियों के विरोध से ही नई चेतना क्रांति की चेतना जागरूक होती है जो संघर्ष की ओ ले जाती है और बिना संघर्ष के जागृति के क्रांति लाना असंभव है।

अभिमन्यु अनत की रचनाओं में श्रमिक वर्ग की हीनावस्था, उनके शोषण तथा अत्याचारों से भरी दासता के प्रति क्रोध है। मजदूरों की दीन-हीन अवस्था, उत्पीड़न, समाज में व्याप्त विषमता के मूल कारणों के प्रति क्रांति का भाव है। संघर्ष और आंदोलन के माध्यम से उनके हक उन्हें प्राप्त हो सकते हैं।

"अभिमन्यु अनत जैसी बहुमुखी प्रतिभा, साहित्य और जीवन में एकरूपता, अस्मिता और संस्कृति की रक्षा का युद्ध सत्ता से जुझारू संघर्ष, आम आदमी के सुख-दु:ख के प्रति इतनी कठोर प्रतिबद्धता, देश के समकालीन एवं युवा लेखकों की पीढ़ी को सहयोग, विश्व मंच पर प्रतिष्ठा तथा भारत में लोकप्रियता किसी अन्य हिन्दी साहित्यकार ने इतने ठोस रूप में अभी तक नहीं प्राप्त की थी।"[2] अनत जी अपने समग्र साहित्य में ज्वलंत समस्या वाले प्रश्न उठाते हैं, वह मानव जीवन, समाज तथा देश के विकास में बाधित कुंठित विचारधारा के प्रति विद्रोह क्रांति का स्वर रखतेहैं। इतना ही नहीं अपने इस बेबाक विद्रोही तेवर के कारण उन्हें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा के संरक्षण के लिए व्यवस्था का विरोध करने पर उनकी रचनाएं कभी जब्त कर ली गयी तो

[1] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 32
[2] अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 12

कभी उन्हें जला दिया गया किन्तु उन्होंने कभी भी अन्याय के विरोध में उठी अपनी बुलंद आवाज़ वाली कलम को रूकने नहीं दिया। उनको मिली धमकियों को भी अनदेखा कर अपना लेखन जारी रखा। एक संघर्ष की सार्थकता दूसरे संघर्ष का जयघोष कर उसे प्रगति के पथ पर ले जाती है। भेद-भाव असमानता को दूर कर समान अधिकार की भावना रखने वाली वैचारिकता ही नई क्रांति को जन्म देती है। डॉ. श्यामधर तिवारी के अनुसार "मॉरिशस समाज की विविध समस्याओं का चित्रण, उनके उपन्यासों में हुआ है। खेतों के प्रति नायकों की ललक, मजदूरों के हक की लड़ाई, उनकी अस्मिता, अस्तित्व एवं प्रतिष्ठा हेतु सतत संघर्ष, शाश्वत साहित्य के निर्माण के प्रति सजगता, आधुनिकता एवं प्रासंगिक समकालीनता, राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सांस्कृतिक स्वतंत्रता की अधिक उपेक्षा, नारी के त्याग, साहस और उदात्त प्रेम एवं उनकी विविध समस्याओं का उद्घाटन, गोरे काले के रंगभेद के विरोध, धनी गरीब के बीच उभरते अंतर आदि को उन्होंने अपने उपन्यासों के विषय बनाये हैं।"[1] जो साहित्य विकास तथा आपसी सद्भावना को महत्व देते हैं, जो जाति, वर्ग, रंग, वर्ण, छोटे-बड़े के भेद को मिटाता है वही प्रगतिशील कहलाता है और ऐसी ही विचारधारा से ओत-प्रोत अभिमन्यु अनत के उपन्यास देखे गये हैं। जैसे कि आंदोलन, चौथा प्राणी, तपती दोपहर, हड़ताल कल होगी, चुन चुन चुनाव, मुड़िया पहाड़ बोल उठा आदि उपन्यासों में क्रांति, आंदोलन, संघर्ष, मजदूर मालिक के संबंध, विरोध, क्रांति, हड़ताल, मजदूर संगठन, हक और इज्जत की मांग है। समानता का भाव, नारी चेतना आदि समस्याओं के साथ ही आर्थिक स्तर में बँटे हुए समाज, ऊँच-नीच एवं जात-पात के भेदभाव और रूढ़िवादिता का विरोध चित्रित है जिसकी चर्चा विस्तार से आने वाले अध्याय में की जाएगी। अभिमन्यु अनत कहते हैं "स्वाधीनता जहाँ ईमानदारी का तकाज़ा करती है, वहीं अधिक से अधिक श्रम और बलिदान की उम्मीदें केवल उसी को निचोड़कर तिजोरियां नहीं भरी जा सकती।

[1] मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ. श्यामधर तिवारी, पृ.सं. 145

आजादी मिलने के बाद आजादी की सार्थकता और संपूर्णता उसके फल को बराबर हिस्सों में बांटने में ही निहित है। फल चाहे कड़वा हो या मीठा, उसे पूरा राष्ट्र बराबर भोग सके। यह नहीं कि उस फल के सभी रस का अधिकार एक वर्ग बन जाये और दूसरे के भाग में फल की गुठली ही बचे! ऐसा होने पर राष्ट्र के लिए आत्मघाती स्थिति पैदा होने में अधिक देर न होगी!"[1] समानता का भाव सर्वहारा का पक्ष, वर्ग भेद को मिटाने का संकल्प, श्रम का महत्व आदि प्रगतिशील विचारधारा को अपने लेखन में ढालते हुए अपनी विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं। मानव कल्याण की भावना उसे आगे बढ़ाने की कामना- अनत जी के विचारों में उभरती हैं। वह प्रगतिशील तत्वों जो एक प्रगतिशील लेखन में देखे जाते हैं, वे सारे इनकी विचारधारा में दिखाई देते हैं जो इन्हें इनकी विचारधारा के अनुरूप प्रगतिशील रचनाकार बनाती है। माना कि अनत किसी वाद में बंधना नहीं स्वीकारते। फिर भी एकजुट होकर समस्या का समाधान करने की भावना तथा शोषित, दलित, दीन मजदूरों के प्रति इनकी संवेदना, अन्याय के खिलाफ विरोध तथा क्रांति इनकी रचनाओं को प्रगतिशील बनाती हैं। इनकी रचनाओं में जन कल्याण, समाज की उन्नति, मानव उत्थान जैसे विचार प्रचुर मात्रा में दिखाई देते हैं।

"धर्म भेद, रंग भेद और जाति भेद जैसे अभिशापों से आजादी को ग्रसित होने से बचाना हर एक नागरिक का फर्ज बनता है। इस फर्ज को निभाना होगा। जात-पात का खूंखार दैत्य सूरसा की तरह मुंह बाये लपकता चला आ रहा है। उसका संहार अलग-अलग टोलियों में बंटकर नहीं, बल्कि एक सूत्र में बंधकर ही किया जा सकता है।"[2] अभिमन्यु अनत समाज में व्याप्त जात पात का विरोध करते हैं। भेदभाव को मिटाकर समानता के भाव से एकता की शक्ति से नई क्रांति, अन्याय का विरोध करने का संदेश देते हैं, ऐसी ही एकता को 'और पसीना बहता रहा', 'गाँधी जी बोले थे', 'लाल पसीना' आदि उपन्यासों में देखा गया है। मजदूरों का संगठित होना बैठक में मिल संगठन बनाने की योजना दूसरे प्रांतों के मजदूरों को क्रांति में शामिल करने हेतु एकजुट करना,

---

[1] आत्मविज्ञापन : अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 63 एवं 64

[2] आत्म विज्ञापन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 64

हिन्दू-मुस्लिम, उत्तर-दक्षिण, ऊँच-नीच सभी धर्म जाति, प्रांत सभी के भेदों को मिटाकर शोषणकर्ता के खिलाफ एकजुट होकर क्रांति लाते हैं। यह चेतना एक आंदोलन के रूप में पीढ़ियों दर पीढ़ियों चल कर सफलत प्राप्त करती है। अनत जी के अधिकतर उपन्यासों में समाज में व्याप्त समस्याओं को लेकर क्रांतिकारी चेतना है। चाहे वह नारी पीड़ा से संबंधित हो, चाहे धर्म या जाति से, सभी में विरोध और क्रांति का स्वर गूंजती है। चाहे वह ऐतिहासिक उपन्यास हो चाहे आज के आधुनिक युग की रचना हो, सभी में क्रांति की अभिव्यक्ति है। शोषित और शोषणकर्ता के बीच में जो भेदभाव और अत्याचार के विरोध में चिंगारी दबी रहती है, जब उन्हें अन्याय और शोषण का ज्ञान होता है उसके प्रति उठने वाली विरोध की भावना उस चिंगारी को क्रांति का रूप देती है जो कि एकता, समानता तथा संगठन के द्वारा आंदोलन बनकर वर्ग भेद मिटाने हेतु संघर्ष करते हैं क्योंकि वर्ग हीन, भेदभाव रहित समाज ही देश की प्रगति में सहायक होता है, उसे प्रगति की ओर बढ़ाता है और यही प्रगतिशील क्रांति अनत के साहित्य में दिखाई देती है।

### 3.3.1 सामाजिक यथार्थ का चित्रण

प्रगतिशील साहित्य यथार्थ का चित्रण करतेहुए बदलाव, परिवर्तन की कामना रखता है क्योंकि प्रगतिशील साहित्य और उसका आंदोलन मनुष्य के जीवन से, उसके सामाजिक बदलाव के लिए है क्योंकि परिवर्तन की सही दिशा ही प्रगति की ओर ले जाती है। प्रगति के लिए ज्ञान और विवेक, तर्क की अनिवार्यता है लोग समाज में अपने अधिकारों के यथार्थ को जानें। अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए अपनी स्थिति और यथार्थ से परिचत होना अति आवश्यक है। प्रगतिशील साहित्य में सामाजिक यथार्थ का बड़ा ही मार्मिक तथा महत्वपूर्ण चित्रण होता है। जिससे एक नई सोच एक नई क्रांति जागृत होती है। क्रांति को आंदोलन की दिशा मिलती है। इतना ही नहीं समाज में गौण मजदूर किसान वर्ग की व्यथा का यथार्थ चित्रण उसके उत्थान की ओर ध्यान केन्द्रित करता है। जैसे प्रेमचंद के कथा साहित्य में देखा जाता है। किस प्रकार वे किसान मजदूरों के जीवन यथार्थ, उनकी पीड़ा व्यथा का चित्रण करते हुए उनके प्रति सहानुभूति

व्यक्त करते हैं। समाज में व्याप्त असमानता, दरिद्रता जैसे सवाल अपने कथा साहित्य के माध्यम से उठाते हैं। ऐसे ही अनेक बिन्दु अभिमन्यु अनत की रचनाओं में मुख्य रूप से पायेंगे जो कि मजदूरों की व्यथा-पीड़ा का सामाजिक यथार्थ है। जैसे 'हड़ताल कल होगी' में उपन्यासकार ने एक ओर आज के मॉरिशसीय समाज में मज़दूर संगठनों की संघर्षपूर्ण स्थिति तथा सामाजिक न्याय के लिए शोषित मज़दूरों का साथ देने वाले यूनियन नेता का चित्रण किया है तथा जमींदारों की रंगभेद नीति पर विरोध जताया है। अनत जी अपने साहित्य के माध्यम से मॉरिशस के समाज तथा उसमें उठते ज्वलंत समस्या, उत्पीड़न, शोषण आदि के सत्य को उजागर करते हैं। इनके प्रसिद्ध उपन्यास लाल पसीना में शर्तबंध मजदूरों का न केवल आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष दिखाया है अपितु भाषा तथा संस्कृति की रक्षा के लिए किए जाने वाले इन गिरमिटिया मजदूरों के निरंतर संघर्ष का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

सामाजिक यथार्थ के चित्रण में समाज में निहित कार्यकारण संबंधों की जटिलताओं की पहचान कर समाज में मजदूरों द्वारा झेली गयी यातनाएं तथा उसके प्रति मजदूर वर्ग का दृष्टिकोण उनके विकास पर जोर देने के उनके संघर्ष की अभिव्यक्ति अनत की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को मूर्त रूप देती है।

''प्रेमचंद का यथार्थवाद में अपनी अकूत परंपरा के सभी मूल्यवान तत्व समाहित हैं। वे परंपरा के सभी जीवंत एवं प्रगतिशील तत्वों को लेकर अपनी कृतियों के माध्यम से यथार्थवाद का आगे और भी गुणात्मक विकास करते हैं और उसे ऐसी मंजिल पर पहुँचा देते हैं कि यह यथार्थवाद इस समूचे उपमहाद्वीप का सर्वाधिक क्रांतिकारी यथार्थवाद बनकर अपने अध्ययन, विश्लेषण और मूल्यांकन के लिए एक जबर्दस्त चुनौती देता जान पड़ता है।''[1]

प्रगतिशील साहित्य के अनुसार सामाजिक जीवन का मूल रूप है आर्थिक अवस्था और शोषक-शोषितों का संबंध। इसका लक्ष्य मानव सभ्यता को उसकी श्रेष्ठता को आगे ले जाना

[1] हिन्दी की प्रगतिशील आलोचना - संपादक कमल प्रसाद, डॉ. खगेन्द्र, पृ.सं. 371

तथा सामंतवादी पूंजीवादी उत्पीड़नकारी ताकतों का सच सामने लाना है। ''यथार्थवाद लेखक का कार्यभार होता है इन अभिलक्षक प्रवृत्तियों और शक्तियों को ऐन्द्रिक रूप से अनुभव सिद्ध व्यक्तियों और कार्यों में चित्रित करना। ऐसा करते समय वह व्यक्ति को सामाजिक पूर्णत्व के साथ जोड़ देता है और सामाजिक जीवन की प्रत्येक मूर्त विशिष्टिता को विश्व ऐतिहासिक अर्थात स्वयं इतिहास की सार्थक गतियों से आपूरित कर देता है।''[1] प्रगतिशील विचारधारा के अनुसार साहित्य की श्रेष्ठता तब ही है जब वह अपने समय के यथार्थ को उसकी वास्तविकता को पूर्ण रूप से सही ढंग से प्रस्तुत कर सके। अपने समय की मूल समस्याओं को उजागर करे। अपने समाज में वर्ग विरोधों तथा अन्याय, अंतर्विरोध का उद्घाटन प्रगतिशील का लक्षण है। प्रगतिशील साहित्य दर्शाता है कि मनुष्य समाज के लिए कितना महत्व रखता है और इस समाज के संचालन के लिए कुछ नियमों को बनाया जाता है जो उसके कल्याण के लिए ही होते हैं किंतु इन नियमों में रूढ़ता, जटिलता कभी-कभी इन्हें समाज के लिए अहितकर बना देती है और इनमें परिवर्तन की आवश्यकता दिखाई देती है क्योंकि परिवर्तन से ही प्रगति की ओर बढ़ा जाता है। इसीलिए जो समाज तथा देश का हितैषी है, उसकी प्रगति चाहता है। ऐसा प्रगतिशील रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से समाज के यथार्थ का चित्रण करना अनिवार्य समझता है जिससे वह समाज में, देश में जागृति ला सके। अन्याय और अत्याचार का विरोध खुलकर कर सके ताकि समाज में नई चेतना जागृत हों। ऐसी ही विचारधारा हमें अभिमन्यु अनत की रचनाओं में दिखाई देती है जिसमें समाज में व्याप्त बुराइयों उसकी रूढ़ता, जटिलता, अन्याय, अत्याचार, असमानता का खुलकर यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। इसके परिणामस्वरूप उन्हें बहुत कुछ सहना पड़ा किंतु पीड़ितों शोषितों की आवाज़ बनी अपनी कलम को रूकने ना दिया। मजदूरों के परिश्रम तथा दयनीय अवस्था का यथार्थपूर्ण चित्रण अनत करते रहे।

[1] आलोचना, अक्तूबर-दिसंबर 2004, जनवरी-मार्च 2005, पृ.सं. 93

''चौबीस घंटे के अथक परिश्रम के बदले उनके पास तन छुपाने को कपड़ा नहीं है, भोजन पर्याप्त नहीं ऐसी मजदूरों की अवस्था बन पड़ी थी कि वे सड़ा हुआ कीड़ों से भरा अनाज पाकर भी अपने पेट की भूख नहीं मिटा पाते। 'चावल दाल दूनों में खद-खद पिलवा भरत नों' जोन चील कुत्ता भी न खाई खोजी, ओके कैसे पकावत जाय?''[1] गिरमिटिया मजदूर, खरीदे गये शर्तबंद मजदूर के रूप में गये लोगों को गुलामों से भी बदतर अवस्था से गुजरना पड़ता था। उसके यथार्थ को अनत अपनी रचनाओं में उजागर करते हैं। अन्याय के विरोध में आवाज़ उठाने पर किस तरह उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता है। कैसे अत्याचारों से उन्हें गुजरना पड़ता है इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति अनत जी के उपन्यासों में है।

समाज में स्त्री की स्थिति उसका संघर्ष व्यवस्था से टकराव, अपनी अस्मिता की खोज आदि को लेकर अनत ने नारी उत्थान की आवाज उठाई तथा समाज में स्त्री की स्थिति उस पर ढाये जाने वाले अत्याचारों व अमानवीय परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। अभिमन्यु अनत ने अपनी रचनाओं में स्त्री को मुख्य पात्र के रूप में दर्शाते हुए जीवन में उसके सामाजिक यथार्थ को बड़े ही विद्रोही ढंग से प्रस्तुत किया है। वह अत्याचार का शिकार होकर भी हार नहीं मानती। अपनी एक पहचान बनाती है। शिवदान सिंह चौहान के शब्दों में ''जो साहित्य जीवन के यथार्थ को गहराई और कलात्मक सच्चाई से प्रतिबिंबित करता है, वह प्रगतिशील है, चाहे उसकी रचना करने वाले लेखकों का व्यक्तिगत दृष्टिकोण आदर्शवादी हो या मार्क्सवादी।''[2] ऐसी ही विशेषता हम अभिमन्यु अनत में देखते हैं। वे किसी वाद से बंधना नहीं चाहते किंतु समाज में शोषितों दमितों पर हो रहे अन्याय को देख चुप भी नहीं रहना चाहते। वे शोषितों को जागृत कर शोषण का विरोध करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनमें नई चेतना भरते हैं। आंदोलन की प्रेरणा देते हैं। अभिमन्यु अनत का कहना है ''रचना का बीजारोपण तो बिजली की तरह कौंधकर उसी वक्त हो जाता है जब स्थिति सामने आती है या वह आदमी सामने आता है, जो आगे चलकर रचना

---

[1] लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 60

[2] साहित्य की समस्याएँ - शिवदान सिंह चौहान, पृ.सं. 78

का वह विशेष पात्र होता है जिसके लिए उसकी दुनिया के साथ-साथ मुझे उसके चरित्र और संघर्ष को अधिक स्पष्ट करने के लिए एक समानांतर दुनिया का आविष्कार करना पड़ता है। जिसे मैंने हमेशा यथार्थ के साथ कला का समन्वय माना है। सारे भाव-विचार, पात्र-दर्शन मेरे अपने देश के होते हैं, लेकिन जो देश-विदेश की समस्याओं के साथ जुड़ते जरूर हैं।''[1] इनकी रचनाओं में शोषण, उत्पीड़न की अभिव्यक्ति में यथार्थपूर्ण चित्रण होता है। जो समाज के यथार्थ को स्पष्ट रूप में प्रकट करता है। जो इन्हें केवल मॉरिशस के शोषित और पीड़ित मजदूरों से ही नहीं किंतु विश्व के शोषितों से जोड़ता है जो मुक्ति की कामना तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं, आंदोलन छेड़ते हैं। रामविलास शर्मा के शब्दों में "प्रगतिशील साहित्य के बारे में कुछ मिथ्या धारणाएँ प्रचलित हैं। हममें से अनेक लेखकों के सहयोग में वे बाधक हैं। कहा जाता है कि जो लेखक जनता के आर्थिक कष्टों के बारे में लिखता है या मजदूरों से हड़ताल करने को कहता है, वही प्रगतिशील है ऐसा नहीं है। जनता के जीवन में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है, उसका प्रेम, सुख-दु:ख उन सबको प्रगतिशील साहित्य प्रतिबिंबित करता है।"[2] यहाँ दोनों ही मतों से अनत प्रगतिशील लेखक माने जा सकते हैं। प्रचलित धारणा के अनुसार वे जनता के आर्थिक कष्टों को अपनी रचना में विशेषकर संवेदनशीलता के साथ रखते हैं। इनका कथा साहित्य विशेषकर मजदूरों की हड़ताल का यथार्थ पूर्ण जागृत करने वाला चित्रण है जिसमें अनत आंदोलन, हड़ताल, क्रांति के लिए प्रेरित करते हैं तथा रामविलास शर्मा जी के मत अनुसार भी ये प्रगतिशील रचनाकार ही साबित होते हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता के जीवन में प्रेम, सुख-दु:ख, स्वाभिमान, अपनी पहचान सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी रचना की है। इन सभी विशेषताओं से ओत-प्रोत जनता के जीवन को महत्व देने वाला सामाजिक यथार्थ युक्त साहित्य अभिमन्यु अनत का है।

---

[1] अभिमन्यु अनत : एक बातचीत - कमल किशोर गोयनका, पृ.सं. 9

[2] मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - रामविलास शर्मा, पृ.सं. 374

**निष्कर्ष**

इस अध्याय में अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील विचारधारा को दर्शाने का प्रयत्न किया है, जो कि उनके विचारों में तथा रचनाओं में प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है। अनत की विचारधारा काफी हद तक प्रगतिशील है। इस बात को तथ्यात्मक रूप से स्पष्ट करने के लिए अभिमन्यु अनत के कहे वक्तव्यों को लेते हुए उनकी प्रगतिशीलता तथा साहित्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील तत्वों को प्रस्तुत किया है। जो अनत की प्रगतिशील विचारधारा को प्रगाढ़ व मजबूत बनाते हैं। अभिमन्यु अनत के साहित्य की लगभग सभी विधाओं में प्रगतिशील विचारधारा का परिचय मिलता है। अत: उनकी प्रगतिशील विचारधाराओं को अंकित करने के लिए उनके साहित्य से, कविता, कहानी उपन्यास, नाटक, संस्मरण सभी से कुछ प्रमुख प्रगतिशील विचारधारा प्रस्तुत करने वाले अंशों से उद्धरण देते हुए समाज के प्रति पीड़ितों, शोषितों के प्रति उनकी संवेदना, उनमें क्रांति की इंकलाब की भावना जागृत करना। संघर्ष के लिए प्रेरित करना, नारी की व्यथा का यथार्थ आदि अनेक प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख तत्व इनके विचार तथा साहित्य से प्राप्त होते हैं। ये पीड़ितों, शोषितों के प्रति संवेदना रखते हैं। इनकी रचनाओं में मानव मुक्ति की छटपटाहट देखी गयी है।

आंदोलन, संगठन द्वारा क्रांति लाने की प्रेरणा है। अनत जी के साहित्य में मजदूरों के संगठन के शाषण की, अत्याचार के विरोध में एकजुट होकर क्रांति की अभिव्यक्ति है। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, जीवन के प्रत्येक मूल्यों में यथार्थ की अभिव्यक्ति इनके साहित्य में हैं। जो इनकी प्रगतिशील विचारधारा प्रस्तुत करती है। अनत कहते हैं कि वे अपनी रचनाओं द्वारा अन्याय का विरोध, शोषणकर्ताओं का, पूंजीवादियों का विरोध करते रहेंगे चाहे उसे किसी भी वाद से जोड़ा जाए। यहाँ प्रेमचंद के वक्तव्य की सार्थकता नजर आती है कि रचनाकार स्वभावत: प्रगतिशील हैं। इनकी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रवृत्ति को लेकर अन्य विद्वानों का भी मानना है कि क्रांति की अभिव्यक्ति, मानव मुक्ति का आह्वान तथा पीड़ितों, शोषितों के प्रति

संवेदना आदि अनत के रचना साहित्य के प्रमुख गुण हैं जो कि प्रगतिशील विचारधारा लिए हुए हैं। जिसे स्पष्ट करने हेतु अन्य विद्वानों के मत को भी रखा है। जिस पर अभिमन्यु अनत की प्रगतिशील विचारधारा का परिचय मिलता है जिस पर आने वाले अध्यायों में विस्तार से चर्चा की जाएगी। अनत की यह विचारधारा जो अन्याय और शोषण का विरोध करती है। वह एक प्रगतिशील लेखक के सिद्धांतों को अपने आप में लिए हुए हैं जिससे इनका साहित्य प्रमुखत: प्रगतिशील साहित्य के रूप में सामने आता है।

# चतुर्थ अध्याय

## अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ

4.1 आर्थिक विघटन और समाज का स्वरूप

4.1.1 आर्थिक भेद

4.1.2 धर्मगत भेद

4.1.3 जातिगत भेद

4.1.4 प्रवासीगत भेद

4.2 साधारण जनमानस का महत्व

4.2.1 मजदूर किसानों की दुर्दशा

4.2.2 पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति

4.2.3 मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग

4.2.4 बेकारी की समस्या

4.3 भेदहीन समाज की कल्पना

4.3.1 जाति व धर्म का विरोध

4.3.2 शोषण की समस्या का रेखांकन

4.3.3 नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता

निष्कर्ष

# चतुर्थ अध्याय

## अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष तथा यथार्थ

अभिमन्यु अनत अपने विचार तथा व्यवहार में प्रगति की कामना करने वाले रचनाकार हैं। अपनी रचनाओं में उन्होंने अतीत तथा वर्तमान जीवन को उसके संघर्ष को बड़े ही यथार्थ पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। जैसे कि प्रगतिशील साहित्य के बारे में सर्वविदित है कि आधुनिक विज्ञान की प्रगति, बुद्धिवाद के विकास और मानव मुक्ति तथा बराबरी के लिए होने वाले राजनैतिक-सामाजिक संघर्षों की अभिव्यक्ति प्रगतिवाद है, ऐसी ही अभिव्यक्ति हमें अनत के उपन्यासों में दिखाई देती है। वे प्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूर अपने पूर्वजों की पीड़ा को, उनके संघर्ष को दर्शाते हैं। मानव के मूलभूत अधिकारों का समर्थन करते हैं। अमानवीयता का विरोध, साधारण जनमानस के सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति, मानवीय चेतना का विकास, भेदहीन समाज, मूल्यवान संस्कृति की रक्षा तथा धर्म की अमानवीयता आदि का विरोधी स्वर इनकी रचनाओं में प्रखर रूप से गूँजता है। प्रगतिशील तत्वों को लेते हुए इनके उपन्यासों में व्याप्त इनकी प्रगतिशील विचारधारा प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधक स्थिति वर्ग भेद की है। भेदभाव वाली मानसिकता से लगातार संघर्षशील रहने वाले दीन-हीन मजदूरों, किसानों के संघर्ष को वर्ग संघर्ष के रूप में अनत के उपन्यासों में देखा जा सकता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में शोषण की समस्या का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। गिरमिटिया मजदूरों पर ढाये गये जुल्म और अत्याचार की अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में विशेषत: देखी गयी है। वे अपने देश, अपने समाज में व्याप्त यथार्थ से साधारण जनता की आवाज बन व्यवस्था से सवाल करते हैं। उनकी प्रगति की कामना करते हैं। ‘‘हर देश और क्षेत्र में संघर्ष का रूप चूंकि अलग-अलग हैं मिथक अलग है, इसलिए उसकी अपनी विशिष्टताएँ हैं।

संस्कृति संघर्ष से बनती है और वह न सिर्फ प्रकृति बल्कि हर प्रकार के अन्याय अत्याचार, शोषण दमन और दासता से लड़ने के लिए बल प्रदान करती है, प्रेरणा देती है।''[1] ठीक ऐसा ही संघर्ष मारिशसीय भारतीयों के संदर्भ में अभिमन्यु अनत के उपन्यास अभिव्यक्त करते हैं। वर्ग, जाति, धर्म, संस्कृति को लेकर किए जाने वाले भेदभाव तथा अपने अस्तित्व, संस्कृति की रक्षा के लिए किए गए संघर्ष का यथार्थ इनकी रचनाओं में प्रस्तुत हैं। मारिशस में भारतीय संस्कृति तथा अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु प्रवासी भारतीयों का जीवन कठिन परिश्रम के साथ-साथ दुखद यातनाओं से भरे अत्याचार के विरूद्ध संघर्षपूर्ण रहा है। अपनी निर्धनता को दूर करने अकाल महामारी के सताए हुए दीन-हीन मजदूर इस द्वीप में पहुंचे तो उन्हें अत्याचार, निरादर, कठोर दंड सहने पड़े। किन्तु उन्होंने गिरमिटिया मजदूर के रूप में अत्याचार सहते हुए, यातनाओं से गुजरते हुए अपने संघर्ष को जारी रखा अपने उत्थान के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। इन मजदूरों के यातनाओं से भरे संघर्ष की दुखद गाथा का मानो अनत जी ने इतिहास ही रच डाला। अनत के उपन्यासों के माध्यम से गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष पूर्ण यथार्थ का परिचय मिलता है। मजदूरों के संघर्षपूर्ण जीवन के यथार्थपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से अनत अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते हैं जिसकी चर्चा इस अध्याय में विश्लेषित है।

### 4.1 आर्थिक विघटन और समाज का स्वरूप

मनुष्य के जीवन में प्रगति लाने के लिए सर्वप्रथम उसे जागरूक होना होता है, अपनी अवस्था को पहचानना है। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्षशील रहना है। किसी भी समाज की प्रगति या उत्थान के लिए उसे आर्थिक रूप से सक्षम रहना है। अर्थ की असमानता, आर्थिक विघटन से ही कई प्रकार के भेद उत्पन्न होते हैं जो इस असमानता से आरंभ होते हुए जातिगत वर्गगत भेद आदि में परिवर्तित हो जाते हैं। यह भेद भाव ही देश की प्रगति में बाधक है।ये असमानता का भेद संघर्ष की ओर ले जाता है तथा अपने अधिकारों के लिए किया जाने वाला

---

[1]प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन - हंसराज रहबर, पृ.सं.19-20

संघर्ष सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक उत्थान की ओर ले जाता है, प्रगति की प्रेरणा देता है। अप्रगतिशील तत्वों के प्रति विरोधी संघर्ष आंदोलन का रूप ले लेता है। मारिशसीय भारतीयों की संघर्ष गाथा भी आर्थिक विघटन से ही आरंभ होती है। अपनी दयनीय अवस्था को दूर करने के लिए भारत से मारिशस द्वीप तक दर्दनाक यात्रा को पार कर, पीड़ादायक यातनाओं को सहते हुए ये लोग अपने भविष्य के सुधार के लिए संघर्ष करते रहे हैं। यह संघर्ष सामूहिकता समानता की चाह लिए एक आंदोलन का रूप लेता है। इसीलिए इनके निरंतर संघर्ष तथा शोषण की दुखद गाथा ही अनत के उपन्यासों का विषय रही है, जो भेदहीन समाज की कल्पना करती है। इन मजदूर किसानों के संघर्षपूर्ण जीवन के यथार्थ को चित्रित करती है। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का यह संघर्ष आगे चलकर धर्मगत, जातिगत तथा भाषागत भेद जैसे अप्रगतिशील तत्वों के प्रति विरोध प्रकट करने वाला संघर्ष बना जो अपने अस्तित्व, संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष करता है। प्रवासी भारतीयों का यह संघर्ष बेहिसाब यातनाओं, कठोर परिश्रम तथा व्यथा का जीवंत यथार्थ तथा उसकी टीस, अभिमन्यु अनत जी के उपन्यासों का मुख्य स्वर रही है। डॉ. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य में पंत के हवाले से बतलाते हैं किस प्रकार उस समय साहित्यकारों ने तर्क और विवेक सम्मत नवीन वैज्ञानिक विचारों और आदर्शों को अपना ध्येय माना तथा अन्य रचनाकारों को भी इसकी प्रेरणा दी ‘‘उन्होंने ‘रूपाभ’ द्वारा अनेक विचारधाराओं के संघर्ष का अध्ययन करने का वचन दिया था। जिसका उद्देश्य यह था - ‘‘और उसके फलस्वरूप अपने देश और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों के ऊपर उस नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। जिसकी सहायता से हम जाति, वर्ग, देश, राष्ट्र की सीमाओं को तोड़कर तथा धर्म और नीति संबंधी विरोधी भावनाओं को जाग्रत करने का प्रयत्न कर सके और अपने मध्य वर्ग के संकीर्ण व्यक्तिवाद से हृदय को मुक्त कर सामूहिक जीवन की ओर अग्रसर होने का संदेश दे सके।’’[2] नई सोच तर्क युक्त बौद्धिकता नई सामाजिक व्यवस्था

[2]मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 242

के निर्माण में सहायक होती है और ऐसी ही सोच अनत के पात्र उपन्यास के कथानक में लिए हुए है।

‘‘उन्नीस साल की कैद की सजा भुगतने के बाद जाँ-वाल जाँ की रिहाई हुई। अपने परिवार को भूखा मरने से बचाने के लिए उसने एक रोटी चुराई थी। उसी के जुर्म में उसे पाँच साल कैद की सजा सुनाई गई थी, लेकिन कैद से भागने की चेष्टा में उसकी सजा उन्नीस साल की कर दी गयी थी।’’

कहानी के इस हिस्से पर आकर परकाश ने पुस्तक बंद कर दी और हरि को देखते हुए पुन: बोला - एक रोटी के लिए एक आदमी की पूरी जवानी उससे छीन ली गयी। वह समाज उननीसवीं सदी का था। आज हम बीसवीं सदी में पहुँच गये हैं। पर वही कानून सौ साल बाद आज भी बना हुआ है। रोटी आज भी मुट्ठी भर लोगों की मुट्ठियों में कैद है और हजारों लोग आज भी रोटी के मुंहताज हैं।’’[3] मनुष्य के विकास में तर्क ज्ञान तथा विज्ञान का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसके बिना प्रगति की कल्पना भी कर पाना संभव नहीं है। ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य अपने होने को अपनी स्थिति को पहचान पाता है। प्रगतिशील साहितय के इसी तत्व को अनत अपने उपन्यास में प्रकाश के माध्यम से यह बतलाना चाहते हैं कि फ्रांस के साहितय के माध्यम से वह 19वीं सदी से चले आ रहे शोषण से परिचित हो उसे अपनी परिस्थितियों सा पाकर इन हालातों को पैदा करने वालों के विरोध में आवाज उठाने की प्रेरणा पाता है। आर्थिक विघटन के कारण दो वर्ग शोषक और शोषित के बीच का अंतर सदियों से यूँ ही बना हुआ है। मेहनत कर उन्हें अत्याचार और शोषण के सिवा पेट भर रोटी भी ठीक से नसीब नहीं होती है। अभिमन्यु अनत के अधिकतर उपन्यास आर्थिक भेदभाव के चलते भारतीय अप्रवासी कुली मजदूर वर्ग के निरंतर चले संघर्ष का चित्रण है। इन मजदूरों ने विविध यातनाओं को सहते हुए अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए अपनी अस्मिता बनाए रखने के लिए कठोर से कठोर दंड सहे किन्तु अपने संकल्प को टूटने नहीं दिया।

[3]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 21

अपनी भावी पीढ़ी को बेहतर समाज देने के लिए वर्तमान व्यवस्था में सुधार लाने हेतु निरंतर प्रयत्न करते रहे, संघर्षशील रहे। भारतीय अप्रवासियों की दु:खद संघर्षपूर्ण गाथा के इतिहास के रूप में अनत की रचनाओं में संघर्ष से भरा जीवन, संगठन, आंदोलन, खुद को प्रतिष्ठित करने की अभिव्यक्ति है। यातनाओं को सहते हुए अप्रवासी भारतीय समाज की संघर्षमय गाथा अनत के उपन्यासों का प्रमुख विषय रहा है जो इनके उपन्यासों को प्रगतिशील बनाता है। चाहे वह लाल पसीना हो हम प्रवासी हो और पसीना बहता रहा हो गांधी जी बोले थे आदि। अन्य रचनाओं में सभी अतीत की यातनाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण है। लगातार मेहनत कर बंजर जमीन से सोना उगाना तथा मॉरिशस को स्वर्ग में परिवर्तित करने में गिरमिटिया मजदूरों का बहुत बड़ा योगदान रहा किन्तु बदले में उन्हें यातनाएं ही मिली हैं। जिसके लिए विरोध में वे समानता के लिए प्रयास करते रहे। उन प्रयासों में मजदूरों की दरिद्रता दूर करने के लिए उनके किये गये संघर्षों का चित्रण इनके उपन्यासों में है।

''हर दूसरे  तीसरे दिन कोई-न-कोई नया कैदी भीतर आ ही जाता। कैदियों की संख्या बढ़ती गयी थी। सभी की कहानियाँ एक-सी होतीं......

..... पत्थरों के नीचे सोना पाने की वही एक-सी चाह लिये 'मारीच देसवा' पहुँचना। जहाज से उतरते ही गले में नम्बर लटकाये खेतों को झोंका जाना। आधा पेट खाना, आधी देह कपड़ा। पीठ पर बाँसों की बौछार और .....

कोई बैल जैस काम करने से इन्कारी के कारण इधर आ गया था। कोई भारत लौटने की माँग करके। कोई  न्याय की दुहाई करता हुआ, तो कोई बीमारी की वजह से तीन दिन नौकरी पर न पहुँच सकने के कारण। किसी की गिरफ्तारी केवल इसलिए हो गयी थी कि उसने अपने गले से नम्बर लिखे टीन के टुकड़े को निकाल फेंका था। किसी ने सरदार से मुँह लगाने की हिम्मत की थी। जिस व्यक्ति ने पहले दिन भीतर आते ही आत्महत्या कर ली थी, उसकी गिरफ्तारी इसलिए हुई थी कि सरदार की माँग पर उसने अपनी खूबसूरत पत्नी को पहली रात मालिक के घर नहीं

पहुँचाया था।''[4] अपने लाल पसीना उपन्यास में अनत ने भारतीय मजदूरों के संघर्षों का बड़ा ही यथार्थपूर्ण मर्मस्पर्शी चित्रण किया है जो अपना खून पसीना एक कर इस द्वीप को समृद्ध करने में सहायक रहे हैं फिर भी उन्हें अपमान और अत्याचार सहने पड़ते हैं। विरोध करने पर कठिन से कठिन दंड भोगना पड़ता है। फिर भी अपनी मुक्ति हेतु वे निरंतर संघर्ष करते हैं। जैसे कि प्रगतिशील साहित्य के विषय में सब जानते हैं कि आधुनिक विज्ञान की प्रगति बुद्धिवाद के विकास, आजादी तथा समानता के लिए किया जाने वाला संघर्ष जो राजनैतिक सामाजिक संघर्षों के साथ जुड़ा है जो कि मानवतावादी भावना को प्रेरित करता है। अपने इन्हीं गुणों के चलते प्रगतिशील रचना प्रवाहमान रूप में अनत के साहित्य में जीवंत हो उठती है। इस जीवंतता का उदाहरण है-

''यहाँ बच्चों को पेट भर खानानहीं मिल रहा। एक ही फतुही इस साल से उस साल तक पहने रह जाते हैं .... तुम उनकी इस हालत को तो सुधार नहीं पा रहे अब चले हो उनकी पढ़ाई-लिखाई का बंदोबस्त करने .... तुम्हारे साथ तो वे पढ़ लिख लेते ही हैं, अब और क्या पढ़ाना है उन्हें?''[5]

यहाँ निर्धनता की मार में दबे लोगों को अपने हालात से जूझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि ज्ञान ही सफलता की पूंजी है, ज्ञान के मार्ग से ही आगे बढ़ा जा सकता है। लेकिन इनकी निर्धनता इनके मार्ग में बाधक है क्योंकि उन्हें पेट भर रोटी भी मिल पाना कठिन होता है। तन ढंकने को कपड़ा नहीं है। ऐसे हालात में पाठशाला जाकर ज्ञान प्राप्त करना उन्हें झूठ और बेमानी सा प्रतीत होता है। इनकी अति दयनीय अवस्था समाज सुधार में बाधक है। फिर भी संघर्ष कर आगे बढ़ने की कामना प्रबल दिखाई गई जिस कारण ये अपने आंदोलन को टूटने नहीं देते और अपने समाज के सुधार के लिए नित नये प्रयत्न करते रहते हैं।

---

[4]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 26

[5]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 68

''यह एक आंदोलन है जो सभी के लिए नौकरी, सभी के लिए रोटी और सभी के लिए खुशी चाहता है। युवा आंदोलन मानव से मानव की रक्षा चाहता है। हम संतोष के लिए असंतोष का दामन थामे हुए हैं। शासन प्रणाली को डगमगा देना कभी भी हमारा मकसद नहीं रहा। हम हर ठौर पर अपना सहयोग देने को तत्पर हैं, बशर्ते कि समय की मांग को महत्व दिया जाए और हमारी आवाज को कोलाहल समझकर उसे अनसुना न कर दिया जाए। हम चाँद तारे नहीं मांग रहे। वे जिन्हें नसीब हो, उन्हें मुबारक। हम लक्जरी नहीं मांगते, केवल जीने का अधिकार मांगते हैं।''[6]

आंदोलन उपन्यास में अनत ने एक पढ़े लिखे युवा वर्ग का समाज में परिवर्तन लाने की कामना किस प्रकार आर्थिक असमानता भेदभाव आदि का विरोध कर रवि के माध्यम से समाज में सुधार लाने के लिए परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया है। सभी को समान अधिकार दिलवाने की बात करता है, वह ऐसा परिवर्तन चाहता है जो सब के लिए हितकारी हो, सभी को पेट भर रोटी मिले तथा अपने अधिकारों की रक्षा हो आदि। यहाँ आंदोलन उपन्यास के माध्यम से अभिमन्यु अनत ने समाज की विभिन्न स्थितियों मजदूरों की स्थिति आर्थिक विघटन, बेरोजगारी, भाई भतीजावाद आदि के चलते युवा वर्ग में व्याप्त असंतोष को रवि के माध्यम से आवाज दी और महंगाई तथा देश और समाज में व्याप्त बुराइयों के विरूद्ध युवा वर्ग का आंदोलन दिखलाया है तो दूसरी ओर उनके उपन्यास 'और पसीना बहता रहा' में मजदूरों की दयनीय अवस्था तथा महंगाई से जूझता हुआ मजदूर वर्ग है जो मिल मालिकों के शोषण का शिकार हो जानवरों से भी गयी-बीती अवस्था से गुजर रहा है। कहीं कीड़ों से भरे अनाज के कारण बीमारी फैल रही है, जिसे रोकने के लिए मजदूर एकजुट होकर संघर्ष कर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए एक आंदोलन की तैयारी में लगे हैं।

[6]आंदोलन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 51

''महंगाई इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि सप्ताह भर की तनख्वाह रसोई के आधे सामान में खत्म हो जाती है। लोग अपने साथ चावल भी लाए थे जो इधर तीन-चार सप्ताह से मजदूरों को राशन में मिल रहे थे। हरि तो खुद  खद-खद कीड़ों से भरे उन चावलों को देख चुका था। उनकी गंध से ही घर में बच्चे नाक सिकोड़ने लगते थे। सड़े हुए अनाज के कारण गाँव-गाँव में बीमारी बढ़ती जा रही थी। एक सप्ताह पहले ही हरि ने अपने साथियों के साथ देश भर की पदयात्रा करने की योजना बनाई थी।''

''हमें इस छोर से उस छोर तक जाना होगा।''

महादेव ने पूछा- ''इससे क्या होगा।''

''सरकार को आग्रह किया जाएगा। गाँव-गाँव से हम यह आवाज उठाएंगे कि मजदूर एक ओर तो शोषण और जुल्म से तंग हैं, दूसरी ओर अनाज के अभाव में भूखों मर रहे हैं। शुद्ध अनाज की व्यवस्था और उसका सही वितरण अगर वक्त से न हुआ तो मजदूरों के बीच फैल रही बीमारियों को रोक पाना कठिन होगा।

ताम्बी ने कहा - सरकार तो पूँजीपतियों का साथ देती है। वह हमारी क्या सुनेगी?''

''हम उसे सुनने को मजबूर कर सकते हैं।''

कैसे?

एक स्वर से आवाज उठाकर।''[7] हरि तथा  उसके साथियों के बीच यह वार्तालाप एक आंदोलन की शुरूआत है। अपने अधिकारों के लिए पूँजीपतियों के विरूद्ध आंदोलन की रूप रेखा है, समान अधिकार पाने का भाव है, एकजुट होकर संघर्ष करने का संदेश है। वर्ग भेद के विरूद्ध  अधिकार की लड़ाई है। जिस कारण यह उपन्यास एक प्रगतिशील उपन्यास का रूप लेता है।

रामविलास शर्मा के अनुसार - ''बड़े सामंतों वाले समाज में वितरण की व्यवस्था विषम हो जाती है। छोटे मालिक किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत कुछ एक-सी होती है। व्यापारिक

[7]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 210

पूँजीवाद के विकास के लिए वित्त का चलना अनिवार्य है। वित्त के चलन से वितरण में विषमता बढ़ती है, गरीब-अमीर का भेद तीव्र होता है। प्राचीन रोम सत्रहवीं सदी के इंग्लैंड, अठारहवीं सदी के फ्रांस में जो क्रांतिकारी विस्फोट हुए वे व्यापारिक पूंजीवाद के युग की देन है।''[8]

पूँजीवाद में व्याप्त असमानता, अमीर-गरीब का भेद विषमता आदि ही बड़ी-बड़ी क्रांतियों का कारक रही हैं यही कारण आंदोलन को जन्म देते हैं। ऐसे ही लक्षण अनत के उपन्यास में है। जो आंदोलन क्रांति की चर्चा होती है, आर्थिक विषमता के चलते आंदोलन छेड़ने की बात हरि अपने साथियों से कहता है। इस भेद को मिटाने के लिए जागरूकता लाकर इस व्यवस्था को सुधारने की कामना है। यशपाल के अनुसार भी ''सामाजिक व्यवस्था में क्रांति के बाद मजदूरों का शासन ठीक ढंग से कायम करने के लिए परिवर्तन काल में कुछ समय तक मजदूरों का निर्बाध शासन मजदूर तानाशाही (Dictatorship of Proletariat) कायम करना जरूरी है। मजदूरों का निर्बाध शासन मार्क्सवाद का चरम लक्ष्य नहीं है। यह ऐसी शासन व्यवस्था कायम करने का साधन है जिसमें शोषक तथा शोषित श्रेणियों का अंत हो जाए।''[9] यहाँ यशपाल भी मानते हैं कि आर्थिक विघटन के कारण समाज में निर्बल और बलवान का भेद बना रहता है। और इस भेद को मिटाने के लिए क्रांति और आंदोलन परम आवश्यक है जिससे शोषण करने वालों पर रोक लगा दी जा सकेगी तथा बलवान श्रेणी निर्बल महदूरों का और शोषण नहीं कर पाएगी। ऐसी ही कामना हरि के द्वारा अनत क्रांति की जागरूकता की बात कहलाते हैं जिससे आर्थिक असमानता को मिटाया जा सके, मजदूरों के अस्तित्व की रक्षा कर सकने में एक सक्षम मजदूर संगठन का होना भी आवश्यक है।

### 4.1.1 आर्थिक भेद

आर्थिक भेद में मनुष्य के जीवन में अर्थ का बड़ा महत्व है। उसके जीवन निर्वाह के लिए आर्थिक रूप से उसे सक्षम होना है तभी वह समाज में अपनी रक्षा कर अपने विकास की कामना

---

[8]मार्क्स और पिछड़े हुए समाज - रामविलास शर्मा, पृ.सं. 475
[9]मार्क्सवाद - यशपाल, पृ.सं. 38

कर सकता है। अपनी आर्थिक क्षमता के कारण कोई अधिक बलवान मालिक होता है तो कोई आर्थिक विषमता के कारण मजदूर या नौकर होता है। अपनी स्थिति के अनुसार इनमें आर्थिक भेद होता है जो दूसरे की मेहनत का फायदा उठाते हुए उसे उसके परिश्रम का पूरा लाभ न देते हुए स्वयं लाभान्वित होते हैं, वे शोषण कर्ता के रूप में आर्थिक असमानता उत्पन्न करते हैं। यह आर्थिक विषमता समाज में संघर्ष और विरोध उत्पन्न करती है। अभिमन्यु अनत ने भारत से मॉरिशस आये गिरमिटिया मजदूरों की दयनीय स्थिति आर्थिक विषमता के चलते उनकी नरक तुल्य अवस्था तथा उससे उबरने के संघर्षों को अपनी रचनाओं में प्रमुख स्वर दिया है।

''इस देश में अभी कुछ लोग अपने को बेहतर जीव और दूसरों को बदतर जीव मानते हैं।''

यही क्यों यह तो हर जगह है।

हर जगह अधिक मेहनत करने वालों को घटिया समझा जाता है क्या?

कम से कम यह जगह अकेली नहीं है। कहीं रंग भेद है कहीं स्टेटस का कहीं स्तर का अंतर है, कहीं कुछ तो कहीं कुछ।''[10]

अपने उपन्यास मार्क ट्वेन का स्वर्ग में अभिमन्यु अनत ने दिखाया है। क्यूबा की रहने वाली सिल्वी एक पर्यटक के रूप में इस सुन्दर स्थल मॉरिशस घूमने आती है। लेकिन यहाँ इस धरती के स्वर्ग में असमानता, आर्थिक भेद के चलते शोषण, दरिद्रता, भेदभाव हताशा को देख निराश हो जाती है। इस सुन्दर द्वीप के दूसरे पक्ष को देख इसमें व्याप्त ऊँच-नीच की भावना, विसंगतियों तथा आर्थिक असमानता पर सोच विचार करती उनकी समस्याओं के निदान में रुचि रखती है। इसी कारण से उसके मन में प्रेम के लिए सांत्वना उत्पन्न हुई। जब सिल्वी ने प्रेम का गाँव देखा तो गरीबी का यह दृश्य जिसमें टीन की दीवारें, ईख के सूखे पत्तों का छाजन, घर के बीच की दीवार, गोनी पर अखबार चिपकाकर बनाई गयी थी जिसमें केवल अभाव ही अभाव था। दुबले-

---

[10]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 203

पतले खाली पेटों वाले बच्चों की हल्की मुस्कान आदि उसे विचलित करती है। यहाँ आर्थिक भेद उसे उस स्वर्ग से नरक जैसा प्रतीत करवाता है। इस उपन्यास में अनत ने सामंतवाद तथा अमीर गरीब के बीच की खाई को दर्शाया है।

''प्रेम के साथ उन अन्य मजदूरों को उस धधकती दोपहर में काम करते हुए पसीने में तर देखकर मुझे लगा था कि लोग नर्क से उतरे हुए गुलाम थे। अपने पसीने से स्वर्ग के आकाओं को ठंडक पहुँचाने का काम नियति ने उन्हें सौंपा था। उनमें छह ऐसे नौजवान मुझे मिले जिनके पास देश की परीक्षाओं के सबसे बड़े प्रमाण-पत्र भी थे।''[11] इस उपन्यास के माध्यम से ऊँच-नीच, बड़े-छोटे के अंतर पर प्रकाश डाला है। निर्धन वर्ग पर हो रहे अत्याचारों से परिचित करवाया है। भेदभाव वाली नीति के चलते योग्यता होने पर भी बेकारी, बेरोजगारी, आर्थिक अभाव के चलते वहाँ के नौजवान छोटे मोटे काम कम वेतन पर भी करना स्वीकारते हैं। अपने आत्मसम्मान को ठेस पहुँचने पर भी तिलमिलाकर रह जाते हैं। विरोध करने पर गरीबी बेरोजगारी झेलनी पड़ती है। जिस प्राकृतिक सौंदर्य में लोग तनाव मुक्त होने के लिए आते हैं, उसी देश में मेहनती वर्ग कर जीवन भर पेटभर भोजन के लिए तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करने को बाध्य हैं।

''मिन्नू चारों तरफ समुद्र से घिरे हुए देश में रहती थी, फिर भी उसके भाग्य में लाबस्टर खाना कभी नहीं हुआ टूरिस्ट गाईड के पन्नों में जिस लबस्टर की उतनी चर्चा थी और जिसका प्रलोभन देकर इस देश में पर्यटकों को आकर्षित किया जाता था। कम से कम मिन्नू ने तो उसे पहली बार देखा पहली बार चखा, पहली बार खाया। उसने तो यह भी बताया था कि मछली भी कोई तीन चार महीने के बाद ही एक बार कभी खाने को मिलती थी।

स्वर्ग के जीवन मूल्यों के बारे में मैं सोचती रह गयी।''[12] सिल्वी का परिचय मॉरिशस के बीच के आस-पास खिलौने बेचने वाली लड़की मिन्नू से होता है जिसकी दयनीय अवस्था देख सिल्वी का मन पसीज जाता है क्योंकि उसकी दरिद्रता के माध्यम से वह उस स्वर्ग में व्याप्त

---

[11]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 196
[12]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 194

नारकीय जीवन को देखती है। इस उपन्यास में अनत सिल्वी के माध्यम से उस स्वर्ग के वास्तविक रूप, उसके दूसरे पक्ष को दर्शाते हैं जिसमें गरीबी, व्यथा, करूणा, घुटन तथा संत्रास है। इनके अधिकतर उपन्यास इस तरह की सामाजिक स्थिति को लिए हुए हैं। जो श्रम जीवियों के जीवन वृत्त उनकी दशा का वर्णन करते हुए समाज में उत्पन्न आर्थिक भेद को उजागर करते हैं। ‘‘धनेश की आँखों के सामने द्वीप के तमाम अच्छे-खास लोग, तमाम मोटरें, तमाम मंजिली इमारतें दौड़ गई। उन सभी को उसने मजदूरों की पीठ पर टिके पाया। सबसे करारा व्यंग्य उसे यह प्रतीत हुआ कि जिस मॉरिशस को लोग ईख की धरती कहते हैं, जिस ईख से मॉरिशस का ऐश्वर्य कहा जाता है, उसी को उगाने वाले को गरीब मजदूर कहा जाए।’’[13] अपने इस वक्तव्य में धनेश द्वारा अनत मजदूरों की दशा का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि इस देश को समृद्ध करने वाले मजदूर दीन-हीन अवस्था में जीवन यापन करते हैं। यह इस धरती, इस समाज का बहुत बड़ा व्यंग्य है। वे इस अमीर गरीब की गहराती खाई पर चिंता व्यक्त करते हैं। इस आर्थिक भेद को मिटाने हेतु मेहनतकश मजदूरों को अपनी मेहनत के अनुसार वेतन तथा सामान सुख सुविधाओं से वंचित ना कर जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने की माँग करनी चाहिए। मजदूर शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने समाज में व्याप्त पूँजीवादी तत्वों के विरूद्ध प्रश्न उठाने की प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं। ताकि वे न्याय पा सकें।

‘‘अगर सचमुच ही परिश्रम का फल कभी खाली नहीं जाता तो ये मजदूर जो डेढ़ सौ साल से लगातार इस मिट्टी में खून पसीना एक करते आ रहे हैं, आज कंगाल के कंगाल नहीं रहते। मेहनत दर मेहनत, हड्डियाँ तोड़-तोड़ कर पसीने की जगह खून बहाकर उन्होंने पाया क्या है? वही रूखा-सूखा वही घास की झोपड़ी, वही  फटा-पुराना कपड़ा। उसने अपने आप से अगला प्रश्न

---

[13]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 47

किया - क्या मेहनतकश मजदूर और उसकी देहतोड़ मेहनत के दरम्यान  कोई बहुत भारी दरार बहुत भारी खाई नहीं है।''[14]

अभिमन्यु अनत इस अमीर-गरीब की दरार को भरने के लिए श्रमजीवियों को जागरूक होकर अपने हक के लिए पूँजीवादी सत्ता से प्रश्न करने के अधिकार के लिए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देते हैं। सदियों से दबाये जाने वाले मजदूरों को जागरूक होकर अपनी अवस्था में सुधार लाने की संघर्ष की प्रेरणा धनेश के विचारों में प्रस्तुत करते हैं।

''दिन-ब-दिन महंगाई थी। दो दिन के भीतर चार आने की चीज आठ आने की हो गई थी। इसके बारे में यह कहकर लोगों को आश्वासन दिया जा रहा था कि महंगाई की यह लहर समूचे विश्व में है। समूचे विश्व में श्रम का जो मूल्य बढ़ा था उसकी चर्चा बहुत कम थी। महंगाई का पानी नाक को पार करने को था जब मजदूरों के पसीने की कीमत आज भी वही थी जो वर्षों पहले थी। धनेश सोचता रहा इधर अभाव था, इधर फिजूलखर्ची थी पार्टियों में बृद्धि थी, मिशन की यात्राएँ दुगुनी हो चली थीं। विशेषज्ञों की आवाजाही बढ़ती जा रही थी। पर्यटक भी दुगुनी संख्या में आने लगे थे। यह वृद्धि और भी कई स्थानों पर थी। वह केवल मजदूरी थी जिसकी वृद्धि की कोई भी संभावना नहीं थी।''[15]

धनेश के इस भीतरी द्वंद्व के माध्यम से अभिमन्यु अनत इस देश में व्याप्त आर्थिक भेद से मजदूर गरीबों की दुर्दशा देश की प्रगति में योगदान देने वाले कामगारों की दयनीय स्थिति जिस में कोई परिवर्तन नहीं होता। अपनी स्थिति के सुधार के लिए धनेश चिंतित होता है। धनेश की इस चिंता के माध्यम से अनत प्रवासी भारतीयों जिनका योगदान इस देश को समृद्ध बनाने में सदा रहा है किन्तु उनके साथ भेदभाव वाली नीति में कोई परिवर्तन नहीं होता। मुट्ठी भर लोग सब सुख भोगते हुए जिस रफ्तार से धन समृद्ध प्रापत करते जा रहे थे उसी रफ्तार से हजारों लोग गरीब होते जा रहे थे। उनकी दशा में कोई सुधार नहीं था। वे अमीर देश के गरीब ही रह गये। अभिमन्यु अनत

[14]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 47

[15]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 153-154

ने अपने उपन्यासों में हर कहीं इस आर्थिक भेद को दर्शाया है चाहे वह खेती मजदूरों की गाथा हो, या फिर कारखाने में काम करने वाले मजदूर या फिर मध्य वर्ग, नौकरी पेशा क्लर्क या अध्यापक हर किसी को आर्थिक भेद से जूझते हुए दर्शाया है। उनके यथार्थ को प्रस्तुत किया है। ''मैं जब देर से घर खाली हाथ लौटी तो मेरी माँ ने अपने खजाने की सभी गालियाँ मेरे ऊपर निछावर कर दी थीं। उस रात मैं उन गालियों से दुखी नहीं हुई थी। अपनी दोनों बहनों की आँखों में भूख और खाने की चाह देखकर तड़प  उठी थी। कुछ समय पहले उन नन्ही आँखों में कुछ अच्छी चीजें खाने की जो उम्मीद पैदा हो आइ्र थी वह निराशा में बदली हुई थी। वह चाँदनी रात थी।  मीरेय की माँ जब अपने दोनों कुत्तों को आवाज देकर उनके पात्रों में खाना उड़ेलने के लिए आगे बढ़ी थी तो मेरे मन में आया था कि मैं दौड़कर उसके हाथ से वह खाना अपनी बहनों के लिए छीन लाऊँ। अपनी छोटी बहनों को पहले भी मैं भूख के कारण रोते हुए भात-भात माँ करते सुन चुकी थी लेकिन उस दिन का उन दोनों का बिलखना मेरे कलेजे को चीर गया था।''[16] भूख, गरीबी रोटी की तड़प का अभिमन्यु अनत ने बड़े ही मार्मिक ढंग से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। ऐसे यथार्थपन दृश्य अनत की अन्य रचनाओं में भी आते हैं जो झकझोर देते हैं। व्यथा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण अनत करते हैं। जिसमें आर्थिक तंगी के चलते वानी जैसी उपन्यास की अन्य नायिका भी वेश्यावृत्ति का सहारा लेती हैं। और किस प्रकार आर्थिक भेद समाज में बुराइयों को जन्म देती है। गरीबी निर्धनता मनुष्य को कैसे नोच डालती है इसका बड़ा ही यथार्थपूर्ण चित्रण अनत के उपन्यासों में मिलता है। इनके स्त्री पात्र भी पुरुष के समान आर्थिक अभाव के चलते लगातार संघर्ष कर इस अभाव को मिटाकर बेहतर जीवन जीने की चाह रखते हैं। अपनी प्रगति की कामना करते हैं। इस अर्थगत भेद का मुख्य कारण पूँजीवादी व्यवस्था है जो समाज के स्वरूप को बिगाड़ कर अपनी सत्ता कायम रखना चाहती है।

[16]अचित्रित - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 31 - 32

‘‘पूनम अपनी मृत्यु से नहीं मरी थी। उसे मार डाला गया था। धनवान की कार की रफ्तार भगवाननुमा डॉक्टर की खुदगर्जी की वह सुस्ती। गति और गतिहीन के बीच दबकर मरी थी पूनम अहं के नशे और फर्ज की गैर-जिम्मेदारी ने उसकी हत्या की थी नियति ने नहीं। वह उन दोनों से निबटे बिना चैन कैसे पा सकता था? ये लोग अभी और भी जानें लेंगे। क्या उन्हें रोका जा सकता था? अपने बौनेपन का एहसास उसे लज्जित करता रहा।’’[17] यह ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, मजदूर-मालिक के बीच का अंतर गरीब मजदूरों को न्याय दिलाने में असफल रहता है यहाँ तक कि सही समय पर इलाज भी उन्हें प्राप्त नहीं होता। प्राणदाता कहलाने वाला डॉक्टर भी इस भेद के चलते अनदेखी कर देता है। इसी प्रकार सड़क के आवारा जानवरों की तरह धनवानों की गाड़ियाँ उन्हें कुचल देती हैं और उन्हें अफसोस तक नहीं होता और गरीब छटपटा कर रह जाता है। वे इस निरंतर चले आ रहे भेदभाव के चलते बड़ी कठिनाई से परिश्रम करके भी उस भेद को नहीं मिटा पाते।

‘‘खेतों से अगर भागा था तो सिर्फ इसलिए कि यहाँ पसीने की कीमत बड़ी सस्ती थी। यहाँ की कमाई से पूरे घर का पालन-पोषण कठिन था। और फिर कोठी वाले नियमित रूप से काम थोड़े ही देते थे। वे इतने बेवकूफ थोड़े ही थे कि उनके यहाँ काम करने वाला मजदूर नियमित काम करके श्रम कानून के बल पर कोठी का स्थायी मजदूर बन जाए। साढे सात सौ बीघे की कोठी में कठिनाई से सात-आठ ही लोग तो थे जो कोठी के स्थायी मजदूर थे जिन्हें कानूनी तौर से छुट्टियाँ लेने का अधिकार था और छुट्टियों के पैसे का भी। उन लोगों को तो औरभी कई सुविधाएं थी। तनख्वाह भी लगभग दुगुनी होती थी। उसने तो शुरू में ठेके से अधिक काम करके अपने को इन खेतों का स्थायी मजदूर बनाना चाहा था पर वह तो सिर्फ चाह सकता था। मानने और बनाने वाले तो कोठी वाले थे।’’[18]

[17]पर पगडंडी नहीं मरती - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 39-40

[18]पर पगडंडी नहीं मरती - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 31

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में मजदूर किसान जीवन की विकट समस्या को उजागर करते हैं। मजदूर किसान प्रगति की कामना लिए पढ़-लिखकर मॉरिशस की वापस लौटने पर उसकी सेना में भर्ती होकर कुछ बनकर एक इज्जतदार जीवन जीने की आशा दर्द में परिवर्तित हो गयी। जब उसे सरकारी नौकरी के लिए धक्के खाने पड़े, नौकरी मिलने की उम्मीद जाती रही। मिस्र में उसके मेजर होने की बात पर भेदभाव के चलते उसका मजाक उड़ाकर उसे वहाँ से चलता कर दिया गया। जीवन में सुधार लाने का प्रयास उसे अपमान के सिवा कुछ नहीं दे पाया क्योंकि किसान मजदूरों के सुधार की बातें केवल नारे व फाइलों तक सीमित रह जाती हैं। और इनका जीवन लगातार भेदभाव झेलते हुए संघर्ष में बीतता है। अनत ने ''पर पगडंडी नहीं मरती उपन्यास के माध्यम से विक्रम नाम के मजदूर किसान के संघर्ष का चित्रण करते हुए दर्शाया है कि किस प्रकार व लगातार संघर्ष कर ज्ञान अर्जन कर सेना में भर्ती होकर अपनी अपने समाज की प्रगति की कामना करता किन्तु वापस लौटने पर सरकारी नौकरी के अभाव में वह फिर से किसान मजदूर बन मजदूरों के संघर्ष में जुटता है, फिर वही आर्थिक भेदभाव वाली नीति शोषण अत्याचार व संघर्ष का जीवन जीने के लिए बाध्य होता है। अभिमन्यु अनत के अधिकतर उपन्यासों का मुख्य स्वर किसान, मजदूर,गरीबी आर्थिक भेदभाव के चलते शोषण आदि का रहा है। क्योंकि इस भौतिक जीवन में सुख की प्राप्ति करना यानी आर्थिक रूप से सक्षम होना। अर्थ ही समृद्धि और प्रगति की ओर ले जाता है। मनुष्य एक समाजिक प्राणी है और समाज का आधार है। अर्थ और इसकी असमानता ही समाज में विरोधी शक्तियों को जनम देती है और ये पूँजीवादी शक्ति आम जनता को छलती हैं। इसी छलावे के यथार्थ का चित्रण अनत के उपन्यासों में बखूबी मिलता है।

मजदूर घाम-पानी की परवाह किए बिना उन समृद्धियों को बटोरता है और जब थकावट से चूर-चूर होकर अपने माथे के शीतल पसीने को पोंछते हुए वह एक बार शीशे की ओर देखने का

प्रयास करता है उस समय उसे हताश हो जाना पड़ता है, क्योंकि तब तक पूरी राशि जमींदारों की तिजोरी में बंद हो जाती है।''[19]

पूँजीपति और मजदूरों के बीच आर्थिक असमानता। मजदूरों का मेहनताना चुराकर उन्हें आधी मजदूरी पर जी तोड़ मेहनत करवा कर अपनी तिजोरियों को भरने वाले साहूकारों पर उनकी काली कमाई का यथार्थपूर्ण चित्रण है जो अर्थ भेद को दिखलाता है।

''एक बोतल शराब और एक पत्तल खाने के लिए मालिक का हर जुल्म भूला बैठे हैं। अपने सारे अधिकार मालिक को सौंपकर वे लोग उसकी उस दया पर टूट पड़ रहे थे। हरि ने अपने आप से पूछा क्यों क्या केवल इसलिए कि मजदूरों की अपनी पहचान नहीं है? इसलिए कि वे अपने उस पसीने की सही कीमत नहीं जानते जिससे बनारस कोठी का मालिक उतना बड़ा महल बनाए बैठा है।''[20] मजदूर लगातार मेहनत करता है किन्तु उसे पूरा पैसा ना मिल पाने के कारण अति दयनीय स्थिति से गुजरते हुए अपना जीवन जीना होता है। यह आर्थिक अभाव उन्हें जुल्म सहने पर मजबूर किया जा रहा था। जिस कारण अमीर और अमीर बनता जा रहा था जो गरीब था उसे खाने के लाले पड़े थे। इस आर्थिक भेद को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। एक तरु बेबस मजदूर दाने-दाने को तरसते हैं दूसरी ओर इनका खून चूसने वाले मालिक ऐश करते हैं।

''हम लोग देश के लिए दौलत, शक्कर के रूप में सफेद सोना पैदा करके भी भूखे मर रहे हैं, जबकि धनी लोग और धनी होते चले जा रहे हें। हम लोग गाय पालकर दूध पैदा करके भी अपने बच्चों को एक गिलास दूध नहीं पिला पाते जबकि धनपतियों के बच्चे दूध से बनी चाकलेट और मिठाइयाँ खाते हैं। गाँवों में हमारे बीमार बच्चे दूध की बूंद-बूंद के लिए तड़पते हैं और उधर कुत्तों को दूध पिलाकर उनसे शिकार कराया जाता है।''[21]

---

[19]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 82

[20]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 184

[21]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 211

वर्ग भेद तथा मजदूरों की स्थिति का यथार्थ वर्णन अनत ने किया है। मनुष्य के जीवन में प्रगति तब ही हो सकती है जब वह आर्थिक रूप से संपन्न हो। संपन्न व्यक्ति समाज के विकास में योगदान देता है और जहाँ समाज विकास करता है वह देश विकासशील होता है और अपने देश की तरक्की (विकास) प्रगति के लिए इस अर्थ भेद को दूर करना अति आवश्यक है। असमानता, विपन्नता आदि ही देश समाज की प्रगति में न केवल बाधक है अपितु कई तरह की सामाजिक बुराइयों के साथ-साथ अपराध को बढ़ावा देती है। यदि हम इस आर्थिक भेद को मिटाने हेतु आगे बढ़ें, समानता का भाव रखें, सबको उनकी मेहनत का सही मेहनताना मिले तो इन बुराइयों को काफी हद तक रोका जा सकता है। इस असमानता को मिटाने के लिए अनत ने अपने 'लाल पसीना' उपन्यास में मजदूरों के एक वर्ग में जागरूकता लाते हुए इस असमानता का विरोध करने हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया है।

''रोना तो इस बात का है सोम कि जो लोग वीरान जंगल को काटकर उन्हें रमणीक और हरे-भरे खेतों में बदल रहे हें। जुल्मों से दब रहे हैं। विडम्बना ही तो है यह कि मालिकों की तिजोरियों को भरकर भी मजदूर का पेट खाली रहे। तन ढाँपने के लिए भी पर्याप्त कपड़े नहीं। मुट्ठी भर लोग हजारों को अपने पैरों से रौंदें, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। जमीन हम जोतते हैं। मेहनत हमारी होती है, खून पसीना हमारा बहता है और उपज की सारी फसल किसी और की हो जाए? यहां तो मजदूर के पसीने की कीमत कुएँ के पानी से भी सस्तीहै। ऐसा कब तक होगा?''[22]

असमानता के विरूद्ध मजदूरों में नई चेतना जागृत कर उन्हें अपने अधिकार के लिए आवाज उठाने के लिए प्रेरित कर इस अर्थ भेद को मिटा सकते हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में अनत अपने पात्र सहदेव ठाकुर के द्वारा प्रवासी, मजदूरों की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए उन पर हो रहे अन्याय और पशुतुल्य व्यवहार पर हरि और मूसा को अन्याय के ख्विालाफ लड़ने की प्रेरण देते हुए फातमा को अन्याय और शोषण के शिकार गिरमिटिया मजदूरों

---

[22]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 199

की व्यथा उन पर बीती हुई यातनाओं का सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हैं। ''....... यह नाम देख रही हो! यह सावाना कोठी का प्रेमलाल है। पच्चीस वर्षों से कोठी में काम कर रहा है। कभी इसके पाँच बच्चे थे, अब सिर्फ एक लड़की जिंदा है।''

चार बच्चे मर गये?''

''हाँ। बच्चों की बीमारी फैली थी। दवा-दारू का कोई बंदोबस्त नहीं हो सका। यह दूसरा नाम बनारस कोठी का है। लक्ष्मण लाल। पैंतीस साल से शक्कर उद्योग में मजदूरी कर रहा है। पत्नी और दो लड़कों सहित आज तक उसका अपना कोई घर नहीं। बुढ़ापे में भी वह नौकरी से हटना नहीं चाह रहा, इस डर से कि वैसा करने में उसे कोठी का वह घर छोड़ देने को कहा जाएगा। इस सूची में जितने नाम हैं, सभी बरसों से सताए हुए लोग हैं और यह देखा अम्मादेवी पोनामा। अस्सी साल की होने को है। आठ साल की उम्र से ब्रिटानिया कोठी में काम कर रही थी। पूरे पच्चीस साल तक काम करती रही। आज पास पड़ोस के मजदूरों के घर खा-सोकर बाकी जिंदगी गुजार रही है। यह है राशीद जमाल। एक बेटी खुदकुशी करके मर गयी। दो बेटे सात साल से कैद की सजा भुगत रहे हैं।''[23] अनत के अधिकतर उपन्यासों में प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा और संघर्ष, अपनी स्थिति को सुधारकर समंदर पार देश में अपनी मेहनत के बल पर खुद को स्थापित करने की गाथा का बड़ा यथार्थ चित्रण किया है। समाज में प्रत्येक बुराइयों के मूल में अर्थ की समस्या है, आर्थिक असमानता ही समस्त समस्याओं की जननी है और इससे उठने वाली समस्याओं का चित्रण इनके हर उपन्यास में विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। आर्थिक असमानता, पूरा मेहनताना पाने का संघर्ष तो कहीं अधिक धनवान बनने के चक्कर में भ्रष्टाचार, नशाखोरी चरित्र हनन भ्रष्ट राजनीति आदि मुद्दों को अचित्रिता, मेरा निर्णय, आसमान अपना आँगन, लहरों की बेटी, चलती रहो अनुपमा आदि कई उपन्यासों में इस अर्थगत भेद को दर्शाया है।

---

[23]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 113-114

### 4.1.2 धर्मगत भेद

धर्मगत भेद समाज में एक विकट समस्या के रूप में उभरकर किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं, समस्त संसार के लिए एक जटिल समस्या बनकर नासूर की तरह संपूर्ण मानवता को नष्ट कर रहा है। विचारों की विभिन्नता, विभिन्न मत, मान्यता व संस्कृति स्वयं को श्रेष्ठ बताने की होड़ में भेद उत्पन्न होता है। यही भेद जब एक समुदाय को दूसरे समुदाय पर हावी होने की तथा स्वयं को श्रेष्ठ दूसरे को हीन मानकर चलने की चेष्टा करता है तब संसार में प्रलयकारी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। और यह भेद टकराव, युद्ध जैसी समस्याओं को भी उत्पन्न करता है। सदियों से चले आ रहे इस भेद ने कई देशों को काटा और बांटा है। विभिन्न जाति, रंग, भाषा, संस्कृति विचारों का टकराव आज भी भूमंडल में अपनी जड़ें, जमाए हुए हैं। मानसिक संकीर्णता के चलते बंटवारा, दंगे, फसाद, युद्ध, आतंकवाद जैसी कई घटनाओं का गवाह इतिहास रहा है। विभिन्न धार्मिक दल, जिहादी संगठन धर्म और जाति के नाम पर आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं। जिससे घातक आतंकी समस्याएं केवल एक समाज या राष्ट्र में ही नहीं संपूर्ण विश्व में अपने पाँव पसार रही हैं। धर्म पुरातन काल से लेकर आज तक के आधुनिक समाज की जटिल समस्या बनी हुई है। इस समस्या को उजागर करना एक रचनाकार का परम धर्म है तभी तो साहित्य के माध्यम से इस धर्मगत भेद को मिटाने हेतु लेखक इस यथार्थ को समाज से परिचित करवाता है।

प्रगतिशील रचना तो वही मानी जाती है जो समाज में व्याप्त विकट समस्या को उजागर कर उसके यथार्थ से समाज को परिचित करवाती है। इस पर रामविलास शर्मा जी का मानना है कि ‘‘जो साहित्य मनुष्य के उत्पीड़न को छिपाता है, संस्कृति की झीनी चादर बुनकर उसे ढंकना चाहता है वह प्रचारक न दिखते हुए भी वास्तव में प्रतिक्रियावाद का प्रचारक होता है।’’[24] अक्सर धर्म का जामा पहने कुछ स्वार्थी तत्व अंधविश्वास रूढ़ियों को बढ़ावा देते हैं जो समाज को अंधकार की ओर झोंकते हैं और जो अज्ञानता का प्रतीक है। विकास में बाधक है। देश के उत्थान

---

[24]प्रगति और परंपरा - रामविलास शर्मा, पृ.सं. 50

में उसकी प्रगति में सदैव रोड़े अटकाता रहा है। इन रूढ़ियों और अंधविश्वासों के अंधकार से ज्ञान के उजाले से परिचित करवाने का कार्य अपनी रचना के माध्यम से रचनाकार करता है। अनत ने अपने उपन्यासों में धर्मगत भेद के चलते मजदूरों के आपसी मतभेद तथा क्रांति और आंदोलन की योजनाओं के विफल होने के पीछे प्रमुख कारण के रूप में अपने कई उपन्यासों में दिखाया है। उन्होंने अनेक रूढ़ियों का विरोध करते हुए मानव धर्म की प्रधानता को महत्व दिया है। मानवता की स्थापना कर समानता का भाव उजागर किया है। ज्ञान-विज्ञान को महत्व दिया है। जातिगत धर्मगत भेद को मिटाकर एकजुट होकर मजदूर यूनियन की एकता, संघर्ष, आंदोलन, समान अधिकार की लड़ाई को अपनी रचनाओं में महत्व दिया है जिससे इनके उपन्यास मॉरिशसीय साहित्य में विशेष महत्व रखते हैं।

''मैं तो दाऊद मियाँ की एक बात को उतना ही महत्व देता हूँ जितना अपने धर्म की बातों को। वह कहते हैं कि हम अपने घर में मुसलमान रहें, अपने घर में हिन्दू रहें, लेकिन जब गाँव और देश का सवाल आये तो यह न भूलें कि हम किस हालत में यहाँ पहुँचे और हमें क्या हासिल करना है। मैं तो गाँव-गाँव जाता रहता हूँ। इस मुल्क में जितने भी मंदिर बन रहे हैं उनमें मुसलमान भी पसीना और पैसा देते हैं। उसी तरह जितनी मस्जिदें बनी हैं उनमें हिन्दुओं ने भी वही सहयोग दिया है। अब कोई बताये कि कल अगर हिन्दू-मुसलमान मंदिर-मस्जिद को लेकर झगड़ पड़े तो कैसा लगेगा? और फिर उससे लाभ  किसको होगा? मनोहरसिंह खुद विद्वान आदमी हैं। मैं उनसे बात कर आया हूँ ... मेरी उनसे पुरोहित के नाते यही माँग है कि वे कुछ ऐसा न कर बैठें जिससे एक ही जहाज में जानवरों से बदतर हालत में यहाँ पहुँचे, खेतों में एक साथ डंडों और चाबुकों की बौछार सहते एक साथ मर मिटने वाले कल दस अलग-अलग जातियों में बिखर जाएं। हम यहाँ एक रूप में आये थे, एक रूप में रहना है। आज का भेदभाव कल हमसे हमारी सारी शक्ति सारी प्रतिष्ठा छीन लेगा।''[25] मंदिर के पुजारी द्वारा कहे गए वक्तव्य से अनत ने धर्मगत भेद का विरोध

[25]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 54-55

कर एकता समानता को महत्व दिया है। सभी धर्मों से सर्वोपरि मानव का मानवता से प्रेम बतलाया है जो समाज में एकता लाता है, धर्मगत भेद मिटाता है। क्योंकि यही अंतर मानवतावादी गुणों में फूट डालता है और आपसी टकराव की इस कमजोरी का फायदा स्वार्थी शक्तियाँ अपनाती हैं। यह सदैव होता आया है कि ऐसी कमजोरी का फायदा सत्ताधारी, पूँजीपति एवं राजनैतिक दल इसका लाभ अपने पक्ष में उठाते आये हैं। जब तक ये आपसी भेद ये अंतर नहीं मिटेगा अपने स्वार्थ के लिए कुछ लोग हमेशा फूट डालकर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे प्रगति पथ को बाधित करते रहेंगे। इस ओर इशारा अनत जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'लाल पसीना', 'और पसीना बहता रहा', 'गाँधी जी बोले थे', 'हम प्रवासी' आदि उपन्यासों में मजदूरों के आंदोलन को कुचलने के लिए मिल मालिकों द्वारा अपनाये गये हथकंडों का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए समाज में फैली इस भेद भाव वाली नीति के परिणाम से परिचित करवाते हैं।

''कल तक हिंदू और मुसलमान का भी सवाल नहीं उठता था। सवाल उठता था भारतीय का और मजदूर का। आज वे ही एक धरती के दो भाई अलग-अलग अपनी खिचड़ी पकाने लगे हैं। एक की दाल और दूसरे के चावल की अब एक दूसरे को जरूरत नहीं महसूस हो रही। जनता की शक्ति को बांटकर उसे कमजोर कर देना इन गोरों की सबसे बड़ी खासियत होती है।''[26] ऐसे ही मदन का सभी मजदूरों को एकजुट करने का प्रयास लाल पसीना उपन्यास में जातीयता, प्रांतीयता धर्म के नाम पर उन्हें बाँटने का प्रयास पूँजीपतियों द्वारा किया जाता है। उनके आंदोलन को कमजोर करने का जाल बिछाया जाता है। मजदूरों को आपसी भेदभाव में उलझा कर उन्हें अपने अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है। ऐसा ही उल्लेख हम प्रवासी उपन्यास में भी मजदूरों की एकता को नष्ट करने के लिए हिन्दू-मुस्लिम, ऊँच-नीच, जात-पांत, तमिल-तेलुगु आदि भेदों के साथ-साथ उन्हें लोभ और लालच में फँसा कर धर्म परिवर्तन करने का प्रलोभन देकर उनकी एकता में एक और अंतर पैदा करने की पूँजीपतियों की चाल का पर्दाफाश अनत ने सिमोने द्वारा

[26]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 131

लोगों को भड़काकर उनकी देश, जाति, धर्म, प्रांत को न मानकर भारतीयता वाली मान्यता को आहत करने की चेष्टा द्वारा प्रस्तुत किया है।

‘‘देखों सुबायन, तुम इन बिहारियों के त्योहार और रीति-रिवाजों में भाग क्यों लेते हो, जबकि ये लोग तुम मद्रासी लोगों को अपना नहीं मानते ....

हम सब एक देश के हैं। यह आवाज वीरपेन के पिता की थी। उसने आगे कहा एक धर्म है हम सभी का। सीमोने ने उसे आगे बोलने नहीं दिया तुम्हारी भाषा अलग है। तुम्हारा पहनावा, खान-पान सभी अलग है। यही बात मैं तेलुगु और मराठियों को कई दिनों से समझा रहा हूँ ये लोग भी इसी गलतफहमी में हैं कि भारत से आए हैं तो सभी हिन्दुस्तानी हैं। .....तभी मधुवा और वीरापेन ने एक तीसरी आवाज सुनी। वह हनीफ की आवाज थी ‘सुमिरन तुम हम मजदूरों को अभी बहकाए जा रहे हो। तुम्हारे मालिक खुद आकर इन मजदूरों को बाँटने का साहस क्यों नहीं कर रहे? क्यों तुम जैसे दलाल से अपना उल्लू सीधा करवा रहे हैं? देखो तुम और तुम्हारे ये पूंजीपति लोग लाख चाहकर भी हम हिन्दुस्तानियों को अलग-अलग नहीं बाँट सकते मजदूर की एक ही जाति होती है - मजदूर-मजदूर।’ .... हम जहाज में एक साथ आये थे - जहाजिया भाई की तरह। खेतों में खून-पसीना एक करते रहे - मजदूर भाइयों की तरह। एक की पीठ पर पड़ने वाली कोड़े की मार के दर्द को हमने अपना दर्द माना। मजदूरों के इस परिवार का नाम प्रवासी है। तुम दु:ख-दर्द, सुख-शांति आपस में मिलकर बाँटते हुए जीने वालों को अलग-अलग बाँट रहे हो, नहीं बाँट सकोगे।’’[27]

इस वक्तव्य में वाद विवाद द्वारा अनत ने इसाई धर्म के प्रलोभन में आकर सुमिरन से सिमोने बने सुमिरन को पूंजीपतियों की भेदभाव और बंटवारे वाली नीति द्वारा मॉरिशसीय भारतीयों को बरगलाने की कोशिश को विफल करते हैं। हनीफ के माध्यम से दर्शाया है एकजुट होकर प्रवास में सहे जुल्मों के साथी एक परिवार के समान हैं। इनकी एकता में ही बल है। जो कि

[27]हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 100-101

पूंजीपति स्वार्थी मालिकों के किसी प्रलोभन में आने वाले नहीं हैं। आज भी हम देखते हैं कि हर देश में सत्ताधारी वर्ग तथा राजनैतिक पार्टियाँ धर्मगत भेद को अपने फायदे के लिए और बढ़ावा देती है, अपना वोट बैंक इस भेदभाव वाली मानसिकता वालों को ही माना है। जिससे न केवल शासन तंत्र में ही नहीं समाज, देश तथा संसार में वैमनस्य फल-फूल रहा है। जो कि एक राष्ट्र नहीं संपूर्ण विश्व की हानि का द्योतक है, जो मानवता को नष्ट कर रहा है। इसी अनिष्ट की चेतावनी को लेखक ने अपनी रचनाओं में धर्मगत, जाति गत आदि समाज में व्याप्त भेदों को दर्शाते हुए समाज को अवगत कराया है। इसके यथार्थ से उसे परिचित करवाता है। ''उधर के कुछ एजेंटों द्वारा उत्तेजित किए जाने पर हिन्दू-मुस्लिमों के बीच जो दंगे फसाद हुए उनमें उन हथियारों का उपयोग हुआ है जो मंत्री एम.बी.सी. के उच्चाधिकारी के सहयोग से देश में लाया था।''[28] अभिमन्यु अनत बेबाक होकर भ्रष्ट राजनीति के चलते भड़काई गई  सांप्रदायिकता की आग तथा उसमें राजनेता से लेकर उच्च अधिकारियों का संलिप्त होना आदि को जनता के सामने रखते हैं। वे अपने स्वार्थ के लिए मासूम जनता को बहकाते हैं। इसी भ्रमित करने वाली प्रवृत्ति को स्पष्ट कर समाज में जागृति लाना चाहते हैं।

किसी धर्म या धार्मिक विचारधारा से प्रतिबद्ध होकर भी यदि मानवता को साथ लेकर चला जाए तो इस भेद को दूर किया जा सकता है। किन्तु धर्म को लेकर जब स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ साधते हैं, उसके दुरुपयोग से उसे संकीर्ण बनाते हं तब यह भेद रूढ़ी, अंधश्रद्धा के रूप में शोषण और अत्याचार को जन्म देता है। उसे दूर कर मानवता की स्थापना हेतु अनत ने अपने उपन्यासों में ऐसे कई संदर्भों को विशेष रूप से उजागर करते हुए इसके दुखद परिणामों को दर्शाया है। ''वह अपने घर की दयनीयता को देखता रह गया था। वे छत और दीवारें उसके सिर के ऊपर गिरती-सी प्रतीत हुई थी। जुजारी की विदाई के वक्त माँ ने घर के अनाज से साथ अंजलि अनाज थाली में रखकर ऊपर से दूसरी थाली भर प्रसाद और चाँदी के सिक्के रखे थे। उसने माँ के मान में

---

[28]आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 370

धीरे से कहा था कि वह नाहक ही उतनी सारी चीजें पुजारी की झोली में लादे जा रही थी। ब्राह्मण देवता तो उसे लेगा नहीं। उसका ऐसा सोचना गलत था। माँ अभी पुजारी के पांवों पर ही झुकी हुई थी कि पुजारी ने झोली संभाली और कंधे पर उसे लटका लिया था। पांव छूने के बाद माँ अपने आंचल को उसके सामने फैलाए खड़ी थी। पुजारी चौखट तक जा चुका था। माँ धीरे से बोली थी - बाबाजी जजमान के भंडारे भरे के भूल गयी लआ पुजारी ने अपनी भूल महसूस की थी और दो कदम पीछे आकर झोली से आधी मुट्ठी अनाज निकालकर माँ के आंचल में डाला था। फिर आशीर्वाद देते हुए बोला था- जिस भंडारे से निकला है वह भरपूर रहे। घीववा करहेये में गिरत बा। वह तब यह नहीं समझ पाया था कि वह कामना उसके घर के लिए थी या पुजारी के अपने घर के लिए। यह कामना तो वह तब से सुनता आ रहा था जब माँ ने घर की सनी दूर करवाने के लिए लोगों से मांग-चांग कर पूजा करवायी थी।''[29] अनत जी हमें ब्राह्मण को महत्व गरीबों का शोषण जो धर्म के नाम पर लुट जाते हैं। अपनी अंधश्रद्धा के कारण धर्मगत भेद का शिकार होते हैं। प्रेमचंद के गोदान का होरी भी वैसा ही दृश्य विक्रम के घर की दरिद्र स्थिति में भी उसकी माँ ब्राह्मण की झोली भरे जा रही थी वह भी कर्ज मांगकर। इस अज्ञानता से पर्दा उठाने का कार्य अपनी लेखनी द्वारा अभिमन्यु अनत ने किया है जो कि प्रगतिशील साहित्य की मान्यता है। इस बात की पुष्टि रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव के मंतव्य से होती है ''प्रगतिवादी आलोचना उन समस्त वृत्तियों का विरोध करती है जो शोषण की प्रक्रिया में सहायक होती हैं। शोषण का स्वरूप चाहे जो हो, वह उसका समर्थन नहीं कर सकती। अगर धर्म, ईश्वर एवं परंपरागत मान्यताएँ भी इस शोषण वृत्ति के प्रसार में सहायता पहुँचाती है, एक ऐसे मोहक आवरण का निर्माण करती है, जिससे शोषण के विरोध में स्वर नहीं उठाया जा सके तो प्रगतिवादी आलोचना उसकी भी समुचित विवेचना कर शोषण-पद्धति को समूल नष्ट करने के लिए सन्नद्ध हो जाती है।''[30]

---

[29]पर पगडंडी नहीं मरती - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 29

[30]प्रगतिशील आलोचना - रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृ.सं. 243-244

समाज का उच्च वर्ग यह कभी नहीं चाहता था कि यह कुली मजदूर एकजुट होकर संगठित होकर कोई बड़ी ताकत बन जाए इसलिए वे उन्हें जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, प्रांत के नाम पर विभाजित करने के प्रयास में लगे रहते हैं जो इनके संघर्ष को दबा सकता है। ''पूंजीपति तो हमेशा यह चाहते रहे हैं कि मजदूर जाति कभी एक जाति के रूप में न रहे क्योंकि धनपतियों का कल्याण इसी में है कि मजदूर वर्ग मुसलमान क्रियोल और हिन्दू आदि अलग-अलग धर्मों में बंटा रहे। अब तो हिन्दू भी हिन्दू नहीं रहे .... कभी जात-पांत में बंट रहा है तो कभी भारत के प्रांतों के साथ जुड़कर विभाजित हो रहा है। ... यदि यही चलता रहा तो इससे लाभ उठाकर धनवान और धनी बनता जाएगा तथा गरीब और अधिक गरीब बनता रहेगा।''[31]

असमानता की भावना अर्थ, धर्म, जाति, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा ये सारे भेद मानवता पर समानता पर प्रगति पर अवरोध लाती है। एक ओर अनत इसका यथार्थ पूर्ण चित्रण करते हैं तो अन्य कई रचनाओं में इस धर्मगत भेद से ऊँचे उठते हुए मानवतावादी रिश्ते आपसी प्रेम भाव और समानता का भाव भी प्रस्तुत करते हैं। हिन्दू मुसलमान का एक दूसरे के धर्म के प्रति आदर, प्रेम, भाईचारा व समानता का भाव देखा गया है। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में मूसा और हरि का साथ-साथ आंदोलन में हिस्सा लेना। सहदेव ठाकुर का फातमा को अपनी बेटी मानकर धर्म जाति के बंधनों को काटने की कोशिश करना है। उनके अन्य उपन्यासों में अपने हिन्दू मित्र के लिए मुसलमान दोस्त का शिवजी के प्रति आदर का भाव से अपने मित्र को शिवजी की मूरत उस तक पहुँचाने तक मांस, मछली का सेवन नहीं करना। हर उपन्यास में एक दूसरे पर प्राण न्योछावर करते ये भिन्न-भिन्न धर्म वाले भाई परदेस में आकर एक परिवार के समान एक दूसरे को मान और सम्मान देते हुए प्यार से रहते हैं। एक दूसरे के सुख-दुख के साथी हैं जो कि धर्मगत भेद को मिटाने का बड़ा ही सुन्दर प्रयास अनत के उपन्यासों में देखा जाता है। इनके आंदोलन उपन्यास में अंतर्धार्मिक द्वंद्व को उभारा है तो कहीं इनके उपन्यासों में धर्म-परिवर्तन के स्वरूप में छिपी भारतीय

[31]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 140

मजदूरों की विवशता ताकि जीवन स्तर सुधारा जा सके किन्तु फिर भी भेदभाव का सामना कर संघर्षपूर्ण जीवन जीते भारतीयों की दैन्य अवस्था का चित्रण इनके उपन्यासों में देखा गया है। इसाई धर्म अपनाकर कुछ धार्मिक सहायता के सिवा उन्हें मानव का मानव के प्रति प्रेम और सम्मान आदर भाव पूर्णत: प्राप्त नहीं हो पाता। 'मेरा निर्णय' उपन्यास में आजादी के इतने वर्ष बाद मॉरिश्स की जीवन शैली में इतना परिवर्तन होने पर भी अमिता को एक ओर नस्ल भेद, धर्मभेद, रंग भेद का सामना करना पड़ा तो दूसरी ओर हुस्ना और अमिता के परिवारों के बीच अगाध प्रेम है। हुसना के निकाह के बाद उसके माता-पिता की जम्मेदारी अमिता उठाने को तेयार होती है।

''हुस्ना अगर तुम इस बात से दुखी हो कि तुम्हारे अब्बाजान और तुम्हारी अम्मी तुम्हारे बिना अकेले पड़ जाएंगे तो इसे मैं और मेरे परिवार अपना अपमान मानेंगे। तुम्हारे घर में मैं पड़ोसी था भतीजी कभी नहीं मानी गयी थी। हमेशा बेटी की तरह प्यार पाया है मैंने। और मैंने भी तुम्हारे माँ-बाप को माँ-बाप ही माना है।''[32]

चाहे संस्कृति आचार-विचार, धर्म, खान-पान में अंतर हो किन्तु आपसी प्रेम भावना परिवारिक रिश्तों से भी सर्वोपरि है। जो एक भेदहीन समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है और यही चेष्टा अनत के हर उपन्यास की कथा को लेकर आगे बढ़ती है, जिसमें समाज में व्याप्त अंतर को मिटाकर समानता का भाव है जो समाज के विकास में सहायक है। अनत की पकड़ इतिहास पर अधिक उपन्यासों में शोषण से लेकर बदलते समाज की आधुनिकता और उसके प्रभाव प्रगति आदि के साथ-साथ आज के इस निरंतर प्रगतिगामी युग में भी धर्म, जाति प्रांत के नाम पर बंटे देश तथा समाज में जड़ पकड़ती आतंकवाद जैसी बुराइयों पर भी प्रकाश डाला है। अपने उपन्यास 'एक उम्मीद और' में गर्भ में पल रहा शिशु अपने अतीत के बारे में याद करता है और समाज में जाति धर्म के नाम पर हो रहे खूनी हत्यारी घटनाओं पर चिंतन संवाद के रूप में

---

[32]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 195

काल्पनिक ईश्वर के साथ करता है। ''मजहब के नाम पर बात मत करो .... मैंने धर्म की स्थापना की थी। उसका बंटवारा नहीं किया था। फिर अगर धर्म अलग-अलग रूप में मानवहित में काम करता है तो कबूल है मुझे। मैं सभी का हूँ सभी मुझमें हैं। मैं जीवन देता हूँ, जीवन लेता हूँ और जब तक सूरज उगता डूबता रहेगा, अंधेरा और उजाला रहेगा, रात और दिन होते रहेंगे, आदमी जन्मता, मरता और जन्मता रहेगा। मरकर कोई किसी खास मजहब का नहीं होता। मजहब तो उस पर जन्म के बाद मजहब वाले लादते रहते हैं। तुम तो अपने पिछले जीवन में इंसान जन्मे थे फिर मुसलमान बने। और अपने दूसरे भाइयों को छलने तथा जिसे प्यार किया उसे हर हालत में अपनाने के लिए उसे धोखे में रखकर अपने को हिन्दू बताते रहे। कई हिन्दू भी तुम्हारी ही तरह अपने को इंसान से अधिक कट्टरपंथी धार्मिक मानकर खून खराबे करते रहे हैं। किसी की मासूमियत और प्यार के साथ तुमने जो धोखेबाजी की है उस किए के प्रायश्चित के लिए तुम्हें नया जन्म लेना ही होगा।''[33]

इन काल्पनिक पात्र के बीच हो रहे वाद संवाद द्वारा अनत वर्तमान काल में प्रगति के सथ-साथ मनुष्य जाति-धर्म के नाम पर विकसित समाज की जड़ें खोखली कर रहा है जिसके प्रभाव से कोई नहीं बच पायेगा तथा श्रेष्ठता के भाव में नहीं समानता के भाव में प्रगति निहित है। धर्म समाज के नाम पर बंटे लोग देश का विकास नहीं कर सकते, संकीर्णता उनके खुद के विकास को भी बाधित करती है। धर्म और मजहब के नाम पर इतना आगे बढ़ने के बाद आज भी संसार में देश बंटे पड़े हैं जो बुरे परिणाम के सूचक हैं। देश के उत्थान के लिए धर्मगत भेद को मिटाने की प्रेरणा इनकी रचनाओं में की गयी है।

### 4.1.3 जातिगत भेद

समानता की भावना प्रगतिशील साहित्य के मूल तत्वों में से मानी जाती है। इस भावना को अपनी रचना में लेकर चलने वाला साहित्य ही प्रगतिशील साहित्य कहलाता है क्योंकि

[33]एक उम्मीद और - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 43

प्रगतिशील साहितय का ध्येय ही समानता स्थापित कर वर्गों में विभक्त समाज में अप्रगतिशील तत्वों का खंडन कर उसके विरूद्ध आवाज उठा जनता को जागरूक करना है। प्रगति का मार्ग प्रशस्त करना है जहाँ सभी को समान भाव, समानता से देखा जाता है। समान व्यवहार होता है वहाँ वर्ग भेद नहीं होता। जहाँ भेदभाव, ऊँच-नीच नहीं होता वहाँ संघर्ष नहीं होता, द्वंद्व नहीं होता। किन्तु सदैव ही असमानता विभिन्न भेदभाव तनाव व शोषण को बढ़ावा देते हैं। द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न करते हैं। फिर चाहे वह वर्णभेद धर्म भेद वर्ग भेद या जातिगत भेद ही क्यों न हो छोटा बड़ा अमीर गरीब का भेद समाज को वर्गों में विभाजित करता है। यह वर्गों में विभक्त समाज निरंतर संघर्ष की स्थिति पैदा करता है और वैमनस्य मतभेद संघर्ष द्वंद्व ये सारी समस्याएं उत्पन्न होती हैं जो कि विकास के लिए बाधक है।

मनुष्य को उसके अधिकारों से वंचित करना, स्वयं को श्रेष्ठ दूसरे को हीन समझ उसके साथ अमानवीय व्यवहार करना, दबे हुए को और दबाने की प्रवृत्ति आदि का कड़ा विरोध व निंदा प्रगतिशील साहित्य में जमकर हुआ है। इस भेदभाव वाली नीति का विरोध अनत अपनी रचनाओं में कड़े से कड़े शब्दों में करते हैं। अपने उपन्यास 'और पसीना बहता रहा' में हरि और परकाश के बीच वार्तालाप से जाति-पांति के भेद को मिटाने का प्रयत्न करते हुए इस भेद पर वयंग्य कसते हुए संकट में काम आने वाला सच्चा साथी होता है। जाति पांति एक ढकोसला है साबित करते हैं। जिसका भेद मिटाने का प्रयत्न किया गया है।

''मुझे बताया गया है कि तुम्हारे पिता किसी के यहाँ जलपान नहीं करते थे। मेरे पिता को अपने ब्राह्मण होने का बहुत फक्र था। पर आपको यह भी तो बताया गया होगा कि एक ब्राह्मण के ही कारण खून-पसीना एक करके हासिल की हुई थोड़ी-बहुत जायदाद देखते ही देखते गंवा दी थी। सूना है और यह भी सुना है कि जिस आदमी ने अपने घर का आटा गीला करके तुम्हारे पिता के जायदाद की नीलामी के बाद जेल जाने से रोका था, वह बस्ती का ही कोई तँतवा चमार था। शायद इसीलिए मेरे पिता मरते-मरते भी मेरी माँ से कहते रहे थे कि उन्होंने कई मौकों पर बाह्मणों

को चमार पाया है और चमार को ब्राह्मण।'' अच्छी बात है हरि कि तुम आदमी और आदमी के बीच भेद-भाव नहीं मानते।''[34]

अनत के उपन्यास उनकी प्रगतिशीलता का परिचय कराते हैं जो जाति पांति धर्म के भेदभाव से आगे की सोच प्रगति की सोच रखते हैं। किन्तु यह भेदभाव वाली समाज विरोधी मान्यताएँ मानव संस्कृति में इतनी गहराइयों तक फैली हुई है कि इसे मिटाने के लगातार प्रयत्न होते रहते हैं फिर भी कुछ प्रतिशत ही इसमें सफलता हासिल हुई है। निम्न वर्ग से उच्च वर्ग, मध्य वर्ग पढ़ा-लिखा समाज सभी को कहीं न कहीं इस समस्या का सामना करना पड़ता है, ऐसे विचार अनत के उपन्यासों में देखे जाते हैं। जैसे 'आंदोलन' उपन्यास में रवि और सलमा के बीच जात-पांत एक दीवार बनकर खड़ी होती है। नये जमाने में जीने वाला पढ़ा-लिखा कॉलेज में पढ़ाने वाला युवक जो एक आंदोलन चला रहा है। मुसलमान लड़की से प्यार तो करता है किंतु विवाह कर पाने में आज भी जात-पात आड़े आती है। ''क्या केवल इसलिए कि तुम दोनों के बीच परंपरागत दीवार है? क्या इस चंद्रयात्रा के युग में तू आज भी अपने को एक जाति और रवि को दूसरी जाति का समझती है?''

''सलोनी! तुम्हारे घर में डॉक्टर और बैरिस्टर हैं। तुम परंपरा से दूर आधुनिक हो, पर मैं तो आज भी पुराने खयालों का एक अंग हूँ। मैं दायरे के भीतर हूँ।''[35] आज अति आधुनिकता अपनाये हुए युग में भी लोग जागृत होने के साथ-साथ जाति-पाति को लेकर अधिक संकीर्ण होते जा रहे हैं। छोटी सी बातों का जाति-पाति के नाम पर बढ़ा-चढ़ाकर राई का पहाड़ बनाने में आज भी लगे हैं। इस तरह की विचारधारा को बढ़ावा देने वाली अवसरवादी विचारधारा से युक्त राजनीति है। जो इस तरह की भेदभाव वाली नीति को मिटने नहीं देगी। मॉरिशस को आजादी के बाद उस देश को बसाने वाले मेहनतकश लोगों के हाथों में जब उस देश को चलाने की बारी आई तब वहाँ भी इस जात-पांत को लेकर अवसरवादी लोग अपनी-अपनी रोटियाँ सेंकने में लग गये। ''आधे घंटे तक

---

[34]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 30

[35]आंदोलन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 118

तीन धार्मिक सभाओं की चिट्ठियाँ, संबद्ध चुनाव क्षेत्रों से आए बेशुमार हस्ताक्षरों वाली अर्जियों के मुआयने तथा सभा-बैठकों के प्रतिनिधियों की माँगों और दलीलों पर विचारों के आदान-प्रदान के बाद प्रधानमंत्री ने हंस से कहा, ''यह सब कुछ देखने जाने के बाद अब तुम ही बताओ, मैं क्या करूँ? साँप के मुँह में छदूंदरवाली बात है - न लीलने बन रहा है और उबलते। हर जातिवाला अपनी जाति की दुहाई देकर ये ही कहे जा रहा है कि उसकी जाति का अगर एक भी मंत्री कम नियुक्त हुआ तो वह सरकार से बाहर होकर रहेगा। कोई तीन माँग रहा है कोई चार। कोई वित्त मंत्रालय के लिए अड़ा हुआ है तो कोई विदेशी मामले जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय पर कब्जा चाहता है। चुनाव के पहले अगर ऐसे तकाजे आए होते तो समस्या को सुलझाने में इतनी अधिक कठिनाई सामने नहीं आती। अब तो दोनों हाथ पत्थर के नीचे हैं।''[36]

काफी देर तक चुपचाप सुनते रहने के बाद हंस ने कहा, ''जाति के नाम पर इन कूदने-फांदने वालों की आप ही लोगों ने बहुत अधिक महत्व देकर सिर पर चढ़ा लिया है।''[37] यहाँ हंस के द्वारा बतलाने की कोशिश की है कि राजनेता लोग अपने स्वार्थ के लिए जात-पांत को चुनावी मुद्दा बनाते तो जरूर हैं किन्तु समस्याओं की जटिलता से भी इन्हें गुजरना पड़ता है। यह जाति भेद समाज का कभी भी भला नहीं कर सकता। समाज में लोग अपने जीवन यापन के संघर्ष में लगे होते हैं। ये तो स्वयं युक्त राजनीतिक छोटी सी घटनाओं को हवा देकर बड़ा बवंडर खड़ा करते हैं। आज के पढ़े लिखे वर्ग में इस भेद को कुछ हद तक कम किया है। किन्तु छुछ अवसरवादी ताकतें इसे जड़ से मिटाने में बाधक हैं। लोगों की सोच को आज भी अपने स्वार्थ के लिए जकड़े रखना चाहते हैं। देश में हो या विदेश में समस्त संसार में लोग कितने ही आधुनिक विचारधारा वाले कयों न हों इस मुद्दे पर आते ही संकीर्ण हो जाते हैं। और यह भेद नये-नये मुखौटों के साथ हर देश में उभर रहा है। जाति, पाति, धर्म आदि के नाम पर बाँटने-काटने की नीति अपनाई विध्वंसकारी रूप अपनाते जा रहा है जो कि समाज के उत्थान में बाधक हैं। यह सारे भेद घृणा के बीजआने

[36]

[37]आसमान अपना आँगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 424

वाली नस्लों के मन में बोने लगे हैं। जिसका परिणाम घातक है। एक प्रगतिशील लेखक होने के नाते इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर अनत प्रकाश डालते हुए समाज की प्रगति के अवरोधक इन समस्याओं से समाज को अवगत करा रहे हैं। जातीय नस्लीय घृणा आज सारे विश्व भर की ज्वलंत समस्या बनकर सामने आ रही है जो कि अति समृद्ध विकसित देश से लेकर पिछड़े विकासशील सभी देशों में एक प्रमुख मुद्दा बनकर उभरी है। जिसके प्रति अपनी रचनाओं में विरोध भाव व्यक्त करते हुए यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए असहिष्णुता दिखाते हैं जो कि प्रगतिशील रचनाकार का प्रमुख गुण है जो समाज में हो रही समाज विरोधी अप्रगतिशील, रूढ़ि कुंठा से भरी विचारधारा का विरोध कर उसके यथार्थ से समाज को अवगत कराना है।

### 4.1.4 प्रवासीगत भेद

प्रवासी जो अपने देश को छोड़कर आजीविका की तलाश में भुखमरी, निर्धनता को दूर करने की चाह में जीवन स्तर सुधारने की कामना लिए पराए देश में दास मजदूर बनकर यातनाओं से भरा जीवन व्यतीत कर गिरमिटिया महदूर कहलाते हैं। जिनका जीवन शोषण, भेदभाव, यातनाओं और संघर्षपूर्ण रहा है। उनकी दुर्दशा उनके संघर्ष से मॉरिशस का साहित्य भरा पड़ा है। यदि हम मॉरिशस के इतिहास पर नजर डालें तो यह छोटा सा द्वीप 350 वर्षों तक युरोपीय उपनिवेशीकरण के अंतर्गत रहा है। 12 मार्च 1968 ईसवी को राष्ट्रकुल के अंतर्गत स्वतंत्रता प्राप्त कर संयुक्त राष्ट्र संघ का 123 वाँ सदस्य देश बना है। मॉरिशस के रचनाकार प्रह्लाद रामशरण के अनुसार ‘‘सन् 1638 ईसवी से वर्तमान समय तक मॉरिशस का शासन 67 विदेशी गवर्नरों द्वारा हुआ जिनमें पन्द्रह डच गवर्नर, इक्कीस फ्रेंच गवर्नर, इक्कीस अंग्रेजी गवर्नर थे। सन् 1975 ईसवी से मॉरिशस की संतानों द्वारा गवर्नर जनरल का पद संभाला जा रहा है।’’[38]

यद्यपि इस द्वीप पर भारतीय मजदूरों का आगमन सन् 1834 से माना जाता है किन्तु इससे पूर्व फ्रेंच काल और डच काल में भी काफी भारतीय कुली मजदूर के रूप में रहते थे। इस टापू पर

---

[38]मॉरिशस का इतिहास - प्रह्लाद रामशरण - आमुख से पृ.सं. iX

जिसे जबरन ईसाई बना दिया गया था। इन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को बंदरगाह, बड़े-बड़े भवनों के निर्माण का काम करने के लिए दास के रूप में रखा जाता था। सन् 1810 में जब अंग्रेजों ने मॉरिशस पर आक्रमण किया तो भारत देश अंग्रेजों के अधीन होने के कारण भारतीय सिपाहियों को भारत से मॉरिशस, फ्रेंच सेना से युद्ध करने के लिए हजारों की संख्या में लाया गया। तो कुछ भारतीय बंदी गृहों के भारतीय कैदियों को दास के रूप में लाया गया था। सन् 1834 ईसवी में शर्तबंद प्रथा के अंतर्गत मजदूरों को सोने चांदी, धन कमाने का प्रलोभन देकर दास के रूप में गिरमिटिया मजदूर के रूप में लाया जाता था और यहीं से प्रवासीगत भेदभाव की शुरूआत। इनकी जहाज की यात्रा से ही यातनाओं के साथ इनसे पशु तुल्य व्यवहार किया जाता था। इन्हें असहनीय कष्ट झेलने पड़ते थे। जिसका सटीक वर्णन अभिमन्यु अनत के दो प्रमुख उपन्यासों 'लाल पसीना' और 'पसीना बहता रहा' आदि में देखा गया है।

''भारत पर अधिकार जमाने के लिए फ्रांस और इंगलैंड के बीच संघर्ष था। उसी समय इस द्वीप को भारत विजय की सुविधा के लिए लक्ष्य में रखा गया। इसी द्वीप से होकर फ्रांसीसियों ने मद्रास में अंग्रेजों के खिलाफ पहली लड़ाई लड़ी। इन्हीं लोगों के समय में मॉरिशस में भारतीय आगमन शुरू हो गया था। इस द्वीप के महत्व को समझकर अंग्रेजों ने भारतीय सेना के साथ फ्रांसीसियों पर आक्रमण किया और द्वीप उनके अधिकार में आ गया।

यहाँ से मॉरिशस में भारतीयों के आगमन की महत्वपूर्ण कहानी शुरू होती है। इतिहास के पन्नों पर धूल जमती गयी और कई पृष्ठों को जला भी दिया गया। फिर भी कुछ पन्नों को एक ऐसी स्याही से लिखा गया था जिस पर धूल टिक नहीं पायी। चंद ऐसे भी पन्ने थे जो भारतीय मजदूरों के खून पसीने से कुछ इस तरह भीगे हुए थे कि उन्हें आग जला न सकी और जो पन्ने जले भी उनकी राख को खाद समझ नियति ने खेतों में बिखेर दिया। इतिहास की बलि का वह सारा रक्त बहकर खेतों के रक्त से जा मिला और ......

और दबोचा हुआ वह इतिहास परतों के नीचे कैसे साँसों के लिए संघर्ष करता रहा, उसकी गवाही आज भी धरती की सोंधी गंध देती रहती है। लेकिन उस इतिहास को कैसे जिया गया था?

आगे उसी जीवन की कहानी है।''[39]

अनत अपने उपन्यास लाल पसीना में भारतीय गिरमिटया के संघर्षपूर्ण जीवन की गाथा आरंभ करने से पहले शुरूआत से ही किस प्रकार भारतीय मजदूरों को भेदभाव और यातनाओं की चरम अवस्था से गुजरना पड़ा, किस प्रकार शोषण, अत्याचार, पीड़ादायक होकर असहनीयता की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था इसका वर्णन किया है।

''मालगासी था वह काला परिचारक, जिसने उसके पास पहुँचकर उसके ख्यालों को झकझोर दिया। न चाहते हुए भी कुन्दन को उसके हाथ से बूयों की कटोरी लेनी पड़ी। टीन की वह पतली अधमैली कटोरी भीतर के गरम बूयों के कारण बाहर से भी गरम हो गयी थी। उसे एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुँचाते हुए कुंदन ने काले परिचारक को गौर से देखा। वह डील डौल वाला था। कुंदन उसके उस साहस को भीतर ही भीतर आजमाता रहा जिससे उस मालगासी और उसके साथियों ने दासता को नकारा था। आज उन सभी क्रिओली को हल्के-फुल्के कामों में लगे देख कुंदन कभी उनके साहस को सराह उठता, कभी उन्हें आलसी मन से उसे कोस जाता। एकाध बार उसके मन में यह विकार भी आया था कि इन्हीं मालगासी गुलामों की तरह अगर भारतीय मजदूर भी खेतों में काम करने से हट जायें तो मालिकों की दशा दयनीय हो सकती थी। पर ऐसा होने से रहा। वह बिहारियों को बहुत अच्छी तरह से जानता था। आखिर वह भी तो उन्हीं में से एक ठहरा। परिश्रम से कभी न थकने वाली जाति खेतों से भागे तो क्यों? लेकिन हाल ही में कैदियों के मुँह से जिस अत्याचार की कहानी वह सुनता आ रहा था, उसके खिलाफ वे खड़े हो सकते थे।''[40] कुंदन के जरिए एक कारावास के अस्पताल के दृश्य को अपने उपन्यास में दर्शाते हुए अनत कुंदन द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों पर हो रहे भेदभाव वाली नीति और उन मजदूरों के सब कुछ सहने पर

---

[39]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 13-14

[40]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 19-20

अफसोस किया है। इतिहासकारों के अनुसार डच काल में पोर्ट लुई में जहाँ भारतीय रहते थे उस क्षेत्र को काँन्वार (काला क्षेत्र) नाम से उनके लिए स्थान दिया गया था। यहाँ हिन्दुओं को मालाबार तथा मुसलमानों को लइकर कहकर संबोधित करते थे। समय काल के साथ इन नामों का चलन घटता गया किन्तु भेदभाव वाली नीति नहीं बदली। जैसे ही गोरे मालिकों का दौर आया तो वे उन प्रवासी दासों को घृणा से ‘मोनांबिक’ और ‘मालगास’, हिन्दुओं को मालाबार, मुसलमानों को लशकर तथा तमिल वालों को माद्रास आदि नाम से बुलाते थे।

‘‘बारी-बारी से मालगासी बन्दी चारदीवारी से बाहर होते गये थे। उनमें से दो जिन्हें उम्र कैद की सजा थी वे अवधि से पहले ही चल बसे थे। मालगासी कैदी जाते रहे, कुछ मालाबार कैदी भीतर आने वाले थे। कुन्दन ने उधर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था। लेकिन मालाबार नाम से भारतीयों को कैद के भीतर पाकर उसे जितनी हैरानी हुई थी, उतना ही हर्ष भी। वह हर्ष भी अपने ढंग का था ... हँसी आँसू के साथ लिये। हर दूसरे-तीसरे दिन कोई न कोई नया कैदी भीतर आ ही जाता। कैदियों की संख्या बढ़ती गयी थी। सभी की कहानियाँ एक सी होतीं .... पत्थरों के नीचे सोना पाने की वही एक-सी चाह लिए मारीच देसवा पहुँचना। जहाज से उतरते ही गले में नम्बर लटकाये खेतों को झोंका जाना। आधा पेट खाना, आधी देह कपड़ा। पीठ पर बाँसों की बौछार और .... कोई बैल-जैसा काम करने से इन्कारी के कारण इधर आ गया था। कोई भारत लौटने की मांग करके। कोई न्याय की दुहाई करता हुआ तो कोई बीमारी की वजह से तीन दिन नौकरी पर न पहुँच सकने के कारण। किसी की गिरफ्तारी केवल इसलिए हो गयी थी कि उसने अपने गले से नम्बर लिखे टीन के टुकड़े को निकाल फेंका था। किसी ने सरदार से मुँह लगाने की हिम्मत की थी। जिस व्यक्ति ने पहले दिन भीतर आते ही आत्महत्या कर ली थी, उसकी गिरफ्तारी इसलिए हुई थी कि सरदार की माँग पर उसने अपनी खूबसूरत पत्नी को पहली रात मालिक के घर नहीं पहुँचाया था।’’[41]

[41]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 26

मॉरिशस पहुँचे भारतीय मजदूरों को विदेश में जाकर संपन्न होने का पैसा खूब कमाने का लालच देकर जहाज की दर्दनाक लंबी समुद्र यात्रा द्वारा जानवरों की भांति ठूंस-ठूंस कर जहाज में भरकर लादा गया था। जिनका सफर यातनाओं से पीड़ा से भरा होता था जिसे सफर के दौरान असुविधा आधे पेट खाना, अव्यवस्था बीमारी, महामारी का सामना कर सड़े गले भोजन, गंदगी में जीते जी नर्क भोगा। कुछ ने मॉरिशस पहुँचने से पहले ही मध्य यात्रा में ही इस तरह की असहनीय पीड़ा से तंग आकर समुद्र में कूदकर अपने प्राण ले लिए तो कुछ बीमारी से मरने लगे। जहाज के कर्मचारी और उन्हें ले जाने वाले दलालों के लिए अलग व्यवस्था और गिरमिटिया मजदूर जो पैसा कमाने की आशा लिए गुलाम बनने जा रहे थे उनसे जहाज यात्रा से ही भेदभाव किया जाने लगा उनसे जानवरों सा व्यवहार किया जाता था। जो कोई इन यातनाओं को सहकर मॉरिशस पहुँच पाता वहाँ जाते ही उनके गले में टीन के नम्बर वाली तख्ती डाल जानवरों की भांति गंदी बस्तियों में छोटे से झोपड़ों में ठूंस दिया जाता। हर काम के लिए उन्हें अव्यवस्था का सामना करना पड़ता और अपने मालिक के लिए जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी उनका हक तो बहुत दूर ढंग से खाने और पहनने को नहीं मिलता था। हर बात पर भेद भाव का ही सामना वे करते थे। जो इस भेदभाव का विरोध करता उसे दर्दनाक सजा से गुजरना पड़ता। छोटी सी गलती की सजा में उन्हें कोड़े मारकर अधमरा कर पेड़ों से लटका दिया जाता था। फिर चीनी का घोल लगाकर उसे चींटियों के हवाल करने की सजा देकर शोषण की पराकाष्ठा होती थी। जिसे आर्थिक, मानसिक शारीरिक शोषण से दिन रात दो चार होना पड़ता था। इस प्रवासीगत भेद को इस देश के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रवासियों को लगातार इस भेदभाव वाली नीति का सामना करते हुए पीढ़ियाँ गुजर गई किन्तु कहीं इनकी सहनशीलता, संघर्ष, आत्मसम्मान, शोषण के विरोध आंदोलन विकास का जिक्र पूर्णत: मुखरित नहीं हो पाया जो आज भी प्रवासीगत भेद का ही जीता-जागता उदाहरण है।

आपको तो मालूम ही है कि इसमें जीने वाला और इसे अपनी धरती बना लेने वाला हर व्यक्ति किसी दूसरे देश से यहाँ पहुँचा है। कोई भारत से आया है, कोई चीन से कोई अफ्रीका से कोई फ्रांस से। ऐसी स्थिति में इन सभी देशों की संस्कृति को इस देश में फलने-फूलने का अधिकार होना चाहिए।

''अवश्य होना चाहिए''

लेकिन यहाँ तो एक संस्कृति विशेष दूसरी संस्कृति पर हावी है। मेरे अपने लोग भारत से यहाँ पहुँचे थे। उनकी अपनी संस्कृति को बरकरार रखते हुए मैंने अन्य संस्कृति को भी स्वीकारा है। मुझे फ्रेंच भी आती है, अंग्रेजी भी। उनका साहित्य, उनका रहन-सहन सभी को मैंने अपनाया है, लेकिन उस दूसरी ओर से हमारे जीवन मूल्यों को आज तक नकारा जा रहा है।''[42]

जिस देश को उसके खूबसूरत समुद्र तटों से, उसकी सुंदरता को लेकर उसे देखने की जिज्ञासा सैलानियों के मन में खूब जागती हैं। यह रंगीन धरती वाला सुन्दर समुद्री तटों वाला देश जिसके बनाने में सँवारने में प्रवासियों का बहुत बड़ा योगदान है। वे काफी लंबे समय तक शोषण सहते रहे उनकी त्रासदी की गाथा अनत के प्रमुख उपन्यासों में दर्ज है। जिन भारतीयों ने पराये देश को भी अपनाते हुए वहाँ जी-तोड़ मेहनत कर वहाँ की संस्कृति का आदर करते हुए उनके तौर तरीकों को अपनाते हुए अपनी संस्कृति को भी नचाए रखा फिर भी हमेशा भेदभाव का सामना करना पड़ता था। जिस धरती को लहलहाते खेत जिसने जी तोड़ मेहनत आधा पेट खाना, कोड़ों की बौछार व अपना खून देकर दिये हों, उन्हें अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए लंबी यातना पूर्ण समय बिताना पड़ा। इस देश के बंदरगाह से लेकर ऊँची-ऊँची इमारतों से सुसज्तित करने वाले, मेहनतकश मजदूरों को अनदेखा कर दिया गया। उन्हें प्रवासी, जाहिल असभ्य मजदूर वर्ग मानकर उन्हें भेदभाव वाली नीति के तहत गोरों ने गुलाम देश से ले जाकर उन्हें अपने अधिकृत अन्य देश में भी गुलामी के लायक ही समझा।

---

[42]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 172

इन प्रवासी भारतीयों की कर्मठता निष्ठा को गोरों ने अपने मतलब के लिए इस्तेमाल करते हुए इन्हें हमेशा दबाकर रखना चाहा। वे नहीं चाहते थे कि ये पढ़ लिखकर जागृत होते और अधिकारों की माँग करते इसलिए हमेशा इन्हें भेदभाव गत नीति से पिछड़ा हुआ ही रखा गया। इन पर कड़े से कड़े कानून लादे जाते छोटी सी गलती की कड़ी सजा दी जाती थी। इनका जीवन हमेशा असुविधा और कठिनाइयों से भरा होता था। जो इस भेदभाव के शोषण, अत्याचार के विरूद्ध अपनी आवाज उठाते संघर्ष करते उन्हें कई यातनाओं का सामना करना पड़ता। अनत के कई पात्र हरि, किशन, मदन आदि अपने आंदोलन को जारी रखने के लिए संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए ज्ञान, शिक्षा को महत्व देती है, फिर भी पढ़े लिखे नौजवानों को भेदभाव के अंतर्गत निम्न स्तर से ऊपर उठने नहीं दिया जाता था। कुछ पढ़-लिखकर भी बेरोजगारी से त्रस्त, जीवन व्यापन के लिए छोटे मोटे काम धंधे करके अति दयनीयता में अपना जीवन यापन करने को बाध्य होते थे। इनकी भेद हीन समाज की कामना और उसको साकार करने की चाह को लेकर चले संघर्ष को अनत ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत करते हुए यथार्थ सृष्टि की है। पराये देश जाकर खूब पैसा कमाने की चाह लिए प्रवासियों के जीवन की नारकीय यात्रा समुद्र के जहाज की यातना पूर्ण यात्रा से शुरू भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की कहानी एक नारकीय जीवन का दस्तावेज बनकर अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रस्तुत है। जिसमें प्रवासीगत भेदभाव के चलते भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से किये गये पशु तुल्य व्यवहार उनकी पीड़ा, व्यथा का यथार्थपूर्ण चित्रण है।

**4.2 साधारण जन मानस का महत्व**

साहित्य के शाब्दिक अर्थ को हम देखें तो इसका अर्थ होता है हित के साथ। यदि साहित्य को हम आरंभ से ही देखें तो इसमें मनुष्य समाज का हित छिपा होता है। जिसमें समाज में रहने वाले विभिन्न वर्ग उनके जीने का ढंग उनके आदान प्रदान प्रेम-विलाप, भक्ति-भाव, हास्य परिहास सुख-दुख सभी कुछ आ जाता है। साहित्यकार के मन में जो भाव उत्पन्न होते हैं उन भावों को

प्रकट करने के लिए सृष्टि की संरचना से, प्राकृतिक चित्रण या जन-मानस के क्रियाकलापों के माध्यम से अपनी कल्पनाओं की भावनाओं, की अभिव्यक्ति करता है। लेखक के अन्तस्तत का बाध्य जगत के साथ तादात्म्य रखता है, तब रचना की सृष्टि होती है। अंर्तमुखी भावनाएं जैसे रचनाकार के मन में उठने वाले भाव, अंर्तद्वंद्व, उसका मनोविज्ञान, आत्मचिंतन आदि भावनाएँ, किसी विशेष घटना या किसी व्यक्ति, किसी प्रसंग को लेकर उठे अंतर्द्वंद्व को बहिर्मुखी दृश्यमान जगत से जोड़ता है तो वह कला की सृष्टि करता है। भावों की अभिव्यक्ति होती है। गीतात्मक काव्य के रूप में भक्ति की भावना लिए भक्तिकाव्य, राष्ट्रीयता की भावना लिए वीरगाथात्मक रचनाएँ तथा संत कवियों के पद में साधारण जन-मानस उसके क्रियाकलाप, समाज में जी रहे मनुष्य के सुख-दुख, पीड़ा, जीवन संघर्ष, संवेदना आदि की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। सामाजिक परिवेश और काल विशेष की प्रवृत्ति साहित्य में अभिव्यक्त होती है। जनमानस को अभिव्यक्ति साहित्य करता है। संत कवियों में कबीर के पदों में साधारण जनमानस, उसके क्रियाकलापों के माध्यम से माज को ज्ञान का मार्ग सुझाया है। तो सूफी कवियों ने राजा महाराजाओं की प्रेम गाथाओं के माध्यम से प्रेम के महत्व को बतलाते हुए सामान्य जन मानस में प्रेम भाव उत्पन्न करने का प्रयास किया है। तुलसीदास ने राम को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हुए जीवन संघर्ष समाज के पीड़ित वर्ग उनकी संवेदना आदि द्वारा राजा-प्रजा के संबंधों में उनके सामाजिक जीवन के आदर्श प्रस्तुत किया है। सूरदास ने कृष्ण भक्ति में भगवान और भक्ति के बीच की दूरियों को मिटाकर बाल लीला, रास लीला आदि के द्वारा भगवान को साधारण जन मानस के बीच उनसे जोड़ा है। आधुनिक युग में साहित्य में समाज में व्याप्त आजादी की चाह राष्ट्रीय प्रेम, समता, आंदोलन साधारण जन मानस, किसान, मजदूर हड़ताल संघर्ष राजनीतिक दाँव पेंच सामाजिक यथार्थ आदि के चित्रण में साधारण जन-मानस के महत्व को अभिव्यक्त किया गया है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार ‘‘पिछले दो महायुद्धों के बीच जो नया साहित्य रचा गया है चाहे वह हिन्दुस्तान में हो, चाहे पश्चिम के देशों में, उसे देखने से यह धारणा पुष्ट होती है कि जनता का

चित्रण करके अपनी कला को अधिक विकसित करना और उसके विभिन्न रूपों को अधिक आकर्षक बनाना संभव है। हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद ने सामाजिक जीवन को आधार मानकर अपने लोकप्रिय उपन्यासों की सृष्टि की थी। जनता एक कल्पना नहीं बल्कि एक ऐसा जीवित समुदाय है जिसमें यथेष्ट वैचित्र्य और विभिन्नता है, यह प्रेमचंद के उपन्यासों में साफ झलकता है। उन्होंने 'कायाकल्प' के सामंत वर्ग से लेकर 'रंगभूमि' के किसानों और कफन के चमारों तक समाज के भिन्न-भिन्न स्तरों और भिन्न प्रकृति के लोगों का चित्रण किया है।''[43]

समाज में सामंतवादी वर्ग से लेकर, मध्य वर्ग निम्न वर्ग पददलित शोषक शोषित साधारण जन मानस सभी की अभिव्यक्ति हुई है। समाज में घटने वाली हर घटना चाहे वह आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक उसका प्रभाव मनुष्य जीवन पर पड़ता है। जो सामाजिक जीवन पर अपनी गहरी छाप छोड़ती है। जिसे प्रेरित होकर साहित्यकार के मन में उठने वाले विचार तरंगें रचनाका रूप लेकर समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करने में एक नई सोच, नई क्रांति लाने के लिए जनता को प्रेरित करता है। समाज में व्यक्ति सभी सामाजिक सरोकार, परिवर्तन संघर्ष व्यथा, वेदना, शोषण क्रांति, आंदोलन विकास प्रगति आदि पर अपनी रचनाओं द्वारा जन मानस में नई चेतना जागृत करता है।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के प्रख्यात उपन्यासकार अपनी विषयगत वैशिष्ट्य के कारण मॉरिशस के हिन्दी साहित्य जगत में अपनी विशेष छाप लिये हुए हैं। उपन्यासों में साधारण जन मानस को उससे जुड़ी समस्याओं को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। इनके उपन्यासों में जिन समस्याओं को उजागर करने का प्रयास होता है वे केवल मॉरिशस से ही नहीं अपितु समस्त संसार से जुड़ी समस्याएँ लगती हैं। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चाहे वे ऐतिहासिक, सामाजिक, यथार्थपरक या मनोविश्लेषण वादी उपन्यास क्यों हों सभी के केन्द्र में साधारण जनमानस को प्रमुख पात्र के रूप में दर्शाया गया है। साधारण जन मानस को विशेष महत्व दिया है।

---

[43]मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं. 50

जन साधारण के विविध समस्याओं का चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। सबके लिए समानता का भाव, भेदहीन समाज की कल्पना की है। इसलिए इनके उपन्यासों के पात्र खेतों में काम करने वाला किसान मजदूर है अपने हक की लड़ाई व उनके अस्तित्व की रक्षा हेतु संघर्ष, आर्थिक भेद से उत्पन्न अंतर, बेहतर जिंदगी की चाह, संस्कृति की रक्षा आदि से जुड़े प्रश्न और उसका हल सामान्य जनता का शिक्षित होना जागरूक होना आंदोलन के अलावा मध्य वर्ग समाज, रिश्तों का टूटना, विसंस्कृतिकरण, घुटन, बेकारी हताशा आदि साधारण जन से जुड़ी समस्याएँ हैं।

### 4.2.1 मजदूर किसानों की दुर्दशा

मजदूर किसान जो जी-तोड़ मेहनत करके बंजर भूमि को लहलहाते खेतों में परिवर्तित करता है जो मनुष्य जाति का अन्नदाता है वह भूख भरी गरीबी की मार सहते हुए दिन-रात मेहनत करते हुए अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण अति दरिद्रता पूर्ण जीवन से तंग आकर अपने प्राणों की आहुति दे देता है या फिर खुद को कर्ज चुकाने के लिए बंधुआ मजदूर बनने के लिए विवश होता है। ऐसे कुछ गरीब किसान पैसा कमाने की चाह लिए जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु भारत को छोड़ा। मॉरिशस में अनुबंध मजदूरों के रूप में कुछ को अंग्रेजों द्वारा भेजा गया, जहाँ से उन अनुबंधित मजदूरों की यातना भरी दास्तान आरंभ होती है। जो अंग्रेजों द्वारा कृषि कार्य के विकास हेतु भेजे गये थे जिनमें अधिकतर पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार के थे। जो स्वयं को जमींदारों के चंगुल से बचाने हेतु शर्त बंदी मजदूर बन यातनाओं का शिकार होते थे। ऐसे मजदूरों की गाथा अनत के उपन्यासों में है जो अन्याय, शोषण, अत्याचार सहते हुए जीवन में कठिनाइयों का डटकर सामना करते हैं। ''जो बात महावीर और उसके साथियों को बिल्कुल मालूम नहीं थी वह यह थ कि मद्रास और आंध्र के कुछ यात्री जो बाद में जहाज पर सवार हुए थे, उन्हें माल-सामानावाले भाग में ठहराया गया था। यह स्थान एकदम नीचे था जहाँ सीलन और दुर्गंध भरी हुई थी। डॉक्टर

के साथ आए अफसरों ने उस भाग में दो लाशें देखीं और आठ ऐसे रोगी जो अपनी दुर्गंध भरी अतिसार और उल्टी में ही सने हुए थे।''[44]

ऐसी दयनीय स्थिति में वे जहाज की लंबी यात्रा करते हुए दुखद घड़ी से गुजर और अधिक पीड़ा और शोषण सहने मॉरिशस पहुँचते हैं तो कुछ इस यात्रा के बीच में ही महामारी जैसी बीमारी से मर जाते हैं। अनत ने अपने उपन्यास 'हम 'प्रवासी में इन यातनाओं का यथार्थ पूर्ण वर्णन किया है जिसने मानवता को झकझोर कर रख दिया है। ऐसी ही कई दर्दनाक दास्तान का यथार्थ अनंत के अन्य उपन्यासों में प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है।

''.... देश की नब्बे प्रतिशत आमदनी शक्कर से होती है। शक्कर पैदा होती थी गन्नों से। गन्ना पैदा करने वाले थे देश के इस छोर से उस छोर तक फैले हुए खेत-मजदूर। उन नब्बे प्रतिशत आय में से पचहत्तर प्रतिशत मुट्ठी भर जमींदारों और मिल-मालिकों की जेब में चली जाती थी। दस प्रतिशत दफ्तरी लोगों को जाती थी और खेत मजदूरों के हिस्से बचता था पांच प्रतिशत। मजदूर जो हजारों में थे, जो देश का धन पैदा करते थे, वही देश के सबसे कंगाल, सबसे अभाग्रस्त थे। ....उनके बच्चों के बदन पर मैले व फटे कपड़े चेहरों पर पीलापन, उनकी पत्नियों की आंखों में अकाल का सूखा, धंसे हुए गाल और उभरी हुई हड्डियाँ ....।''[45] रहने के लिए गंदी बस्ती जिसमें साफ सफाई का अभाव होता था टीन के छोटे छोटे कमरों में अपना जीवन व्यतीत करते हुए जानवरों की तरह सड़ा हुआ भोजन इन्हें दिया जाता था जो जानवर भी ना खाए। पहनने के लिए साल भर में एक जोड़ी कपड़ा, बीमारी में कोई इलाज या डॉक्टर की सेवा का अभाव होता था, मर चुके मजदूरों की चिता को जलाने की भी उन्हें अपने मालिकों से आज्ञा लेनी होती थी। जो अधिकतर नहीं मिलती थी और ऐसे नारकीय जीवन में महामारी जैसी बीमारियों के कारण इन मजदूरों की बस्तियाँ उजड़ जातीं कितनों को अपने प्राण गँवाने पड़ते और ये मजदूर किसान यूँ ही कोल्हू के बैल के समान दिन-रात कोड़े खाते हुए मेहनत करते रहते। खून पसीना एक कर मालिकों

---

[44]हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 44

[45]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 37

की गालियों की बौछार सहते, ऐसे मजदूरों की व्यथा का महाकाव्य अनत ने अपनी रचनाओं में रच डाला है। ''बस्ती में ईख की भेली चोरी-चुपके तैयार की जाती थी। अगर किसी सरदार को यह बात मालूम हो जाती तो उस घर के मजदूर को रस की चोरी के अभियोग में मालिक के सामने पेश किया जाता था। फिर तो उस व्यक्ति के शरीर से कुर्ता और धोती उतार ली जाती थी और चकोटरे के कंटीले पेड़ के साथ उसे बांधकर तब तक कोड़े लगाये जाते थे जब तक कि चीत्कार बंद न हो जाता था और वह बेहोश होकर लुढ़क न जाता था .....।

''पुष्पा जब घर के भीतर जाने लगी तब कुन्दन ने देखा कि उसका लहँगा फटा हुआ था। उसे दुख हुआ। यह दुख उस समय और भी बढ़ गया जब उसे मालूम हुआ कि पूरे वर्ष भर में एक ही लहँगा और एक ही चोली भर का कपड़ा औरतों को मिलता है। मर्दों के लिए भी तो वही बात थी। एक धोती एक कुर्ते में पूरा वर्ष बिताना पड़ता था। पुष्पा का लहँगा उस हालत में बिल्कुल नहीं था कि उसें पैबन्द आदि लगाकर कुछ और दिन बिताये जा सकते थे।''[46]

शोषण अत्याचार सहते हुए भारतीय मजदूर अभाव ग्रस्त जीवन जीने को बाध्य थे। जिन्हें रोटी, कपड़ा मकान जैसी मौलिक सुविधाएं भी प्राप्त नहीं थी। जिसे काम पर थोड़ी की सजा दोबारा मेहनत कर, अतिरिक्त काम कर भोगनी पड़ती थी। कड़े नियमों को सहते हुए कैदियों सा जीवन व्यतीत करने को बाध्य थे।

### 4.2.2 पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति

पूंजीवादी व्यवस्था से जूझते प्रवासी भारतीयों की अभिव्यक्ति भारत से मॉरिशस बहला कर झूठे वादे कर ले जाना ही पूंजीवादी व्यवस्था की कूटनीति है। क्योंकि 1833 ई. में ब्रिटिश संसद ने दास प्रथा का उन्मूलन विधेयक पारित किया। फलत: ब्रिटिश उपनिवेश मॉरिशस स्थित मेडागास्र के दासों को मुक्त करना पड़ा और उन दासों ने खेतों में काम करने से इन्कार कर दिया। जिसके कारण अंग्रेजों ने भारत देश को अपने अधीन पाकर भारी संख्या में भारतीयों को शर्तबंदी

[46]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 81

के अंतर्गत भोले-भाले गरीब अनपढ़ मजदूर किसानों को धोखे में रख कड़े नियमों पर अनुबंध लेकर दासों में भर्ती करवा अत्याचार शोषण द्वारा उन्हें पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में रखने का छल किया था। इस व्यवस्था की अत्याचारी शोषण युक्त परंपरा का यथार्थ पूर्ण इतिहास अनत का साहित्य है। वे इन पूंजीवादी यंत्रणाओं से उसके अत्याचारों से कभी नहीं घबराये। अत्याचार सहते हुए उन्होंने अपने अस्तित्व अपनी भारतीय होने की पहचान को बनाये रखा। अपनी संस्कृति को बचाये रखा भाषा के लिए संघर्ष किया। डॉ. करूणा शंकर उपाध्याय के अनुसार ''मॉरिशस भेजे गये भारत वासियों के साथ यहाँ की पूरी संस्कृति और भाषिक परंपरा भी गयी। इसके अंतर्गत पौराणिक मान्यताएँ, मिथक, लोक साहित्य, लोक कलाएँ, लोकाचार, लोक विश्वास, जातीय अभिरुचि, सामाजिक मूल्य एवं मान, रीति-रिवाज तथा नित्य-प्रति के कार्य व्यापारों को परिगणित किया जा सकता है। भारतवंशियों के साथ वहाँ पर रामचरित मानस, हनुमान चालीसा, श्रीमद्भगवतगीता, सत्यनारायण कथा समेत कतिपय धार्मिक ग्रंथ भी गये जो भारतीय मूल के लोगों के लिए प्रतिरक्षात्मक दीवार साबित हुए। उन्हें कठिन संघर्ष और नैराश्यपूर्ण दिनों में भी आस्था और सम्बल प्रदान करते रहे। अपनी भाषा और धार्मिक मान्यताओं के बल पर भारतवंशियों ने गोरे शोषकों से अपने अस्तित्व की रक्षा की।''[47]

भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को स्वयं को स्थापित करने के लिए अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ा है। जिनके दास गुलाम बनाकर इनको लाया गया था वे मजदूरों से पशु से भी बुरा व्यवहार करते और ज्ञान से शिक्षा से दूर रख इन्हें सदैव अनभिज्ञ बनाए रखना चाहते थे ताकि ये कभी उनका विरोध न कर पाएँ। वे सब कुछ सहते रहे।

''मदन कहा करता था - शुरू-शुरू में भारत से आये हुए मजदूरों को जाहिल बनाये रखने का कानून था। चापलूस सरदारों के सहयोग से इस तरह का माहैल पैदा कर दिया गया था कि हर मजदूर कोड़ों की बौछार, कीड़ों भरे चावल, आधा पेट भोजन, आधे तन कपड़ा और बैलों की

---

[47]हिन्दी का विश्व संदर्भ - करुणा शंकर उपाध्याय, पृ.सं. 24-25

तरह काम करना स्वीकार कर खामोशी से सभी कुछ सह जाने को अपनी शक्ति नियित मान बैठे थे।''[48]

पूंजीवादी व्यवस्था की नित नई चाल होती थी इन्हें दबाये रखने की ताकि ये यूं ही अंधकार में रहें और शोषण सहते हुए अपने मालिकों की सेवा करना अपनी नियति समझ दिन रात इनकी सेवा में तत्पर रहे। शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, आर्थिक रूप से इन्हें बिल्कुल पंगु बनाकर अपने अधीन रखना चाहते थे। इसी कारण इनके साथ अमानवीय व्वहार कियाजाता। इससे  कुंठित होकर वह अपने अस्तित्व को ही भूलकर अपने आप को खेतों में झोंककर किसी और की फसल उगाते रहे और अपना खून पसीना बहाते रहे। इस अन्याय के खिलाफ यदि कोई आवाज उठाना चाहता था फिर जमींदारों का विरोध  करता  उसके साथ अमानवीयता की हद पार कर दी जाती। कोड़ों से उसका शरीर उधेड़ दिया जाता। उन्हें पेड़ों पर फाँसी से लटका दिया जाता, ताकि इस तरह कोई इनका विरोधन कर सके। इस संघर्ष को अनत ने अपनी रचनाओं में जीवंत कर दिया है, जिसे पढ़कर मॉरिशस के स्थापित होने के संघर्ष का विकराल रूप सजीव होकर उन मजदूरों की पीड़ा व कष्ट का एहसास दिलाता है।

''लखन का बाप लड़ते हुए एक फ्रांसीसी टोली के हाथ आ गया था और उसे कैयोननी लिया गया था। जिस यातना शिविर में उसे रखा गया था वह एक शक्कर कोठी के अहाते में था। अपनी जीत के बाद अंग्रेजी सरकार ने फ्रांसीसियों से मांग की कि अंग्रेजों की सेना को जो भी सिपाही उनके द्वारा कैद किए गये थे उन्हें वे लौटा दें। फ्रांसीसियों ने कैदी अंग्रेज सिपाहियों को तो रिहा कर दिया, पर जो भारतीय सिपाही पकड़े गये थे उनमें से हट्टे-कट्टे जवानों को चुन-चुनकर ऐसी कोठियों में वे भेज चुके थे जहाँ उनको ढूंढ पाना कठिन था। जिस ऊँची दीवारों वाली कोठी

[48]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 128

में लखना के बाप को गन्ने काटने और लादने के लिए रखा गया था वहाँ मजदूरों को यातना शिविरों से भी अधिक यातनाएँ भुगतनी पड़ती थीं।''[49]

क्या फ्रांसीसी क्या अंग्रेज दोनों ने ही भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को गुलामों की तरह कैद रख उनका शोषण ही किया है। दिन रात यातनाएँ सहते हुए मजदूर जंगलों को काटकर पथरीली बंजर माटी को अपनी जी तोड़ मेहनत से लहलहाते खेतों में परिवर्तित करके भी परिस्थिति में कोई सुधार नहीं ला पाए और इनके मालिक कहाँ से कहाँ पहुँच गये। इन्हीं इसी अवस्था में रखा गया। निरंतर शोषण का यदि किसी ने विरोध की या जागरूकता की बात की तो उनके स्वर को विभिन्न हथकंडों से दबाने का प्रयत्न किया जाता रहा। कभी जाति भेद कभी धर्म भेद के नाम पर इन्हें एकजुट होकर इनका विरोध करने से हमेशा रोकने का प्रयास किया गया। उन्हें शिक्षित होने से भी रोका जाता था। कहीं पढ़ लिखकर ये जागरूक न हो जाएँ। ये पूँजीपति, जमींदार नहीं चाहते थे कि इनका विकास हो इसलिए इनके विकास को बाधित करने हेतु इनके आक्रोश आंदोलन को कुचलने का प्रयास हमेशा रहता था। चाहे वह भाषा संस्कृति को लेकर ही क्यों न हो।

''एकमात्र किसन सिंह ही था, जिसने धीरे-धीरे लोगों को उस मनोवृत्ति से मुक्त किया था और अब मजदूर जब सोचने लगे हैं पढ़ लिखकर प्रश्न करने की योग्यता हासिल कर रहे हैं तो पूंजीपति गोरों ने उठ रहे मजदूर-सिरों को फिर से झुका देने के लिए नया हथकंडा शुरू किया है। उदय होने वाली शक्ति को हमेशा के लिए डुबो देने की नीयत जात-पाँत के बाद अब एक ही धर्म को चार टुकड़ों में बाँटा जा रहा है।''[50]

लगातार पूँजीवादी शक्तियों से जूझते हुए मजदूर जागृत होने लगे थे। वे अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए संघर्ष करने में विश्वास करने लगे थे। इस विश्वास को उनकी एकता के रूप मे अनत ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। जो अलग धर्म, जाति प्रांत के होते हुए भी आपस में

---

[49]लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 253
[50]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 128-129

जहाँज भाई है और अपने आपको स्थापित करने के लिए पूँजीवादी दमनकारी शक्तियों से जीतने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करते हुए अपने अधिकारों को प्राप्त कर पाने के प्रयत्न जारी रखते हैं। अनत ने अपने उपन्यासों में पूँजीवादियों के ऐसे हथकंडों का हमेशा विरोध दिखाया है, जो भारतीय मजदूरों को इतनी कष्टदायी परिस्थिति में भी बाँट न सके और उनकी इन नीतियों का सामना करते हुए वे बँटे नहीं। कई यातनाएँ सही किन्तु अपना अस्तित्व मिटने नहीं दिया।

### 4.2.3 मध्यवर्गीय विडम्बना व संघर्षशील शिक्षित वर्ग

अभिमन्यु अनत के ऐतिहासिक उपन्यासों 'लाल पसीना', 'और पसीना बहता रहा', 'गांधी जी बोले थे', 'हम प्रवासी' आदि में मॉरिशस पहुँचे भारतीयों के यातना पूर्ण संघर्ष, शोषण, आंदोलन, क्रांति और स्वयं को स्थापित करने की करूण गाथा के साथ-साथ एक पीड़ादायक यथार्थ है तो इनके अन्य अधिकतर उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की कुंठा, जीवन व्यापन का संघर्ष, परिवर्तनशील समाज से तालमेल बिठाने का प्रयत्न है। शिक्षा प्राप्त करके भी भेदभाव के चलते ठोकर खाना, और देश के समाज में हालात को लेकर चिंतित मानसिक पीड़ा से गुजर रहे मध्य वर्ग की अभिव्यक्ति है। जो आगे बढ़ने की कामना रखता है। लगातार संघर्ष करते हुए पारिवारिक समस्याओं विचारों की टकराहट आर्थिक समस्या से जूझता रहा है जिसमें मध्य वर्ग की विडम्बनाओं को देखा जा सकता है। अध्यापक, पत्रकार, सरकारी कर्मचारी, छोटे उद्योगपति, डॉक्टर, फैक्टरी के कामगार व्यापारी आदि मध्यवर्गीय परिवारों की कथावस्तु की भरमार अनत के उपन्यासों में है। जो मध्य वर्ग लगातार संघर्ष करता हमेशा आगे बढ़ने की प्रगति की कामना रखता है आर्थिक समस्य जो उनकी सबसे बड़ी समस्या के रूप में देखी जाती है जिसके लिए मध्य वर्ग जीवन भर संघर्ष करता रहता है, लगातार मेहनत करता है आदि कई चित्रण अभिमन्यु के उपन्यासों में प्रचुरता से प्राप्त होते हैं।

''अभी तो महीना समाप्त होने में चौदह दिन बाकी थे और वह अभी से ही कार के लिए पेट्रोल उधार लेने लगा था। सिर्फ आखिरी सप्ताह का पेट्रोल वह उधार लेने का आदी था। पर इधर

दो तीन महीनों से आधा महीना समाप्त होते ही तंगी आ जाती। पिछले महीने तो आधा महीना भी नहीं बीता था कि विभा के पास अलग से रखे पचास का वह आखिरी नोट भी भुनाना पड़ गया था क्योंकि जिस दुकान से वह उधार लेता था वहाँ उसे निशा के लिए डिब्बे का दूध नहीं मिला था। दूसरी दुकान से लेने के लिए उस संजोये हुए नोट को तुड़ाना ही पड़ा था। पिछले महीने की दूसरी अजीब बात यह थी कि पड़ोस की सहोदरी चाची पचास उधार मांगने आ गयी थी। अगर विभा ने दे दिये होता तो फिर बच्ची बिन दूध के रह जाती। .... ढाई सौ के करीब जो रकम बचती थी उसे रोबीन बीमा विभा को सौंप देता था। दूसरे-तीसरे सप्ताह बाद वह रकम भी खर्च हो जाती थी और उधारी शुरू हो जाता था। पिछले सप्ताह से रोबीन मन-ही-मन गणित शुरू कर चुका था। नये ओहदे के बाद उसकी पन्द्रह सौ रुपये ज्यादा मिलने की संभावना थी। जैसा कि उसने और विभा ने सोच रखा था, वे लोग निशा के नाम से बैंक में कम से कम सौ रुपये माहवार का एक खाता खोल सकते थे।''[51]

मध्य वर्ग हमेशा प्रगति की कामना करता है निरंतर संघर्ष करता है। अपने बच्चों को सुनहरा भविष्य देना चाहता है, इसलिए दिन रात मशीन की तरह काम करताहै और जीवन स्तर को बनाये रखने के लिए जरूरतें भर पूरी करने के लिए दिन-रात जूझता रहता है। रोबिन एक पत्रकार के रूप में टेलीविजन में कार्यरत है। लेकिन अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए उसे एक-एक पैसा सोच-समझकर खर्च करते हुए छोटी-छोटी ख्वाहिशों को लेकर जीता है। समाज में घटने वाले परिवर्तनों का असर इस वर्ग पर सर्वाधिक छाप छोड़ जाता है। फिर चाहे वह धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक या आर्थिक घटना या परिवर्तन हो इसका गहरा प्रभाव मध्य वर्ग पर ही पड़ता है। आज देश इतना आगे बढ़ गया है। आर्थिक स्तर में भी काफी सुधार आया है फिर भी पेट्रोल या सब्जियों के दाम या यात्रा भाड़ा कुछ भी बढ़ने से मध्य वर्ग प्रभावित होता है। मध्यवर्गीय जीवन शिक्षा को महत्व देता है और यह शिक्षित वर्ग बढ़ती महंगाई, राजनीतिक

---

[51]शब्द भंग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 16-17

परिणाम देश की दशा, उससे पड़ने वाले प्रभावों का चिंतन करता है। जैसे 'कुहासे का दायरा'उपन्यास में धनेश एक अध्यापक है। वह लगातार बदलते जीवन मूल्य और उसके स्तर को लेकर चिंतन करता है। लोगों में एक नई चेतना जागृत करता है। शिक्षा प्राप्त कर प्रगति करते हुए भी वह अपनी जड़ों को नहीं भूलता है जो मध्य वर्ग की सबसे बड़ी विशेषता है, जिसका प्रतिनिधित्व करते हुए कुहासे का दायरा का धनेश सोचता है - ''धनेश अपने खेत में बैठा सोच रहा था। दूसरी ओर दिन-ब-दिन बढ़ती महंगाई थी। दो दिन के भीतर चार आने की चीज आठ आने की हो गयी थी। इसके बारे में यह कहकर लोगों को आश्वासन दिया जा रहा था कि महंगाई की यह लहर समूचे विश्व में श्रम का जो मूल्य बढ़ा था उसकी चर्चा बहुत कम थी। महंगाई का पानी नाक को पार करने को था जबकि मजदूरों के पसीने की कीमत आज भी वही थी जो वर्षों पहले थी।''[52]

मध्य वर्ग एक ऐसा वर्ग है जो दो वर्ग के बीच द्वंद्व संघर्ष में जीता है, जो न तो निम्न स्तर पर उतरकर जीने का समझौता कर सकता है और न ही उच्च वर्ग तक पहुँच पाने में सफल होता है। लगातार संघर्ष करते हुए अपनी जरूरतों को पूरी करते हुए आगे बढ़ता है। यह वर्ग पूरी तरह से आधुनिकता-आधुनिक विचार अपनाकर भी कहीं-न-कहीं पुरानी विचारधारा से जुड़ा होता है। मध्य वर्गीय परिवार की संवेदना पारिवारिक होती है जो अपने परिवार को नियंत्रण में भी रखता है और उसे नई चीजों को समझने परखने का मौका भी देता है। यहाँ दोनों तरह के नये पुराने विचारों की टकराहट ही इसकी सबसे बड़ी विडम्बना है। अभिमन्यु ने अपने उपन्यास 'अस्ति-अस्तु' में ऐसे परिवार की कहानी बतलायी है जो आर्थिक स्तर में तो मध्य वर्ग से आगे निकल चुके हैं उसी अनुसार विचारों में परिवर्तन पूरी तरह नहीं आया है। लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग सिद्धांत कानून घर में बनाए जाते हैं। जिससे इस वर्ग में पलने वाली इनकी संतान विद्रोह कर बैठती है। विचारों में टकराव नजर आता है।

[52]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 153-154

''उस दिन संगीता स्कूल की छुट्टियों में नानी के घर पर थी। शाम को दिव्या अपने लंबे बालों को कंधे के ऊपर तक कटवाकर घर लौटी तो दिव्या की माँ उसे दुनिया भर की चुनिंदा गालियाँ देती रही थी। उसके पिता भी उस पर बरस पड़े थे। उसके भाई तक ने उसे नहीं बख्शा था। नवीन ने तो यहाँ तक कह दिया था कि वह उससे बात नहीं करेगा। पूरे सप्ताह तक नवीन अपनी बहन से बात नहीं की थी। उसके पिता ने उसे अपने पास कई दिनों तक बैठने नहीं दिया था। उसकी माँ तो बात-बात पर उसे कोसती हुई कहती थी। चुड़ेल-सी लगती हो। जनमते ही तुम्हें नमक चटा देना चाहिए था मुझे।''[53]

इस तरह आपसी विभिन्न मत आधुनिकता की होड़ आदि संघर्ष मध्य वर्ग में देखे जाते हैं। जिससे पारिवारिक विघटन भी दिखाई देता है। इस वर्ग की सबसे बड़ी चिडम्बना निरंतर संघर्ष और द्वंद्व आगे बढ़ने की कामना को लेकर निरंतर आर्थिक सामाजिक समस्या से जूझता मध्य वर्ग है। जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान जीवन स्तर सुधारने की कामना का लेकर संघर्ष करते हुए यांत्रिक जीवन जीते हैं। 'मेरा निर्णय' उपन्यास में अमीता निम्न वर्ग से गुजर कर मध्य वर्ग तक का सफर तय कर अपनी जरूरतों को पूरा कर पाने लायक खुशहाल जीवन जी रही है। अपने परिवार के जीवन स्तर में सुधार देख खुश होती है। घर कर्ज पर ले रखा है उसकी किस्तें चुकाने रहना है। जानकर अपने भाई को कर्ज की चिंता करते देख उसे प्रोत्साहित करते हुए कहती है कि आधुनिक मध्य वर्ग आजकल कर्ज पर घर आदि लेकर अपने वर्तमान जीवन को सारी सुविधाओं के साथ जी रहा है। किस्ते धीरे-धीरे चुकाई जा सकती है। अपने मायके में आये सुधार पर हर्ष व्यक्त करती है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज में काफी परिवर्तन दर्शाया गया है। इनकी सोच जीवन स्तर, चिंतन, सामाजिक मुद्दों को लेकर देश की समस्या को लेकर, समाज की स्थिति को लेकर इस वर्ग की सोचने का ढंग आधुनिक विचारों को दर्शाया है। पति द्वारा त्यागी गयी स्त्री कहकर ताने मारने वाला समाज रंग भेद को लेकर अपनी बच्ची को त्यागने वाले पति के विरोध में वह उसे कभी

---
[53]अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 34-35

माफ नहीं करती अकेले ही अपनी बेटी की परवरिश करती है। अमिता का परिवार और दोस्त इस घटना से अवगत होने के उपरांत इसका साथ देते हैं। उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं न कि उसे समाज के नाम पर दुहाई देते हैं। अनत ने यहाँ समाज में मध्य वर्ग की परिवर्तित सोच का परिचय दिया है जो एक स्त्री के जीवन को यूँ ही बर्बाद न होकर फिर से खुशहाली से जीने का अधिकार देती है। हुस्ना पात्र के माध्यम से बदलती सोच को प्रोत्साहित किया गया है। अब मध्य वर्ग अपने जीवन को अपने सिद्धांतों पर जीना चाहता है। लोग क्या कहेंगे से आगे मनुष्य, मनुष्यता उसकी संवेदना को अधिक महत्व दिया गया है। हुस्ना का दोबारा विवाह परिवार की सहमति से होता है। अमिता जिंदगी में एक धोखा खा चुकी है और फिर वे वही रिश्तों में बंधकर नहीं रहना चाहती है। डॉ. नंदुचंद से दोस्ती कर ही रिश्ता रखना चाहती है। विमला को उसके पिता के घृणित व्यवहार के बाद उसकी संपत्ति का वारिस होना चाहिए था नहीं उसका निर्णय अमिता द्वारा विमला के बालिग होने पर उसी पर छोड़ने का निर्णय लिया जाता है। यहाँ किसी समाज या मध्य वर्गी विचारधारा का प्रभाव में दबा समाज का होकर स्वच्छंद विचारधारा वाले मध्य वर्ग से अनत समाज को नई सोच की सीख देते हैं - ''अमिता मैं तेरी स्थिति और भावना दोनों को समझ रहा हूँ। तुम्हारा यह कहना एकदम जायज है कि इसका निर्णय तुम्हारा नहीं हो सकता। हम लोग तुम्हारे स्वाभिमान और तुम्हारी मान्यता दोनों की कदर करते हैं।''[54]

अनत ने अपने उपन्यासों में मध्य वर्ग की संवेदना को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है जिसमें बदलाव और परिवर्तन को मुख्यत: पढ़े-लिखे शिक्षित वर्ग ने ही स्वीकारा है। विचारों का विकास पीड़ा, वेदना, कुंठा से आगे आधुनिक युग का शिक्षित मध्य वर्ग परिस्थितियों से लड़कर आगे बढ़ता जाता है। वे समाज लोगों की परवाह किये बिना सही और गलत का फैसला लेने में सक्षम है। इसी श्रेणी में अचित्रता और चलती रही। अनुपमा उपन्यास की अनुपमा है जो संघर्ष करती है। मध्य वर्ग में बदनाम मानी जाने वाली गलियों से गुजर कर भी अपने पाज से नहीं चूकती।

---

[54]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 204

### 4.2.4 बेकारी की समस्या

किसी भी समाज के विकास में बाधक बेकारी या बेरोजगारी की समस्या है जिसके कारण समाज में असमानता, अमीरी-गरीबी, छोटे-बड़े का भेद बढ़ता चला जाता है। समाज में अपना जीवन स्तर सुधारने के लिए बेरोजगार आदमी, छोटे मोटे काम, कम कीमत में भी कर अपना शोषण करवाने पर मजबूर होता है या फिर लूट, चोरी, धोखाधड़ी कर रातों-रात अमीर बन जाना चाहता है। यह समस्या हमेशा से चली आ रही है जो मनुष्य को गलत रास्ते पर ले जा रही है। देश के विकास समाज के विकास को अवरोधित कर रही है। अभिमन्यु अनत के उपन्यास केवल बीते समय की गाथा ही नहीं अपितु आज संसार में समाज में घट रही घटनाएं हैं। बेकारी की वजह से पल रहे विरोधी घातक आतंकवादी संगठनों के मूल में भी बेरोजगारी की समस्या और उसके घातक परिणम जिससे सारा संसार जूझ रहा है, इस पर प्रकाश अनत जी ने डाला है।

''आज हम सभी जानते हैं कि हमारे मुल्क की क्या हालत है। तंगहाली, बेकारी, बेइंसाफी, फिजूलखर्ची, भुखमरी से हमारा मुल्क बिलख रहा है। आपसी झगड़े, तनाव और बेकारी के कारण अपने आपको टूटा हुआ पा रहा है। इन तमाम खराबियों, लिजलिजेपनों और हताशा की हालत में जब अवाम अपने हक का तकाजा कर रहा है तो सियासत उसे शतरंज का मोहरा बनाकर अपना खेल जारी कर चुकी है। यह नाटक नहीं तो और क्या कि हमारे सियासती और मजहबी लीडर अपनी सांठ गांठ से हमारे ध्यान को सही मुद्दों, सही खतरों और सही समस्याओं से हटाकर एक नकली लड़ाई में हमें ढकेल रहे हैं। ढकेल चुके हैं। आवाम उनके बहकाने में आकर आज अपनी तंगहाली, बेकारी, भूख और बेइज्जती को भूलकर चंद टेरोरिस्ट लोगों को मजहब और गरीबों के रहनुमें मान बैठे हैं।''[55]

अभिमन्यु अनत से सारा संसार जिस समस्या से जूझ रहा है, जिसके खूनी पंजे समस्त संसार को नोच कर खा रहे ऐसे आतंकवाद के मूल में भी बेरोजगारी और गरीबी को ही दोषी माना

---

[55]एक उम्मीद और - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 94

है। उसका उन्मूलन होना अति आवश्यक है वरना इसके घातक परिणाम हम आजकल देख रहे हैं। नेता लोग भी वायदे करते हैं कि चुनाव होने से पहले बेरोजगारी मिटाने की किन्तु बेरोजगारी मिटाना तो दूर उन बेकार नौजवानों को इस्तेमाल कर अपना फायदा करते रहते हैं। अत: यह समस्या यथावत बनी रहती है। इसकी अभिव्यक्ति अनत के उपन्यासों में प्रचुर मात्रा में हुई है।

''देखिये साहब इन सभी लोगों को पिछले दिनों यहां नौकरियां मिली हैं। सिर्फ मैं ही एक हूँ जिसके लिए कोई नौकरी नहीं। पिछले कई महीनों से मुझे एक ही आश्वासन दिया जा रहा है कि अगले महीने-अगले हफ्ते। मेरे कुछ साथियों ने कहा था कि चुनाव के दौरान नौकरी मिल जाने की संभावना अधिक होती है इसीलिए बार-बार तंग कर रहा हूँ।

अमिष ने अपने आप से कहा

-भाई चुनाव के दौरान नौकरियां देने वाले वे लोग होते हैं। मैं क्या हूँ कौन होता हूँ साहब। दूर-दराज देश में पांच साल रहकर मैं उधर छोड़कर मेहनत करता रह एक डिग्री के लिए इधर से मेरी माँ आधा पेट खाकर मुझे पैसा भेजती रही। आज मैं उसे वह आधा पेट खिला सकने में भी असमर्थ हूँ। वह बोलता ही गया। अमिष उसके कालांत चेहरे को देखता रहा। ... वह नौजवान खड़ा हो गया। उसकी आँखों में बस आँसू ही आने बाकी थे। उसने हाथ जोड़कर नमस्ते की और बाहर हो गया।''[56]

अनत के इस उपन्यास में बेरोजगारी की समस्या को कई संदर्भों में दर्शाया है। जहाँ युवा वर्ग को पढ़ लिखकर मेहनत कर कुछ करने की चाह किन्तु भाई भतीजावाद, चापलूसी एवं जातीय खेमेबाजी के चलते, काबिलियत बिलखती फिरती है। जान पहचान, जी हजूरी वाले रोजगार प्राप्त करते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति समाज में देश में युवा वर्ग के बीच रोष, नीरसता उत्पन्न करती है। जो बदलने का भाव बन कोई आतंकवाद तो कहीं आंदोलन का रूप लेती है। धनेश सोचता रहा।

---

[56]चुन-चुन-चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 103-104

इधर अभाव था, इधर फिजूलखर्ची थी।

पार्टियों में वृद्धि थी। मिशन की यात्राएं दुगुनी हो चली थीं। विशेषज्ञों की आवाजाही बढ़ती जा रही थी। पर्यटक भी दुगुनी संख्या में आने लगे थे। यह वृद्धि और भी कई स्थानों पर थी। वह केवल मजदूरी थी जिसकी वृद्धि की कोई संभावना  नहीं थी।

धनेश अपनी स्थिति को भूलकर अपने इर्द-गिर्द के लोगों के बारे में सोचने लगा। वृद्धि तो बेकारी की भी हुई थी। इस बार तो ऊँचे प्रमाण-पत्रों के साथ भी हजारों बेकार थे। देश में रोज कोई न कोई कारखाना बन रहा था। रोज कोई न कोई देशी चीज बाजार में आ रही थी। विदेशी चीजों पर पाबंदी थी। आयात शुल्क में वृद्धि हुई थी और देशी चीजें अपने सभी घटियापन के साथ ही दुगुने दाम पर बिक रही थीं।''[57]

अपने इस उपन्यास में अनत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के मॉरिशस में विकास के नाम पर खर्च होने वाला पैसा सत्तारूढ़ राजनेताओं की जेब में आधा जाता था। भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार के चलते अमीर और अमीर हो रहे थे गरीबी जहाँ की तहाँ थी। जिसका नतीजा शिक्षित नौजवानों में बेरोजगारी की समस्या पनपने लगी, आज भी वे मजदूर या वेटर बनकर रहने पर बाध्य हो गये थे। ''मैंने बेकार नौजवानों का हुजूम देखा था। स्वर्ग में रोटी-रोजी के नारे लगाती उस युवा पीढ़ी को अभी कल ही देखा था। मॉरिशस स्वर्ग नहीं था यह मैं नहीं कह सकती, लेकिन इतना तो जरूर कहूँगी कि हमारे धर्मग्रंथों में स्वर्ग की गलत तस्वीर दी गयी है। मैंने तब अपने ही को आश्वस्त कर लिया था, यह कहकर कि शायद उस समय फोटोग्राफी का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए ऐसा हुआ।''[58]

कनाडा में सिल्वी ने मॉरिशस के खूबसूरत तट आदि के बारे में काफी कुछ सुन रखा था। वह उस मार्क ट्वेन के स्वर्ग को देखने की इच्छा लेकर आई थी किन्तु यथार्थ का जब वह सामना करती है तो उसका मन व्यग्र होकर  चिंतन में दुख से व्यथित हो जाता है कि स्वर्ग में वास करने

---

[57]कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 154

[58]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 195

वाले कुछ लोग नरक समान जीवन भोगने पर बाध्य हैं। कारण गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, भेदभाव वाली नीति जो इस देश के पढ़े लिखे वर्ग में ऐसे कई नौजवान हैं जो बेरोजगारी से दो चार होते हुए छोटे-मोटे कार्य कर जीवन व्यापन कर रहे हैं। ज्ञानोपार्जन करके भी पूरी इज्जत प्राप्त करने लायक काम उनके पास नहीं है। ''उनमें छह ऐसे नौजवान मुझे मिले, जिनके पास देश की परीक्षाओं के सबसे बड़े प्रमाण-पत्र भी थे। एक ने पूछा था-

कनाडा में हमें हमारे योग्य नौकरी मिल सकती है?

दूसरे ने पूछा था -

कैसा लगा हमारा देश आपको?

उसके प्रश्न में जिज्ञासा नहीं थी, उसकी आवाज में व्यथा थी। होटल के मैनेजर की तनख्वाह क्या हो सकती है?

सिर्फ तनख्वाह?

हाँ

यही कोई सात-आठ हजार महीना।

और मुझसे यह पूछने वाले शिक्षित मजदूर से उनका देश मुझे कैसा लगा था, मैंने पूछा था -

खेतों में काम करने वाले मजदूरों की क्या तनख्वाह होती है? पूरे काम पर कभी पाँच-छह सौ रुपये महीने मिल जाते हैं। मार्क ट्वेन के इस स्वर्ग की दो कीमत थी। सौ और हजार की।''[59]

अतिदयनीयता शोषण आदि सहते हुए क्रांति आंदोलन करने के बावजूद मजदूरों की स्थिति जैसी की तैसी थी। पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी की कामना करने वाले सड़कों पर घूम रहे थे रोजगार की तलाश में और भ्रष्ट राजनेता अपने-अपने लोगों का भला करते हुए इनके अधिकारों का हनन करते चले जा रहे थे। शायद इसलिए बेरोजगारी की समस्या अनसुलझी

[59]मार्क ट्वेन का स्वर्ग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 196-197

समस्या है। जिसका खुलासा अनत की प्रतयेक रचना में मिल ही जाता है। चाहे वह उल्लेख मात्र में क्यों न हो, अनत ने इसे वही समस्या माना है।

**4.3 भेदहीन समाज की कल्पना**

प्रगतिशील साहित्य ने हमेशा भेदहीन समाज को महत्व दिया है जिसमें ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, जाति-पांति धर्म, नस्ल आदि के भेद को मिटाने की बात हुई जिसमें राजा सामंतवादी विचारधारा से हटकर साधारण जन मानस को अधिक महत्व दिया है।बिना किसी भेदभाव का समाज एक विकासशील समाज होगा जो देश की प्रगति, संसार में प्रेम, भाईचारा स्थापित कर वैमनस्य को मिटाने में सहायक होगा। साहित्य के क्षेत्र में इस भेदभाव को मिटाने का प्रयत्न साहित्यकार हमेशा करता आया है। अनत के उपन्यासों में भी समाजोद्धार की कामना हमेशा देखी गयी है। अनत के कहानी संग्रह 'अब कल आएगा यमराज' की भूमिका में कमलेश्वर कहते हैं कि ये भूमिका नहीं अभिमन्यु अनत की सतत रचनात्मकता का स्वागत है। इनकी रचना प्रक्रिया और अगाध समुद्र रूपी इनका साहित्य उपन्यास कहानी से भारतीय साहित्यकार प्रभावित है।

कमलेश्वर के शब्दों में ''अभिमन्यु अनत की कथाभूमि मॉरिशस है, लेकिन इनकी संवेदनशीलता, मूल्यगत अभिप्रायों में गहरी पौवात्य (ओरिएंटल) विचारशीलता लगातार विद्यमान दिखाई देती है और सही मायने में यह प्रवासित भारतीय रक्त के मानसिक संताप, सांस्कृतिक संघर्ष और आत्मिक पीड़ा का त्रासद अनुभव है, जो अभिमन्यु की रचना में लगातार उपस्थित रहता है। उनका यह अनुभव प्रवासित भारतीय का अनुभव ही नहीं, संसार के सभी विस्थापित मनुष्यों का प्रतिनिधित्व भी करता है। वह मनुष्य चाहे भारत का हो, अफ्रीका का हो या लैटिक अमेरिकी अथवा अन्य देशों का। अभिमन्यु ने वैश्विक राजनीतिक संवेदनहीनता के विरूद्ध

मानवीय संवेदना का यह बड़ा खजाना हिन्दी को सौंपकर उसे संसार के यातनाग्रस्त प्रत्येक मनुष्य की पीड़ा का वाहक बनाया है।''[60]

अभिमन्यु अनत की रचना विशेषता यही रही है कि उनके उपन्यास में कथा वस्तु चाहे गाँव के परिवेश की चाहे शहर, चाहे फैक्ट्री के मालिक का चित्रण हो, मजदूर वर्ग और उसका संघर्ष चाहे शिक्षित वर्ग का द्वंद्व हो या नारी प्रधान संवेदनात्मक विचार प्रधान आधुनिकता लिए उपन्यास हो सभी में उस समय का युग मोछ और यथार्थवाद दृष्टि से उपन्यासों में दृश्य सजीव हो उठते हैं। इनके उपन्यासों में संघर्ष को विशेष महत्व दिया है इनके पात्र लगातार संघर्ष में लीन होते हैं। वे ऐसे भेदहीन समाज की नींव रखना चाहते हैं जो भेदभाव से आगे मनुष्यता की विचारधारा पर सोचे। मानव को मानव ही रहने दे इसके बीच का अंतर ही संघर्ष और विरोध को जन्म देता है। जो मानव समाज की प्रगति नहीं करने देता। इसलिए इस अंतर के भेद को मिटाने के लिए इनके उपन्यासों में संघर्ष है, क्रांति है, आंदोलन है जो कि देश में व्याप्त बुराइयों की जड़ भेदभाव को समाज से उखाड़ फेंकना चाहते हैं। मजदूरों में नई चेतना, जागृति लाने वाले अधिकार, के लिए आंदोलन करने वाले किशन सिंह के मन में इस भेदभाव को देखा जा सकता है।

''इतने सारे लोगों ने इस देश के चप्पे-चप्पे पर खून-पसीना बहाकर इसको समृद्ध किया था। मालिकों की तिजोरियाँ भरी थीं। इतने सारे लोगोंने पहली बार विस्तृत फैली जमीन के एक छोटे से टुकड़े को अपना बनाया था - यही उनकी पहचान थी। यही मिट्टी का टुकड़ा उन्हें क्षण भर को यह ख्याल बिसारने का अवसर दे जाता कि वे लोग सिर्फ गुलामी के लिए ही यहाँ नहीं थे। उन्हें अपना संसार बसाने का भी हक था। इसी से दासता की लाघव भावना को वे नकार पाते थे। अगली पीढ़ी को बंधेज से छुड़ाने और उन्हें स्वतंत्र नागरिक बनाने का यही मिट्टी का टुकड़ा पहला

[60]अब कल आएगा यमराज की भूमिका से उद्धरित - अभिमन्यु अनत, पृ.सं.

सोपान था। अगर यही जमीन पाँवों के नीचे से खिसक जाए तो कल की पीढ़ी कहाँ खड़ी होगी?''[61]

अनत ने अपने उपन्यास में मालिकों द्वारा किये गये मजदूरों के शोषण के विरोध का स्वर किशन द्वारा मजदूरों में उठाया है जो कि मालिक और मजदूर के भेद का मिटाते हुए उन्हें गुलामी भरे जीवन से मुक्ति और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित करता है। गांधी जी की विचारधारा से प्रेरित शिक्षा को महत्व देने से आंदोलन करने से अपने अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्न में प्रेम सिंह और प्रकाश गाँव-गाँव घूमकर गाँवों के प्रतिनिधियों की बैठक द्वारा भेदभाव के विरूद्ध आंदोलन कर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। मजदूरों दासों में बढ़ती अधिकारों क प्रति जागरूकता को देख पूँजीवादी मिल मालिक अब इन प्रवासी भारतीयों को जात व प्रांतों के नाम पर बाँटकर उन्हें आपस में लड़वा कर इनकी एकता भंग कर इनके आंदोलन को तोड़ना चाहते हैं। इसके विरोध में  सावाना कोठी का मुखिया अरमूगम आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हुए कहता है ''तमिल वालों के लिए अलग मंदिर बनाकर उनसे कहा जा रहा है कि वे हिन्दुओं के मंदिर में न जाएँ। मराठी वालों से कहा जा रहा है कि तुम मराठी हो, तुम लोगों की अपनी अलग सभा होनी चाहिए। यही बात तेलुगु वालों से भी कही जा रही है। कल तक हम लोग एक सभा में बैठने वाली एक मंदिर में जाने वाली एक जाति थे। आज हमें चार जातियों में बाँटा जा रहा है। इससे पहले हिन्दू मुसलमान तक में कोई अंतर नहीं था। सभी मजदूर थे। एक दूसरे के दु:ख-सुख में हिस्सेदार थे। अब तो अलग-अलग बँट जा रहे हैं। मेरी बस्ती के धनुआ भगत से कहा गया कि वह अपनी जाति के सभी लोगों की एक अलग सभा बनाने को तैयार होगा तो उसे दो बीघा जमीन मिल सकती है। उसने बात मान ली। बस्ती में घूम-घूमकर पूछता रहा कि कौन उसकी जाति का है। ब्राह्मण अपना कुनबा बनाकर बैठा है, ठाकुर अपना, वैश्य अपना, दुसाध अपना और अब तो मराठी तेलुगु और तमिल भी अपने अलग-अलग कुनबे बनाने लगे हैं। अब

---

[61]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 213

मजदूरों की न तो कोई एक जाति रही और न भारतीयों की। सभी अलग-अलग टुकड़ों में छितर चुके हैं।''[62] यहाँ पर अरमगम अपने भाषण द्वारा आंदोलन को बनाये रखने के लिए प्रवासी भारतीयों में पूँजीपतियों द्वारा पैदा किये भेदभाव को मिटाने के लिए सब में एकता का भाव बनाये रखने का संदेश देता है। जातिगत, धर्मगत भेद समाज के विकास में बहुत बड़ा बाधक है। इसे समाज से दूर रख विकास की कामना अनत के उपन्यासों में है। वे समाज में संसार में सभी भेदों को मिटाने की व्यापक दृष्टि रखते हैं। वे नस्लभेद का विरोध अपने उपन्यासों में करते रहे जो रंग औरनस्ल को देख मनुष्य का मनुष्य से भेदभाव का विरोध करते हुए मानवता की स्थापना करना चाहते हैं। पढ़ा-लिखा काबिल होने पर भी रोबिन को पत्रकारिता जैसे जागरूक क्षेत्र में भी नस्लवाद का शिकार होना पड़ता है, सारी काबीलियत होते हुए भी उसकी पदोन्नति को रोकने के लिए उससे उलटे प्रश्न किये जाते हैं। क्योंकि पहले से निर्धारित होता है कि काले रंग वाले भारतीयों को आगे न बढ़ने दिया जाए। इस बात के विरोध में अनत ने रोबिन के माध्यम से बोर्ड मेंबर से कहानी के रूप में जवाब दिया है। ''एक बार दक्षिण अफ्रीका के दंगे-फसाद में पुलिस की लाठियाँ खाकर मरे दो व्यक्ति स्वर्ग के दरवाजे पर पहुँचे। उसमें एक गोरा था, दूसरा काला। दोनों स्वर्ग के फाटक के सामने खड़े हो गये। फाटक पर मोटे अक्षरों में लिखा हुआ था- यहाँ किसी तरह की सिफारिश नहीं चलती। जो प्रश्नों का सही उत्तर देगा उसे ही स्वर्ग हासिल होगा। तभी स्वर्ग का द्वारपाल सामने आ गया। आते ही उसने गोरे से पूछा - दक्षिण अफ्रीका के प्रधानमंत्री का नाम बताओ गोरे ने बता दिया और उसे स्वर्ग के भीतर ले लिया गया। फिर द्वारपाल ने काले व्यक्ति से पूछा- दक्षिण अफ्रीका में इस समय कितने पागल कुत्ते हैं? देखो उत्तर एकदम ठीक होना चाहिए। काला व्यक्ति उसे देखता रहा। उससे उत्तर नहीं बन पड़ा। द्वारपाल ने उसे नीचे ढकेल दिया और स्वर्ग का दरवाजा बंद कर लिया।''[63] रोबिन जैसे किरदार की सृष्टि कर अपने उपन्यास में अनत जी रंगभेद, नस्ल भेद का विरोध करते हैं। अनत के उपन्यास में समाज में जो भेदभाव फैला है,

---

[62]गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 130 एवं 140
[63]शब्द भंग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 26

चाहे वह जाति-पांति धर्म, रंग, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष का भेद सब के प्रति विरोध का भाव जता कर एक स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की कामना करते हैं। इसीलिए उनके अधिकतर उपन्यासों में नारी पात्रों को भी सर्वाधिक महत्व दिया है। जो पुरुष के समान अपने परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए अपना और अपने समाज का विकास करती हैं। अनत के नारी पात्रों में वेश्यावृत्ति में लिप्त होते हुए भी अचित्रिता उपन्यास में वानी अंत में एक सच्चे देशभक्त के रूप में सामने आती ही, यहाँ वाणी केवल वासना की कठपुतली नहीं एक सच्ची देशभक्त भी है। ऐसी स्त्री की पारिवारिक समस्या निजी जिंदगी में गरीबी विघटन, मजबूरी जिससे गलत राह पर चलकर भी उपन्यास के अंत में इस अच्छे-बुरे के भेद को मिटाकर महान हो जाती है।

'लहरों की बेटी' उपन्यास में विदुला समुद्र के तूफानों को झेलते हुए मछलियाँ पकड़ उन्हें बेचकर परिवार पालती है तो चुन चुन चुनाव में स्वस्ति राजनीति में उतरकर अपना लक्ष्य प्राप्त करती है। समाज में नारी के प्रति आदर भाव जागृत करती है तो दूसरी ओर 'मेरा निर्णय' उपन्यास में अमिता अपने साथ हुए अत्याचार के सामने सर झुकाकर घर पर नहीं बैठती। शिक्षा प्राप्त कर कुछ बनने की कामना लिए विदेश जाकर नौकरी करती है। फ्रेडरिक नाम के फ्रांसीसी से विवाह करती है किन्तु बेटी के रंग को लेकर जब वह उसे छोड़कर चला जाता है तो वह समाज में सभी परित्यक्ताओं की तरह उसकी याद में कुंठित नहीं होती और माँ-बाप दोनों का प्यार देते हुए अपनी बेटी को पालती है। वह आर्थिक रूप से पूर्व पति द्वारा की गयी मदद को ठुकराते हुए। अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है।

''मर्द की मर्दानगी दिखाने वाले पहले नामर्द को तो मैंने पंडित जीवन लाल जी के घर पर देखा था जो औरत की स्वीकृति पाये बिना अपनी नपुंसकता दिखा गया था। फ्रेडरिक वह दूसरा नामर्द मेरे जीवन में दाखिला पा सका जो अपनी बच्ची को अपने रंग की न पाकर अपने रंग और

संदेह की नपुंसकता दिखा गया।''[64] अनत ने अमिता के द्वारा नारी को भावनात्मक स्तर पर कमजोर समझने वाले भेदभाव के साथ-साथ रंगभेद वालों पर करारा व्यंग्य करते हुए कड़े शब्दों में उसका विरोध किया है। वे यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्ति करते हुए भेदहीन समाज की स्थापना करने हेतु समाज में जागरूकता लाना चाहते हैं।

### 4.3.1 जाति व धर्म का विरोध

अनत ने अपने उपन्यासों में न केवल जाति-पाति व धर्म आदि के भेद का चित्रण किया है अपितु उसका अपने पात्रों द्वारा खुलकर विरोध भी किया है। जैसे 'चौथा प्राणी' उपन्यास में समाज में व्याप्त जाति-पांति, ऊँच-नीच की समस्या से उत्पन्न भेदभाव का विरोध दिखाया गया है, इनके उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष, धर्म को लेकर जाति को लेकर लोगों के बीच उठी अहंकार की दीवार को गिराने का प्रयत्न दिखाया जाता है। यह अहंकार की दीवार किसी के जीवन को ही खत्म कर देती है। ऐसा ही पछतावा पर 'पगडंडी नहीं मरती' उपन्यास में जाति पांति के विरोध में विक्रम द्वारा सवाल उठाये गये हैं। सीमा और धीरज आपस में प्रेम करते हैं, किन्तु जाति-पांति, ऊंच-नीच के भेद के चलते सीमा आत्महत्या कर लेती है। जिस पर विक्रम इसके विरोध में सोचता है कि जाति-पांति का भेद समाज को खोखला करता जा रहा है। समाज में लोगों की कब आंख खुलेगी। यह चिंतन करता है। ''पिछली शाम विक्रम उस ठौर पर अकेला बैठा हुआ जमीन पर की लाल पंखुड़ियों के बीच देखा रहा उस वजह को। वह कौन-सी वजह थी आदमी और आदमी के बीच के भेदभाव की? सीमा की जान से भी अधिक ताकतवर क्यों था वह विश्वास? उन लाल पंखुड़ियों के बीच वह कारण को इस तरह देखता रहा जैसे गांव की औरतें बच्चों के सिर से जूं ढूंढा करती हैं। जूं बच्चों के सिर से खून चूस कर उनके मस्तिष्क को खोखला करने का प्रयत्न करती है उसी तरह भेदभाव का यह कीटाणु भी तो समाज को खोखला किए जा रहा था।

---

[64]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 46

इसका पता गाँव के बड़े लोगों को क्यों नहीं था?''[65] यहाँ अनत ने विक्रम के माध्यम से इस घातक स्थिति, जो समाज को धर्म जाति के नाम पर खोखला किए जा रही है, के प्रति जागरूकता लाने का प्रयत्न किया है। जाति-पांति धर्म के नाम पर लोगों की सोच इतनी संकुचित हो जाती है कि इस झूठे अहं को बनाए रखने के लिए अपनों को भी खोता जा रहा है क्योंकि मनुष्य को मनुष्य बनाये रखने के लिए उसे जाति धर्म के छोड़े नहीं मानवता का गुण अपनाना चाहिए इसी भाव से लोगों के दिल जीते जा सकते हैं। समाज का विकास हो सकता है। प्रत्येक धर्म ग्रंथ भी सभी चीजों से सर्वोपरि मानवता को मानता है। धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं है, और जोड़ने वाला धर्म ही समाज का विकास कर सकता है। इस धर्म जाति को भुनाने का काम चंद लोग अपने स्वार्थ के कारण करते हैं लोगों को जाति धर्म के नाम पर आपस में लड़वाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। ''आज रात कोई नहीं सो सकता। उधर वाले मुसलमानें और क्रिओली के लिए बैल पक रहे हैं हिन्दुओं के लिए बकरे। रामजतन का भाई कह रहा था लारी भर शराब भी आयी है। शहर के रईस और व्यापारी गाँव में थैलियाँ लिए घूम रहे हैं। अगर हम लोग एक मिनट के लिए भी सो गये तो गांव खरीद लिए जाएंगे। माधव सिंह हंसकर बोला था।

कोई नहीं सोएगा। और फिर शहर गांव का भाव दे भी नहीं कसता। स्वस्ति को दो दिन दो रातें लगी थी सभाओं के लोगों को समझाने मनाने में। सभाओं के पन्द्रह प्रतिनिधियों को एक स्थान पर जुटा पाने में माधव सिंह ने एड़ी के पसीने को माथे तक पहुंचाया था। बीस सभाओं में से पन्द्रह को एक बैठक के भीतर बिठा पाने में सफल होकर उसने स्वस्ति से कहा था।

आज कर पाया अपने जीवन का सबसे कठिन कार्य।

स्वस्ति ने उपस्थित अध्यक्षों को बताया कि यह लड़ाई जाति-पांति की लड़ाई नहीं थी बल्कि गरीब और अमीर की लड़ाई थी। और जब-जब गरीब और अमीर की लड़ाई में गरीब की जीत की संभावना बनती है तो उसे जाति-पांति का रूप देकर अस्तव्यस्तता पैदा कर दी जाती है। आप

---

[65]पर पगडंडी नहीं मरती - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 63

सभी लोग अपनी-अपनी जगह अपने-अपने विश्वासों पर अटल रहकर भी उस लड़ाई को लड़ सकते हैं। जो आज सभी की लड़ाई है। हम आप सभी का सहयोग इसलिए चाह रहे हैं कि इस सुंदर देश को मुट्ठी भर लोगों की बपौती होने से बचाकर इसे यहाँ के हर एक आदमी को अपना देश बनाया जा सके। यह देश हमारे अपने बीच के मतभे और फूट के कारण हमारे हाथों से सरकता जा रहा है।''[66]

कुछ भ्रष्ट राजनैतिक प्रेरणा से प्रेरित लोग, लोगों को किस प्रकार जाति धर्म के नाम पर दो समुदायों में आपस में वैर और घृणा का बीज बोते हैं उनकी गरीबी का फायदा उठाते हुए मांस और शराब पिलाकर उनमें आपस में फूट डालते हैं। अनत इस उपन्यास में बतलाना चाहते हैं कि ऐसे भ्रष्ट लोगों से टकराने के लिए एक ताकत बनकर, स्स्ति जैसे नेता उनमें जाति धर्म के भेद को मिटाते हुए उनका अपने विकास के मुद्दे पर संघर्ष करने की और प्रगति के सही प्रेरणा देते हुए इनका पथ प्रदर्शित करेंगे तो एक स्वस्थ राजनीति देश के विकास में कार्य करेगी, क्योंकि जब जब कोई आंदोलन आगे बढ़ा है, तब-तब उसे जाति-पांति धर्म के नाम पर बाँटकर उसे तोड़ा जाता, उसका मार्ग अवरूद्ध किया जाता है। नेता अपने स्वार्थ के लिए इस भेद को कभी नहीं मिटाना चाहते हैं और ऐसे मुद्दों को निजी स्वार्थ के लिए उछालते हैं। लोगों को भड़काते हैं ताकि उनका वोट बैंक यूँ ही बना रहे। नेताओं के ऐसे दांव पेंचों का खुलकर विरोध अनत के उपन्यास 'अपना अपना आंगन' में राजनेताओं का पोल खोलकर उनका विरोध किया है। ''दिनेश की आशंका बढ़ने लगी थी। वह सोच उठा, कहीं सचमुच हज से लौट रहे मुसलमानों के साथ कस्टम की ओर से की गयी सख्ती के कारण मुस्लिम वोट सरकार के हाथ से चले तो नहीं गये थे। उधर हिंदू धर्म फेडरेशन की बागडोर भी सरकार के सहयोग से जिन जाति विशेष के लोगों के हाथ चली गयी थी उससे हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण वर्ग सरकार विरोधी हो चला था।''[67] अनत अपने उपन्यासों में राजनेताओं की अपनी राजनीति चलाने के लिए धर्म जाति के नाम पर समाज को बांट कर वोट

---

[66]चुन चुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 167-168

[67]आसमान अपना आँगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 142

कमाने की साजिशों को हमेशा विफल बताते हुए ईमानदारी और सच्चाई की जीत बताते हैं। लोगों को इस भेदभाव का बोध करने की प्रेरणा अपने पात्रों द्वारा हमेशा देते रहे हैं।

### 4.3.2 शोषण की समस्या का रेखांकन

अनत के उपन्यासों में शोषण की समस्या का रेखांकन बहुत ही मार्मिक ढंग से हुआ है। यदि हम उनके ऐतिहासिक उपन्यासों को देखते चलें तो डोना कामेलिया जहाज के कलकत्ता से अपनी लंबी यात्रा शुरू करने से लेकर प्रवासी भारतीयों के शोषण की गाथा का महाकाव्य रूप में 'हम प्रवासी', 'लाल पसीना' और 'पसीना बहता रहा' आदि में गिरमिटिया मजदूरों की दुखद गाथा का महाकाव्य बनकर जनता के समक्ष अभिव्यक्त है। इन्होंने न केवल शोषण, यातना, अत्याचार, संवेदना की अभिव्यक्ति की अपितु इसके मूल में समस्या को भी रेखाकित किया है। इसके मूल में गरीबी, उँच-नीच, छोटे-बड़े का भेद ही था जो मनुष्य को मनुष्य के शोषक के रूप में प्रस्तुत कर उनकी व्यथा की वास्तविकता को उजागर किया है। उन्हें जहाज पर जानवरों की तरह रखा गया जिसके कारण इन्हें जानलेवा बीमारियाँ हैजे जैसी बीमारी के मारण उसी गंदगी में तीन दिन और रूकना, जहाँ से इनके शोषण की समस्या इन पर बढ़ती गई और आंदोलन अस्तु-अस्तु मेरा निर्णय तक आते-आते बेरोजगारी संस्कृति की रक्षा अति आधुनिकता के प्रति लगाव पारिवारिक विघटन आदि समस्याएँ सर उठाने लगी जिनसे भारतीय प्रवासियों के हमेशा शोषण सहते हुए अपने अधिकारों के लिए लगातार शोषण कर सामना करते हुए अपने अधिकारों की लड़ाई को निरंतर संघर्षशील रखा और इस शोषण की चरम अवस्था ही क्रांति और आंदोलन का रूप लेकर उन्हें अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा इनके उपन्यासों का मुख्य स्वर रही है। अनत समस्या का केवल कोरा यथार्थ नहीं रचते, अपितु उस शोषण को समस्या का रेखांकन कर समाज में नई चेतना जागृत करते हुए मॉरिशस के संघर्षशील इतिहास को भी अभिव्यक्त करते हैं।

''जब आयासामी के शव को समुद्र में फेंका गया था तो चंपा सीतामा के कंधे को थामे खड़ी थी। अगर उसके हाथों की जकड़ मजबूत नहीं होती तो शायद सीतामा अपने पति के शव के

साथ स्वयं को समंदर के हवाले कर देती। जहाज की इस यात्रा के दौरान उसने और भी लाशों को पानी में फेंके जाते देखा था। सीतामा हर बार सिसक उठती थी, लेकिन आयासामी की लाश के पानी फेंके जाने पर वह चीत्कार उठी थी। ..... आखरी समय तक वह बोलता रहा था सीतामा! मारीच देश में हम जी-जान से मेहनत करेंगे कमाएंगे और बहुत सारे रुपये लेकर अपने देश को वापस लौटेंगे। अपने गाँव के कोविल में जाकर भगवान को धन्यवाद करेंगे। आयासामी की मृत्यु को आज तीसरा दिन था। सीतामा के पति की वह मृत्यु वह महज एक मौत नहीं थी। बिलखती हुई सीतामा अपने अगल-बगल में बैठी जुबेदा और चंपा से बोली थी, यह स्वाभाविक मौत नहीं थी, हत्या थी समय द्वारा की गई हत्या। समय ने उसके पति को किस्तों में मारा था। बासी भात, खट्टी हो चली दाल, दुर्गंध भरा पानी। रात भर उल्टी धारावाही मृत्यु की वह पहली किस्त थी। दूसरे दिन दूसरी किस्त में शुरू हुआ दस्त का आना। तीसरे दिन बुखार फिर पांचवें दिन पेट और छाती में दर्द। सन के खाली बोरे का जो बिस्तर था उस पर से आयासामी उठकर बैठने में भी असमर्थ हो गया था। अंतिम किस्त के आते-आते नौवें दिन तक शरीर का एक-एक अंग जवाब दे चुका था। नौवें दिन गले से आवाज आनी बंद हो गयी थी।''[68]

इस प्रकार गंदगी और अभावग्रस्त यात्रा के आरंभ से ही शोषण की अभिव्यक्ति अनत ने बड़े ही मार्मिक ढंग से की है, जिसमें आयासामी की मौत नहीं हत्या हुई थी। उन पूंजीवादी ताकतों के हाथ जो मजदूरों को दासों को पशु से भी गये बीते हालात में रहने पर मजबूर कर उनके प्राण ले रहे हैं। उस पीड़ा का मार्मिक यथार्थ प्रस्तुत किया है। ''अपनी यात्रा को यातनाओं को याद करके जब वे जहाज और फिर नाव के जरिए जमीन पर उतरे थे तो हनीफ ने कहा था, 'शुक्र है खुदा का' आखिर काला पानी पार कर जमीन पर पहुंच तो पाये।

तब उन बंधुआ मजदूरों में किसी को भी इस बात का तनिक भी ख्याल नहीं था कि प्रवासी घाट के बहत्तर घंटों का पड़ाव उस जहाज यात्रा को भी अधिक कष्टदायक हो सकता है।

---

[68]हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 19-20

इस बात की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि उस प्रवासी घाट से निकलकर वे जिन अलग-अलग कोठियों में बसने जा रहे थे वे किसी यातना शिविर से कम नहीं थी।''[69]

अपना देश छोड़ पराये देश में उन्नति की कामना करने वालों को यातनाएँ सहनी पड़ी जिसके पीछे गरीब मजदूरों की विवशता का फायदा पूंजीवाद उठाता है और उनके साथ जानवरों सा व्यवहार करते थे। ''भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की वह बस्ती समुंदर से अधिक दूरी पर नहीं थी। ईख के सूखे पत्तों के छप्परवाली दो कतारों के वे लंबे घर जिनमें हर चारदीवारी के भीतर पांच से दस लोग रहते थे। हर सुबह जब भी मधुवा ने सोनाली की माँ को सूर्य को अर्घ्य देते देखा, उसके मन में सवाल उठा आखिर उसकी यह बस्ती उस समंदर के करीब क्यों नहीं बनी। जहाँ सूरज उगता है? उसने बार-बार सूरज को समुंदर में डूबते देखा पर अपनी बाईस-तेईस वर्ष की उम्र में उसने कभी एक बार भी उसे समुंदर के भीतर उगते नहीं देखा बस्ती के बड़े जनों से वह सुनता आ रहा था कि दुनिया के सारे दुर्व्यवहार रात के अंधेरे में होते हैं। यह सवाल उसने हनीफ से भी किया था- तो फिर हमारे लोगों पर जो जुल्म ढाए जाते हैं वे रात में न होकर चमकते सूरज की रोशनी में क्यों होते हैं?''[70] शोषण, अत्याचार, भेदभाव सहते हुए इन मजदूरों के मन में अपने अस्तित्व के हक अधिकार के प्रश्न उठने लगे जो कि इनके जीवन में व्याप्त इस अंधकार को मिटाकर एक नये सूर्य के उदय होने के साथ-साथ इनके जीवन के सारे अंधकार को मिटाकर न्याय की समानता की अपने अधिकर की बात करने के लिए अत्याचार का विरोध करने, तब एकजुट होकर आगे आकर विरोध जताने की कामना जागृत होने लगी। लाल पसीना उपन्यास में किसान मजदूरों की मेहनत और उसका पूरा मेहनताना तो दूर उल्टे उसे पेट भर खाने से भी वंचित रखा जाता रहा है। ऐसी परिस्थिति में अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने की प्रेरणा मिलती है ''हम लोगों को हवेली की इच्छा नहीं है। हमें अपने कुत्तों को दस मजदूरों का खाना एक बार नहीं खिलाना है। अपने पांवों के सही-सलामत होने तक हमें गाड़ियों और बग्गी की कोई जरूरत नहीं।

[69]हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 42

[70]हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 64-65

अपने तन ढांपने के लिए हमें उतने सारे भड़कीले कपड़े नहीं चाहिए। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम रौंदे जाने पर भी आह तक न भरें, पगड़ी उछाले जाने पर अपने हाथों को सिर तक भी न पहुँचायें। घी मलायी न सही पर चावल के साथ कीड़े भी तो नहीं माँगते? पसीने की आखिरी बूंद देते हुए जब हममें हिचक नहीं तो हम जूतों और बांसों की बौछार भी नहीं चाहते।''[71] लगातार शोषण सहते हुए अब क्रांति की संघर्ष की अन्याय के विरोध करने की चेतना जागृत होने लगी थी जो अपने अधिकारों की आवाज उठाते हुए नई क्रांति लाने की कामना है जिसमें भेदभाव न हो। उल्टे पशुओं से गये बीते हालात में जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। वे समानता के भाव की कामना रखते हैं। और अपने अधिकारों के लिए उठाई आवाज को दबाने के लिए जमींदारों ने इन मजदूरों पर केवल कोड़े, हंटर ही नहीं गोलियाँ चलवाने से भी पीछे नहीं चूके हटे हैं और गरीब मजदूरों का खून बहाया है। ''बंदूकों से लैस पुलिस सिपाहियों ने अपने सामने वाले मजदूरों पर इस तरह गोलियाँ दागी गोया खरगोशों या हिरणों पर निशाना साध रहे हों। अनगिनत खूंखार गोलियाँ अनेक पीठों और छातियों से टकराई। धराशायी होने वाला पहला आदमी महादेव। अपनी छाती पर तीन गोलियाँ खाकर वह जमीन पर लुढ़क गया। उन खूनी गोलियों ने आंजलि को भी नहीं बख्शा। अपनी कोख में अपने पहले बच्चे को लिए हुए ही वह जमीन पर छटपटाते हुए दम तोड़ गई। बेबी की  पीठ पर गोली लगी और मरने से पहले वह करीब दस मिनट तक पांवों से रौंदा जाता रहा। मनूसामी को भी पीठ में गोली लगी। दो घंटे बाद वह अस्पताल पहुँचाया गया। अगर पहले पहुँच पाता तो डॉक्टरों की राय में उसके बचने की संभावना थी। अठारह मजदूरों को जख्म इतने गहरे थे कि उन्हें बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुँचाया गया।''[72] किसन सिंह अंजिले जैसे लोगों ने अपने साथ मजदूरों के लिए अपना खून बहा दिया अपने प्राणों को त्याग दिया और अपने अधिकारों के संघर्ष को आंदोलन को रूकने नहीं दिया। मालिकों के शोषण से कोई नहीं बच पाता उनके कारखानों में मर्द पर चाबुक चलती और औरतों को मेहनत के साथ-साथ  अपनी नीलामी

---

[71]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 134

[72]और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 260

के लिए मजबूर किया जाता था। इन मजदूरों से केवल दिन रात मेहनत करवाना ही नहीं अपितु इन्हें मानसिक शारीरिक बौद्धिक हर स्तर पर जकड़कर अपने नीचे दबाकर रखा जाता रहा आवाज उठाने की सजा मौत होती थी। फिर भी मदन, हरि, किान आदि अनेक महान आंदोलन कारी नेता अपने अधिकार प्राप्त करके रहे। इसकी बड़ी यथार्थ पूर्ण अभिव्यक्ति अनत के उपन्यासों में प्रचुर रूप में हुई है।

### 4.3.3 नस्लीय घृणा के प्रति असहिष्णुता

स्वयं को अपनी सोच को श्रेष्ठ मानने की भावना मनुष्य को मानवता से दूर किए जा रही है। और स्वयं को महत्व देता मनुष्य एक दूसरे से घृणा करने लगा चाहे वह जाति पांति, धनी-निर्धन या फिर नस्ल को लेकर उठने वाला घृणित भाव हो यह संसार के लिए बहुत बड़ा संकट बन चुकी है। नफरत घृणा के कारण संसार से मानवता का ह्रास होता चला जा रहा है। इसके कुपरिणाम बतलाते हुए अनत के अपने उपन्यासों में गोरे-काले फ्रांसीसी, गैर फ्रांसीसी, हिन्दू मुस्लिम क्रियोलो, भारती इन सब के बीच व्याप्त नस्लीय घृणा का विरोधी स्वर अपनी रचनाओं में मुखरित किया है। जिसके चलते भेदभाव बढ़ता है और पूंजीवादी व्यवस्था अपना उल्लू सीधा करती है। राजनेता अपनी राजनीति कूटनीति चलाते हुए दबे हुए लोगों को और दबाना चाहते हैं। ‘‘इस देश में कोई भी गोरा ईख काटने का काम क्यों नहीं करता? क्य इसके लिए हम ही पैदा हुए हैं? एक भी गोरी आदमी का हाथ कभी तो खेतों की माटी से मैला हो पाता। अगर ऐसा नहीं होता तो क्यों? यह निर्णय भगवान के यहाँ से सीधे आया है या रंग और पैसे के एक साथ मिल जाने की यही साजिश तो नहीं? लेकिन पैसा लेकर थोड़े ही कोई आया था यहाँ? तो फिर रंग ही की थी वह हस्ती?’’[73]

किस तरह अंग्रेजों के अधिकृत होने के कारण इतने वर्ष हमारे देश पर राज कर अन्य टापू पर भी अपनी सत्ता हासिल करने के लिए भारतीयों को सेना तथा गुलाम दास के रूप में मॉरिशस

---

[73]लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 3000

लाया गया और नस्लीय घृणा के चलते इन्हें दास, गुलाम, मजदूर से आगे तरक्की देने में भेदभाव किया गया। इसी पूंजीवादी व्यवस्था ने इनको कभी आगे बढ़ने नहीं दिया। रंग को लेकर इन्हें हेय मानकर रंगभेद के चलते खेती, मजदूरी आदि जैसे छोटे मोटे काम इनके हिस्से में होते थे। इसके प्रति अपनी असहिष्णुता प्रकट करते हुए अभिमन्यु अनत इस रंग भेद पर अपने उपन्यास में मदन के माध्यम से इस घृणास्पद नस्लवादी धारणा का कटु वचनों में विरोध करते हुए कहते हैं कि जब बनाने वाले ने इन्हें भिन्न-भिन्न रंग देने में कोई भेद नहीं किया तो मनुष्य क्यों करता है? पर पगडंडी नहीं मरती उपन्यास में विक्रम नौकरी बेरोजगारी की समस्या से जूझते हुए नौकरी की तलाश करता है तो उसे धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनकर एक अच्छी नौकरी पाने का प्रलोभन उसे दिया गया था। वह अपने सिद्धांतों पर अपने बल पर अपनी पहचान बनाने के लिए पायोनियर कॉर्प्स में भर्ती होकर ऊँचे रैंक का अधिकारी बन वहाँ काम कर आने के बाद यहां सरकार से अच्छी नौकरी मिल जाएगी सोचता है। किन्तु फिर भी उसे पढ़ लिखकर मेजर होने के बाद भी भेदभाव का ही सामना करना पड़ा नस्ल भेद मनुष्य के प्रगति के प्रयास करने पर भी उसके आगे बढ़ने में रोड़े अटकाता है।

''उसका सारा साहबीपन उन्हीं दिनों तक रहा जब तक सरकार में नौकरी मिल जाने की उम्मीद थी। वहां मिस्र में उसके मेजर होने के सबूत पर कई दफ्तरों में ठहाके सुन चुका था।''[74] मॉरिशस में नस्लभेद भावनाएँ इतनी गहरी जड़ पकड़े हुए थी कि आजादी के बाद भी पढ़ लिखकर आगे बढ़ जाने के बाद भी उसे उसकी शिक्षा के योग्य काम नहीं मिलता, चाहे वह मेजर ही क्यों ना हो उसे हास्य व्यंग्य का पात्र मानकर उसके मेहनत की सराहना न कर उसका मजाक बनाया जाता उसे उसकी खेती किसान वाली हैसियत याद दिलाई जाती। लेकिन उसे किसान भी तो नहीं रहने दिया जाता वहां भी उसे भेदभाव नस्ली भावना से त्रस्त किया जाता है। ''किसी को फ्रांसीसी काल के अत्याचारों के उल्टे रूप का डर है तो किसी को धोती पहनने का भय। कोई है

---

[74]पर पगडंडी नहीं मरती - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 28

कि मॉरिशस में हिन्दू राज्य की कल्पना से कांपता है । धनपत महतो के लिए यह पागलपन के सिवा कुछ नहीं था। एक और बात थी जो उसकी समझ से बाहर थी।''[75] इस जाति-पांति, नस्ल, धर्म, प्रांत को लेकर भेदभाव की नीति हमेशा यूँ ही चलती रही। भेदपूर्ण व्यवहार भारतीयों के साथ किया जाता था। इसके प्रति असहिष्णुता का भाव प्रकट करने के लिए  जाति, धर्म, नस्ल, रंग आदि के भेदभाव को मिटाने के प्रयत्न को लेकर एक उम्मीद एक आतंकवादी के आत्मघाती हमला कर मृत्यु प्राप्त करने के बाद गर्भस्थ शिशु के रूप में अपनी माँ के गर्भ में एक मासूम बच्चे के रूप में संसार से परिचित होता है और काल्पनिक ईश्वर के साथ जाति-पांति के भेद को लेकर चर्चा करता है जिसमें इस भेद के प्रति अनत ने कठोर विरोध अभिव्यक्त किया है।

''शाम के जब खबरें शुरू हुई तो एकदम विपरीत शब्दों के साथ - नफरत, आत्मघाती विस्फोट, खून खराबे, दंगे-फसाद, लाशों का अम्बार व्यभिचार, हत्या। पहली बार मेरे भीतर की सिहरन इतनी दीर्घ रही।

आगे भी मैं सुनता रहा। पहले तो पंडितों, मुल्लों और पादरियों को उनके खोखले स्वर मेरे कानों में बजते रहे।

- हम सभी एक ही प्रभु की संतानें हैं।

धर्म हमें प्रेम और करुणा सिखाते हैं।

- नफरत और हिंसा आदमीयत की नहीं हैवानीयत की पहचान है। फिर वह कोई फिल्म थी जिससे ये आवाज आती रहीं।

- तुम काफिर हो। तुम्हें जिंदा छोड़ दूँ तो भगवान मुझे जहन्नुम में ढकेल देगा।

- हमारे पास दुनिया का सबसे अधिक विध्वंसात्मक बम है। मिटा कर रहेंगे तुम्हें।

- हमारे पास रासायनिक हथियार है। तमुम्हें तबाह कर देंगे।

इन आतंक भरे नारों के बाद मैंने अपने बाप को कहते सुना।

---

[75]चौथा प्राणी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 122

- औरों को लूटकर जिंदा रहने की चेष्टा है यह। यह तो ..... मेरी फूफू की बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि मेरा चाचा बोल उठा

- अपनी ताकतों की नुमाइश की जा रही है। इधर महीने भर से हमारे इस द्वीप में जिसे देखने की मेरी बेताबी कभी बढ़ आई थी अब कुछ घटने लगी थी, हत्या चोरी-चकारी, भ्रष्टाचार, बलात्कार और मजहबी तनाव बड़ी तेजी के साथ बढ़ आये थे।''[76]

एक उम्मीद और इस उपन्यास में धर्म, नस्ल भेद को लेकर लोगों के बीच बढ़ती घृणा कुछ विध्वंसकारी ताकतों के लिए मौका बन गई थी, जो इन्हें धर्म के नाम पर भेदभाव के नाम पर बहला फुसला कर आतंक के रास्ते ले जाते हैं। जो मनुष्य सभ्यता के लिए बहुत बड़ा खतरा बनकर उभरी है। स्वयं को श्रेष्ठमान दूसरों की सभ्यता को कमतर समझ उसे नष्ट करने की चेष्टा मानवता वाद नैतिक मूल्यों का हनन करते चली जा रही है। प्रगति के साथ-साथ विध्वंसात्मक हथियार एक दूसरे को मिटाकर सत्ता हासिल करने की होड़ एक दूसरे को अपने अधीन रखने की महत्वाकांक्षा सारे संसार में नफरत और हिंसा फैला रही है। आजकल हर कहीं इसी की चर्चा होती है। चाहे वह अखबार, टेलीविजन, समाचार, फिल्म या धार्मिक चैनल हर कहीं यह विषाक्त वातावरण फैला है जो मानव सभ्यता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। इसका विरोध अनत एक अजन्मे बच्चे के गर्भ में ग्रहण करने की क्षमता और उसके आस-पास के वातावरण में दुनियां भर की चर्चा इन्हीं मुद्दों को लेकर होती है। इस मजहबी तनाव, नस्लवादी भावना को लेकर अनत मानते हैं कि ये सारी बुराइयाँ मनुष्य के बढ़ते अहंकार के कारण है और ऐसे में दुनियां में अनेक अहंकारी लोग आए और चले गये। ये वातावरण में विष घोल उसे दूषित कर देते हैं। किन्तु समाज में ऐसा वर्ग भी है जो इनका विरोध करने की क्षमता रखता है। संसार की गति यथावत गतिमान रहती है।

---

[76]एक उम्मीद और - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 117

''ऐसा बार-बार होता रहा है। बार-बार आदमी अपने अहं में पागल होकर अपने को रावण, कंस, हेरोड, चंगेज खां, स्टालिन और हिटलर बना जाता है। धरती को कभी महाभारत का कुरूक्षेत्र बना जाता है तो कभी सौ वर्षीय युद्ध का मैदान, कभी पर्ल हार्बर तो कभी हिरोशिमा, कभी वियतनाम तो कभी कोसोवो। कभी सामंती प्रहार तो कभी साम्राज्यवादी शोषण, कभी साम्यवादी जुनून तो कभी तानाशाही क्रूरता फिर भी धरती जीवित रही, आकाश बना रहा, मानव प्रकृति के बीच विचरता रहा। और .....।''[77]

मनुष्य अपने अहं के लिए निजी स्वार्थ के लिए भेदभाव वाली नीति चलाकर विष फैलाते हैं। संसार को युद्ध की ज्वाला में झोंक देते हैं। किन्तु प्रकृति किसी से भेदभाव नहीं करती। वे चाहे साम्यवादी हों या फिर साम्राज्यवादी सभी के लिए एक सी हिस्सेदारी है, वायु जल, सूर्य का रोज उगना, अस्त होना, आदि प्राकृतिक क्रिया कलाप सब सभी के लिए समान रूप से कार्य करते हैं। जब इस संसार में प्रकृति किसी से भेदभाव नहीं करती तो मनुष्य क्यों भेदभाव, घृणा पालकर आपस में वैमनस्य रख्चाता है। ऐसे सवालों से अनत मनुष्यता को झकझोर रहे हैं। अपनी प्रगतिशील विचारधारा अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत करते हुए समाज में व्याप्त अप्रगतिशील तत्वों का विरोध करते हुए लगातार अपने कार्य में लगे हुए हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि सारी समस्याओं के मूल में गरीबी, बेकारी, विकृत राजनीति है जो संसार में भेद पाले हुए है। लोगों को आपस में बांटे हुए उन्हें युद्ध की आग में झोंक रहा है। जहाँ यह भेदभाव होता है वहाँ आंदोलन, युद्ध विरोध होता है। यदि आंदोलन विरोध इस घृणास्पद भेदभाव का हो तो समाज को सही दिशा निर्धारित कर प्रगति की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा। ऐसा ही सकारात्मक सफल प्रयास जो एक आंदोलन को सही दिशा निर्धारित करता है। जाति-पांति के भेदभाव का विरोध कर उससे होने वाले खतरे के प्रति सभा को सतर्क कर समानता के भाव को महत्व दिया है।

---

[77]एक उम्मीद और - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 117

‘‘कब तक हम लोग शाब जैसे खुदगर्ज को मनमानी करने देंगे? कब उसके बहकावे और प्रलोभनों में आकर हम लोग अपने को इस जाति-पांति में बाँटते रहेंगे? अगर भविष्य में हमारी ये बैठकाएँ, जिनके बल पर हमारी पहचान बनी रही हमारा धर्म और संस्कृति बनी रही, हमारी भाषा बनी रही हमारी इज्जत बनी रही, इसी तरह अलग जातियों और खेमों में बँटती रही तो आगे क्या होगा? इससे बेहतर तो यही है कि हम कॉपरेटिव सभा बनाएँ जहाँ छोटे-बड़े का कोई प्रश्न ही नहीं होगा। कॉपरेटिव सभाओं के जरिए जहाँ हम अपनी आमदनी को बढ़ाने में सफल हो सकेंगे वहीं हम लोग उसकी शक्ति से अपने धर्म और संस्कृति की भी रक्षा कर पाएंगे। आज जिस तरह का घिनौना खेल धनदेव साहब हम सभी के साथ खेल रहा है, उससे तो यह पुरानी सभा मटियामेट होकर ही रहेगी।’’[78]

अनत मानते हैं कि बाँटने वाली विचारधारा स्वार्थी मानसिकता पर आधारित होती है और चंद लोगों का स्वार्थ भाव समाज, को देश को इस घृणित भेदभाव वाली नीति में बाँटकर अपना अधिकार बनाये हुए हैं जो लोगों की सोच को बुरी तरह जकड़े हुए है। जिस कारण समाज में देश में वैर विरोध बढ़ता चला जा रहा है। जहाँ हम विकास तो कर रहे हैं किन्तु नैतिक मूल्यों का ह्रास और पतन हो रहा है। जहाँ समाज में मानवता, नैतिकता, भाईचारा मिटता चला जाएगा तो भावहीन मनुष्य कितना ही विकास क्यों न कर ले अपने सारे वैज्ञानिक विकास को निर्माण में वही विध्वंसकारी नीतियों में प्रयोग कर सभ्यता को नष्ट करते हुए उसे खत्म करने के कगार पर ला छोड़ेगा। आज समाज में लोगों की विचारधारा अति आधुनिक है। और समाज का शिक्षित वर्ग इन भेदभाव, नस्लवादी घृणा से ऊपर अपनी सोच को बनाए हुए है। किन्तु फिर भी श्रेष्ठता का भाव अहंकार इंसान को उन रूढ़ी घृणा की जड़ों की पकड़ से आज भी पूरी तरह आजाद नहीं करवा पाती। ऐसे ही यथार्थ चित्रण पर आधारित अनत का उपन्यास ‘मेरा निर्णय’ जिसकी सारी कथावस्तु इस नस्लवादी घृणा और प्रगतिगामी आधुनिक समाज, इंसान की बदलती सोच,

[78]लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 189-190

विकास, परिवर्तन सब कुछ होते हुए भी कहकीं न कहीं यह रंगभेद, नस्ल भेद आधुनिक सभ्य समाज में स्पंदित है, विद्यमान है।

‘‘माँ उस व्यक्ति ने अपनी औलाद को गोद लेने की बात तो बहुत दूर रही उसने उसे स्पर्श तक नहीं किया। हम दोनों को मंझधार में छोड़कर चला गया। ऐसे आदमी को मैं अपनी बेटी का बाप नहीं मान सकती। अगर आज वह हमारे साथ होता तो मैं फख्र के साथ उसे अपनी बेटी का बाप कही। पर वह मेरी बेटी का क्या, किसी भी बच्चे का बाप होने योग्य नहीं। एक फ्रांसीसी से शादी करने की शर्म मुझे नहीं है पर एक नस्लवादी से मुझे नफरत है।’’[79]

अनत यहां अमिता के माध्यम से बतलाते हैं कि मनुष्य चाहे किसी जाति, धर्म, प्रांत या देश का हो यदि विचारधारा स्पष्ट हो तो समाज का विकास होता है। यदि वह नस्लवादी हो तो वह चाहे वह कितने बड़े देश, समाज, धर्म की हैसियत से क्यों न हो वह निम्न स्तर से भी निम्न गया बीता होता है। जो केवल दुख देता है घृणा का पात्र होता है। अनत इस उपन्यास ये ये दर्शाना चाहते हैं कि छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, गोरा-काला होने से पहले इंसान होता है और यही उसकी पहचान है। वह सजीव है वह भावहीन निर्जीव वस्तु नहीं है, जिसे ब्लैक, ब्राउन येलो आदि रंगों में बाँटा जाये। मनुष्य को मान उसकी भावाभिव्यक्ति से मिलता है, विचारधारा से मिलता है न कि रंग रूप से। प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकारों ने भी सुंदरियों के गुलाबी गाल, चाँद से मुखड़ की जगह पत्थर तोड़ती स्त्री को सुन्दर माना और उनकी रचनाओं में प्रमुख पात्र खेती किसानी, मजदूरी करने वाले मेहनती लोग होने लगे। तो फिर ये कैसा रंग भेद। इस पर अनत करारा व्यंग्य करते हुए अमिता के भाई से कहलवाते हैं कि रंग इंसान की पहचान नहीं होती।

‘‘अमिता, आदमी को ब्राइट मेन, ब्लैक मैन, ब्राऊन मेन या येलो मेन की पहचान में बाँटना इंसानियत नहीं। भैया की यह बात मुझे तराजू के उन दो पलडों की तरह लगने लगी जो

[79]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 118

नीचे-ऊपर और ऊपर-नीचे होते रह जाते हैं और वजन तय नहीं हो पाता।''[80] अनत मानते हैं कि समानता वाला विचार आज भी डगमगा जाता है, क्योंकि सभी लोग इस भेद को मिटाना नहीं चाहते। कुछ लोग आज भी नस्लीय घृणा में बंधे हैं। इस उपन्यास में नस्लवादी पति के द्वारा त्याग दी गई अमिता, उससे इतनी घृणा करती है कि वह उसकी लाखों की विरासत को भी ठुकरा देना चाहती है। कहती है ''रंग भेद का अहम लिये हुए वह व्यक्ति मुझसे अधिक मेरी बेटी का गुनहगार है और तुम चाहती हो कि मेरी बेटी अपने गुनहगार की विरासत को स्वीकारे।''[81]

वह ऐसे सोच वाले व्यक्ति की विरासत तो क्या ऐसी विचारधारा के प्रभाव की छाया भी अपनी बेटी से दूर रख अपने आत्मसम्मान को बनाये रखती है। वह अपनी बेटी का भविष्य स्वयं संघर्ष करके बनाना चाहती है। वह अपने पति की छोड़ी हुई विरासत को उस बेटी के लिए नहीं चाहती जिसे स्वयं उसके पति ने उसके रंग को लेकर उसे अपनी गोद में लेकर उसे देखने की भी चेष्टा नहीं की। बाद में छोड़ी हुई विरासत लेकर अपने स्वाभिमान को उसने झुकने नहीं दिया-

- ''करोड़ों के लिए भी अपने स्वाभिमान की नीलामी नहीं कर सकती।
- मेरे भाई ने जो कुछ छोड़ा है वे सभी अपनी बेटी ......
- उसकी बेटी? - मेरी भाई की बेटी
- एक साँवली लड़की तुम्हारे भाई की बेटी नहीं हो सकती।
- मेरी अपनी बेटी काले रंग की है। मैंने एक अफ्रीकन से शादी की है। मुझे अपनी बेटी के रंग पर फख्र है।''[82]

इस वाद-संवाद द्वारा अनत उपन्यास के अंत में लोगों की बदलती विचारधारा का एक सकारात्मक पक्ष रखते हुए फ्रेडरिक को अपनी भूल और क्रूरता के लिए पछतावे तथा मरणोपरांत अपनी सारी जायदाद की वारिस अपनी उस बेटी को बनाता है जिसे उसने उसका सांवला रंग देख

---

[80]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 203

[81]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 197

[82]मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 197

उसे गोद में लेकर दुलारा तक नहीं था उन्हें छोड़कर चला गया था। उनसे माफी मांगने से पूर्व ही वह इस संसार को छोड़ गया और अपनी बहिन त्रिजित के हाथों अपनी बेटी को उसकी विरासत देने का कार्य छोड़ गया। किन्तु उस अपमान को लेकर अमीता ने इतना लंबा समय बिता दिया था और वह इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थी कि उसकी बेटी फ्रेडरिक की वारिस बने और वह उस रंगभेद वाली बात की बतलाती है तो फ्रेडरिक की बहन कहती है कि अब ऐसा कुछ नहीं है। रंग और नस्लवादी भावना पीछे छूटती जा रही है। इसीलिए उसने भी एक अफ्रीकन से विवाह किया है और मेरी भी बेटी काली है। मुझे इस रंगभेद को लेकर कोई परेशानी या दु:ख नहीं अपितु वह उसके रंग पर फख्र करती है। अनत अपने उपन्यासों में भेद भाव शोषण नस्लवाद जैसे कई ज्वलंत मुद्दे उठाते हैं और उसका यथार्थ प्रस्तुत करते हैं जिसकी संवेदना पाठकों के मर्म को छू जाती है। किन्तु वे उतने ही कड़े शब्दों में उसका विरोध करते हैं और इस तरह की ज्वलंत समस्याओं का अंत या उसका समाज से लुप्त होना या सुधार आने वाली स्थिति का भी चित्रण करते हैं। परिवर्तन सुधार को भी दर्शाते हुए नस्लवादी घृणा के प्रति असहिष्णुता बड़े ही सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हैं जिससे साधारण जनमानस तक मुद्दा बड़ी सादगी में समझाया जा सके समाज की प्रगति में इन विरोधी तत्वों को अवरोध लाने से रोका जा सके।

**निष्कर्ष**

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस के जीवन, उनके समाज, संघर्ष, परिवर्तन, आंदोलन, अपने अस्तित्व को स्थापित कर उसकी रक्षा करने का संघर्ष अपने संपूर्ण यथार्थ के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। इनके प्रथम उपन्यास 'और नदी बहती रही' से अब तक के उपन्यास आसमान अपना आंगन, मेरा निर्णय आदि तक इन्होंने मॉरिशस समाज में, प्रवासी भारतीयों की जीवन गाथा का बड़ा ही सटीक चित्रण किया है। मॉरिशस वर्गों में बँटा है। गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस पहुँचे भारतीय दास प्रथा और अत्याचार शोषण से संघर्ष करते हुए पूंजीपतियों के साथ आर्थिक, धर्मगत, जातिगत भेद जो इनके प्रवासी होने के कारण इनसे किया जाता था उसके

विरोध में जो संघर्ष किया है, उसकी अभिव्यक्ति इनके उपन्यासों में दर्ज हुई, उसका चित्रण अनत के उपन्यासों से प्राप्त उद्धरणों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अनत के अधिकतर उपन्यासों में साधारण जनमानस को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जिसके अंतर्गत मजदूरों, किसानों की दुर्दशा उनके द्वारा झेले गये संकट को अभिव्यक्त किया है। 'हम प्रवासी', ''आंदोलन, 'पर पगडंडी नहीं मरती' आदि कई उपन्यासों में इस प्रथा का चित्रण है तो 'और पसीना बहता रहा', 'लाल पसीना' एवं 'गांधी जी बोले थे' आदि में आंदोलन, जागरूकता, विरोध शिक्षा का महत्व संगठन आदि द्वारा प्रगति की ओर अग्रसर प्रवासियों के संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। 'कुहासे के दायरे', 'एक उम्मीद और', 'चलती रहो अनुपमा', 'लहरों की बेटी', 'अचित्रता' आदि उपन्यासों में मध्य वर्गीय विडम्बना व उसमें अपने आपको स्थापित करने के संघर्ष में जूझता शिक्षित वर्ग जो इस देश को अपनी मेहनत, खून, पसीने को सींचकर आगे बढ़ना चाहता है, किन्तु नस्लभेद, रंगभेद के चलते प्रवासी भारतीयों को किस प्रकार भेदभाव झेलना पड़ता है आदि का चित्रण है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इस देश के निर्माण में किये गये अपने संघर्ष अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते, आधुनिक विचारधारा बदलता सामाजिक परिवेश इन सबके साथ शिक्षित वर्ग का बेरोजगारी के कारण खुद को स्थापित करने के लिए किस प्रकार भेदभाव और शोषण का सामना करना पड़ा। इसके यथार्थ को अनत जी ने अपने उपन्यासों में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए इनके संघर्ष से समस्त संसार को अपने साहित्य द्वारा परिचित करवाया है। मेहनती भारतीय मजदूरों की गिरमिटिया मजदूर, दास से लेकर मॉरिशस को बनाने, उसे सँवारने वाले भारतीयों की गाथा को अभिव्यक्त किया है। जो कार्य इतिहासकारों द्वारा अधूरा रह गया था उसे अपनी रचना शैली द्वारा भाव व कल्पना के साहित्य यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। प्रवासियों की पीढ़ियों के संघर्ष की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति इस अध्याय में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

# पाँचवाँ अध्याय

# अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील मॉरिशस का समाज

5.1 प्रगतिशीलता

5.1.2 शिक्षा का महत्व

5.1.3 हिन्दी भाषा का विकास

5.1.4 प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन

5.1.5 समन्वयवाद तथा हिन्दू मुस्लिम संबंध

5.2 स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट

5.2.1 सरकारी तंत्र और युवा असंतोष

5.2.2 राजनीति और साम्प्रदायिकता

5.2.3 राजनीति में स्त्री और उसका स्वरूप

5.3 मॉरिशसीय समाज के विविध रूप

5.3.1 मॉरिशस समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप

5.3.2 आधुनिक नर-नारी संबंध

5.3.3 पारिवारिक विघटन

5.3.4 संघर्षरत नारी

5.3.5 नशाखोरी का विरोध

निष्कर्ष

# पाँचवाँ अध्याय

## अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील मॉरिशस का समाज

प्रगतिशील साहित्य कर्मशीलता का द्योतक है, शोषण का विरोधी स्वर इसमें मुखरित है। इस साहित्य में शोषण का कड़ा विरोध हुआ है, संघर्ष और क्रांति के माध्यम से साम्यवाद लाना प्रगतिशील साहित्य के अव्यय हैं। क्योंकि यह साहित्य साधारण जन-मानस को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है। इसमें मानव के महत्व के प्रति अमिट विश्वास है तथा समाज की अनिष्टकारी शक्तियों के विरूद्ध कठोर व्यंग्य है। ऐसा ही प्रगतिशील परिवेश अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में उपस्थित है। अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में समाज में अनिष्टकारी शक्तियों का विरोध करते हैं। जनमानस का संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष, मजदूरों और मिल मालिक पूंजीपतियों के बीच उत्पन्न वर्ग संघर्ष को उन्होंने अभिव्यक्त किया है। समाज में व्यक्त आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक रूढ़ियाँ जो मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद पैदा करती हैं, ऐसी अनिकष्टकारी शक्तियों पर कठोर व्यंग्य करते हुए, मनुष्य की कर्म शक्ति को महत्व दिया है। अनत के उपन्यासों में व्यक्त इस प्रगतिशील परिवेश पर प्रकाश डालने का प्रयास इस अध्याय में किया जा रहा है। जैसे कि हम जानते हैं, संसार में मनुष्य का जीवन समाज केन्द्रित है। समाज में उनका सामाजिक जीवन उससे जुड़े संघर्ष अधिकारों की लड़ाई आंदोलन, सामाजिक, राजनैतिक संघर्ष आदि को केन्द्र में रखकर अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों की सृष्टि की है जो कि इनके उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना को दर्शाते हैं। इस अध्याय में आधुनिक समाज उसमें व्याप्त पारिवारिक विघटन, नर-नारी संबंध, बेरोजगारी की समस्या, नशाखोरी, भाषा, संस्कृति के लिए संघर्ष तथा मॉरिशस में स्त्री के विविध रूप उसका संघर्ष, शोषण, विसंस्कृतिकरण आदि को लिया है। स्वतंत्रता के उपरांत आधुनिक जीवन और प्रगतिशील मॉरिशसीय समाज में व्याप्त सामाजिक स्थिति का यथार्थ अनत के उपन्यासों में देखा गया है जिसकी अभिव्यक्ति उसकी प्रगतिशील चेतना में हुई है।

**5.1 प्रगतिशीलता**

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मुख्यतया प्रगतिशील परिवेश है, जिसमें आगे बढ़ने की कामना, अन्याय का विरोध करने की छटपटाहट, विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील, कर्मशील मानव को अभिव्यक्त किया गया है। कर्म शक्ति का समर्थन किया गया है जो कर्म और संघर्ष में विश्वास रख आगे बढ़ता है। गिरमिटिया मजदूरों के रूप में गये भारतीयों का स्वयं को वहाँ स्थापित कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष का आधुनिक परिवेश में बदलते समाज और राजनीतिक कुचक्र से जूझते साधारण मानव की प्रगतिशीलता अभिव्यक्त हुई है।

''सभा का उद्देश्य लोगों को बताते हुए घरमेन ने ओजपूर्ण शब्दों में यही कहा कि आज देश में मजदूरों की दशा चिंताजनक है। खेतों में काम करने वाले मजदूर खून-पसीना एक करके जो पाते हैं वह नहीं के बराबर है। सरकार और जमींदार दोनों अगर मजदूर की इस स्थिति पर ध्यान नहीं देते तो केवल इसलिए कि मजदूरों के बीच संगठन की कमी है। अधिकारों की माँग पर तभी ध्यान दिया जाता है जबकि वह वर्ग विशेष और संगठन की ओर से की जाती हो। मुद्दतों से सभी वर्गों के लोगों से अधिक परिश्रम करके भी आज मजदूर पहले से भी अधिक गरीब हो गया है ऐसा क्यों? इस प्रश्न को तभी सुलझाया जा सकता है जब संगठन हो। यूनियन मजदूरों की सबसे बड़ी शक्ति है। यूनियन आंदोलन ला सकती है। हम मजदूरों के लिए जो कुछ भी करना चाहते हैं वह सभी कुछ तब हो सकता है जब आप यह समझ लें कि यूनियन ही आपकी शक्ति है। हमारे गाँव में कोई पाँच सौ मजदूर हैं। हम चाहते हैं कि सभी को एक सूत्र में बाँधकर उनकी हालत को बेहतर बनाएँ।''[1]

जो अन्याय अत्याचार को अपनी नियति मानकर शोषण सहते आ रहे थे अब वे समाज में अपनी स्थिति को अन्यों से भिन्न देखते हुए अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। अपने परिश्रम का पूरा अधिकार प्राप्त करने हेतु वे संगठित होकर एकजुट होकर पूंजीपतियों से सरकार से अपनी बेहतरी की कामना करते हुए आंदोलन करना चाहते हैं। इस कार्य हेतु घरमेल चार सौ मजदूरों को संगठित करते

[1] जम गया सूरज - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 119-120

हुए उन्हें अपनी स्थिति से अवगत कराते हुए, उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग करते हुए मजदूरों की यूनियन की नींव डालने की बात करता है। यहाँ प्रगतिशीलता गोचर होती है कि पढ़-लिखकर ज्ञान प्राप्त कर गिरमिटिया मजदूरों की संतान अपने अधिकारों को जानने लगे हैं। अपने समाज के विकास के लिए उनके अधिकारों के लिए वह अपनी कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर मजदूरों के पक्ष में उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक करते हुए यूनियन बनाकर आंदोलन करना चाहते हैं जो कि गिरमिटिया मजदूर से आगे बढ़, अपने अधिकार प्राप्त कर प्रगति की कामना करते हैं। अनत ने इस उपन्यास में भारतीय शर्तबंद मजदूर से अपने अधिकार प्राप्त कर इस देश के विकास में अपने हिस्से की हिस्सेदारी के सही अधिकारों को प्राप्त के आंदोलन, जागरूकता को उसकी प्रगतिशीलता को अभिव्यक्त किया है।

''हमारी सही लड़ाई तो अब शुरू होनी है। भारतीयों को इस मुल्क में आदमी की तरह नहीं लाया गया था। आज हम अपने को आदमी बताने में तो सफल हुए हैं, लेकिन हमारी गिनती आज भी तीसरे दर्जे के नागरिक के रूप में होती है। इसे बदलना है हमें। एक टुकड़ी जमीन और एक झोपड़ी से आर्थिक बंटवारा होकर बराबरी नहीं आ जाती। हमें अपने को किसी से बेहतर और विशेष बताना नहीं है, लेकिन अपनी कम हैसियत मानते हुए लिजलिजेपन से जीते रहना भी तो हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए।''[2]

जैसे कि अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' में मजदूरों की दुर्दशा का वर्णन और विरोध तथा संघर्ष का बीज प्रस्फुटित होता है और मजदूरों में इसका विरोध करने की कामना जागृत होती है और 'पसीना बहता रहा' उपन्यास में संघर्ष और आंदोलन संगिठत होकर मजदूरों का यूनियन बनाकर बैठकों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों में जागृति लाकर प्रगति की ओर अग्रसर समाज का चित्रण है तो 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में इस आंदोलन के जोर पकड़ने पर किस प्रकार अपने आपकी मनुष्य होने की पहचान पाकर पशुतुल्य व्यवहार के विरोध में सफल गिरमिटिया मजदूर और उसके संघर्ष को

[2] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 192

प्रस्तुत किया है। जो केवल अपनी आर्थिक बेहतरी या छोटे से जमीन के टुकड़े से संतुष्ट होकर चुप बैठ जाए वह अपने प्रवासी भारतीय समाज के विकास की सोचता है, इसे स्पष्ट करते हुए अनत बतलाते हैं कि इनका संघर्ष प्रगतिशील होने का संघर्ष है ना कि खुद को सर्वोपरि स्थापित करने का। वे अपने जीवन में शिक्षा, समानता, जीने की स्वतंत्रता और मनुष्य होने के नाते मनुष्यता का व्यवहार चाहते हैं। प्रगतिशील समाज अपनी पहचान स्थापित करना चाहते हैं। इस देश को स्थापित करने में अपने योगदान को यूं ही जाया नहीं जाने देना चाहते हैं। इसलिए इसे प्रगति पथ पर अपना पहला कदम मानते हैं ना कि मंजिल को पाना इसलिए बैरिस्टर बंधन प्रकाश को समझाते हैं कि अपने समाज की प्रगति के लिए अपने इस संघर्ष को जारी रखना है।

‘‘ओजपूर्ण शब्दों में उसने कहा था - इस देश को बनाने में सबसे बड़ा योगदान मजदूरों का रहा है। जिन मजदूरों ने अपनी मेहनत से इस देश को समृद्ध किया है, आज भी उनकी दशा उतनी ही दयनीय है, जितनी शोषण की चरम सीमा के दिनों में थी ..... परकाश ने उस मौके पर यह भी कहा था कि कल तक हमारी जो लड़ाई खेतों और दफ्तरों तक सीमित थी, अब उसे विधानसभा तक ले जाने का समय आ गया है। उस दिन उसने गाँधी जी की बड़ाई की थी। गाँधी जी की हिदायत और नसीहत को जनता के सामने रखा था। मैं भी अब तुमसे यही कहता हूँ कि इस मुल्क में राजनीति मुट्ठी भर धनपतियों की बपौती नहीं रह सकती।’’[3]

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष को प्रगतिशील विचारधारा के साथ प्रस्फुटित होते हुए दर्शाया है जिसके अंतर्गत शिक्षा तरक्की के साथ-साथ विधानसभा में अपने प्रतिनिधित्व को पहचानना चाहते हैं। क्योंकि वे चाहते थे, अपना एक स्वतंत्र राजनैतिक दल बनाया जाये जो कि आम आदमी की सबसे बड़ी ताकत के रूप में पहचाना जाए।

‘‘धनेश अध्यापक था। वह सोचता-विचारता था, फिर भी वह यह नहीं समझ पाता कि तब और अब के दिनों के बीच के फर्क का कारण क्या था। वह इस बात को भली भांति जानता था कि

[3] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 162-163

बीस वर्ष बाद के आज का समय विज्ञान की अधिकाधिक प्रगति का समय था जिससे कृषि उत्पादन को बढ़ावा मिला था। सब कुछ मानकर भी वह कैसे मान लेता कि जो उपज उस समय अपनी सात-आठ वर्ष की उम्र में उसने देखी थी वह आज के उत्पादन से बेहतर थी। क्या उस समय उसकी उम्र छोटी थी, इसीलिए चीजें उसे बड़ी दिखती थीं।''[4]

एक गिरमिटिया मजदूर का बेटा जो पढ़-लिखकर एक अध्यापक के रूप में कार्य करते हुए अपने बीते हुए दिन याद करता है कि कैसे उसके माता-पिता दिन-रात खेतों में मेहनत करते थे और उनकी जी-तोड़ मेहनत से उत्पादन अधिक होता था। फिरभी वे गरीब ही रह जाते हैं। आज चाहे विज्ञान की प्रगति अधिक रही हो किंतु उत्पादन में कुछ खास बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। फिर भी उनकी इस मेहनत का उल्लेख नहीं होता औरों की भी कोई खास प्रगति नहीं हो पाई है। आज वह अध्यापक के रूप में आदर तो प्राप्त करता है किन्तु उसे दूसरे विशेष वर्ग के सम्मुख वह मान-सम्मान उतना नहीं मिल पाता जितना वह उसका हकदार है। प्रगतिशील समाज में ज्ञान विज्ञान की प्रगति तो हो रही है किन्तु भेद और भाषा संस्कृति का अंतर भी खत्म होना चाहिए। इस विषय को उजागर करते हुए अनत ने धनेष का मंत्री द्वारा छोटी बात पर डांटा जाना फिर उसका उस सरकारी नौकरी से मोहभंग और खेतों की ओर लौटना दर्शाते हुए प्रगति की चाह लिए नौजवान के अपने मान-सम्मान के लिए खुद को दबाये जाने के विरोध में अभिव्यक्त किया है। इनके आंदोलन संघर्ष में नित नये परिवर्तन जो इनकी प्रगतिशीलता को दर्शाते हैं, उसे प्रस्तुत किया है।

''सहदेव ठाकुर ने हरि से कहा - दिसंबर से मैं अखबर निकालने की सोच रहा हूँ। तुम्हें उसके लिए एक अच्छा-सा नाम सोचकर बताना होगा।''

छापाखाना पहुँच गया क्या?''

''पहुँच भी गया और फरीद की दुकान के पास में सज भी गया।''

आप तो बड़ी तेजी से काम करते हैं चाचा।''

[4] कुहासे के दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 7-8

काम तो अब शुरू होना है। अखबार का संपादन तुम्हें करना होगा।''

''आप मुझसे वही करवाएँ, जो मुझसे हो सके।''

''क्यों, इतनी बुलंदी के साथ देश-भर में भाषण देते फिरने वाले आदमी से एक छोटा-सा अखबार का संपादन नहीं हो सकता?''

''मुझ अपनढ़ से तो नहीं हो सकता?''

''तुम अपने को अनपढ़ क्यों कहते हो?''

''चाचाजी! जो हूँ वही कह रहा हूँ।''

''तुम जानते हो अनपढ़ किसे कहते हैं?''

''जो पढ़ा-लिखा न हो।''

''नहीं, अनपढ़ उसे कहते हैं जो बहुत पढ़ा-लिखा होकर भी यह नहीं जान पाता कि आदमी को आदमी के शोषण को कोई अधिकार नहीं।''

हरि हँस पड़ा।

''क्यों इसमें हँसने की क्या बात है? तुम्हें अखबार का संपादन करना ही होगा। जो आदमी हजारों लोगों के बीच बोलकर उन्हें प्रभावित कर सकता है वही अपनी लेखनी से उस प्रभाव को और बढ़ा भी सकता है।''[5]

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशसीय समाज की प्रगति स्पष्ट रूप से दर्ज होती चली जाती है। वे अपने उपन्यासों में एक गरीब मजदूर के शोषण से उसके विरोध क्रांति, विकास शिक्षा, सरकारी तंत्र की अनसुनी भेद भाव को झेलता गिरमिटिया मजदूर पढ़ लिखकर विकास करता हुआ अध्यापक, राजनेता है। संगठन बनाते हुए विधानसभा तक जाने की तैयारी, हड़ताल और आंदोलन से अपने मांगों को मनवाकर अपने अधिकार की ओर सजग मजदूर वर्ग अब शोषण ना सहकर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए छोटे-मोटे व्यापार कर अपने समाज के सुधार में प्रयत्नशील

[5] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 159-160

है। सहदेव ठाकुर और हरि के वार्तालाप से अनत मॉरिशस में प्रवासी भारतीयों की अपनी पहचान बनाने के लिए चलाए गये संघर्ष को प्रस्तुत करते हैं कि किस प्रकार अखबार, पत्र, पत्रिका, पोस्टर, चित्रों द्वारा लोगों में जागृति लाने का प्रयास किया जा रहा है। मजदूरों को संगठित कर भाषण देने के अलावा यहाँ पर इस समाज में नई पीढ़ी जो पढ़-लिखकर आगे बढ़ने में विश्वास रखती है, उसे पत्र-पत्रिकाओं द्वारा अपने हालात सुधारने के इस संघर्ष में अपना योगदान देने की प्रेरणा हेतु लेख, चित्र आदि से आंदोलन को सशक्त करते हैं।

''अखबार में नवयुवकों के दो लीडरों की गिरफ्तारी पर विशिष्ट लेख था। उन दोनों में से एक रवि का अध्यापक था। दिनेश जानता था कि यह सूचना रवि के लिए सदमा है। अपने इसी अध्यापक से प्रभावित रवि 'यंग रिबेल्स' का एक सदस्य था। गांव में इस आंदोलन की जो प्रांतीय सभा थी, उसका रवि ही मंत्री था। शुरू में दयानंद और विनेश दोनों ने मिलकर उसे उस सभा में शामिल होने से मना किया था। दोनों ने यही कहा था कि आज तुम पढ़ लिख रहे हो, कल सरकार में नौकरी की आवश्यकता होगी, अत: क्रांतिकारियों के बीच पड़ना तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। दोनों मित्रों के इस परामर्श का उसने केवल इतना ही उत्तर दिया था, ''आदमी के लिए केवल सरकारी नौकरी ही सब कुछ नहीं।'' उसके लिए अपने अध्यापक की यह बात सभी बातों से भारी थी कि आखिर वह सुबह होकर ही रही जब नौजवानों की अपनी गहरी नींद से जागना था। इस नींद के न टूटने का मतलब जीवन भर अंधेरे में रहना होगा।

रवि के भीतर यह बात घर कर गयी थी कि यह अधिकार का क्रूशेड है। इससे दूर रहना कायरता होगी। दयानंद और विनेश के हताश करने पर उसने आपसे बहुत सारे तर्क किये थे। उसकी अपनी सबसे बड़ी दलील यह थी कि अगर यह आंदोलन नादानी होता तो फियास्को बनकर रह जाता, पर यह तो हर सीमा को तोड़ता हुआ विश्व भर में जड़ पकड़ता जा रहा है। इसमें सक्रिय भाग लेने से पहले उसने अपने आपसे कहा था, शिथिल नदी के बीच यह एक नदी धारा है, इसे बहना ही

होगा। यह मात्र मेरे देश का स्वर नहीं, विश्व भर का स्वर है। इसके सामने कोई भी शासन अधिकार देर तक बहरा नहीं रह सकता।''[6]

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यास आंदोलन में मॉरिशसीय समाज में प्रवासी भारतीयों के संघर्ष से समाज में आये परिवर्तन आने वाली पीढ़ी केवल पढ़ लिखकर सरकारी नौकरी पाकर अपने आर्थिक स्तर में सुधार पाकर भीरु बन सब कुछ चुपचाप सहने के पक्ष में नहीं हैं। वे उपन्यास के विरोध में अपने लोगों की मेहनत को सही पहचान दिलाने, शोषितों की मदद के लिए अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के हित में कार्यरत रहने वाले युवा के प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया है। जैसा कि प्रगतिशील होना यानी निरंतर प्रगति होना प्रवाहमान होना बिना किसी अवरोध के आगे बढ़ना वैसा ही यह अपने आंदोलन को केवल मॉरिशस के समाज, प्रवासी भारतीयों तक सीमित ना मानते हुए उसे केवल अपने देश की समस्या ना समझकर सारे विश्व भर की समस्याओं पर विचार कर विश्व भर के लिए समस्या बनी नीतियों के विरोध में लड़ने को हमेशा तत्पर रहना चाहता है। अन्याय, शोषण, अत्याचार, अप्रगतिशीलता का विरोधी  स्तर से विश्व भर में जागृति लाने की कामना करता है। इन अधिकारों के संघर्ष की गूंज सारे विश्व में गुंजे तथा शोषण अन्याय का विरोध समाज की प्रगति समानता के भाव की कल्पना करता है। इस प्रकार अनत समाज में व्याप्त रूढ़ी पुरानी परंपरा का भी विरोध करते हुए अपने उपन्यासों में देखे जतो हैं। जहाँ शिक्षा, समानता, एकता जैसे गुणों को महत्व दिया है। समाज में विज्ञान की ज्ञान की प्रगति दर्शाई है जैसे धनेश का खेतों में ट्रांजिस्टर सुनना, लड़के लड़कियों का कॉलेज तक पढ़ाई करने शहर जाना आदि अनेक सामाजिक गतिविधियों में शादी ब्याह प्रेम संबंधों में जाति-पांति का विरोध जिसकी चर्चा चौथे अध्याय में हम कर चुके हैं। गिरमिटिया मजदूर से मॉरिशस के संविधान में अपना स्थान बनाना बड़े-बड़े सरकारी पदों को हासिल कर इस देश के विकास में अपना सकारात्मक योगदान देने का भारतीयों का संघर्ष इन्हें प्रगतिशील

[6] आंदोलन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 26-27

बनाते हैं। मॉरिशस की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान बना पाने की भारतीयों के संघर्ष की अभिव्यक्ति अनत के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना बनकर उजागर हुई है।

**5.1.2 शिक्षा का महत्व**

किसी भी देश, समाज उसकी संस्कृति की प्रगति तब ही हो सकती है जहाँ शिक्षा का अपना एक वर्चस्व हो। जहाँ ज्ञान का उजियारा हो, वहाँ अंधकार रूपी अज्ञान का शमन होता है। ज्ञान का प्रकाश चीजों को स्पष्ट कर अच्छे और बुरे के अंतर को स्पष्ट कर देता है। अज्ञानता के अंधकार को दूर करके ही मनुष्य अपने स्थिति को पहचानता है, गुलामी, दासता के अंधकार को पार कर ज्ञान से समानता, अधिकारों की रक्षा तथा विकास के लिए संघर्ष कर आगे बढ़ता है। ज्ञान और शिक्षा के अभाव में मनुष्य का जीवन निरर्थक है। इस अज्ञानता के साथ इस अभाव के चलते मजदूरों से जानवरों जैसा व्यवहार करने पर भी वे दासता, गुलामी को अपनी नियति समझकर शोषण का शिकार होते हैं। अत्याचार स्वीकारते हुए जीवन यूं ही नष्ट कर देते हैं। संसार के इतिहास में चाहे वह कोई भी क्रांति रही हो उसके पीछे शिक्षा और ज्ञान का विशेष महत्व है। जब तक मनुष्य पढ़ लिखकर संसार में कहाँ कैसे क्या हो रहा है, मानव के अधिकार क्या हैं। इनके हित में किस प्रकार के कानून बने हैं। नहीं जानता यूं ही शोषित रहता है। इसलिए पूंजीपति दमनकारी वर्ग नहीं चाहता कि ये शिक्षित होकर अपने अधिकारों को जान पाए, वे समाज, देश संसार में आये परिवर्तनों से इन्हें हमेशा अनभिज्ञ रखना चाहते हैं। ऐसा ही मॉरिशसीय भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ हुआ है, इनकी अज्ञानता का फायदा उठाकर उन्हें शर्तबंद दास बनाकर भारत से मॉरिशस लाया जाता है। उनपर कड़े नियमों वाले कागज पर हस्ताक्षर ले लिए जाते हैं और इन्हें धोखे में रखकर इन्हें इतनी दूर शोषण अत्याचार सहने के लिए भेड़ बकरियों की तरह दलालों के द्वारा इनका सौदा कर इस वीरान टापु पर ला छोड़ा जाता है जिससे संघर्ष करते हुए शिक्षा प्राप्त कर अपने अधिकारों को जानकर उसेप्राप्त करने में इनकी पीढ़ियाँ निकल गयी तब इन्हें अधिकार किश्तों में प्राप्त हुए। उनकी इतनी लंबी दासता का एक प्रमुख कारण इनका शिक्षा के महत्व को न पहचान पाना जिस कारण इनमें जागरूकता ला पाना बड़ी टेढ़ी खीर साबित

होता था। और बिना शिक्षा और ज्ञान के ये यूं ही छले जाते रहे। इस सत्य को केवल अनत के उपन्यासों में ही नहीं दिखाया गया है, इसके साक्ष्य मॉरिशस के इतिहास से भी प्राप्त होते हैं।

''जिस प्रकार से अर्काट (एजेंट) भारत के गाँव-गाँव और शहर-शहर से भोले भारतीयों को मॉरिशस लाया गया। ये एक इकरारनामे पर हस्ताक्षर करके यहाँ भेजे जाते थे। इस प्रकार से ये मजदूर लगभग गुलाम बन जो थे। यह इकरारनामा पाँच साल के लिए होता था, जिसे शर्तबंद प्रथा की संज्ञा दी जाती है। बेचारा अनपढ़ मजदूर इस इकरारनामे पर हस्ताक्षर करके प्राय: अर्ध दास बन जाता था।''[7]

शिक्षा का ज्ञान ना होना एक मनुष्य को किसी की गुलामी कर दासता का जीवन शोषण सहते हुए व्यतीत करने को मजबूर कर देता है। इस समस्या की बड़ी ही यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में दिखाई देती है जो जनता को शिक्षा का महत्व समझाती है। अज्ञानता से होने वाले खतरों से अवगत कराती है। शिक्षा के द्वारा ही मजदूर वर्ग अपने अधिकार जानकर शिक्षा को महत्व देते हुए देश दुनिया का ज्ञान प्राप्त कर सके। फ्रांस का विरोध, उसके आंदोलन से प्रेरणा प्राप्त कर अपने अधिकारों के प्रति सजग होते चले गये। यह शिक्षा समृद्ध समाज के लिए आभूषण के समान है। क्योंकि उस समाज की समृद्धि में यह और निखार लाती है तो विपत्ति में शिक्षा ही समाज में नई उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हुए विकास को आश्रय देती है।

''आज दस साल बाद परकाश मान बैठा है कि उस बस्ती के बाहर भी एक दुनिया थी। वह जो कुछ पुस्तकों और अखबारों में पढ़ता आ रहा था उसे तो वह एक दुनिया मान ही बैठा था लेकिन अपनी दुनिया से अलग जो दुनिया उसे दिखाई देने लगी थी वह उन बड़े और समृद्ध लोगों की दुनिया थी जो उसकी अपनी दुनिया से एकदम भिन्न थी। उस जीवन की कुछ झलकियाँ वह देख चुका था। उसके अपने लोगों से बिल्कुल मेल न खाने वाला था वह जीवन। दो दुनियाओं के उन दो जीवनों में जमीन आसमान का फर्क था।

---

[7] मॉरिशस का इतिहास - प्रह्लाद रामशरण, पृ.सं. 65-66

उसने जो प्रश्न प्रेम सिंह से किया था वही मदन से भी किया। दोनों उत्तर उसे नहीं भाये थे। वह गरीबों की दुनिया और धनियों की दुनिया के बीच खड़े होकर जब गौर करने लग जाता तब उसे बार-बार अपने कानों में गांधी जी के वाक्य झनझनाते हुए प्रतीत होते। गांधी जी बोले थे कि आपके बच्चों को उचित शिक्षा मिलनी चाहिए आप लोगों को राजनीति में भी भाग लेना चाहिए।''[8]

भारत से मॉरिशस पहुँचे शर्तबंद मजदूरों में कुछ पढ़ना लिखना जानने वाले मजदूरों में केवल हिन्दी भाषा था फिर उनके प्रांत की भाषाका ही ज्ञान था, जिसमें वे केवल अपने धार्मिक ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत आदि का पाठ किया करते थे। और इस ज्ञान को बनाए रखने के लिए वे अपने बच्चों को हिन्दी भाषा की शिक्षा घर पर ही देते थे। इसकी सिलसिले के चलते प्रेम सिंह और मदन के पास अपने पूर्वजों के अनुभव उनकी आप बीती पढ़ते-पढ़ते प्रकाश के मन में ज्ञान और शिक्षा के प्रति गहरा लगाव हो गया जिससे वह अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने में भी रुचि रखने लगा और पराए देश की भाषा से क्या मिलेगा? हम तो यहाँ पैसा कमाने आए हैं वाली मानसिकता कब की खत्म हो चुकी थी। अब इस देश को संवारने के साथ-साथ भाषा को भी अपनाया गया था। इसलिए क्रिओली, फ्रेंच इन भाषाओं के प्रति भी प्रकाश जैसे देश के जागरूक नौजवानों में रूझान बतलाते हुए अभिमन्यु अनत ने शिक्षा के महत्व को दर्शाया है। प्रकाश जान गया है कि उसे गरीबों और धनवानों की दुनिया के बीच के अंतर को मिटाने के लिए उसे शिक्षा के महत्व को घर-घर तक पहुँचाना है। ज्ञान से ही इस भिन्नता को दूर करना है। वह अपने समाज के उत्थान में शिक्षा की नींव से ही विकास की इमारत खड़ी करना चाहता है। अपनी स्थिति औरों से भिन्न क्यों है, हमारे अधिकार क्या हैं, कैसे हम प्रगति कर सकते हैं, यह सब जानने के लिए शिक्षा का होना परम आवश्यक है। ऐसा ही संकेत मॉरिशस के मजदूरों की स्थिति पर चिंतन करते हुए गांधी जी ने भी यहाँ के समाज को दिया था कि अपने अधिकारों को जानने और उसके लिए संघर्ष करने के लिए शिक्षा और इसके द्वारा आंदोलन राजनीति आदि के द्वारा अपनी बात रख पाने में आप लोग सक्षम हो पाएंगे। क्योंकि गरीबी के कारण पहले

[8] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 105-106

बच्चों को छोटी उमर में ही खेतों में काम करना पड़ता था। अपने माता-पिता के साथ शिक्षा अधूरी छोड़ काम पर लग जाते थे।

‘‘आठ साल पहले जब वह प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई के तुरंत बाद नौकरी करने को मजबूर हुआ था तो खेतों के बीच कड़कती धूप में सरदारों की डाँट-डपट खाकर सप्ताह-भर अपनी माँ से छिप-छिप रोता रहा था।’’[9]

‘और पसीना बहता रहा’ उपन्यास में शिक्षा ना पूरी कर पाने, अपनी जिज्ञासा, ज्ञान पिपासा को शमित ना कर पाने का दर्द हरि जैसे क्रांतिकारी नेता के बचपन की यादों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपनी गरीबी के कारण अपनी माँ का साथ देने के लिए अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ देता है इस बात का रंज उसे हमेशा होता है। इसीलिए मॉरिशसीय गिरमिटिया समाज के उत्थान में योगदान देने वाले सभी क्रांतिकारी नेता शिक्षा के महत्व को प्राथमिकता देते हुए अपनी आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा से ज्ञान से वंचित नहीं रखना चाहते हैं।

‘‘अपनी अगर कोई चीज वहाँ थी तो वह थी वे हालात और सभी लोगों द्वारा उनका स्वीकार। वह केवल मदन था जिससे वह सुनता आ रहा था कि हालात को नकारना होगा। मदन जब किसान सिंह की कहानी सुनाना शुरू करता तो परकाश को लगता कि हालात को नकारने की प्रक्रिया बहुत पहले शुरू होकर भी असफल रही है। परकाश ने मदन से पूछा था, ‘‘ऐसा क्यों?
मदन ने कहा था, ‘‘अपनी कमजोरी की वजह से नहीं बल्कि उधर की शक्ति के कारण।’’
‘‘वह शक्ति इतनी बड़ी है?’’
उतनी बड़ी तो शायद वही है।’’
तो फिर?
‘‘उसे सुविधाएँ हासिल है। अवसर प्राप्त है। उसके साथ सहयोग है हुकुमत का भी और कुछ अपने लोगों का भी।’’

[9] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 39

''तो फिर ऐसी स्थिति में ....?''

''ऐसी स्थिति में हमें उस वर्ग के बराबर शिक्षा हासिल करनी है और शहर की उस बड़ी सभा में जहाँ विधान बनाये जाते हैं, अपनों को भी पहुँचाना है।''

''इसीलिए गाँधी जी ने कहा था ..... ?''

''हाँ, इसीलिए गाँधी जी बोले थे कि हमें अपने बच्चों को सही शिक्षा दिलानी है और राजनीति में भी भाग लेना है।''

परकाश ने उस वर्ग के बराबर न सही, पर उसके किसी भी व्यक्ति से तर्क-वितर्क कर सकने की शिक्षा तो पा ही ली है। यह केवल प्रेम सिंह के कहने पर नहीं, बल्कि खुद उसे अपने आप पर विश्वास था।''[10]

इस उद्धरण में मदन परकाश को किसन सिंह की कहानी सुनाते हुए बतलाता है कि जब वह भारत से मॉरिशस आये थे तो यदि कुछ अपना कहने को था तो वह उस समय की परिस्थिति जिसे वे अपना चुके थे। हालात से समझौता कर चुके थे, चाहे वह उनके पक्ष में हो या विरोध में। इसका विरोध सर्वप्रथम किसन सिंह ने बहुत पहले किया था। किन्तु उसके अपने लोगों में अज्ञानता, अशिक्षा के कारण वह सभी को जागरूक करने में उतना सफल नहीं हो पाया जितने वे शोषण करते थे। क्योंकि उनके पास शिक्षा जागरूकता, ज्ञान, हैसियत, अर्थ, सरकार सब कुछ था। जिस कारण हम इनसे बराबरी कर पाने में पीछे छूट जाते थे। इसीलिए, अब तो हमें शिक्षा के महत्व को समझना ही होगा। बच्चों को अच्छी शिक्षा, ज्ञान प्राप्त होगी तो ही ये आर्थिक समानता में कुछ अंतर आएगा और इज्जतदार काम करने को मिलेगा। कोड़ों की बौछार, गालियों से हीनता से बच पाएंगे। अपनी बात सरकार तक पहुँचाने में समर्थ हो पाएंगे। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाने में सक्षम हो पाएंगे जिसकी सुगबुगाहट परकाश के शिक्षा प्राप्त कर जागरूक विचारधारा समाज के उत्थान के लिए आंदोलन संघर्ष करने की कामना अपने अधिकारों को लेकर तर्क-वितर्क करने की क्षमता में ही

---

[10] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 106

देखी जा सकती है। अभिमन्यु अनत ने अपने इस उपन्यास में परकाश के छुटपन से ही पूछे गये सवालों के माध्यम से शिक्षा के महत्व को इस उपन्यास के केन्द्र में रखा है। जहाँ इनके आंदोलन को सशक्त करने के लिए उसकी प्रगति के लिए इन लोगों का शिक्षित होना परम आवश्यक है। इस पक्ष को परकाश के द्वारा द्योतित किया है, उजागर किया है।

''उसने दस-पन्द्रह बच्चों को उस बड़े गाँव के स्कूल से लौटते देखा था। ''चाचा! हमारे गाँव के बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाते?''

''तुम लोगों की पढ़ाई तो गाँव में ही हो जाती है। मदन चाचा भी तुम्हें पढ़ाता है।''

''हम लोग स्कूल थोड़े ही जाते हैं। हम तो बैठका में पढ़ते हैं।''

''बैठका ही को तो अंग्रेजी में स्कूल कहा जाता है। फ्रेंच में उसे लेकोल कहते हैं।''

''यही अंग्रेजी-फ्रेंच हमें भी क्यों नहीं पढ़ाई जाती?''

''ये बड़े लोगों के बच्चे पढ़ते हैं।

आज भी उसकी माँ बड़े लोगां की बात कर गयी। वह फिर सोचने लगा। तो एक तो बड़े लोग वे हैं जिनके पास बहुत पैसा है और जिनके बच्चे स्कूल जाते हैं अंग्रेजी फ्रेंच पढ़ने और दूसरे बड़े लोग बस्ती के वे लोग हैं जो उस दिन देवराज चाचा को कुत्तों द्वारा नोचे जाते देखते रह गये थे। उसने आँखें खोलकर माँ को देखा। एक सूखी मुस्कान के बाद बोला तुम सो जाओ माँ।''

''पहले तुम सो जाओ, फिर मैं सोऊँगी।''

''एक बात पूछूँ तुमसे?''

तुम उन बातों को अपने दिमाग से निकाल दो।''

''किन बातों को?''

''देवराजा चाचा.....।''

''नहीं माँ मैं चाचा के बारे में नहीं कह रहा तुमसे एक दूसरी बात पूछना चाहता हूँ।''

कौन सी बा?त

एक दिन मैं भी बड़ा बनूंगा न गाँव के मन चाचा, धनलाल चाचा और फरीद भैया की तरह?

जरूर

क्या मैं उन लोगों की तरह भी बड़ा बन सकूंगा जिनके बच्चे अच्छे-अच्छे कपड़ों में स्कूल जाते हैं?''[11]

इस सारे वार्तालाप में अभिमन्यु अनत ने परकाश के छोटे से मन में उठने वाली जिज्ञासाओं के माध्यम से मॉरिशसीय गिरमिटिया मजदूर समाज में शिक्षा के महत्व को पहचान कुछ जागरूक नौजवानों द्वारा अपने गाँव की बैठकों में ही हिन्दी भाषाका ज्ञान देने का उल्लेख किया है। जो शिक्षा की ओर पहला कदम है, किन्तु उन बड़े लोगों से अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए उन्हें उनकी भाषा का भी ज्ञान होना है, जागरूक विचारधारा भी होना आवश्यक है, इस पर प्रकाश डाला है। प्रकाश के बाल मन में सवाल उठता है कि उन बच्चों की तरह हमें अंग्रेजी और फ्रेंच की शिक्षा क्यों नहीं दी जाती। ये बड़े लोग कौन हैं, जिनके बच्चे सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहने अंग्रेजी और फ्रेंच पढ़ने जाते हैं। जिनके पास बहुत पैसे हैं। हम ऐसे कयों नहीं? बड़े लोग तो बस्ती में भी कहे जाते हैं पर बस्ती के वे बड़े लोग उस दिन देवराज चाचा को कुत्तों के द्वारा नोचे जाता देखते रह गये थे। उन्होंने उसका विरोध क्यों नहीं किया इस द्वंद्व के चलते वह अपनी माँ से कहता है कि मैं एक दिन बड़ा बनूँगा लेकिन वह चुप रहकर तमाशा देखने वालों जैसानहीं, वह तो मदन, धनलाल और फरीद जैसे क्रांतिकारी नौजवानों जैसा जागरूक बनना चाहता है। उसके मन में यह भी इच्छा जागती है कि वह ऐसा बड़ा बने कि वह भी अंग्रेजी फ्रेंच का ज्ञान प्राप्त कर अपने आर्थिक सामाजिक स्तर में सुधार ला सके। इन सारी जिज्ञासाओं के माध्यम से अभिमन्यु अनत मॉरिशस समाज में मजदूरों की बदलती विचारधारा प्रगति की कामना को पूरा करने की चाह में शिक्षा की शुरूआत और उसका उनकी सोच पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाते हैं।

[11] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 26-27

‘‘आप लोगों से मेरा एक दूसरा अनुरोध है। इस देश के भारतीय मजदूरों के बच्चों को भी मैं देख रहा हूँ। अभी-अभी आपके एक बच्चे की दिलेर आवाज मैंने सुनी। ये बच्चे मेधावी हैं। इन्हें सही शिक्षा की आवश्कयता है। आप जी जान से अपने बच्चों को पढ़ाइये। ये ही इस राष्ट्र के सर्वस्व होंगे। इस देश के स्कूलों में हरेक बच्चे के लिए जगह होनी चाहिए। वह शिक्षा ही है जो आपके बच्चों को किसी के भी सामने खड़े हो पाने की शक्ति दे सकती है।’’

मदन के अपने भीतर योजनाएँ और उनकी उमंगें हिलोरें लेने लगी। उसके मन में आया कि वह दौड़कर उस मसीहा के चरणों का स्पर्श कर ले।

लौटते समय मदन रास्ते भर गाँधी जी की कही दो आखिरी बातों को सोचता रहा। वही इच्छा कभी किसन सिंह ने भी व्यक्त की थी- हमारी छोटी-छोटी सभाआं से तब तक कुछ नहीं हो पायेगा जब तक कि उस बड़ी सभा में हमारे लोग बैठने के हकदार नहीं होते। उस राजसभा में हमारा तो कोई नहीं है जो हमारे लिए बोल सके। ..... मदन सुनता आ रहा था कि भारतीय वंशजों के बीच कई पढ़े-लिखे लोग हैं। वकील, डॉक्टर भी होने लगे हैं। ये लोग उस बड़ी सभा में पहुँचने की क्यों नहीं सोचते? एकाध बार बस्ती में कुछ लोग आये थे। अपने को मजदूरों का नेता बताते थे। इन लोगों को उस सभा में होना चाहिए था। इन लोगों के केवल बाहर से चिल्लाते रहने से क्या होता है?

गाँधी जी की बातों ने उसे सचमुच ही झकझोर दिया था। वह अपने-आपसे पूछता रहा - क्या गाँधी जी की इस बात का असर पढ़े-लिखे लोगों पर होगा? और अगर सचमुच वे लोग गाँधी जी की बात मानकर राजनीति में हिस्सा लेना चाहेंगे तो उन्हें लेने दिया जाएगा? चिनासामी तो कहता था कि उस राजसभा के सदस्य केवल गोरे होते हैं। ऐसी स्थिति में भारतीयों को वहाँ प्रवेश मिलेगा?

और वह दूसरी बात भी उसे तिलमिला गयी थी - इस देश के स्कूलों में हरेक बच्चे के लिए जगह होनी चाहिए। क्या यह संभव हो सकता है? स्कूलों में तो केवल धनी लोगों के बच्चे होते हैं -

मालिकों के सरदारों के। इलाके में एक ही स्कूल है - तीन मील की दूरी पर। उसमें सभी बच्चों को जगह मिलना भी तो मुमकिन नहीं।''[12]

जैसे कि इस उपन्यास का शीर्षक ही 'गाँधी जी बोले थे' रखा हुआ है, इसी से प्रतीत होता है कि रचनाकार कहीं न कहीं गाँधीवादी विचारधारा का भी सम्मान करता है। क्योंकि वे ज्ञान की शक्ति से ही इस संघर्ष को सही ढंग से आगे बढ़ाने का पथ प्रदर्शन करते हें। एक विकासशील प्रगतिशील समाज के लिए उसमें रहने वाले लोगों का शिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। इनके आंदोलन को प्रोत्साहन देते हुए गाँधी जी इनको कई समस्याओं पर प्रकाश डालते हें। और उसका निवारण शिक्षा के माध्यम से ही मानते हैं। और उन्हें अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों भाषाओं को सीख संसार में क्या चल रहा है, कैसे आगे बढ़ना है इन सब समस्याओं का कैसे सामना किया जाए आदि से इनका पथ प्रदर्शन करते हैं। गाँधी जी से प्रेरणा प्राप्त कर मदन अपनी वर्तमान स्थिति और भविष्य को सुधारने की चिंताएं लिए गाँधी जी के कहे अनुसार इस देश में अपने हालात सुधारने के संघर्ष के लिए बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए कमर कस मेहनत करना चाहता है। सारे उपन्यास में अन्याय, शोषण का विरोध संगठन मजदूर यूनियन, हड़ताल, विरोध क्रांति, कुली मजदूरी छोड़ अन्य छोटे मोटे कार्य कर मिल मालिकें का विरोध, संघर्ष, क्रांति आंदोलन को अभिव्यक्त किया है। किन्तु अपनी बात को आसानी से उन गोरे मालिकों तक पहुँचाने के लिए उनकी भाषाएं भी सीखकर जागरूकता लाने वाले तथा ज्ञान को प्राप्तकर अपने आंदोलन को और अधिक बलशाली बनाकर ही अधिकारों की लड़ाई जारी रखनी है। ज्ञान को अत्यधिक महत्वपूर्ण बतलाते हुए गाँधी जी मॉरिशसीय समाज को प्रगति पथ पर ले जाने वाले पथ प्रदर्शक के रूप में, मसीहा के रूप में, मॉरिशसीय समाज पर अपनी छाप छोड़ देते हैं। जिससे प्रेरित होकर मदन और दाऊद घर-घर पहुँच कर लोगों को शिक्षा का महत्व बतलाते हुए उन्हें बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रकाश भी सरकारी स्कूल में शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए अपने छात्रों को अन्याय के विरूद्ध

[12] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 67-68

जागरूक करता है। शिक्षा का महत्व उन्हें समझाता है। अपना संघर्ष जारी रखते हुए अपनी आवाज सरकार तक पहुँचाने के लिए उनकी बात समझ पाने और समझा पाने वाले बंधन को लेकर अपने आंदोलन की पहली विजय प्राप्त करते हैं।

''छठी कक्षा की उस प्रथम परीक्षा के परिणाम आते ही मुख्य अध्यापक ने आधे दिनकी छुट्टी कर दी थी। बावन बच्चों ने उस परीक्षा में भाग लिया था। पैंतालीस बच्चे सफल आये थे। गाँव में परकाश का सबसे अधिक खुश होना भी उतना ही स्वाभाविक था। स्कूल की छह साल पढ़ाई का यह बहुत ही अच्छा नतीजा था। छह साल पहले जब स्कूल शुरू हुआ था तो मुख्य अध्यापक से प्रकाश ने सुना था कि मलबार के बच्चों को पढ़ाना गाँधी जी को जाम चटाना है। वह कहता था- पू फेर मलबार लीर कुमाँ जीर फेर बुरीक माँज लाजले। सा बान मांजेर लालो सा .... पर उसकी बात झूठ प्रमाणित हो गयी थी, इसकी प्रकाश को सबसे अधिक खुशी थी। उसके मन में आया था कि दौड़ जाये उस अध्यापक तक और कहे कि ज्ञान किसी जाति विशेश की बपौती नहीं हुआ करता। शरीर से कमजोर हमारे बच्चों ने बता दिया है कि बुद्धिसे वे कतई कमजोर नहीं हैं।

परकाश ने मदन को साथ लेकर गाँव के सफल होने वाले एक-एक बच्चे से मिलकर बधाई दी थी। असफल रह गये बच्चों से भी वे मिले थे और उन्हें आगे के लिए हौसला दिया था। गाँव अब छोटी-सी बस्ती के रूप में नहीं रह गया था। इधर छह वर्षों में उसमें विस्तार भी था और बदलाव भी। अदालत के उस लम्बे मुकदमें के बाद गोरे मालिक को जमीन के वे भाग भी छोड़ने पड़ गये थे जिन पर वह जाली कागजातों के साथ कब्जा किये बैठा था। उस ऐतिहासिक जीत पर बैरिस्टर बूधन का गाँव में बहुत बड़ा स्वागत हुआ था। उसी दिन बूधन ने परकाश को पंडित किस्तु से मिलवाया था और तभी से परकाश ने आर्य पत्रिका में लेख लिखना शुरू किया था।''[13]

इस सारे उद्धरण के घटनाक्रम को देखने से ही प्रतीत होता है कि शिक्षा का इस सारी प्रक्रिया में बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसके महत्व को पहचानने के उपरांत ही इनके आंदोलन को पहली जीत

---

[13] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 187-188

प्राप्त हुई थी। शिक्षित समाज अब मॉरिशस में मजदूरों के प्रगति की ओर निरंतर बढ़ता चला जा रहा था। अब तो गाँव-गाँव जागरूक होने चले गये यहाँ तक कि महिलाएं भी इस प्रगति पथ पर अग्रसर हो चली। वे गाँव के समाज के हित को अपने निजी सुख से अधिक महत्व देने लगी।

''लौट आने के बाद ही एक दिन उसने झुमकी मौसी से बात की और उससे कहा कि वह घर की बगल वाली इमारत को गाँव की सभी के नाम कर देने को तैयार हैं। बस उसी समय से वह इमारत गाँव का बैठका भी थी और गाँव के बच्चों की पाठशाला भी।''[14] ऐसी ही बैठका इनके लिए नई सोच लाने नई-नई चीजें सीखने और समझने के काम आती है, जैसे रेडियो से पूरी दुनिया भर की खबरें जानना, ज्ञान के साथ मनोरंजन का भी आनंद लेना आदि। लेखक ने शिक्षा का महत्व बतलाते हुए अपने उपन्यासों में गाँव के गरीब परिवेश में भी लोगों में शिक्षा का महत्व अच्छी तरह से समझ में आ गया है। वे अपनी दयनीय अवस्था में भी शिक्षा को ग्रहण कर आगे बढ़ने की कामना रखते हैं।

''यह भाग्य की बात नहीं, क्योंकि मैंने सोच लिया है कि तुम्हें पढ़ाकर रहूँगी। मैं परिश्रम की आदी हूँ तुम्हारी पढ़ाई के लिए मैं इससे भी अधिक मेहनत कर सकती हूँ। और फिर माँ भी यही कहती है कि तुम्हारी पढ़ाई पूरी होकर रहेगी। चाहे हमें एक जून खाना न मिले, कोई बात नही।''[15]

इस उपन्यास में पिता की मृत्यु के उपरांत गरीबी, भुखमरी के चलते वीणा रातों में मेहनत कर अपने छोटे बहन भाई को पढ़ाती है। छोटी बहन को अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए शहर भेजती है। अमीर गरीब, साधारण जनमानस क्रांतिकारी नेता सभी में शिक्षा के प्रति विशेष रुचि तथा उसके महत्व को समझ विकास की ओर बढ़ने की कामना अभिमन्यु अनत दर्शाते हैं।

''उसके अपने मन में भी यह अभिलाषा थी कि छायो इन झंझटों में न पड़कर पढ़े-लिखे और सचमुच ही कुछ बने। गाँव की एक लड़की सरकारी अध्यापिका थी, दूसरी अस्पताल में परिचारिका और तीसरी शहर के किसी दफ्तर में काम करती थी। प्रभा चाहती थी कि उसकी छोटी बहन भी कम

---

[14] लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 49

[15] चौथा प्राणी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 131-132

से कम उन लड़कियों जैसी बन जाये।''[16] गाँव का मध्य वर्गीय खेती किसानी जमींदारी करने वाले सभी ने शिक्षा के महत्व को बखूबी जाना था, चाहे वह अमीर हो गरीब हो सभी के बच्चों में शिक्षा ग्रहण करने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने की मंशा जागृत हो गई थी। हर कोई इज्जत से रोटी कमाने की चाह लिए अध्यापक, परिचारिका आदि के पदों में भर्ती होकर अन्याय और शोषण के जीवन से मुक्त होकर शिक्षा को महत्व देते हुए खुशहाल जीवन जीना चाहते थे। शहर हो या गाँव माँ बाप को अधिक परिश्रम कर अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहा है। ''अपने बड़े बेटे और उसके बाद की दो लड़कियों को सहदेव सिंह तीसरी चौथी कक्षा से आगे नहीं पढ़ा सका था मगर उसके बाद के तीन बच्चों को पढ़ाने में उसने जरा भी आनाकानी नहीं की थी। उसका चौथा लड़का धनंजय कॉलेज की दो-तीन कक्षाओं तक पढ़कर इस समय नगरपालिका की ओर से मजदूरों का सरदार था जबकि अशोक और अरुणा दोनों अब भी कॉलेज में पढ़ रहे थे।''[17]

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मॉरिशस समाज की प्रगति में शिक्षा का विशेष योगदान बतलाया है जिस के महत्व को सारा समाज सर्वोपरि मानता था और इन गिरमिटिया मजदूरों के बच्चे आगे चलकर इस देश में सर्वप्रतिष्ठित पदों पर विराजित होकर अपने देश की प्रगति अपने समाज की प्रगति में विशेष योगदान देते हुए इनके उपन्यासों में देखे गये हैं। जैसे 'शब्द भंग' में पत्रकार, 'चुनचुन चुनाव' में स्वस्ति 'चलती रहो अनुपमा' में अपने बिजनेस में तरक्की करते हुए व्यापारी आदि पात्रों द्वारा शिक्षा के लिए अपना योगदान और उसके महत्व को सर्वाधिक दिखलाया है।

**5.1.3 हिन्दी भाषा का विकास**

मॉरिशस में रहने वाले भारतीय मजदूरों के संग भारतीय भाषा, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज आदि सामाजिक मूल्यों को भी उस नए देश में फिर से स्थापित और फलने फूलने के लिए कड़े संघर्ष से गुजरना पड़ा। मॉरिशस में रह रहे भारतवासियों ने हर हाल में यातनाएँ सहते हुए अपनी भाषा संस्कृति की न केवल रक्षा की अपितु उसके विकास के लिए जो कुली-मजदूर के रूप में मॉरिशस

---

[16] जम गया सूरज - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 55

[17] तीसरे किनारे पर - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 16

पहुँचे वे चाहे किसी भी प्रांत के रहे हों बिहारी, बंगाली, तमिल, तेलगु आदि जहाज पर सब अलग-अलग होते हुए भी  एक जहाजी भाई भारतीय थे। जिस कारण आपस में हिन्दी भाषा में ही अधिक बोलचाल होता औरआगे चलकर भी यही उनकी भाषा रही। जिसके लिए मॉरिशस सारे विश्व में जाना जाता है। प्रवासी भारतीयों में हिन्दी के लिए संघर्ष, उसका महत्व तथा उसकी स्थापना करने में आज भी अग्रणीय है।

''अठारहवीं शताब्दी के चौथे दशक से ही कैदियों, कारीगरों, कुली-मजदूरों के रूप में भारतीयों का मॉरिशस पहुँचना आरंभ हो जाता है। जिनमें हिन्दी-उर्दू, बंगला, तेलुगु, तमिल तथा मराठी भाषियों का समावेश था। चूँकि इनमें बहुतायत हिंदी बोलने वालों की थी इसलिए संप्रेषण की अनिवार्यता ने हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में इनके बीच स्थान दिया। फलत: मॉरिशस विश्व का ऐसा पहला देश बना जहाँ समस्त भारतवंशी हिन्दी जानते, समझते और बोलते हैं। यहाँ के भारतवंशियों की हृततंत्री से यदि भारतीय संस्कृति की लय गूँजती है तो उनकी वाणी से हिन्दी भाषा अपने प्रयोग वैविध्य के साथ मुखर होती है।''[18] और इस वैविधता को एकता के सुर में बांधता अभिमन्यु अनत का रचना कर्म। इनकी साहित्यिक कृतियों में हिन्दी भाषा तथा उसको बनाए रखने के लिए किये जाने वाले यथार्थ को अभिव्यक्त करता है। इन्होंने अपने साहित्य कर्म द्वारा अपने देश में भारतवंशियों के संघर्ष, भाषा संस्कृति को बनाये रखने के उनके निरंतर प्रयासों को वाणी दी है। हिन्दी भाषा को मॉरिशसीय समाज में एक विशेष गौरव प्रदान किया है। जिस मजबूरी और बेबसी के कारण गिरमिटिया मजदूर गुलामी कर उसे ही अपनी नियति समझते थे उससे आगे की सोच आने वाली पीढ़ियों में दिखाई देने लगी। उन्होंने पढ़-लिखकर अपना भविष्य संवारने, अपनी भाषा को महत्व देने का छोटा-सा प्रयास घर से चोरी छिपे आरंभ किया।

[18] हिंदी का विश्व संदर्भ - डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, पृ.सं. 21

‘‘उसी घर में चोरी चुपके किसन ने अक्षर और शब्द पहचाने थे। बस्ती के और भी कुछ लोगों को जतन ने पढ़ना सिखाया था। कभी झूठ न बोलने वाले जतन को जब लंगड़वा साहब के सामने खड़ा किया गया था तो उस दिन पहली बार उसने साहब के इस प्रश्न का झूठा उत्तर दिया था।

‘मना करने पर भी लोगों को तुम अपने घर के भीतर पढ़ाते हो?’

‘‘नहीं माई बाप!’’

यह उसके जीवन का एकमात्र झूठ था जो हर वक्त उसके ऊपर बोझ-सा बना रहा। जतन थोड़ा-बहुत रामायण गुनगुना लेता था। हनुमान चालीसा की चौपाइयाँ उसे कंठस्थ थी। किस्से-कहानियों की एक-दो पुस्तकें भी वह पढ़ लेता था। इसी के बल उसे शब्दों का थोड़ा-बहुत ज्ञान औरों से अच्छा ही था।’’[19]

इस प्रकार गुलाम मजदूर समझे जाने वाले प्रवासी भारतीयों में शिक्षा की ज्योति जलाने की पहल हो पाई। जतन की मृत्यु के बाद किसन ने उसकी अंतिम इच्छा बैठका का निर्माण कर उसमें बच्चों को अक्षर ज्ञान और अपनी मातृभाषा तथा नई प्रेरणा स्फूर्ति देने वाले ग्रंथ किस्से कहानियों से नई पीढ़ी को संघर्ष के लिए तैयार करने की पहल हो चुकी थी। जहाँ धार्मिक ग्रंथों के पाठ करने पर कोड़ों की बौछार होती थी वहाँ चोरी चुपके ही सही ज्ञान का प्रकाश उदित होने लगा था। सभी भाषाओं से सरल और अभिव्यक्ति के लिए भाषा अपनी भाषा अपने देश की भाषा तथा मातृभाषा होती है। पहले इस का प्रचार प्रसार आवश्यक हो इस बात पर जोर दिया जाने लगा जिसकी चर्चा अनत के उपन्यासों में ‘एक बीघा प्यार’, ‘लाल पसीना’, ‘कुहासे के दायरे’ आदि अन्य उपन्यासों में प्रचुर मात्रा में देखा गया है। जहाँ बैठकाओं में मजदूरों के बच्चों को हिन्दी का ज्ञान दिया जाता था। चाहे उनकी मातृभाषा जो भी हो।

‘‘कथित समय में जिन लोगों को भारत के मुम्बई, मद्रास और कलकत्ता के बंदरगाहों से मॉरिशस भेजा गया उनमें मुम्बई बंदरगाह से मराठी भाषी, मद्रास से तमिल और तेलुगु भाषी तथा

[19] लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 68

कलकत्ता से भोजपुरी व अवधी बोलने वालों का शुमार विशेष रूप से था। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक एकता, गरीबी, सहानुभूति तथा भाषिक संप्रेषण के प्रश्न ने उनमें सौमनस्य का भाव पैदा किया। वे जाने-अनजाने भावनात्मक एकता के कुछ संपन्न व्यापारियों ने पोर्ट लुई से वाणिज्यिक विनिमय आरंभ किया। साथ ही मद्रास और पांडिचेरी से जो प्रशिक्षित हस्तशिल्पी, कारीगर और अभियंता मॉरिशस भेजे गये उन्होंने भी अपने अथक परिश्रम, कौशल और कर्तव्यनिष्ठा से उस देश के विकास के लिए आधारभूत ढाँचा खड़ा करने में मदद की।''[20]

इस प्रकार भारतीयों की बढ़ी संख्या विभिन्न कार्य कौशल और परिश्रम के चलते वे अपने आप को स्थापित कर पाने के लिए आगे बढ़ते गये। अब सरकार की ओर से इन मजदूरों के बच्चों के लिए पाठशालाएँ खोली गयीं जिनमें ये भारत के सभी प्रांतों से मॉरिशस पहुँचे हुए लोग अपने बच्चों की सरकारी पाठशालाओं में अपनी भाषा हिन्दी का भी ज्ञान पाने के लिए भेजने लगे थे। मॉरिशस के नौजवान पढ़-लिखकर अपने गाँवों में नि:शुल्क हिन्दी शिक्षण द्वारा हिन्दी भाषा को बनाये रखने का संघर्ष जारी रखते हैं।

''हर रविवार को वह हिन्दी की माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने जाता है। यह नि:शुल्क काम लालमन भी कर चुका था।''[21]

इतना ही नहीं गाँव की लड़कियाँ भी पढ़-लिखकर गाँव का अपने समाज का उत्थान करने हेतु हिन्दी भाषा को बनाए रखने के लिए बच्चों में हिन्दी भाषा सिखाती और उन्हें हिन्दी साहित्य आदि के प्रति भी प्रोत्साहित करतीं। मॉरिशस के मजदूर समाज की प्रगति आरंभ होती है हिन्दी भाषा के शिक्षण से। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में ऐसे कई पात्र हैं जो गरीब मजदूर परिवार से पढ़ लिखकर अध्यापक की नौकरी प्राप्त करते हैं चाहे वह प्रकाश, धनेश, लालमन, मदन, भामा आदि सभी हिन्दी के अध्यापक के रूप में दिखाये गये हैं।

---

[20] हिंदी का विश्व संदर्भ - डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, पृ.सं.24

[21] जम गया सूरज - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 48

‘‘अपने घर से सटे खेत में सुखुआ प्याज के पौधों के बीच निराई कर रहा था इसी खेत में शुरू से आज तक झुके रहने के कारण सुखुआ की कमर झुक गयी थी। जिस दिन घनश्याम को सरकारी नौकरी मिली थी उस दिन गाँव के सभी लोगों ने आश्चर्य से सुखुआ को सीधा खड़ा होते देखा था। गाँव का वह पहला व्यक्ति था जिसने आधे बीघे खेत के बल अपने बेटे को पढ़ाकर हिन्दी अध्यापक बनाया था।’’[22] गरीबी से टूटे मजदूरों की झुकी कमर अपनी भाषा में अपने बच्चों का योगदान इज्जत से रोजी रोटी कमाने की कामना का पूर्ण होना और अपनी भाषा संस्कृति से जुड़े रहना देखा। शोषण और दुखों की भारी कमर का सीधा होना अनत ने दिखलाया है। किन्तु जैसे-जैसे इस वर्ग की प्रगति होती गई वे और आगे बढ़ने की होड़ में अपनी भाषा को सरकारी नौकरीपाने की चाह में पीछे छोड़कर अन्य भाषाओं को अपनाने में हिन्दी के प्रति कुछ उदासीन होते हुए भी दिखाई देते हैं।

‘‘जैसा कि तुम जानती ही नहीं। हमारे इस देश में हिन्दी की पढ़ाई अगर कीमत लेकर की गयी होती तो आज हिन्दी जहाँ है वहाँ से और भी आगे होती। लेकिन एक बात अपनी समझ में भी नहीं आती। आखिर क्या कारण है कि लोग अंग्रेजी-फ्रेंच की पढ़ाई के लिए चालीस पचास रुपये तक दे सकते हैं, जबकि हिन्दी की उसी कक्षा के लिए वे रुपया देने में भी कतराते हैं। अब तो हिन्दी के बूते पर भी लोगों को सरकारी नौकरियाँ मिल रही हैं।’’ अपनी इस जिज्ञासा का समाधान नीरा शून्य में ढूंढती सी प्रतीत हुई थी और धनेश ने प्रकरण ही व्यंग्य-भरे स्वर में कह दिया था, ‘‘तुम्हारा ही प्रश्न लेते हैं। जितना कुछ तुमने अंग्रेजी-फ्रेंच सीखने में खर्च किया है उसका एक-चौथाई भी हिन्दी के लिए नहीं किया।’’[23] इसका कारण अभिमन्यु अनत इसी उपन्यास में नीरा के माध्यम से युवा पीढ़ी की अंग्रेजी फ्रेंच सीख बाहर शहरों में जाकर पढ़-लिखकर कुछ बनने की चाह में ना पूरी तरह हिन्दी सीख पाते हैं और ना ही अंग्रेजी फ्रेंच सीख पाने में सक्षम होते हैं। इसे हिन्दी की शिक्षा जो इनकी मातृभाषा है जिसकी भावाभिव्यक्ति सरलता से हो सकती है उसे छोड़ टूटी फूटी फ्रेंच से काम चलाते हैं ‘और पसीना बहता रहा’ उपन्यास में अभिमन्यु अनत क्रांतिकारी नौजवानों के संघर्ष में हिन्दी का बड़ा ही

---

[22] जम गया सूरज - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 43

[23] कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 32

महत्वपूर्ण योगदान दिखाते हें, साथ ही साथ हिन्दी भाषा का विकास भी दर्शाते हैं। सारे प्रवासी भारतीय मजदूर माना कि भारत के अलग-अलग प्रांतों से मॉरिशस पहुँचे हों किन्तु सभी लोगों के दुख-दर्द आक्रोश, क्रांति, संघर्ष सारे भावों की अभिव्यक्ति की भाषा हिन्दी ही होती थी। पूंजीपतियों, मिल मालिकों को मजदूरों के आंदोलन में उनसे वार्तालाप करते समय दुभाषिए (ट्रांसलेटर) की जो कि फ्रेंच या क्रियोली व हिन्दी का जानकार हो उसे बातचीत के लिए रखा जाता था। यहाँ तक कि अदालत में हरि ने अपनी हिन्दी भाषा में ही अपना पक्ष रखा।'' हरि की कुछ संपादकीय टिप्पणियों और रेखाचित्रों के कारण बार-बार उस पर पुलिस ने मुकदमा दायर किया और जब उसे जनता को भड़काने अंग्रेजी सरकार तथा पूँजीपतियों की निंदा करने के आरोप में अदालत में खड़ा किया गया तो उसने हिन्दी के अलावा किसी अन्य भाषा में बोलने से इंकार कर दिया। न्यायाधीश से बोला- ''अपनी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करना मेरे लिए अधिक आसान है। यह मेरा अधिकार है कि मैं उसी भाषा में बोलूँ जिसमें गलत बोलने की कोई संभावना न हो।''[24] इस वक्तव्य के द्वारा अभिमन्यु अनत दर्शाते हैं कि मजदूरों के हक में परिवर्तन और विकास के चलते इनके अधिकार इनके पक्ष में कानून में कुछ सुधार भी हुए हैं। जब सरकार भी इन्हें अपनी भाषा में बोलने का अधिकार देती है। हिन्दी भाषियों का पढ़-लिखकर सरकारी पद प्राप्त करना और मॉरिशस में इनकी बढ़ती जनसंख्या देख आंदोलन, राजनैतिक गतिविधियों के अंतर्गत धीरे-धीरे इन्हें वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ। देश के उत्थान में इनकी सक्रियता देखते हुए इन्हें वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ जिस कारण इनका पक्ष भी विधानसभा तक रखे जाने की तैयारियाँ होने लगी और हिन्दी भाषा को भी प्रोत्साहन प्राप्त होने लगा था। जिसे सीता और मदन के बीच के तर्क-वितर्क के माध्यम से अपने उपन्यास 'गाँधी जी बोले थे' में हिन्दी सीखना और अन्य भाषा सीखना क्यों जरूरी है, समझाने की कोशिश अभिमन्यु अनत करते हैं।

[24] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 307

‘‘नहीं सीता! अपनी भाषा तो अपनी चीज होती है। मैं तो इसलिए चाहता हूँ कि हमारे बच्चे अंग्रेजी-फ्रेंच सीखें, क्योंकि कल जिनके सामने इन्हें अपने हक के लिए खड़ा होना पड़ेगा, उन्हें हमारी भाषा नहीं आती। जिस आदमी से वास्ता पड़े उसकी भाषा जानना आवश्यक होता है।’’

‘‘लेकिन मदन ..... उन लोगों को भी तो हमारी जरूरत होती है, तो फिर वे हमारी भाषा क्यों नहीं सीखते?’’

मदन इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था।

सीता के उस प्रश्न को उसने खुद अपने में दोहराया था। उत्तर नहीं बन पड़ा था उससे। वह सीता से पूछ गया था, ‘‘तुम्हीं कहो, वे लोग हमारी भाषा क्यों नहीं सीखते?’’

‘‘इसलिए कि उन्हें अपनी बात समझानी नहीं है।’’

‘‘पर हमें अपनी बात उन्हें समझानी है।’’[25]

इस तर्क वितर्क के माध्यम से अनत बदलते परिवेश में इस पूंजीवादी सत्ता तक अपनी बात पहुँचाने अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए अन्य भाषा जैसे फ्रेंच, अंग्रेजी को भी समझना जरूरी है। क्योंकि इन भाषाओं में ही क्रांति की अधिकारों की कानून की बातें हैं। जिसे जान इनकी भाषा में इनसे ही सवाल कर सकने में सक्षम बन पाये। ये सत्ताधारी पहले से ही स्थापित हैं और ये अपने कुचक्रों से कड़ों से शोषण से अपना काम चलाना जानते हें। उन्हें हमें अपनी बात समझाने के लिए हिन्दी सीखने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु हमें अपनी व्यथा, विरोध, आक्रोश को समस्त संसार के सामने प्रस्तुत कर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़नी है तो इसके महत्व को भी समझना है तो अपनी भाषा के महत्व को कम भी नहीं समझना है क्योंकि किसी भी समाज की प्रगति तभी होती है जब अपनी भाषा संस्कृति की रक्षा कर और अभिमान को बनाये रखा जाता है।

‘‘हमारी सभा का बैठका पिछले तूफान में धराशायी हो गया था। हमने सभा के सदस्यों और गाँव के लोगों से तफसील करके नई इमारत बनाई है। बैठका की जो पाठशाला है उसमें नि:शुल्क

---

[25] गांधी जी बोले थे - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 69

पढ़ाते हैं। हम लोग बहुत पहले से आपसे मिलना चाहते थे, पर नहीं मिल पाए। हमारी सभा यह चाहती है कि आप हमारी पाठशाला का अध्यक्ष बनना स्वीकार कर लें।''

धनी लाल के बाद दोनों अध्यापकों ने भी जब हंस से वही माँग की तो हंस ने कहा, ''मैं आप लोगों की मदद करना चाहता हूँ पर अध्यक्ष बने बिना। आप लोग अध्यक्षता की बात भूलकर अपनी योजना बताइए।''

दोनों अध्यापकों में से जिसके सिर से बाल उम्र से पहले समाप्त होने को थे, उसने एक बार फिर से अनुरोध किया कि वह अध्यक्ष पद को स्वीकार कर लें।

इस पर हंस बोला, ''मैं आपकी संस्था का एक सदस्य बनने से इन्कार नहीं करूँगा पर जहाँ तक दायित्व का प्रश्न है, वह मेरे लिए संभव नहीं हो पाएगा। अभी कुछ दिन पहले मंदिर वाले आये थे, उनको भी मैंने यही कहा। मैं आपकी पाठशाला की जो समिति है उसका सदस्य बनना चाहूँगा और उसके लिए मैं सभा के आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में सभा को पचास हजार रुपये दूँगा और छात्रों की पठन-पाठन आवश्यकता के लिए हर महीने दो हजार रुपये।''

सभा के प्रधान ने हाथ जोड़कर कहा, ''यह तो हम लोगों के लिए बहुत बड़ी बात होगी। इतना बड़ा दान हमने कभी जाना ही नहीं। लेकिन आप अगर हमारे साथ होते तो हमारी सभा की प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाती।''

''आपकी सभा की प्रतिष्ठा तो पहले ही से है। अगर इस तरह के बैठका और सभाएँ देश भर में नहीं होती तो क्या आज इस जाति की वह प्रतिष्ठा बन पाती, जो आज उसे हासिल है? इस देश के नेता इन बैठकों के बल पर ही तो अपने को सक्रिय और सफल बन सके। अगर गाँव-गाँव में ये नि:शुल्क काम करने वाले लोग संसकृति, भाषा और मानवता के हित में काम करने के लिए नहीं होते, ये बैठका नहीं होता तो क्या हमारी स्वतंत्रता संभव थी? हमारे नेताओं ने आजादी के जिस अभिमान को निर्भीकता और विश्वास के साथ चलाया उसमें उनके साथ बैठका की शक्ति नहीं होती

तो आज भी कुछ लोग हमें जलील करने से बाज नहीं आते। अब हम अपने गाँव को ही लें। दस साल पहले यह क्या था और आज आजादी के बीस ही साल बाद क्या बनता जा रहा है।''

हँस के चुप होते ही सभा के प्रधान ने कहा, ''इस साल हम अपनी पाठशाला का वार्षिक उत्सव मनाने जा रहे हैं। उसमें तो आप हमारे प्रमुख अतिथि अवश्य रहें।''

''लो! अभी तो अपने परिवार के सदस्य बनाने की बात कर रहे थे, अब अतिथि बना बैठे! ठीक है, मैं वार्षिक उत्सव में अवश्य आऊँगा। मैं यह मानता हूँ कि आज प्रगति की अंधी दौड़ में हमें इन बैठकों की विशेष आवश्यकता है। हर प्रगति का दाम चुकाना पड़ता है। यह प्रगति हमसे हमारी कई मूल्यवान वस्तुएँ ले भी सकती है, इसलिए हमें इसके लिए तैयार रहना है। ये बैठका ही ऐसी शक्ति है जो हमें अपनी पहचान, अपनी तहजीब और मूल्यवान मूल्यों को बरकरार रखने में हमारे काम आएँगे।''[26] इस सारे वृत्तांत से ही हमें मॉरिशस समाज का हिन्दी शिक्षा के प्रति लगाव गाँव की छोठी बैठका से नि:शुल्क सीखी जाने वाली हिन्दी भाषा के साथ-साथ स्वतंत्रता पाने के संघर्ष में अपनी निज भाषा संस्कृति का साथ हमेशा रहा है। और इसको बनाये रखने में इस देश का बौद्धिक वर्ग ही नहीं बल्कि हंस जैसी धनिक लोग भी अपना भरपूर योगदान देते हैं। फिर वह चाहे आर्थिक रूप से ही क्यों ना हो। मॉरिशस वासियों को यह एहसास है कि उनकी आजादी के लिए संघर्ष में इस भाषा का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए आजादी के बीस साल बाद ही इस भाषा को बनाये रखने के लिए आज भी लोग प्रयत्नशील हैं। क्योंकि कम समय में अपनी मेहनत से इतनी प्रगति करने वाला ये मॉरिशसीय समाज इस प्रगति की अंधी दौड़ में अपने मूल्यों को न भूल जाए इ चिंता के चलते हंस जैसे धनिक बुद्धिजीवी उन मूल्यों को मिटने नहीं देना चाहते। वे जानते हैं कि यह भाषा व उसकी बैठका ही ऐसी शक्ति है जो इनकी पहचान है, संस्कार है जो कि अति मूल्यवान मूल्य है। इन्हें वे संजोकर रखना चाहते हैं। इसी से इनकी निरंतर प्रगति संभव है। हंस इनकी मदद को इतना बढ़-चढ़कर आगे आता है। आगे बढ़ने की चाह में उसका हिन्दी भाषा से नाता कुछ छूट सा गया था। इस बात की

[26] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 101-103

टीस उसके मन में रहती कि काश मैं ये कविताएँ फ्रेंच में न लिखकर हिन्दी में लिखता तो मैं अपने भावों को सीधे प्रकट कर सकता। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में हिन्दी भाषा के विकास को दर्शाने हेतु कई स्थानों पर हिन्दी साहित्य लोन पर भी जोर डाला है। इसके पात्र कविताओं की रचना करते हैं। पूर्वजों के अनुभवों को किताबों में कहानी के माध्यम से प्रेरणा स्वरूप लेते हैं। वो 'चलती रही अनुपमा' उपन्यास में तो अनत अभिजीत के रूप में एक साहित्यकार नाटककार के रूप में उपस्थित हैं जो हिन्दी की सेवा में लगे हुए हैं।

''तुम जरा दिमागी कसरत शुरू करो। काफी किताबें लिख चुके। अरे हाँ, तुम्हारा पिछला नाटक देखा। तुम्हें दो बार फोन भी किया पर तुम मिले नहीं। सचमुच बहुत ही अच्छा नाटक था ......

- हाँ यार तुम्हारी किताबें पढ़ने का समय तो नहीं निकाल पाया कभी, पर तुम्हारे नाटकों को देखना कभी नहीं चूका। इस साल क्या दे रहे हो?

- जो कुछ अब तक देखा है उन सभी से भिन्न.. खैर, कोशिश यही है।

- एक बात बताओ अभिजीत! तुम संस्थान में काम करते हो पुस्तकें लिखते हो, पत्र-पत्रिकाओं में भी लिखते हो, नाटक लिखकर मंचन भी खुद करते हो - इतना कुछ करने के लिए तुम समय कैसे निकाल पाते हो?''[27]

यहाँ अभिजीत और रामकरण के बीच हिन्दी साहित्य को लेकर रुचि, अभिजीत के नाटकों से प्रभावित होना अपनी व्यस्तता के कारण अभिजीत की लिखी अन्य रचनाएँ तो वह पढ़ नहीं पाता लेकिन इनके नाटक जरूर देखता है। इससे अनत यह बतलाते हैं कि मॉरिशस समाज में प्रगति के साथ-साथ व्यस्तता भी अधिक है किन्तु फिर भी लोग हिन्दी साहित्य तथा नाटक देखने के लिए आते हैं। हिन्दी के विकास में योगदान देते हैं उसे प्रोत्साहित करते हैं। तो दूसरी ओर साहित्यकारों का एक वर्ग इस भाषा में साहित्य रचते हुए इस भाषा के विकास में निरंतर प्रयत्नशील है। शायद इसीलिए प्रवासी भारतीय में हिन्दी साहित्य लेखन वह लेखकों की संख्या का आधिक्य है। जिसकी प्रशंसा मैं

---

[27] चलती रहो अनुपमा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 9

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विश्व हिन्दी सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी में मॉरिशसीय हिन्दी साहितय की रचनाओं की अधिकता देख अपने भाषण में उसकी प्रशंसा करने से भी नहीं चूके। इस देश में हिन्दी भाषा हिन्दी साहित्य अपनी प्रगतिशीलता पर है, अभिमन्यु अनत जैसे यहाँ कई साहित्यकार हैं जिनकी रचनाओं को यहाँ भारत में भी खूब सम्मान मिला है। वहाँ मॉरिशस में भी लोगों को इनकी रचनाओं का इंतजार रहता है। अभिमन्यु अनत ने अपनी रचनाओं में हिन्दी के विकास के लिए चल रही संस्थानों का भी खूब जिक्र किया है, जो इस भाषा के विकास के लिए आज भी तत्पर है। जिसकी अपनी एक विशेष पहचान है।

''अरे, ये वही लेखक हैं जिनकी वीणा दीदी इतनी प्रशंसा करती रही हैं। आप जानते हें कि मैंने भी अभिजीत जी की पुस्तक पढ़ी है और उनकी दूसरी पुस्तक पढ़ने के लिए लालायित थी पर मिली ही नहीं।

- अगर उसने एक ही पुस्तक लिखी हो तो तुम्हें दूसरी मिले तो कहाँ से?

- नहीं! उन्होंने पचास से ऊपर पुस्तकें लिखी हैं। हमारे बैठका में लोग इनके बारे में बातें करते ही रहते हैं। इनसे मिलने को मेरी हमेशा से बड़ी इच्छा रही थी। परसों मैं इनसे मिलने जा रही हूँ। इनके नाटक में भाग लेने का सौभाग्य मुझे मिलेगा कभी सोचा नहीं था।

अनुपमा विभोर थी।''[28] इस वक्तव्य से अभिमन्यु अनत बतलाते हैं कि केवल शहर में या बौद्धिक वर्ग में ही हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि देखी गयी है, अपितु गाँव की बैठकों में भी हिन्दी साहित्य की पुस्तकों के प्रति लोगों में रुचि देखी गयी है। हिन्दी भाषा की प्रगति यहाँ पर अपनी पूरी पराकाष्ठा पर है। कई केन्द्रीय संस्थान इसकी प्रगति में आज जुटे हैं। मॉरिशस में हिन्दी का विकास आज भी जोरों पर चल रहा है। ये अपनी भाषा को यूं ही संजोए रख उसके विकास में हमेशा काम करते रहेंगे।

[28] चलती रहो अनुपमा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 12

''उसे अपने सम्मुख पाते ही निदेश एक ही सांस में बोल गया। हेलो आमिष। तुम्हारे उस बहुत पहले दिये गये सजेशन पर मैं मैं रात भर सोचता रहा। सचमुच ही भारत सरकार के लिए हुए प्रेस का हम सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। तुम्हारा सजेशन एकदम सही है कि एक मेगजीन के पब्लिकेशन से प्रेस के सही इस्तेमाल के साथ-साथ यहाँ के राइटरों को भी एनकरेज कर सकेंगे.... और फिर प्रेस ने भी तो हमें इसी बात के लिए प्रजेंट किया गया है।''[29] इस वाक्य में अभिमन्यु अनत केवल भाषा के विकास के लिए हमने ये किया वो किया कहकर ढोल पीटने का विरोध करते हुए उसके विकास में सही ढंग से कार्य करने का प्रोत्साहन देते हैं। यह भी बतलाने की कोशिश करते हैं कि हिन्दी भाषा के विकास के लिए मॉरिशसीय भारतवंशी, भारत से इस भाषा के विकास के लिए जुड़े हुए हैं। इस भाषा साहित्य को लेकर आपस में अच्छे संबंध और मॉरिशसीय साहित्यकारों को भारत की ओर से प्रोत्साहन प्राप्त है। और हिन्दी भाषा का विकास निरंतर प्रगतिशील है।

### 5.1.4 प्रवासी भारतीयों की परिवर्तन की कामना और आंदोलन

परिवर्तन ही संसार में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, प्रकृति में भी परिवर्तन का ही नियम है, सुबह, शाम, रात या फिर ऋतुओं में परिवर्तन के कारण प्रकृति का संतुलन बना रहता है। उसी प्रकार समाज में भी परिवर्तन से ही नई विचार नई सोच पुरानी रूढ़ियों को बदलने की कामना आदि से समाज में समानता का भाव आता है। वैसे ही मॉरिशसीय समाज में मजदूर के रूप में पहुँचे प्रवासी भारतीयों के जीवन में भी लगातार संघर्ष शोषण, अत्याचार आदि दमनकारी नीतियों का विरोध कर अपनी वर्तमान अवस्था को बदलने अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने का संघर्ष। एक आंदोलन के रूप में परिवर्तन की कामना करते हुए कैसे विकास और प्रगति के लिए संघर्ष कर स्वयं को इस देश के निर्माण में झोंककर अपने आपको स्थापित करने के लिए पूँजीपति दमनकारी नीतियों के प्रति आंदोलन छेड़ा। इसकी अभिव्यक्ति अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में खूब  हुई है। जो मॉरिशसीय समाज के उत्थान भारतवंशियों की प्रगति उनके जागरूक आंदोलनों से भरे पड़े हैं। कहीं किसान

[29] चुन चुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 74

मजदूरों का आंदोलन कहीं कोठी के मालिकों के विरोध में अन्याय के विरूद्ध आंदोलन, कहीं मिल मालिकों का विरोध तो कहीं खुद को स्थापित करने के लिए अपनी भाषा संस्कृति, अपनी पहचान के लिए आंदोलन जो कि एक सकारात्मक रूप लेकर मॉरिशस के निर्माण में भारतीयों के योगदान की अधिकता को दर्शाता है। जिसकी मेहनत और पहचान को अनदेखा कर दिया उस पहचान को बनाने का संघर्ष अनत के उपन्यासों में देखा गया है।

''हम लोगों को हवेली की इच्छा नहीं है। हमें अपने कुत्तों को दस मजदूरों का खाना एक बार में नहीं खिलाना है। अपने पाँवों के सही-सलामत होने तक हमें गाड़ियों और बग्गी की कोई जरूरत नहीं। अपने तन ढाँपने के लिए हमें उतने सारे भड़कीले कपड़े नहीं चाहिए। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम रौंदे जाने पर भी आह तक न भरें। पगड़ी उछाले जाने पर अपने हाथों को सिर तक भी न पहुँचायें! घी मलाई न सही, पर चावल के साथ कीड़े भी तो नहीं माँगते? जूतों और बाँसों की बौछार भी नहीं चाहते।'' यह अभिमन्यु अनत गिरमिटिया मजदूरों के शोषण सहने की पराकाष्ठा पार होने पर उनके मन में उठी परिवर्तन की कामना तथा हालात बदलकर अपने ऊपर हो रहे अत्याचार का विरोध करने के आंदोलन के बीज इस वक्तव्य में रेखा और किसन के माध्यम से परिवर्तन की कामना विरोध का भाव दिखाया गया है जो अपने समाज को इन अत्याचारों के विरूद्ध आंदोलन करने की प्रेरणा देते हुए गिरमिटिया मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध उनकी प्रगति की कामना लिए उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता दिखाई गयी है।

''करीब पंद्रह दिन पहले से बेल-वी-आरेल तथा उत्तरी प्रांत की कई कोठियों में मजदूरों का शोषण अपनी परकाष्ठा पर पहुंच गया था। मजदूर नेताओं ने धमकियों की परवाह किए बिना मालिकां को चेतावनी दी थी। मजदूरों की माँग पूंजीपति मालिकों और कानून निर्धारित करने वाली सरकार दोनों के सामने रखी जाती रही, पर उन पर कोई असर नहीं हुआ था। हरि की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में तय किया गया था कि मजदूर अप्रत्यक्ष रूप से हड़ताल शुरू करें। उस आदेश का भी दिलेरी के साथ पालन हुआ था और करीब सात दिनों में खेतों की सारी चहल-पहल जाती रही थी। कारखानों

से धूंआ उठना बंद हो गया था। सरकार और मालिक दोनों विचलित थे। मजदूरों के दृढ़ संकल्प से मालिकों में तहलका मचा हुआ था।''[30] खुद के हालात सुधारने की कोशिश को लिए मालिकों द्वारा किये गये अमानवीय व्यवहार के प्रति आक्रोश आंदोलन में परिवर्तित होता है। जिसे देखकर पूंजीपतियों के होश उड़ जाते हैं। इन्हें हर तरह से दबाने की कोशिश में पुलिस की लाठियाँ गोलियाँ तक चलवाई जाती हैं।

''हमें भी देखना है कि पुलिस हमें कहाँ तक ढकेलकर पीछे ले जा सकती है।''

और तो आगे बढ़ीं और पुलिस उन्हें बड़ी बेरहमी से ढकेलकर पीछे करने लगी। लेकिन जब एक ही साथ चार-पाँच औरतें पुलिस की लाठियाँ खाकर गिरीं तो कीरब पचास से भी ज्यादा मजदूर बिखयाई मधुमक्खियों की तरह सिपाहियों पर टूट पड़े। पुलिस इंसपेक्टर घबरा गया और जब उसे लगा कि वे सभी मजदूर सिपाहियों को रौंदते हुए उस तक पहुँचने वाले हैं तो उसने चिल्लाकर हुक्म दिया - फायर।'' गोली दागने का आदेश पाते ही कई सिपाहियों ने एक साथ गोलियाँ दागी, गोया खरगोशों या हिरणों पर निशाना साध रहे हों। अनगिनत खूँखार गोलियाँ अनेक पीठों और छातियों से टकराई। धराशायी होने वाला पहला आदमी था महादेव। अपनी छाती पर तीन गोलियाँ खाकर वह जमीन पर लुढ़क गया। उन खूनी गोलियों ने अंजलि को भी नहीं बख्शा। अपनी कोख में अपने पहले बच्चे को लिए हुए भी वह जमीन पर छटपटाते हुए दम तोड़ गई। तांबी को पीठ पर गोली लगी और मरने से पहले वह करीब दस मिनट तक पाँवों से रौंदा जाता रहा। मनसामी को भी पीठ में गोली लगी। दो घंटे बाद वह अस्पताल पहुँचाया गया। अगर पहले पहुँच पाता तो डॉक्टरों की राय में उसके बचने की संभावना थी। अठारह मजदूरों के जख्म इतने गहरे थे कि उन्हें बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुँचाया गया।''[31]

सवयं की पहचान बनाने के लिए जो संघर्ष आंदोलन इन प्रवासी भारतीयों ने छेड़ा था वह अपने प्राणों की आहुति देकर भी अपने पूरे अधिकारों को प्राप्त नहीं कर पाये। किन्तु इनकी कुर्बानी यूं

---

[30] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 257

[31] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 260

ही व्यर्थ नहीं गयी। जिस तरह इनके आंदोलन को दबाने के लिए इनके साथ जानवरों से भी गया बीता व्यवहार किया गया। इस तरह इतने बड़े झुण्ड पर गोलियाँ चलाने का काण्ड पहले नहीं हुआ। पहले यूँ ही षड्यंत्र के चलते एक दो मजदूरों को मार दिया जाता, किन्तु इस बार पुलिस अधिकारियों के सामने उन निहत्थे मजदूरों को भून दिया गया था।

''परकाश की बातों को याद करके भी उसे खुशी का एहसास होता कि 1922 के अंधे कानून के तहत कोठियों में काम करने वाले भारतीय मूल के मजदूरों का जीवन अब जानवरों से बेहतर है। पहला बलिदान मजदूरों ने 1937 में दिया था, जब यूनीते कोठी के हत्याकांड के बाद हुपर अयोग के सुझावों के बल पर सरकार मजदूरों की एक दूसरे परिवर्तन के लिए फिर खून बहाना पड़ा। इन बलिदानों का ही यह नतीजा था कि और कुछ न सही, मजदूर एक बदतर जिंदगी से मुक्त हो गये थे।''[32] किन्तु फिर भी पूँजीपतियों की नित नई साजिश और क्रांतिकारी आंदोलनकारी नेताओं पर नित नये इल्जाम लगाकर उन्हें तंग किया जाता तो दूसरी ओर इनमें आपस में फूट डाल दी जाती। कभी धर्म, जाति तो कभी प्रांतों में इन्हें बांटने की कोशिश की जाती इन मजदूरों को, आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक हर तरह के शोषण से गुजरना पड़ता था। और कुछ जागरूक क्रांतिकारी विचारधारा वाले लोग इन्हें जगाकर अपनी स्थिति के प्रति जागरूक कर इनमें नई चेतन लाते तो उन्हें शराब और जुआखोरी घुड़दौड़ आदि की लत लगाकर उनका मजा लेते उनकी सोच को इन बेकार बातों में जकड़े रख उनको आगे बढ़ने से रोकते थे। इनकी भटकाव की स्थिति को बदलकर इनकी दिशा परिवर्तित कर इन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए बैठका, संघ में संगठित कर यथार्थ से परिचित करवाकर उन्हें अपने हालात पर विवचार कर आगे बढ़ने की चाह उनमें जगाई जाती है।

''सरकार जनता की रक्षा के लिए होती है। उसे अपने नागरिकों के स्वास्थ्य का ख्याल रखना होता है, लेकिन यह सरकार नपुंसक सरकार है जो कि पूँजीपतियों के हाथों कठपुतली की तरह नाच रही है। यह अजीब बात है कि इस देश में गाँजा पीने वाले की सजा कैद है लेकिन परमिट पर बिक रही

[32] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 266

शराब पीने की पूरी आजादी है। अभी पिछले दिनों डॉक्टर कयूरे ने कहा भी था कि शराब से आदमी को सिर्फ धन की ही हानि नहीं होती स्वास्थ्य की भी होती है। यह सरकार जान बूझकर जनता को मौत की खाई में धकेल रही है। यह पूँजीपतियों की साजिश है ताकि गरीब हमेशा गरीब और कमजोर रहे और वह उसका मनमाना शोषण करता रहे। यह पूँजीपतियों की सरकार है, खूनी सरकार है .....।''[33]

इस प्रकार सरकारी कूटनीतियों के विरूद्ध लोगां को संगठित कर उनमें जागरूक विचारों को लाने का प्रयास किया जाता। नशाखोरी, जुआखोरी जैसी बुरी लत से उनके समाज को खोखला किये जा रही थी उनकी अब तक की गयी परिवर्तन लाने की अपने अधिकार पाने की कामना कुछ अनिष्टकारी परिवर्तन लेते देख उन्हें पूँजीपतियों के जाल से मुक्त कराने के प्रयत्न में लगे नेता उन्हं इस क्षणिक सुख के लिए खुद को बदहवासी की स्थिति में पहुँचने वाली लत से दूर रहने की सलाह देते हैं। नशाखोरी के बुरे परिणामों से इन्हें अवगत कराते हुए उसे छोड़ने का निवेदन मजदूरों से करते हैं। नशे की लत से बुद्धिभ्रष्ट होने के कारण वे अन्याय के विरूद्ध कभी आवाज नहीं उठा पाएंगे और सारा संघर्ष, आंदोलन धरा रह जाएगा इस बात के लिए उन्हें चेताते हैं।

''आखरी घुड़दौड़ के विरोध की यह लहर देखते ही देखते पूरे देश में फैल गई। घुड़दौड़ के दिनों में गाँव वालों को शहर जाने से रोकने के लिए गाँव- गाँव में खेल कूद तथा गाने बजाने के कार्यक्रम रखे गये। इनकी व्यवस्था स्थानीय ट्रेड यूनियन नेताओं तथा विष्णुदयाल के स्वयंसेवकों द्वारा की गयी थी। ठीक घुड़दौड़ वाले दिन उत्तरी प्रांत में ही जनता के मनोरंजन के लिए कोई तीस जलसों का आयोजन हुआ। दो दिन बाद अखबारों ने लिखा कि जिस घुड़दौड़ में साठ-सत्तर हजार लोग उपस्थित होते थे उसमें कठिनाई से सात सौ लोग इकट्ठा हुए। सुखदेव-विष्णुदयाल ने हरि की पीठ थपथपाते हुए कहा-

---

[33] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 271

''हम लोगां की सहयात्रा अब विधिवत शुरू हो गई है।''[34] समाज प्रगति के लिए की गई परिवर्तन की कामना को नशाखोरी जुआखोरी जैसे बुरे बदलावों की ओर उन्मुख होता देख हरि और उनके साथियों के साथ कई नई युक्ति सुझाकर अपने लोगों का इन बुराइयों से ध्यान हटाने के प्रयत्न किए गये जिसका परिणाम सुखद रहा।

''वर्षों बाद आज हमारे गाँव में कोई भी इस बात के लिए दुखी नहीं है कि वह महीने-भर की अपनी कमाई को घोड़ों पर गँवा आया। पिछले साल हमारे ही गाँव के चालीस-पचास लोग सवारी के अभाव में शहर में फँसे रह गये थे। कई घरों में चूल्हे नहीं जले थे। आज न तो किसी का कोई गहना चोरी गया और न ही किसी के साथ किसी तरह का बलात्कार हुआ। जुआ गरीबों के लिए जहर होता है। अब तक घुड़दौड़ के जुए में हमारे लोग बहुत कुछ हारते रहे हैं, लेकिन अब मुझे उम्मीद है कि यह बंद होकर रहेगा।

- बैठका प्रधान महेन्द्र सिंह ने पूछा था -

- लेकिन अगले साल अगर वही सिलसिला फिर शुरू हो गया तो?

- घुड़दौड़ की लत जब भी लगेगी और जब भी हमारे लोग सौ के चक्कर में मेहनत से कमाये अपने दस गँवाने शुरू कर देंगे तो पक्का समझिए कि वे कंगाली के रास्ते पर चल पड़े हैं। पसीने की कमाई पानी में न बहाएँ, प्रत्येक घुड़दौड़ के खिलाफ हमारा यही नारा होगा, लेकिन इस बार का यह बहिष्कार केवल पैसा बहाने के मुद्दे को लेकर नहीं किया गया बल्कि इसके पीछे सबसे बड़ा उद्देश्य है अपने लोगों को बेइज्जत और जलील होने से बचाना। घुड़दौड़ को हम सदा के लए रोक देंगे, ऐसा यकीन मुझे है।''[35]

घुड़दौड़ के बहाने भारतवंशियों को और गरीब बनाने की साजिश थी। उनका मजाक उड़ाकर उनको आर्थिक और मानसिक रूप से कमजोर कर उनमें हीन भावना पैदाकर उनके संगठित होकर आंदोलन, विरोधकर अपने हालात सुधारने के लक्ष्य से उनका ध्यान हटाने का प्रयत्न किया जाता रहा

---

[34] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 308

[35] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 308

है। एक ओर विष्णु दयाल का जन आंदोलन और हरि का श्रमिक आंदोलन तो दूसरी ओर डॉ. वयूरे का मजदूर दल डॉ. रामगुलाम के नेतृत्व में जोर पकड़ता हुआ अपनी बुलंदी पर था। ''हरि ने धूमिल पड़ गये उस चित्र को गौर से देखा था। उसके हाथ में जो बैनर था, उस पर लिखा था- 'मजदूरों को वोट का अधिकार चाहिए।' हरि देर तक अतीत की यादों में खोया रहा। आज जब साक्षरता के बल पर उन्हें वोट का अधिकार मिलने वाला था तो हरि का उन यादों में खो जाना स्वाभाविक ही था। जब बीस वर्ष पहले उसने इस अधिकार की माँग की थी।''[36] आखिरकार इनके निरंतर संघर्ष से समाज में व्यवस्था में परिवर्तन लाकर अपने अधिकार पाने की लड़ाई इन्हें नई दिशा की ओर ले जा रही है इस दिशा को प्रगति की ओर निर्धारित किया गया।

''कब तक हम लोग साब जैसे खुदगर्ज को मनमानी करने देंगे? कब तक उसके बहकावे और प्रलोभनों में आकर हम लोग अपने को इस तरह जाति-पांति में बाँटते रहेंगे? अगर भविष्य में हमारी ये बैठकाएँ जिनके बल पर हमारी पहचान बनी रही, हमारा धर्म और संस्कृति बनी रही, हमारी भाषा बनी रही, हमारी इज्जत बनी रही, इसी तरह अलग जातियों और खेमों में बँटती रही तो आगे क्या होगा इससे बेहतर तो यही है कि हम कॉपरेटिव सभा बनाएँ जहाँ छोटे-बड़े का कोई प्रश्न ही नहीं होगा। कॉपरेटिव सभाओं के जरिये जहाँ हम अपनी आमदनी को बढ़ाने में सफल हो सकेंगे वहीं हम लोग उसकी शक्ति से अपने धर्म और संस्कृति की भी रक्ष कर पाएंगे। आज जिस तरह का घिनौना खेल धनकेब साहब हम सभी के साथ खेल रहा है उससे तो यह पुरानी सभा मटियामेट होकर ही रहेगी। इसके साथ ही उसकी यह नई सभा भी बहुत दिनों तक नहीं टिक पाएगी, क्योंकि  लोगों के एक होकर रहने में साब का भारी नुकसान है और यह उसे मंजूर नहीं। जिसतरह वह आज पुरानी सभा को खत्म कर रहा है, ठीक उसी तरह कल वह अपनी ही बनाई सभा को भी खत्म करके रहेगा।''[37]

इस उपन्यास में अनत कोठी, मिल मालिकों के संघर्ष आंदोलन से हटकर समुद्र की मछलियाँ पकड़ने और उसके व्यापार पर भी पूंजीपतियों का प्रभाव और उस शोषण के विरूद्ध लड़ने के लिए

---

[36] और पसीना बहता रहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 309
[37] लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 189

प्रवासी भारतवंशियों में कहीं परिवर्तन देखा गया है। अब वे इनके शोर दाँव पेंच समझने लगे हैं। वैसे किसन, मदन, परकाश आदि के अथक प्रयत्नों से सरकार से कानून से लड़कर अपने अधिकार प्राप्त किए अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाया। जीने लायक घर और बस्ती की साफ सफाई, स्वास्थ्य के प्रति जागृति नशाखोरी का विरोध, अच्छी शिक्षा के लिए कई पाठशालाओं का संस्कार द्वारा चलाया जाना। पढ़ने लिखने के अधिकार आदि को प्राप्त कर अपने जीवन को बेहतरर बनाने की ओर आगे बढ़े। संविधान तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए मतदान का अधिकार प्राप्त कर अपने जीवन में सुधार लाकर खुद को स्थापित कर संघर्ष करते हुए अपनी तथा अपने देश की प्रगति के लिए तत्पर रहे। व्यापार व्यवसाय के क्षेत्र में भी खूब परिश्रम कर आगे बढ़े।

''शहरों में उनकी बिक्री से होने वाले लाभ में भी आप सभी का हिस्सा होगा। यही नहीं, जमीन और नाव खरीदने में भी यह सभा सहायक होगी। कम से कम ब्याज पर उधार लिया जा सकता है। यह सब तो शुरू-शुरू की बात है। अगर सभी कुछ ठीक से चलता तो लाभ की संभावना बढ़ती जाएगी। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ अपनी उपज बेचकर हम अधिक कमा सकते हैं और चीजें खरीदकर भी। सहकारिता का मतलब ही आपसी सहयोग है। किसानों और मछुओं की अपनी आवश्यकता की चीजों के लिए अलग-अलग और बार-बार गाँव जाने की जरूरत नहीं होगी। हर चीज यहीं सुलभ कराई जा सकती है। हम अपने गन्ने और सब्जियाँ दलालों के जरिए नहीं बिकवाएँगे और न ही मछलियाँ बनिए को सौंपेंगे। दलालों और बनियों से बचे पैसे हमारी अपनी हाँड़ी में रहेंगे, जिनका विभाजन हमारे बीच होगा। अपनी इस कॉपरेटिव सभा के लिए हमें उसी तरह एक सूत्र में बंधना होगा जिस तरह हम बैठक में होते हैं। बैठक तो हमें हमारे शादी-ब्याह, पूजा-उत्सव और मरनी-जीनी में काम आती है जबकि कॉपरेटिव सभा हमारी आमदनी और हमारी जीविका में हमारे हाथ बँटाएगी।''[38]

[38] लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 190-191

सामाजिक क्षेत्र में अब काफी सुधार आने लगे थे। अब भारतीय मूल के मॉरिशस वासियों का आर्थिक स्तर सुधरने लगा था, शिक्षा के क्षेत्र में भी इनके बच्चे उच्च अधिकारी, डॉक्टर आदि पदों पर नियुक्त होने लगे थे। व्यापार की समझ और सूझबूझ भी हमें इस उद्धरण से पता चलती है। अब वे दलालों को अपने भोलेपन का फायदा उठाने का मौका नहीं देते और अपने समाज के उत्थान के लिए मिल जुलकर इस तरह की सभाओं का निर्माण कर मॉरिशस में आये गिरमिटिया मजदूर अपनी प्रारंभिक अवस्था से अब तक अपने परिश्रम और लगन से काफी कुछ परिवर्तन ला चुके हैं। अब वे मेहनत कर झुकी कमर पर कोड़े खाते जानवरों सा जीवन बीताने वाले मजदूर नहीं अपितु देश को चलाने में भी अपना बहुत बड़ा योगदान देते हुए मॉरिशस की प्रगति में चार चाँद लगाते हैं। इसका उल्लेख हम अनत के उपन्यास 'आसमान', 'अपना आंगन', 'चलती रहो अनुपमा', 'चुन चुन चुनाव', 'क्यों ना फिर से' आदि उपन्यासों में पाते हैं कि किस तरह इस देश की तरक्की के लिए व्यापार क्षेत्र में रामकरण का पात्र की तरक्की 'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में तथा अभिजीत, सुमित आदि पात्र प्रख्यात पात्र हैं। आसमान अपना आंगन में, हंस, रेहाद आदि समाज में आर्थिक रूप से समृद्ध और प्रतिष्ठित हस्तियों के रूप में प्रस्तुत हैं। चुन चुन चुनाव में खस्ती राजनीति के क्षेत्र में अपनी एक छाप बनाए हुए हैं। ऐसे अनेक पात्र अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में पाये जाते हैं जो इस देश के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक स्तर के शीर्ष स्थान को अपने संघर्ष द्वारा प्राप्त कर चुके हैं और आज भी प्रगति के लिए अग्रसर हैं, किन्तु परिमाण की दृष्टि से देखें तो अधिकतर मजदूर वर्ग उसके संघर्ष तथा मध्य वर्ग इनके उपन्यासों के केन्द्र में होते हैं। किन्तु शाय-शायी इनके ये प्रसिद्धि प्राप्त देश को ऊपर उठाने वाले पात्र भी उपन्यास पर छाये रहते हैं। क्योंकि ये भी परिवर्तन की कामना लिए संघर्ष से ही इतनी प्रगति कर चुके हैं। अनत के उपन्यासों में गिरमिटिया, शर्तबंद, मजदूर से लेकर परिवर्तन के लिए संघर्ष करते हुए उनकी संतानों के हाथ में आगे चलकर देश का भविष्य सुरक्षित है, प्रगतिशील है। यह उनके संघर्ष द्वारा लाये गये परिवर्तन का सुखद परिणाम है।

### 5.1.5 समन्वयवाद तथा हिन्दू मुस्लिम संबंध

प्रगतिशील साहित्य में प्रगति के लिए भेद हीन समाज की कल्पना की है, जिसके अनुसार समाज में किसी प्रकार का भेदभाव न होकर सब समानता से सारे अधिकारों को प्राप्त करे व समाज की, देश की प्रगति में योगदान दे जिसमें छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, दलित, स्वर्ण और हिन्दू मुस्लिम का भेद न हो। देखा जाता है कि मनुष्य स्वयं को श्रेष्ठ बताने के लिए दूसरे को निम्न, कमतर बतलाता है। उसके आचार विचार, उसकी संस्कृति का विरोध करता है जहाँ टकराव आ जाता है जिस कारण समाज में अशांति साम्प्रदायिकता के भेद होते हैं उस समाज की प्रगति नहीं हो पाती। क्योंकि समाज विरोधी अप्रगतिशील तत्व उसके विकास में अवरोधक होते हैं इसलिए प्रगतिशील साहित्य समन्वय की बात करता है। जिसका बड़ा ही यथार्थपूर्ण सत्य अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मुखरित होता है जहाँ वे हिन्दू-मुस्लिम समन्वय की बात बड़े सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं जैसे कि आंदोलन, एक उम्मीद और, चुन चुन चुनाव, आसमान अपना आंगन आदि उपन्यासों में साम्प्रदायिक दंगों का उल्लेख तो जरूर किया है किन्तु इस बात को लेकर हीनता या श्रेष्ठता सिंह गलत के निष्कर्ण ना देते हुए बड़ी सद्भावना के साथ इनके दंगों के पीछे राजनैतिक कुचक्रों को जिम्मेदार ठहराते हुए अपने फायदे के लिए समाज के कुछ स्वार्थी नेता, पूँजीपति अपना स्वार्थ साधते बतलाया है। उन्होंने अपने उपन्यास 'एक उम्मीद और' में  हिन्दू मुस्लिम संबंध दर्शाते हुए उस के अंत और साम्प्रदायिकता के कारण आज के समाज में फैले आतंकवाद और इसके मूल में गरीबी को बतलाया जिस कारण आज का युवा वर्ग पथ भष्ट होकर धर्म के नाम पर समाज का अनिष्ट चाहने वालों के हाथ की कठपुतली बन बैठे हैं।  आदि पर यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति की है। इनके अधिकतर उपन्यासों में हिन्दू मुस्लिम समन्वय ही देखा गया है। जहाँ दोनों धर्म के बीच एकता की मिसाल दी गयी है। दोनों आपस में एक परिवार सा व्यवहार करते हैं। एक दूसरे के सुख दुख के साथी के रूप में दिखाये गये हैं जो शोषण सहन से लेकर विरोध संघर्ष क्रांति में एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं। जहाँ प्रेम मार्मिकता सद्भावना का भाव दिखाई देता है।

‘‘सो उठे सात दिन के उस बच्चे को चंपा की गोद से लेकर जुबेदा अपनी बाँहों में झुलाने लगी। वह इस बच्चे को उसी समय गोद लेने के लिए  ललक उठी थी, जब उसकी माँ जहाज में उसे जन्म देने के कुछ ही समय बाद मर गयी थी। बच्चे का बाप तो जहाज में मरने वाले यात्रियों में सबसे पहला था। चंपा ने जब पहली बार बच्चे को गोद में लेकर सुलाना चाहा था तो उसके मुँह से जो शब्द अनायास ही निकल पड़ा था, उस पर जुबेदा ने आपत्ति की थी, ‘नहीं चंपा इसे अभाग मत कहो। कौनजाने इसकी किस्मत हम सभी से अलग और हमको अच्छी हो।’ पर भगवान की ओर से यह कितना बड़ा अन्याय है कि उसने इससे इसके माँ-बाप की छाया छीन ली।

‘हम तो धरती पर जनमकर धरती को माँ मानते हैं और यह ....? समंदर को बाप मानेगा। देखा न, कितना अलग है इसका भाग्य।’ जुबेदा बच्चे को बांहों में झुलाती गुनगुना उठी -

‘‘राम नाम लड्डू गोपाल नाम घी,
शिव नाम शक्कर घोल-घोल पी’’

‘यह गाना तुम्हें कैसे आता है?’

चंपा के इस सांकेतिक सवाल पर, जिसे अब वह भी थोड़ा-बहुत समझने लगी थी, जुबेदा मुस्कराकर बोली ‘क्यों मुसलमान को अपना लोकगीत नहीं आना चाहिए क्या?’

‘‘नहीं मेरा मतलब यह नहीं .... वैसे यह गाना तो मेरे गाँव में.... ’’

‘‘यह हमारे यहाँ लोरी के राग में गाया जाता है। यह गाना गाकर मेरी माँ मुझे दूध पिलाती थी। मेरे पिताजी मेरे छोटे भाई को यही गाना गाकर सुलाते हैं।’’[39]

यहाँ अभिमन्यु अनत ने हिन्दू मुस्लिम संबंधों की मधुरता और हमारी भारतीय संस्कृति भारत में रहने वालों के तन मन में बस गयी है, जहाँ भिन्न धर्म नहीं है। भारतीय होना और भारतीय संस्कृति में रचा बसा मन अपनी प्रधानता रखता है। जो नाम या वेश भूषा धर्माचार में भिन्न होते हैं। किन्तु मन में उठने वाले विचार मानवता लिए हुए है जो सभी धर्म से श्रेष्ठ मानवतावादी होना है। ये ही विचार

---

[39] हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 28

मनुष्य को उस के विचारों को निम्न से उच्चतर स्थान पर स्थापित कर देता है। जुबेदा न केवल उस अनाथ बच्चे को एक माँ का प्यारदेती है, उसे उसी के धर्म संस्कारों के अनुरूप लोरी गाती है तो चंपा के सवाल करने पर कहती है यह लोरी तो हम भी अपने माता पिता से सुनकर बड़े हुए हैं। जहाँ ममता, प्यार, वात्सल्य होता है वहाँ धर्म के भेद महत्व नहीं रखते और उस विशाल सागर की यात्राके बीच जन्मे बच्चे के माँ-बाप की मृत्यु के बाद उसे दो माँएँ मिली थी एक चंपा और दूसरी जुबेदा। दोनों के स्नेह में कहीं कोई धर्म की दीवार नहीं थी। तथा तो बस शिरफ अपनापन। ऐसा कई संदर्भ अनत के उपन्यासों में देखे गये जो हिन्दू मुस्लिम समन्वय का बड़ा ही मार्मिक दृश्य प्रस्तुत करते हें। इनकी एक सामाजिक एकता का प्रतीक बनकर समाज को, देश को विश्व को समानता एकता का संदेश देती प्रतीत होती हैं। जहाँ सुख दुख में एक दूसरे का कंधा अपना दुख दूर करने के लिए और सुख में आपस में उत्साह और प्रेम, विपदा में एक दूसरे के लिए मर मिटने वाली भावना, संघर्ष में एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना आदि समानता वाले भाव इनकी रचना को श्रेष्ठ बनाते हैं, प्रगतिशील बनाते हैं।

‘‘उसके कमरे में जब हरि ने कृष्ण और दुर्गा की मूर्तियाँ देखी तो सहदेव ठाकुर की धार्मिक और आस्था की तो उसने नमस्कार किया ही, पर इस बात के लिए और अधिक नतमस्तक हुआ कि फरीद मियाँ ने उस आस्था को अपने घर में पनाह दी हुई है।

विदा होते समय जब उसने सहदेव ठाकुर के पाँवों को स्पर्श किया तो फरीद मियाँ के चरणों को भी छूकर माथे से लगाया। वैसा उसने उस उपकार के लिए नहीं किया था, जो फरीद चाचा ने उस पर किया था, बल्कि उसकी उस महानता के कारण, जिसे वह देख चुका था।’’[40] जब हरि फकीर के घर सहदेव ठाकुर से मिला तो देखा कि फरीद ने न केवल सहदेव ठाकुर को अपने घर में रहने के लिए जगह दी थी, अपितु वह उसका, उसके धर्म का भी उतना ही सम्मान करता था जितना कि एक हिन्दू दूसरे धर्म भाई से करता है। एक मुसलमान होते हुए भी एक मूर्ति पूजक को अपने घर में स्थान दिया,

[40] और पसीना बहतारहा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 94

उसके मंदिर का भी ध्यान रखते हुए उस छोटे से घर में देवी देवताओं की मूर्तियां भी स्थापना की गयी थी जिसे देख हरि के मन में आदर का भाव उमड़ पड़ा और आदर और प्रेम से उस मानवतावादी रूपके चरण स्पर्श कर प्रेम और भाईचारे के सम्मुख नतमस्तक हो गया। सहदेव ठाकुर को एक मुसलमान के घर पर रहने में कोई आपत्ति नहीं थी। दोनों के धर्माचार, खानपान भिन्न है फिरभी वह धार्मिक जटिलताओं से मुक्त होकर उसके यहाँ रहता है और फरिद बुत परसती का विरोध करने वाले धर्म का अनुयायी होते हुए उसके घर में सहदेव ठाकुर को अपने घर में देवी देवताओं की मूर्तियाँ रख पूजा पाठ करने की स्वतंत्रता देती है। यह एक हिन्दू मुस्लिम एकता की बहुत बड़ी मिसाल है। इस प्रकार का आदर भाव यदि सभी एक-दूसरे के धर्म के प्रति रख्चों तो ये मंदिर मस्जिद के झगड़े हमेशा के लिए मिट जाये और अवसरवादियों को इनका फायदा उठाकर इन्हें लड़वाने का अवसर प्राप्त नहीं होगा। संघर्ष के साथी आपस में हिन्दू मुस्लिम आपस में एक परिवार की तरह रहते थे। एक दूसरे का सुख-दु:ख बांटते थे चाह वह प्रवासी का हनीफ हो या और 'पसीना बहता रहा' का फरीद आदि ने यहाँ के भारत मूल वासियों में हिन्दू मुस्लिम एकता की एक अटूट नींव डाली थी। जिसे तोड़ पाने में पूंजीपति साजिशें अधिकतर असफल ही रही हैं। इसी के परिणामस्वरूप आगे चलकर आजादी पाने के बाद के मॉरिशस में हिन्दू मुस्लिम दोनों के बीच वही पारिवारिक वातावरण प्रेम संबंध बने रहे। कुछ सांप्रदायिक ताकतें अपवाद रूप से अपने इरादों में सफल हो जाती है नहीं तो इनके आपस में पारिवारिक संबंध अति निकटता वाले हैं।

''वह दृश्य आँखों के सामने झिलमिला उठा जब रजिया की सफेद ओढ़नी जामुनी रंग की हो चली थी और अपनी माँ की पिटाई से बचने के लिए वह मेरी माँ की पीठ के पीछे छिप गयी थी। तभी से हम सभी सहेलियाँ उसे जमुनिया नाम दे चुकी थीं। लड़कों में वह सिर्फ अशरफ था जो उसे इस नये नाम से पुकारता था। रजिया जहाँ इस नाम से चिढ़कर हमारे पीछे दौड़ पड़ती थी वहीं अशरफ से यह नाम सुनकर खिल उठती थी। अशरफ जब मोंस्वाणी कोठी के गन्ने के खेतों में लॉरी पर गन्ने लादते हुए ऊपर से गिरा था तो मैं और रजिया वहीं पास में अगौरे की पुलियाँ बटोरने में लगी हुई थीं।

अस्पताल पहुँचाये जाने से पहले ही अशरफ ने हमेशा के लिए आँखें बंद कर ली थीं और रजिया तभी से रजिया नहीं थी।

बहुत बाद में जब उसकी शादी की बात चली थी तो वह मेरे सामने बिलख उठी थी।

- मीता मेरा निकाह तो अशरफ से होना था न?

वह मुझे भी रूला जाती थी।''[41]

अमिता इतने वर्ष बाद भी अपने जीवन में इतने उतार चढ़ाव, दुख-सुख से गुजरने के बाद भी अपने मित्रों और आपस में उनके पारिवारिक मेल-मिलाप को आज भी अपनी यादों से मिटा नहीं पाई। क्योंकि एक दूसरे के समुख-दुख को वे अपने निजी जीवन से जोड़ पाते हैं। उन्हें कोई जाति धर्म की दीवार नहीं गिरा पाती। आज भी मिता के मन में अपने बचपन के दोस्त अशरफ की दुर्घटना में मृत्यु और अपनी सहेली रजिया का दुख याद करके उसके प्रति बहुत दुख है जो उसकी आँखों में नमी पैदा कर देता है। अमिता रजिया, हुस्ना ये सारे आपस में एक परिवार की तरह रहते थे, एक दूसरे के परिवारों में आपस में रिश्ते, प्यार, आदर और सम्मान दोस्ती के हैं।

''ओमार, अब तक मैंने तुमसे दोस्त की हैसियत से बातें की थीं, आज मैं शायरा के भाई के नाते तुमसे कुछ कहूँगा। मैं अपनी दो बहनों को खो चुका हूँ अपनी तीसरी बहन को मुझे खोने मत दो। मैं अपनी बहन के पति के साथ-साथ एक डॉक्टर से भी बात कर रहा हूँ। शायरा की सेवा में तुम मुझे हाथ बाँटने दो। अगर उसका इलाज यहाँ संभव नहीं तो उसे दक्षिण अफ्रीका, फ्रांस, इंग्लैंड, भारत जहाँ अधिक अच्छा रहे वहाँ ले चलते हैं। मेरा पैसा अगर मेरी बहन की बीमारी में काम न आ सके तो फिर पैसे का होना न होना एक जैसा है।''[42]

जब हंस को पता चलता है कि शायरा को ट्यूमर है, तो वह अपने होशो हवाश खोकर नीयति के इस अन्याय पर दुखी होकर शायरा के घर दौड़ा चला जाता है। शायरा की हालत देख रोने लगा अपने रूंधे कंठ से कहता है शायरा के इलाज के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है, उस पर अपनी

---

[41] मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 171

[42] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 346

सारी जायदाद तक लूटाने के लिए तैयार है। यहाँ धर्म की दीवार इन भाई-बहन के प्रेम के बीच नहीं है। हंस अपनी बहन पर सब कुछ न्योछावर कर देना चाहता है। यहाँ मानवीय संवेदना है, प्यार है मानवता का बहुत मार्मिक पक्ष अभिमन्यु अनत ने रखा है, जहाँ राजनैतिक कार्य से हंस जब राजनेता था उनकी सभाओं में उन से मिलता है तो वहाँ साम्प्रदायिकता दिखाई देती है जिसे देख उसके मन में घृणा पैदा होती है और एक और उसके निजी जीवन में अपनी दो बहनों को खोने के बाद वह शायरा को, अपनी तीसरी बहन को खोना नहीं चाहता। उसके लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देना चाहता है। ऐसे कई उल्लेख अनत के अधिकतर उपन्यासों में हुए हैं जहाँ आपस में दोनों धर्मों को एक दूसरे के प्रति उदार और प्रेम पूर्ण जीवन जीते हुए बतलाया गया है। इससे मॉरिशस समाज की समन्वयवादी छवि उभर कर सामने आई है जो अपना सकारात्मक उदाहरण देते हुए राष्ट्रीय एकता भाईचारे का संदेश सारे विश्व को देती है। अपवाद रूप में कुछ भेदभाव वाले मुद्दे भी कहीं-कहीं दिखाई पड़ते हैं किन्तु उसका परिणाम भी भयानक होता है। इस बात पर अनत ने प्रकाश डाला है और अधिकतर धर्म भेद को मिटाने के प्रयत्न किये हैं। जो इनकी प्रगतिशीलता को दर्शाता है जो समाज के हित में नई प्रेरणा अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

**5.2 स्वतंत्र मॉरिशस व राजनीति में अकुलाहट**

स्वतंत्र मॉरिशस राजनीति में भारतवंशियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। 12 मार्च 1968 में बहुमत के साथ विधानसभा में पहुँचना भी भारतीयों के संघर्ष की बहुत बड़ी जीत थी, जिससे शिवसागर रामगुलाम मॉरिशस के प्रथम प्रधानमंत्री बने। और मॉरिशस के विकास में भारतीयों का योगदान दुगुनी गति से बढ़ने लगा, जिसके साथ-साथ राजनैतिक सएमीदा और तेज होने लगी, बढ़ती हुई सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक प्रगति और आधुनिक युग में नये-नये परिवर्तनों के कारण समाज में बहुत सारी नई-नई प्रवृत्तियाँ भी पनपने लगी, जैसे पहले सब एक मत होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते थे। अब नये समीकरण चुनावों का मुद्दा होने लगे। बढ़ता भाई भतीजावाद, जातीयता, पैसे के बल पर चुनाव लड़े जाने लगे, न्याय ओर तर्क संगत बात करने वालों को दबाया जाने लगा

ओर युवा वर्ग का राजनेताओं के बदलते रूप को देख असंतोष मन में जागने लगा, कुछ ऐसा ही स्वर अनत के उपन्यासों में राजनैतिक उपन्यासों में देखा गया है जहाँ उपन्यास के प्रमुख पात्र को इन गतिविधियों का विरोध करते हुए बतलाया है। बेहतर मूल्यों पर आधारित राजनीति की कामना को लेकर देश की राजनीति में बिगड़ते हालात और उसमें परिवर्तन और सुधार लाने की कामना करते हैं, साधारण जनमानस के जीवन में सुधार तथा युवा वर्ग के अपने अधिकारों की रक्षा, बेहतर रोजगार आदि समस्याओं को सुधार कर नशाखोरी स्मगलिंग, घटिया राजनैतिक दाँव पेंच वाली राजनीति से देश की रक्षा करने की चाह लिए आगे बढ़ते हैं।

''हमारे विपक्षी अपने पैरों के नीचे से जमीन को खिसते पाकर अब हमारे जुटावों, बैठकों और मीटिंगों में हुड़दंगियों को भेजकर दंगे करवाने लगे हैं। उनका मकसद हमारे लोगों को उत्तेजित करके अस्त व्यस्तता का माहौल पैदा करता है। हमें चाहिए कि हम अपने को उनके रचे इस कुचक्र में फँसने न दें। हमारी पार्ओी भी कभी विपक्ष में रही है, पर इस दल ने कभी भी आज के इस विपक्षी दल की तरह आक्रामक होकर केवल तोड़-फोड़ की नीति को नहीं अपनाया। इन्हें जनता से कहीं अधिक अपने स्वार्थों की चिंता है। ये देश के हित के लिए नहीं, बल्कि अपने हित के लिए काम कर रहे हैं। ये चाहते हैं कि किसी न किसी तरह वर्तमान सरकार को तोड़कर अपनी सरकार बनाएँ। ये हमारे कुछ अपने लोगों को भी हमारे खिलाफ खड़ा कर रहे हैं।''[43]

प्रस्तुत उद्धरण से प्रतीत होता है कि सत्तारूढ़ सरकार को गिराने के लिए विपक्ष जिसका काम विधानसभा में अपना विरोध सही मुद्दों को लेकर कर सरकार का ध्यान उन विषयों की ओर संकेत करना चाहिए किन्तु भ्रष्ट राजनीतिक प्रेरणा से प्रेरित विपक्ष गलत मार्ग अपनाते हुए तोड़-फोड़ कर आक्रामक ढंग से देश की समाज की शांति भंग कर जनता में गलत प्रचार करते हैं। सत्तारूढ़ पार्टी के लोगों को पैसे के बल पर खरीद कर पार्टी में फूट डालकर सरकार की कार्य पद्धति को बाधित कर

[43] क्यों न फिर से - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 145

समाज के देश के उतथान के लिए किए जाने वाले कार्यों को बाधित कर रहे हैं। जिससे जनता में समाज में राजनीति के प्रति अकुलाहट होने लगी है जैसे -

''पुलिस के दावे और आश्वासन के बावजूद कई चुनाव क्षेत्रों में हिंसा का माहौल बना रहा। स्थान-स्थान पर रॉयट यूनिट की मौजूदगी में भी दंगे-फसाद होते रहे। वैसे तो स्थिति पर काबू पाने में देर नहीं लगी, पर कुछ इलाके ऐसे भी रहे जहाँ आपसी टकराव में कई लोग घायल हुए। मतदान की समाप्ति के समय तक ही कुछ स्थानों पर स्थिति सामान्य हो सकी, पर कुछ क्षेत्र ऐसे भी रहे जहाँ शाम के छह बजे तक आतंक का छाया रहा। उस खलबली और लोगों के भीतर बने भय के कारण इन चुनाव क्षेत्रों में मतदान की संख्या साठ प्रतिशत से आगे नहीं जा सकी।''[44]

चुनावों के द्वारा अपनी आवाज सरकार से संविधान में पहुँचाकर अधिकार प्राप्त करने के सपने देखने वाले हरि, मदन, प्रकाश जैसे राजनेताओं के विपरीत स्थिति आजादी के बाद देखी गयी। राजनेता अपने लोगों को अलग-अलग जाति, धर्म के नाम पर बाँधकर उन्हें भड़काकर आपस में लड़वाते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करने पर उन्हें जहाँ थे वहाँ छोड़ देते हैं। विकास का मुद्दा अब सामने नहीं आता और सरकारी धन अपने स्वार्थ पूरा करने में लगा देते हें जिससे युवा वर्ग असंतुष्ट होकर उसके विरूद्ध आंदोलन करता है। ऐसे पात्रों की सृष्टि अनत के उपन्यासों में खूब हुई है। जो राजनेताओं के प्रति उदासीनता रखते हैं उनकी भ्रष्ट राजनीति की पोल खोल देते हैं।

''.... हम राजनीति से नहीं झगड़ रहे हैं क्योंकि नपुंसक राजनीति से झगड़ने का कोई प्रश्न नहीं उठता। हम शासन प्रणाली को बदलना या पलटना भी नहीं चाहते। हम केवल एक अच्छी नीति चाहते हैं। मानव की इज्जत। अधिकार की सुरक्षा, अनीति का अंत! अभाव से व्याकुल मजदूर आज भी आस लगाये बैठा है कि कल उसका होगा। कल उसके बारे में भी सोचा जाएगा। उसे अपनी सरकार और अपने राजनैतिक नेताओं पर आज भी विश्वास है,उतना ही जितना कि आदमी को भगवान पर होता है। संतोष के जीते जागते ये नमूने और कुछ नहीं दो जून रोटी चाहते हैं। उसे क्या

---

[44] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 407

मालूम कि उसका भगवानअंधा और बहरा है। ..... शुरू से आज तक हम उसी धनवान को देखते आ रहे हैं - कानून को सहलाते और उसकी पीठ ठोंकते हुए। हम कानून को भी देखते आ रहे हें - गरीब को रौंदते और कुचलते हुए .... मैं आप सभी के हृदय से यह पूछना चाहता हूँ कि यह कैसी विडम्बना है कि मेहनतकश मजदूर की मजदूरी देश के लोगों को प्रतिष्ठा देती है और देश के लोग मजदूरी करने वाले मजदूरों का इतना कम ख्याल रखते हैं। कभी ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान की बहुत अधिक पूजा करके हमने उसे छोटे से बच्चे की तरह बिगाड़ दिया है जिसे बहुत ही प्यार दुलार मिलता है। यही बात हमारे हर वक्त उड़ते और घूमते रहने वाले प्रतिनिधियों के बारे में भी है। अन्यथा इतना सबके बाद भी दुख, बेकारी, अभाव और अन्याय न होता।''[45]

इन राजनेताओं के प्रति असंतोष के विरूद्ध युवा वर्ग साधारण जन मानस को जागरूक करता है। वे देश को समाज को चलाने के लिए एक अच्छी नीति की कामना करते हैं। राजनैतिक कुचक्रों को समाप्त करने के लिए जनता को उनके प्रलोभन में नहीं आना चाहिए और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए। सरकार छोटे बड़े अमीर सबकी है फिर भी वह अमीरों के इशारों पर चलती है उनकी ही सुनती है। सामान्य मानव जहाँ था वहीं है और ऐसे राजनैतिक परिवर्तन की कामना वे नहीं चाहते। राजनेताओं के झांसे में सामान्य जनता का आना और फिर ठगे जाना समाज में बढ़ती बेकारी की समस्या, भाई भतीजावाद के कारण फैली बुराइयाँ समझ के युवा वर्ग को गलत रास्ते पर ढकेल रही है।

''दौड़-धूप! रेगिस्तान में बालू के अफानते तूफान में सभी की अपनी निजी आँखें बचानी थीं। कहीं आक्रमण, कहीं प्रहार! कहीं भागाभागी तो कहीं खून-खराबा। पर चूँकि चुनाव को होना था इसलिए इन सभी के बावजूद मीटिंगें होती रहीं। रिश्तेदारों काप्रसाद होता रहा। योजनाएँ सामने आती गयी। कहीं पुराना दल। कहीं गरीबों की पार्टी तो कहीं प्रगतिवादियों की। कहीं प्रतिष्ठित वर्ग कहीं युवा

[45] आंदोलन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 113

वर्ग। .... और इसी पिछले दल का उम्मीदवार था राकेश का चचेरा भाई न चाहते हुए भी राकेश को इस बार भी इस मैदान में आना ही पड़ा।''[46]

राजनीति के बारे में सारे प्रपंचों की पोल जनता के सामने खोलते हुए अनत राजनीति में समर्थन देने की युवा वर्ग की मजबूरी भाई भतीजावाद राजनीति की नीरसता आदि जो समाज के विकास को रोकता है राजनीति में आज कल एक ही तरह के हथकंडे अपनाये जाने से राजनीति के नाम पर वोट माँगने वाले वायदे करने वालों पर आम जनता का विश्वास कर पाना कठिन दिखाई देने लगा और इसकी अकुलाहट, इसके प्रति उदासीनता अनत अपने पात्रों की विधारधारा द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

''राजनीतिक सरगर्मी बढ़ती गयी। कुछ हद तक वह खलबली थी। शहरों की गलियाँ नारों के कोलाहल में डुबकियाँ लेने लगी थी। मीटिंगों और लाउडस्पीकर के दहाड़ने की आवाजों के समान बाकी सभी आवाजें दबी पड़ी थीं। प्रदर्शन! जुलूस! इश्तेहार!

कहीं आपाधापी कहीं भागदौड़। कहीं पैसों की खनखनाहट थी तो कहीं गुण्डों और वापरों की सेवक। कहीं वोट के लिए हाथ फैलाये जा रहे थे तो कहीं उसकी कीमत दी जा रही थी। वचन-वायदों की बौछार हो रही थी और हर छोटे-बड़े से हाथ मिलाकर अपनापन इकरारा जा रहा था। विधानसभा के चुनाव में राकेश ने अपने चाचा के लिए एड़ी के पसीने को माथे तक हपुँचाया था।''[47]

अनत की यह अभिव्यक्ति राजनीति की पोल खोलते हुए भाई भतीजावाद, गुण्डों की राजनीति जिससे समाज का वर्ग कतराता है झूठे वादे और वोट की कीमत अदा कर मनमानी चलाने वालों का बोलबाला कैसे जनता से राजनीति के प्रति कैसे विश्वास उठता जा रहा है और ये सारे राजनीतिक दंगे को समझने लगी है उसके यथार्थ को दर्शाया है। जो सच में समाज के लिए लड़ना चाहता है देश के लिए कुछ काम करना चाहता है। उसे इन भ्रष्ट राजनेताओं के सम्मुख घुटने टेक देना पड़ता है या फिर संघर्ष करते हुए अपने प्राणों को दांव पर लगाना पड़ता है।

---

[46] तीसरे किनारे पर - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 191
[47] तीसरे किनारे पर - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 191

''..... क्या यह सब जानना जरूरी था? वे सारी बातें जानकर तो उसे ओकाई आने लगी थी .... फिर वही जिजीविषा। वह उकता गयी थी। ऊब। वह थक गयी थी। अशक्तता। मन में आया अपनी उस सनक भरी चाह को इस्तीफा दे दे। खुद भाग जाये। भूल जाये उस भावुक प्रण को। फिर सोच उठती भागना तो मात हो जाना है। प्रतियोगिता में नाम दर्ज करारे और फिर उसमें बिना हिस्सा लिये हार स्वीकार लेना उसे गवारा नहीं था।

एक दिन पहले उसने अपने नोट बुक में लिखा था। .... इन दस वर्षों की राजनीति परिभाषा- छलावा। उकता पैंची। उठापटक। घिनौनेपन। लिजलिजापन। विघटन। टूटन। स्वार्थ। खुदगर्जी। दरार। खोखलापन। विश्वासघात। तनाव। घुटन। सौदेबाजी। मुनाफाखोरी। रिश्वत। भाई भतीजावाद। जातिवाद। झूठे आश्वासन। व्यामोह, जड़ता, अराजकता और ..... और अंत में अपने मानसिक संघर्ष के बीच ऊब कर थक कर हारी हुई उसने मोटे मोटे अक्षरों से अपनी बही के समूचे पृष्ठ को इस एक शब्द से भर दिया था - झूठ। झठ झूठ। और रात भर वह रस्साकशी में लगी रह गयी थी - उस झूठ से कन्नी काट जानता था। उसे नाक सिकोड़ कर भाग जाना भी तो एक झूठ ही होता। एक दूसरा झूठ। उस विस्तृत फैले हुए झूठ के शिकंजे में एक और झूठ।''[48]

इस उपन्यास में चुनावी सरगर्मी और राजनैतिक पैंतरेबाजियों की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। जिसमें आधुनिक समाज की आधुनिकता को अपनाए हुई पढ़ी-लिखी युवती बेरोजगारी से तंग आकर कुछ कर गुजरने की चाह लिए राजनीति में प्रवेश करती है। किन्तु अपने राजनीतिक विरोधियों को मात देने के लिए  जनता को प्रभावित करने के लिए सारे प्रयत्न करती है, जिससे वह राजनीतिक दाँव- पेंच और वर्तमान में चल रही राजनीति के विषय में बहुत करीब से जान गई तब उससे उकताने लगी। एक क्षण के लिए वह इस भ्रष्ट राजनीति से आजादी पाकर सब कुछ छोड़ देना चाहती है किन्तु वह युवावर्ग को प्रतिनिधित्व करने वाली पढ़ी लिखी आधुनिक जागरूक नारी है जो लोगों को जागरूक कर अपने हक के लिए लड़ने की, सच्चे मूल्यों पर आधारित राजनीति करना चाहती है। और मौजूदा

[48] चुन चुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 58

सरकार को जनता के पैसे पर पार्टियों के खर्च और विदेशी यात्रा का विरोध करते हुए, मुनाफा खोरी रोकने तथा बेकारी की समस्या सुलझाने, महँगाई को घटाने की, अच्छी नौकरियाँ और व्यवस्था में सुधार लाने की सारे वादों की पोल खोलते हुए समाज में जनता की इन जरूरतों का अपना चुनावी मुद्दा बनाती हैं। जिससे अभिमन्यु अनत अनैतिक, भ्रष्ट राजनीतिक मूल्यों का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए अपने उपन्यासों में आदर्श राजनीति जो जनता से जुड़ उनकी समस्या को समझे उसे चुनावी मुद्दा बनाए जिससे जनता में राजनीति के प्रति उदासीनता घटे एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो।

### 5.2.1 सरकारी तंत्र और युवा असंतोष

चुनाव के समय किये गये वादे और सत्ता में आने के बाद उस के प्रति उदासनीता, राजनीति में आने के बाद अपना स्वार्थ साधकर राजनेता, वोट देने वाली जनता को भूल उनके हर के पैसों पर स्वयं विदेश यात्राओं में लगे होते हैं और इनकी भ्रष्ट राजनीति का शिकार युवा वर्ग भाई भतीजावाद या फिर गुटबाजी कर जनता को दबाने वाली सरकार के प्रति उदासीन होकर या तो सरकारी नौकरियाँ छोड़कर फिर से खेती या फिर आजीविका पाने लायक दो जून रोटी की चाह में कुछ छोटे मोटे कार्य कर अपना जीवन व्यापन करते हैं। या फिर आंदोलन उपन्यास के रवि की तरह जनता में इस असंतोष को आक्रोश के रूप में विरोध, आंदोलन का रूप देने के लिए प्रेरित करता है। इन पात्रों के माध्यम से अनत ने अपने उपन्यासों में अनैतिक भ्रष्ट राजनीति के चलते सरकारी तंत्र की ढिलाई रोजगार की समस्या, नये आयामों की कमी के कारण उदास युवा वर्ग में बढ़ती असंतुष्टों को अपने उपन्यासों में स्वर दिया है।

''आज हम स्वतंत्र हैं। स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है स्वतंत्रता मान है। जीवन का प्राण है। स्वतंत्रता तब तक स्वतंत्रता है जब तक मानव स्वतंत्र है। स्वतंत्रता गर्व है अधिकार की सुरक्षा की भावना है। उसमें राजनीतिक, धार्मिक, मानसिक, साहित्यिक स्वतंत्रता हो तब। स्वतंत्रता वहाँ हैं जहाँ प्रजा समृद्धि और शांति की श्वास ले सके, जहाँ सभी के लिए काम हो, सभी के लिए रोटी हो सभी की सांसें आजाद हो, अन्यथा आजादी शर्म है। स्वतंत्र देश में जाति का हित होता है, मानव

अधिकार की रक्षा होती है। अनासथा में आस्था होती है। भावना निस्वार्थ होती है। .... कपट खुदगर्जी और फरेब स्वतंत्रता नहीं होती। करारा व्यंग्य तो यह है कि हमने प्रतिनिधि चुने, स्वतंत्रता पायी और पाकर उन्हीं प्रतिनिधियों की बांहों में अपने को पकड़े पा रहे हैं।''[49]

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यास 'आंदोलन' में इसके मुख्य पात्र रवि के माध्यम से युवा वर्ग में सरकारी तंत्र के विरूद्ध व्याप्त असंतोष को बतलाते हुए उसकी क्रांतिकारी विकास धारा से साधारण जन मानस को जागरूक कर वह जनता में स्वतंत्रता के सही मायने तभी है जब हम सरकार का सही चयन करं। जिससे सरकारी तंत्र में सुधार हो वह स्वतंत्रता की बात कर उल्टा आगे बैठने वालों को रोके नहीं, देश की प्रगति को बाधित ना करे। देश के समाज के विकास की बात करे। अनत रवि के माध्यम से असंतोष के भाव को क्रांति विरोध में परिवर्तित कर आंदोलन, संघर्ष की प्रेरणा देते युवा वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करते हैं। तो कहीं यही युवा वर्ग बेरोजगारी, अराजकता से तंग आकर गलत रास्ते पर जाकर नशाखोरी जुआखोरी जल्दी बड़े बन जाने के लिए छोटे रास्ते अपनाता है। जिससे समाज में अराजकता फैलती है। इसका उदाहरण तीसरे किनारे पर, अस्ती-अस्त, कुहासे के दायरे, जम गया सूर आदि उपन्यासों में देखा जा सकता है। युवा पीढ़ी ही देश को आगे बढ़ने में सरकार को चलाने में अपना पूरा योगदान देने वाली युवा पीढ़ी में असंतोष की भावना देश के अस्तित्व को खतरे में डालती है।

''क्यों नहीं। आप तो पहले भी लोगों को बाहर करते आ रहे हैं। राजनीति के भेजे आज यहाँ आये थे। शायद यही वजह है कि आपने इस जगह को राजनीतिक कूड़ेदान बनाकर ही छोड़ा। उधर से जो भी खोटा माल भेजा गया उसे आप यहाँ दाखिल करते गये और योग्य लोग बाहर छूटते गये। और जिस जिस ने आपके सामने दुम हिलाते फिरते रहने से इनकार किया उसे आप बाहर हो जाने को विवश करते रहे। पर मैं उन लोगों में से नहीं हूँ।

[49] आंदोलन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 117-118

निर्देशक ने फोन उठाकर अपनी सेक्रेटरी से बात करनी चाही। शेब्रीन अपनी जगह से आगे बढ़ा। निदेशक के हाथ से फोन छीनकर मेज पर पटक दिया और चिल्ला उठा।''[50]

इस उपन्यास में अभिमन्यु अनत असंतोष को आक्रोश में परिवर्तित होते हुए शेब्रीन की कुंठा को अभिव्यक्त कर रहे हैं। जो अपने काम के प्रति ईमानदारी बरतते हुए तंगहाली में जीवन व्यतीत करने को मजबूर है क्योंकि उसकी तरक्की होने से वह इस बढ़ती महंगाई परकुछ हद तक काबू पा सकेगा किन्तु राजनीतिक दबाव के अंदर काम करता सरकारी तंत्र उसकी तरक्की रोके राजनेताओं को खुश करने में लगा है। सब सरकारी तंत्र में आकर राजनेताओं की चाटुकारिता करते हैं और अपना अपना मतलब निकालते हैं। उमंग उत्साह से काम करने वाला वर्ग इसका हमेशा कार होता रहा है। और यह असंतुष्टी का भाव कभी आक्रोश का रूप ले तो घातक हो सकता है। क्योंकि युवा वर्ग देश की स्थिति उसकी परिस्थिति और समाज में व्याप्त अभाव और महंगाई से असंतुष्ट होते हैं। क्योंकि वे इस अवस्था में रोजगार की तलाश में होते हैं और इसकी तलाश में दर-दर भटककर वह इस राजनीति और सरकारी तंत्र से परिचित होकर उसके प्रति आसक्ति उनके मन में पलने लगती है। जिससे चिढ़ने लगते हैं और सरकारी तंत्र में काम कर रहे युवा वर्ग दबावऔर घुटन को सह नहीं सकता और उससे असंतुष्ट होकर अपने अस्तित्व की रक्षा के हित में ऐसी नौकरी से त्यागपत्र देकर छोड़कर फिर से खेती में अपना मन रमाता है। ऐसे पात्र के माध्यम से अनत युवा पीढ़ी के असंतोष को व्यक्त करते हैं।

- अपने अधिकारों के लुट जाने का सहयोग कौन किसी को देगा? क्या राजनीति यही उम्मीद रखती है कि जनता अपनी बर्बादी के लिए किसी को अपना सहयोग दे! यह तो अपने हाथों अपना घर जलाने वाली बात हुई।

- तुम सोचते हो कि सरकार यह नहीं समझती कि जनता का ख्याल रखना उसका कर्तव्य है ओर अगर मानते हो कि वह इस बात को समझती है तब तो यह कहना कि सरकार इस बात से बेपरवाह है नादानी होगी क्योंकि सरकार यह कैसे नहीं समझ सकती है कि जनता की प्रगति ही उसकी प्रगति है।

---

[50] शब्द भंग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 43

- समझने न समझने की बात कहाँ पैदा होती है? बात तो प्राय: यह होती है कि समझते हुए ढिठाई होती है।

- तुम्हारा मतलब?

आसान बातों को समझना कभी सचमुच ही बहुत कठिन होता है। अभी पहाड़ से नीचे उतरते हुए तुम अनुभव करोगे कि उतरना चढ़ने से अधिक कठिन है। राजनीति में आज दो-तीन ऐसी बातें आ गयी हैं जिसके कारण जनता के बीच असंतोष बढ़ना एकदम स्वाभाविक है।''[51]

अभिमन्यु अनत यहाँ पर लालमनु घनश्याम आदि के बीच वार्तालाप के माध्यम से राजनीति, सरकार, उसकी फिजूलखर्ची के कारण् जनता सरकार के प्रति उदासीन है और इन युवाओं के अनुसार सरकार को जनता की प्रगति के विषय में सोचना है। जो सरकार जनता की प्रगति को महत्व नहीं देती ऐसी सरकार को क्या सहयोग देना। यहाँ अनत साफ साफ शब्दों में युवा वर्ग की असंतुष्टि को प्रस्तुत करते हुए युवा वर्ग की सरकार से जो उम्मीदें हैं उसे अभिव्यक्त करते हैं जिससे असंतोष को दूर किया जा सकता है। देश को प्रगति की ओर ले जाने वाला युवा वर्ग संतुष्ट रहा तो ही देश आगे बढ़ सकता है।

''नहीं शोभा, मैं इस राजनीति की दुनिया में अब अधिक नहीं टिक सकती। यह नासूरों से भरी दुनिया है। यह देश घटिया लोगों से भरा हुआ है।''

''यही तो तुम्हारी चुनौती है। इसे बदलने की कोशिश जारी रखने वालों के साथ अपने को जोड़े रखो।''

नंदिनी आवेशित हो अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। आँखों और हाथों से बोली हुई चिल्ला उठी, ''कुछ होने का नहीं। जिस जनता के सिर को ऊँचा रखने के लिए तुम खतरों को मोल लेकर सिर उठाओ, वे ही लोग सिर कुचलने वालों के साथ जा मिलते हें। लोगों को आज जिंदगी और भविष्य से कहीं अधिक मायने रखता है रुपया और ओहदा। पहले से सड़े हुए लोग आम जनता को भी सड़ाते

---

[51] जम गया सूरज - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 83

चले जा रहे हैं।''[52] इस सरकारी तंत्र से असंतुष्ट युवा वर्ग इसके सुधार में इसके विरोध में यदि राजनीति के माध्यम से जाना चाहता है तो उसकी राह में इसके फैलाए जाल में उलझकर इससे मोह भंग की स्थिति उत्पन्न होती है जो इस डरा धमकाकर अपनी बात मनवाने वाली अपने निजी स्वार्थ के लिए सरकार के द्वारा लोगों को दबाने डराने वाली नीति का पूंजीपतियों के इशारों पर चलने वाली सरकार की मानसिकता और दबे हुए को और दबाने वाली नीति के प्रति अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त करते हुए समाज व्याप्त असंतोष के प्रति समाज को अवगत करते हैं।

### 5.2.2 राजनीति और साम्प्रदायिकता

साधारण जन मानस चाहे वह किसी धर्म जाति समाज का रहने वाला क्यों न हो उसका जीवन रोजगार, परिवार का पालन पोषण, शिक्षा अच्छे पद तरक्की आदि कामनाओं को लिए अपने-अपने धर्म आचार विचारों का निर्वाह करते जीता है और अपने अपने धर्म की संस्कृति की रक्षा करना इन सबका अधिकार है किन्तु इसे साम्प्रदायिकता का नाम स्वार्थी तत्व देते हैं जिसे अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने हेतु लोगों में आक्रोश भरते हैं आपस में वैर और वैमनस्य पैदा करते हैं। जिस कारण, अशांति भेदभाव असामाजिकता उत्पन्न होती है। और इसका फायदा उठाना इन दांव पेंचों को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर इस सांप्रदायिकता की खाई को लोगों के बीच यथावत बनाये रखना राजनेताओं की भ्रष्ट राजनीति का पहला पाठ है। इसे अभिमन्यु अनत ने बड़े ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हुए सामान्य जनता को इन हथकंडों में न फंसने के लिए आग्रह करते हुए विकृत राजनीति करने वालों की पोल खोलते हैं। जिस दिन साधारण जनता इनके इन कुचक्रों में न फंसकर इन पर सवाल उठायेगी उस दिन समाज में देश में एकता और शांति का माहौल होगा।

''हंस बोला ''उन लोगों ने सोचा था कि मस्जिद की दीवार पर हमारी पार्टी के पोस्टर चिपकाकर वे मुसलमानों को अपने पक्ष में कर लेंगे, पर उनकी यह चाल सफल नहीं हो पाई। कल लालमाटी के मदरसे में इलाके के मुसलमानों ने हमारा जो खैर मकदम किया है उससे साफ जाहिर है

---

[52] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 350

कि वे लोग बहकावे मे आने से रहे।''[53] यदि राजनीति में जनता की स्थिति का सुधार विकास आदि मुद्दा लिया जाए तो जनता भी ऐसी पार्टी के प्रति जागरूक रहेगी अपना विश्वास बनाये रखेगी। समाज में विकास की कामना चाहने वाला आज के युग का वर्ग जागरूक है और ऐसे छोटी-छोटी ओछी हरकतों को नजरअंदाज कर अपने अधिकारों को समझ आगे बढ़ने में सक्षम इसका सकारात्मक रूप अभिमन्यु अनत प्रस्तुत करते हैं। फिर भी राजनैतिक पार्टियाँ सांप्रदायिकता को अपना राजनैतिक मुद्दा बनाकरअअपने वोट कमाने के लिए कभी पीछे नहीं हटती।

जब भी सांप्रदायिक दंगों की बात होती है तो राजनैतिक पार्टियों द्वारा की गयी साजिश के अंतर्गत अभिमन्यु अनत ने सांप्रदायिक दंगों का उल्लेख राजीनति से जुड़े संदर्भों में किया है इनके उपन्यासों में सांप्रदायिक दंगों का केवल उल्लेख मात्र है। ये इस ज्वलंत विषय को कभी उतनी तूल नहीं देते ना ही इसका सांप्रदायिकता किसी दो गुटों के बीच की लड़ाई का वर्णन करते हैं। अभिमन्यु अनत की नजरों में एकता का समानता का भाई चारे का महत्व अधिक मायने रखता है। इसीलिए उन्होंने हिन्दू मुस्लिम प्रेम और भाईचारे का संदर्भ इनके हर उपन्यास में मिल जाता है। किन्तु साम्प्रदायिक दंगों का मुद्दा चुनाव से जुड़े उपन्यासों में ही उठाया गया है। और विषय वस्तु में संदर्भ के साथ इस मुद्दे को दिखाकर इसके पीछे गंदी राजनीति का ही हाथ है इस विषय को स्पष्ट करते हैं।

''द्वीप के सभी शहरों की खलबली सुनकर धनेश ने सीधू से कहा था कि अगर वह अपनी खैरियत चाहता हो तो राजनीतिक नेताओं की मोटरों में घूमना कुछ दिन के लिए बंद कर दे। उसने यह चेतावनी सीधू को खेल-खेल में दी थी। उस वकत उसे इस बात की जरा भी गुंजाइश नहीं थी कि सीधू उस खतरे का शिकार हो सकता है जिसका उसे पूर्वाभास सा था।''[54]

अभिमन्यु अनत ने सांप्रदायिक दंगों को हमेशा राजनीति से जोड़ा है जो अपने स्वार्थ के लिए लोगों को आपस में बांटे रखते हैं। और इनके इस भेद का फायदा उठाकर सत्ता में आने के बाद इनके विकास का तो कोई कार्य नहीं करती और इन्हें इसी तरह गौ हत्या या फिर बिफ फेस्टिवल जैसे

---

[53] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 351

[54] कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 70

असहिष्णुता जैसे मुद्दे जो समाज में राजनैतिक स्वार्थ के अंतर्गत उछाले जाते हैं। वैसे ही वोट बैंक तैयार हो जाता है और इसके चलते धर्म के नाम पर मंदिर मस्जिद के नाम पर लोगों को यूं ही बांटा जाता रहेगा। अभिमन्यु अनत का मानना है कि जनता को राजनीति की समझ अब आने लगी है और इसलिए विपक्ष की इस सांप्रदायिकता की चिंगारी सुलगाने के प्रयत्न को आम जनता ने इस ओर ध्यान ना देकर विकास की रोजगार की सुधार की कामना करने वाली राजनैतिक पार्टी का गर्मजोशी से स्वागत किया और दंश जैसा नेता 'आसमान अपना आंगन' के अंत में विजयी होता है और जहाँ अच्छाई की जीत को दिखाया गया है।

''चुनाव की सारी दौड़-धूप सारी परेशानियों और दंगे फसादों के उन तमाम तनावों और थकानों के बावजूद हंस के चेहरे पर झलक रहा था।''[55] अपनी मेहनत के बल पर हासिल की हुई जीत सच्चा आनंद देती है। बांट कर समाज में अराजकता फैला कर जीत भी जाए तो फिर उन बंटे समाज के दोनों पक्षों को खुश करने में जीत की खुशी भी उतनी ही क्षणिक होती है जितने कि इनके वादे। जो धर्म के नाम पर लोगों में समाज में संकीर्णता का बीज बोते हैं ऐसी दमनकारी राजनीति का विरोध अनत अपने उपन्यासों में बड़ी शालीनता से करते हैं। और अपने समन्वय वादी विचारों को प्रमुखता देते हुए सांप्रदायिक ताकतों को मुंह की खाते हुए हार का स्वाद चखते हुए बतलाते हैं।

### 5.2.3 राजनीति में स्त्री और उसका स्वरूप

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में राजनीति का विषय जब भी आया है तो उसमें स्त्री पात्र कहीं न कहीं राजनीति को बल देते हुए दिखाई देती हैं। चाहे वह प्रस्तुत रूप से हो या फिर परोक्ष रूप से अनत जब आधुनिक नारी का चित्रण करते हैं तब उसे स्वच्छंद विचारधारा वाली बौद्ध वर्ग से जुड़ी तेज तर्रार औरत के रूप में प्रस्तुत करते हें जो चुनाव के प्रचार के लिए पुरुष के समान संघर्ष का जी जान से चुनाव का प्रचार करती है। तो कहीं चुनचुन चुनाव की स्वस्ति के रूप में तो उसे उपन्यास के मुख्य पात्र के रूप में जो अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी के दम पर अनैतिक राजनीतिक कुचक्रों

[55] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 408

को तोड़कर एक स्वस्थ राजनीति की कल्पना कर खूब मेहनत से अपनी जीत हासिल करती है, तो ‘आसमान अपना आंगन’ में शोभा और नंदनी की हंस को मानसिक और राजनैतिक स्तर में सहायता देती है। उसके चुनावी प्रचार में खूब प्रचार करती है और खुद भी चुनाव में खड़ी होती है।

‘‘संयम आत्मविश्वास और अपनी मुस्कान को बनाये हुए नंदिनी ने कैमरे से क्रिओली में बात शुरू की -

‘‘वो स्वर। मेरा यह अभिवादन आप सभी महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को भी। परसों हम सभी के लिए एक ऐतिहासिक दिन होगा। हम पांच साल पहले ऐसे अवसर पर अपनी पूरी जिम्मेदारियों को सही ढंग से न समझ पाकर जो भूलकर बैठे थे आज उसका एहसास हमें और हमारे बच्चों तक को हो रहा है। हम सभी मतदाताओं जोपरसों अपना मतदान करने जा रहे हैं अपने बच्चे के हित के लिए उस पिछली भूल को ख्याल में रखकर वोट देना है। अपने बच्चे के हित के लिए उस पिछली भूल को दोहराने का हमें अधिकार नहीं है। क्या-क्या वायदे नहीं हुए थे आपके साथ। अगर आप उन लोगों से नीं पूछ पा रहे कि कहाँ गये वे वायदे, जिनको आपने वायदे पूरे करने का अवसर दिया था, तो कम से कम अपने आपसे यह सवाल नहीं कर पाएँगे तो ये आपके बच्चे जो आपकी अगल-बगल में बैठे मुझे सुन रहे हैं, वे आपसे सवाल करेंगे। वे पूछेंगे वे वायदे क्या थे और क्यों पूरे नहीं किये गये?

‘‘क्या आपके प्रतिनिधियों ने आपसे वोट को भीख की तरह माँगते हुए आपसे ये वायदे किये थे कि देखते ही देखते उनकी फटीचर गाड़ी की जगह रातों रात उनके आंगन में तीन-तीन कारें हो जाएँगी? क्या उन्होंने आपको वचन दिया था कि वे अपने भाई, भतीजे, बहनोई और जाति विशेष को कॉण्ट्रेक्ट, नौकरियाँ तरक्की और ओहदे देते रहेंगे? या उन्होंने आपसे यह वायदा किया था कि बाजार की जो टोकरी पचास रुपये में भर जाती थी वह ढाई सौ रुपये में भी खाली ही रह जाएगी? अगर ये सब उनके वायदे नहीं थे तो किनके वायदे थे, जो आज पूरे कर जाने में उन्हांने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा? मैं आज आपके सामने कोई ऐसा वायदा, कोई ऐसा प्रलोभन आपको देना नहीं चाहती पर हाँ, एक

वायदा मैं आप सभी को और भगवान को साक्षी मानकर आपसे कर रही हूँ। अगर आपके वोट से मुझे विधानसभा में पहुँचने का अवसर मिल गया तो मैं इनके जैसे अनर्थों की भी नहीं होने दूँगी। यह मेरी प्रतिज्ञा है।''[56]

अभिमन्यु अनत ने वंदिनी जैसी लड़की जो आधुनिक समाज का प्रतीक किन्तु कम उम्र में ही उसने शोषण सहा और फिर उसके जीवन में दिनेश से दोस्ती और उस दिनेश का उसे उपभोग की वस्तु समझ उसका शोषण करना और फिर बाद में उसे ब्लैकमेल कर परेशान करने का वंदिनी डटकर सामना करती है, उसका विरोध करती है किन्तु उसकी बढ़ती हरकतों का बदला लेने के लिए उस दिनेश की हरकतों का उसे सबक सिखाने के लिए उसके विरूद्ध हंस की मदद से चुनाव लड़ने के लिए तैयार होती है, उसके अन्याय के खिलाफ उसको दुनिया के सामने उसके असली रूप में दिखाना चाहती है और हंस जैसे दोस्त की मदद से वह चुनाव में उसके विरूद्ध खड़ी होकर नारी शक्ति का परिचय देती है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में 'अचित्रित', और' फैसला आपके' उपन्यास में स्त्री को राजनेताओं का काम सफल करने के लिए स्त्री को एक उपभोग की वस्तु के समान फैसला आपका के हेमराज ने उसका इस्तेमाल अपनी तरक्की के लिए अपने स्मगलिंग के धंधों के लिए राजनीति की आड़ में फायदा उठाया तो 'अचित्रित' में एक वेश्या जो राजनेताओं के साथ दोस्ती होने से उससे प्यार कर बैठती है और उसके लिए विरोधी पार्टी के नेता को फंसाने जाती है किन्तु उसकी सच्चाई के सामने देश को महत्व देते हुए उस पर दाग लगने से उसे बचा लेती है। किन्तु अभिमन्यु अनत ने नंदिनी और स्वस्थी का चुनाव लड़ना अपना खुद का फैसला है जो खुद उपन्यास के केन्द्र में है जो अपने साथ हुए अन्याय के प्रतिशोध के रूप में नंदिनी का उसके विरूद्ध चुनाव में खड़े होकर निर्भयता से अपने उस डर का सामना कर चुनाव क्षेत्र में उसे हराकर उसके घमंड को तोड़ना चाहती है। वह अपने इस निजी संघर्ष को उस देनेश की बुराइयों, उसकी पार्टी के उन बुराई के विरोध में जी जान से चुनाव प्रचार करती है और अपनी जीत दर्ज करा कर उसे शर्मिंदा करती है। वह अपने पूरे साहस

---

[56] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 374

और लगन के साथ चुनाव में खड़ी होती है निदेश को हराकर न सिर्फ खुद की अपितु समस्त संसार में नारी की अस्मिता की रक्षा की लड़ाई जीतती है तो दूसरी ओर आंदोलन उपन्यास में रवि के साथ सलमा उसकी ताकत बनती है। यहाँ अब तक के जिन उपन्यासों की चर्चा हुई है उनमें नंदिनी को या सलमा इनकी उपन्यास के नायक के प्रोत्साहन से इस क्षेत्र को चुनना और अपने निजी कारणों से इस ओर उन्मुख होना बतलाया गया है। अब नारी भोग की वस्तु या किसी का आसरा लेकर खड़ी होने वाली स्त्री से भी आगे की सोच ली हुई स्त्री के रूप में अभिमन्यु अनत ने स्वच्छंद विचारों वाली स्वस्थी को उपन्यास के मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। राजनीति में आना उसका खुद का चयन किया हुआ निर्णय है। वह अपनी दिशा खुद निर्धारित करती है। पढ़ लिखकर भी बेरोजगारी का सामना करते हुए इस राजनीतिक नीतियों समाज में इसके प्रभाव को बदलने की नई-नई चाह लिए चुनाव में खड़ी होती है। इस दौरान उसे राजनीति का यथार्थ स्वरूप दिखाई देता है जिससे वह घृणा करती है किन्तु अपने राजनीति की ओर बढ़ते कदम पीछे नहीं लेती - ''सामाजिक लोकतंत्र की दुहाई और कुछ न होकर दक्षिण पंथियों की फरेबी है। पूरे फ्रांस को ही नहीं पूरे विश्व को इन खबोर पंजों से बचाना है।

फ्रांस्वाज ने उसके स्वर में स्वर मिलाया था।

- संसार भर की दक्षिण पंथी व्यवस्था में सारा स्वत्वाधिकार सभी निदेशन सभी उद्योगों के लाभ मुट्ठी भर पूंजीपतियों की बपोती बनकर रह जाते हैं।''[57] स्वस्ति युवा वर्ग के प्रति जिसमें समाज सरकार अधिकारों के प्रति जागरूक थी जो इस व्यवस्था से सवाल कर नई सोच को स्थापित करने में सक्षम थी। ऐसे स्त्री पात्र की सृष्टि कर उसे राजनीति में उसकी जटिलताओं को बखूबी सुलझाते चित्रित कर अनत ने राजनीति में स्त्री के स्वरूप को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वस्ति की चिट्ठी के जवाब में फ्रांस्वाज का पत्र अभिमन्यु अनत की स्त्री के प्रति प्रगतिशीलता दर्शाता है।

[57] चुन चुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 46

- मेरे अपने देश की तरह तुम्हारे देश में भी औरत पूरे देश का दूसरा हिस्सा होगी। पर वहाँ भी अन्य स्थानों की तरह वह मर्दों के पीछे-पीछे रहने वाले के सिवाय और कुछ न होगी। इन तमाम नारी आंदोलन और आश्वासनों के बाजवूद वह आज भी मर्द के साथ-साथ कदम मिलाकर चलने में अपने को असमर्थ पा रही होगी। मेरे अपने देश के राष्ट्रपति ने तो यह कहकर महिलाओं को छुट्टी दे दी थी कि औरत को थोड़ा सा प्यार, थोड़ा सा पैसा और थोड़ी सी हमदर्दी चाहिए, जबकि मैं यह कहने में लगी हुई हूँ कि मर्द चाहे तो अपने प्यार, पैसे और हमदर्दी को अपने पास रख ले पर हमें हमारी हैसियत दे दे और फिर अब यह देने की नहीं लेने की बात न बन गयी है। हमें अपने अख्तियार खुद वसूल करना होगा। क्या तुम्हारी विधानसभा में स्त्री प्रतिनिधि है? अगर है तो कितनी और क्यों इससे तुम संतुष्ट हो सी सी? .... और फ्रांसवा की यह चिट्ठी उसे विचलित कर गयी थी। उसके यह प्रश्न उसके जेहन में बजने लगा था। वह उसकी हर बात से सहमत नहीं थी न ही उसकी हर बात से असहमत। तर्क-वितर्क के बाद उसने मान लिया था फ्रांस्वाज की अधिक बातों पर उसकी सहमति थी।''[58]

फ्रांस्वाज के विचारों से नारी चेतना जागरूकता के मुद्दों को उठाते हुए अभिमन्यु अनत आगे स्वस्ति के माध्यम से इस व्यवस्था इस गंदी राजनीति से संघर्ष कर एक सच्ची राजनीति जो अपनी करनी कथनी में अंतर न रखती हो जो खोखले वादों पर न चलकर स्वस्थ समाज के निर्माण में नैतिक मूल्य, समानता बेहतर आर्थिक व्यवस्था, भेदहीन समाज, जनता को रोजगार उसके उत्थान के प्रति केन्द्रित राजनीति की स्थापना की कामना लिए स्वस्ति चुनाव भी लड़ती है और जीतती भी है।

### 5.3 मॉरिशसीय समाज के विविध रूप

अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य मॉरिशसीय समाज को प्रतिबिंबित करता हुआ उस समाज की विकसित परंपरा को अभिव्यक्त करते हुए आगे बढ़ता है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में समाज के विविध रूप देखे जाते हैं, फिर चाहे राजनैतिक उपन्यास हो या फिर ऐतिहासिक उपन्यास,

---

[58] चुन चुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 48

सब में उस समय की समसामयिक गतिविधियों की अभिव्यकित हमेशा कल्याणकारी रही है। जो समाज को एक नई दिशा निर्धारित करते हुए समानता की, सद्भावना की, आदर प्रेम की, शोषण अत्याचार संवेदना संघर्ष क्रांति आंदोलन समाज में हर तरह के परिवर्तनों की अभिव्यक्ति करते हुए समाज में चली आ रही परंपरा उसका प्रभाव या फिर उसका विरोध संघर्ष आदि को दर्शाते हुए विसंस्कृतिकरण बदलते मूल्य आधुनिकता का चित्रण उसके प्रभाव और आधुनिक समाज में जी रहे मानव के सुख दुख की अभिव्यक्ति इनके उपन्यासों में हुई है जो अपने देश से इतनी दूर इतने वर्षों तक अन्याय अत्याचार सहकर भी अपनी संस्कृति बचाये हुए हैं। अपनी भाषा संस्कृति बनाये रखने का संघर्ष आज भी जारी है। जिसके द्वारा नई चेतना जागृत कर समाज में मजदूर लोगों के संगठन बनाकर आर्थिक, सामाजिक भेदभाव के विरूद्ध आंदोलन आदि की अभिव्यक्त किया है बल्कि आगे आधुनिक समाज के बदलते परिवेश के बदलते मूल्यों को बहुत सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है। जहाँ उनके आपस में संबंध, प्रेम भावना, मित्रता और आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक स्थितियों का इनके जीवन पर प्रभाव और परिस्थितियों से जूझते हुएअपनी एक पहचान बनाने की चाह आदि हम इसके विविध रूप में देखेंगे कि किस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद मॉरिशसीय समाज के जीवन मूल्यों में परिवर्तन आया। आधुनिकता के साथ-साथ अति आधुनिकता अपनाने की चाह में नर नारी संबंधों में जो बदलाव परिवर्तन आते हैं, उससे होने वाले पारिवारिक विघटन नई पुरानी पीढ़ी के बीच अंतर, स्त्री का स्वरूप आदि आधुनिक जीवन के विविध रूप हैं।

‘‘दूसरे कमरे से सोमू के कंप्यूटर पर गेम खेल रहे मनोज को उसने अपने ही कमरे से आवाज देकर कहा कि वह वॉल्यूम को कुछ कम करे। दोबारा अधिक जोर से बोलना पड़ा, तब कहीं जाकर मीनू ने आवाज को कम किया।

संगीता ने अपनी नानी से पूछा ‘‘नानी! आपको मैंने टी.वी. या वीडियो फिल्में देखते कभी नहीं देखा, जबकि हिंदी सीरियल के साथ-साथ पाकिस्तानी सीरियल देखना आप बहुत पसंद करती है। ऐसा क्यों?’’

''ऐसा इसलिए कि ये हिंदी फिल्में बस एक जैसी ही होती हैं। वही नाच गाने और मार-पीट। कहानियाँ भी घूम-फिरकर एक ही धुरी पर घूमती रही हैं।''[59] इस उद्धरण से हमें आधुनिक समाज के बदले स्वरूप तथा पुराने संस्कृति को जोड़ के रखने का प्रयत्न भी किया गया है। आधुनिक उपकरण जैसे कंप्यूटर, टी.वी. वीडियो का प्रयोग। दादी पुरानी पीढ़ी की होते हुए भी उन्हें इस आधुनिक उपकरणों से लगाव है। राम नाम की माला का जाप या कोई धार्मिक ग्रंथ का पाठ न कर नानी भजन के बजाए हिन्दी टीवी सीरियल या फिल्मी गीत देखना पसंद करती है। घर पर परिवार होते हुए भी सोमु अपने परिवार के साथ न बैठकर अपने कमरे में अकेला इलेक्ट्रोनिक उपकरणों के हवाले अपने आप को किए हुए है। तो दूसरा सदस्य अपने कमरे में अकेले ही संगीत का मजा ऊंची आवाज में ले रहा है। इस परिवार पर आधुनिक समाज के बदले मूल्यों का पूरा प्रभाव जहाँ परिवार में घर में सब साथ रहते हुए भी अलग अलग है। समसामयिक परिस्थिति का समाज पर बड़ा ही प्रभावशाली प्रभाव पड़ा है कि आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करके ना ही नई पीढ़ी बल्कि पुरानी पीढ़ी नानी भी बहुत प्रसन्न हैं। इस अति आधुनिकवाद में संयुक्त परिवार को अभिमन्यु अनत बतलाते हैं जो साथ तो रहता किन्तु अपनी-अपनी व्यवस्था में लीन रहता है। आजादी के बाद अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सब अच्छे पद और तरक्की की कामना करते हैं। ऐसी ही कामना करता समाज का बौद्धिक वर्ग जो मध्य वर्ग के रूप में विकसित हुआ था जो पढ़ लिखकर और आगे बढ़ने की चाह लिए तरक्की चाहता है। व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है। देश के आजाद होने के बाद देश की बदलती व्यवस्था का भी समाज पर प्रभाव रहा है।

''एक बार एक मित्र की छेड़खानी पर वह भी उसी लहजे में कह गया था - अगर तुम्हारी तरह मेरे भी उस और रिश्तेदार होते तो मैं इस संस्थान का निदेशक होता। उसके उस वाक्य को जहाँ कुछ लोगों ने बस मजाक ही माना था वहाँ कुछ ने उसे उसकी गूँगी कुण्ठा की अंदरूनी चीख माना था। और जिन्होंने इस बात को औरों के मुँह से सुना वो जब भी रोबिन की चर्चा करते तो 'जीरक्तर राते'

---

[59] अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 131

संबोधन के साथ यानी कि वह निदेशक जो बनते-बनते रह गया। रोबिन के अपने विभाग के रहित ने जब उसे यह बात बतायी थी तो वह भीतर से दुखी होकर भी ऊपर से मुस्करा गया था।

और शायद तभी से उसके भीतर अपने ओहदे से ऊपर उठने की तीव्र इच्छा प्रबल हो आयी थी। जब वह इस ओहदे की दौड़ में शामिल होने लगा था तो उसके हितैषियों ने उससे यह कहते हुए कि वह जगह उसी को मिलेगी उससे यह भी कहते रहे थे कि वह सतर्क रहे। रहीम ने तो कहा था-

- प्रोमोशन की हाईजैकिंग आजकल बुलंदी पर है।''[60] आधुनिक मॉरिशसीय समाज के बदलते विभिन्न रूप में हम देखते हैं पढ़े लिखे वर्ग की नौकरी की तलाश, फिर तरक्की की आस में सारे काम ईमानदारी से करने पर भी भाई भतीजावाद के चलते, उसकी तरक्की कोई और मार ले जाता है और वह कुंठित हताश सा महसूस करता है जिसके मन में हताशा घर कर जाती है असंतोष की अनुभूति होती है। बढ़ती महंगाई का सामना ना कर पाना बदलते जीवन मूल्यों में जीवन में आर्थिक स्वर को और सुधारने की कामना लिए सरकारी कर्मचारी अपनी तरक्की की आस में होता है किन्तु यह आस उसकी कुंठा बनकर आधुनिक समाज में दिखाई देती है। तो कहीं समाज में बढ़ती राजनीतिक गतिवधियाँ और इसके नयी-नयी योजनाएं, अपना वोट बैंक बनाये रखने की जिसके अंतर्गत लोगों को नौकरी का प्रलोभन इलेक्ट्रानिक गेजट का बांटना आदि देखा गया है जो राजनैतिक मूल्यों का हनन आधुनिक समाज की सबसे जटिल समस्या बनकर सामने उभरती है। सामाजिक स्तर पर देखें तो लोगों की विचारधारा में अभिमन्यु अनत ने काफी खुले और परिवर्तित विचारों वाला आधुनिक समाज प्रस्तुत किया है जो कि पति के द्वारा त्यागी गयी स्त्री को उसके बच्चे के साथ अपनाने को तैयार एक उम्मीद और उपन्यास में तो परिवार वाले लड़का और उसकी माँ उसे किसी और के गर्भ से होने पर भी उसके एकाकी जीवन को फिर से खुशहाल करने के लिए अपनी बहू बनाकर लाते हैं।

---
[60] शब्द भंग - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 19

### 5.3.1 मॉरिशस समाज में आधुनिक जीवन का विकृत रूप

समाज में आधुनिकता की ओर आकर्षण समाज के हर वर्ग को होता है किन्तु किसी चीज की जब अति होती है तब वह अपना विकृत रूप ले लेती है, ऐसा ही हमने अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में आधुनिकता के संदर्भ में देखा है। अति आधुनिकता को अपनाने की चाह लिए मनुष्य नशाखोरी, घूसखोरी आदि बुरी लतों की ओर उन्मुख होकर बर्बाद हो रहे थे। कॉलेज पढ़ने जाने वाले बच्चे नशाखोरी की ओर उन्मुक्त होने लगे। ''तुम्हारे बाप का बड़ा नाम है इसलिए उसे मिट्टी में मिलाने के लिए भी तो कोई न कोई चाहिए। उसकी माँ ने उसी गंभीरता के भाव से कहा। एक बिगड़ जाने पर सोचा था दूसरा वैसा न बनेगा।

- कौन सी ऐसी बात हो गयी जिससे ....

- लोगों का कहना है कि तुम बुरे मित्रों की संगत में पड़ गये हो।

उसकी मौसी अभी आगे कुछ और कहती कि तभी वह पूछ बैठा - यह लोग कौन हैं? लोग शब्द पर पूरा जोर देते हुए उसने प्रश्न किया।

- वे सभी जिन्हें हमारी और तुम्हारी इज्जत का ख्याल है। तुम्हें अपने आवारा साथियों के साथ दूसरे कॉलेजों के इर्द-गिर्द घूम-घूम कर लड़कियों को छेड़ते और सिगरेट पीते देखा गया है। इस बात की खबर अगर तुम्हारे बाप को लग गयी तो इस घर में टिकना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जाएगा। तुम्हारे मामू ने भी मोटर में तुम्हारे साथ किसी लड़की को देखा था।''[61] समाज में लड़के लड़कियों का खुलापन अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर समाज में अराजकता ला रहा है। इस विषय को अभिमन्यु अनत ने बड़े ही दबे स्वर में आधुनिकता के नाम पर एक स्त्री के अन्य पुरुषों से संबंध को आधुनिक बतलाते हुए उस पर प्रकाश व्यक्त किया है। स्वस्ति के जीवन संवेदश, अमिष दोनों से अति निकटता के संबंध रखती है जिस रिश्ते को दोस्ती का नाम भी शायद ही कोई दिया हो किन्तु

---

[61] तीसरे किनारे पर - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 42

अमिष और स्वस्ति के बीच कहीं प्रेम भाव प्रदर्शित करते हुए अनत फिर उनके इस रिश्ते को यूं ही आधुनिकता का प्रतीक बनाकर छोड़ देते हैं।

''तुम ऊब रही हो!

स्वस्ति कुछ नहीं बोली थी,

- ओके। लेट्स गो टू ए डीसेंट रूम। वहाँ आराम से बातें कर सकेंगे। ...... और स्वस्ति संवेश की बगल में चिपकी हुई साथ चल पड़ी थी। सुन्दर था वह सेस्तरां का कमरा। दक्षिण अफ्रीका के पैसे से बने उस होटल में खुशबुदार फूल थे ताकि दीवारों से आती हुई उस देश के रंगभेद की गंध फूलों की खूशबू के नीचे दब जाए। कमरा शांत था। मिली-जुली सुगंध थी उसके भीतर बाहर नारियल के पत्तों के बीच से पूरी गोलाई लिए हुए चाँद झांक रहा था। हवा सरसराहट लिए हुई थी। गुलाबी चादर ओढ़े चारपाई पर ओ-दे-कोलाई की भीनी गंध छितरी हुई थी। दोनों तकियों के ऊपर नारियल के पेड़ों के चीनी शेली में रेखांकन थे। स्वस्ति को अपनी बांहों में कसकर संवेश ने कहा था

- तुम दूनिया की सबसे सेक्सी हो। वह एक रात थी जो संवेश की दोस्ती की उस पूरी अवधि से लम्बी थी। .... और उसी रात की तरह वह दूसरी लम्बी रात तीन महीने बाद की एक रात थी। उस रात बिजली कट गयी थी और आकाश पर चांद भी नहीं था। तारे भी छिटपुट थे और रात विलीन थी। तीन घंटों के काले अंधेरे में संवेश के घर की वह रात। उसका जन्म दिन.... । फिर जब बिजली लौटी तो रोशनी फैली थी तो संवेश ने स्वस्ति का अपनी मंगेतर से परिचय करवाया था।''[62]

अभिमन्यु अनत एक ओर स्वस्ति को पढ़ी लिखी आधुनिक विचारधारा वाली बौद्धिकता क्रांति अधिकारों की बात करने वाली लड़की बतलाते हैं और फिर वह कैसे भावावेश में आकर संवेश की वासना की पूर्ति करती है। जो राजनैतिक नैतिकता की बात करती है। वह अपनी मर्जी से पहले संवेश के हवाले खुद को कर देती है। बाद में अमिश के जो स्वस्ति के जीवन की एक तरह से

[62] चुनचुन चुनाव - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 24

कुंठा ही कहा जा सकता जिसे रचनाकार कुछ ज्यादा ही विस्तार देते हुए एक दो संदर्भ में उपन्यास में इसका वर्णन करते हैं जो आधुनिकता का विकृत रूप ही है।

आधुनिक जीवन जीने की जीवन शैली के लिए तामझाम की ओर लोगों का झुकाव अधिक होता है। वे भूल जाते हैं आधुनिकता विचारों से ऐश की सामाजिक प्रगति के लिए न कि इसके मूल्यों के पतन के लिए। आधुनिक जीवन में और बेहतरी और सुखदायी जीवन की कामना लिए लोग समाज में बेईमानी की काली कमाई करने से भी पीछे नहीं हटते। मंत्रालय में जीतने ऊँचे पद पर उतनी ऊँची रिश्वत लेकर अपनी आने वाली पीढ़ी का गलत मार्गदर्शन करते समाज को अनत ने अपने उपन्यासों में दिखाया है।

‘‘यह अवसर की बात है बेटी! कोई देश नहीं जहाँ ऐसा नहीं होता हो। मैं इन्हें लेने से इनकार कर दूँ तो कोई दूसरा उन्हें लेने को तैयार हो जाएगा। देश के सारे नेता जब घोटाले पर धोटाले करने से नहीं चूकते तो हमें जो बिना माँगे थोड़ा बहुत मिल जाता है उससे इनकार क्यों करें?

अब जब संगीता उसके सामने नहीं थी करन अपने आपसे बातें करता रहा। कितनी घटिया दलील मैं अपनी बेटी के सामने रखता रहा । यह ठीक है कि मैं अपने परिवार के लिए कुछ अधिक कमाना चाहता हूँ। मीनू ने जब भूपेंद्र के घर यह पूछ लिया था कि पापा एक ही पुरानी कार क्यों?

इसलिए जब हमजा की ओर से उसे कार भेंट में मिली थी तो पहला ख्याल उसके मन में यही आया था, अब मनोज भी फक्र के साथ अपने दोस्तों से कह सकेगा हमारे घर दो गाड़ियां हैं।

और आज, अभी कुछ क्षण पहले संगीता कह गई पापा! मैं जानती हूँ कि आप जो कुछ कर रहे हैं हम तीनों भाई बहनों के लिए। पर हमने तो अपनी सामर्थ्य से अधिक की कामना कभी नहीं की।’’

संगीता के चले जाने के बाद करन ने अपने आपको कहा था - तुमने नहीं की, पर मैं कब तक इस पीड़ा को अपने भीतर पालता रहता कि अपने बच्चों को पड़ोसी के बच्चों की तरह पढ़ने के लिए

विदेश भेजने की सामर्थ्य कब आएगी मुझमें?''[63] आधुनिकता के नाम पर एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ उच्च शिक्षा उच्च पद ठाठ-बाट की जिंदगी जीने की चाह समाज को पतनोन्मुख कर समाज में रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार जैसी अस्वस्थ भावना जड़ें फैलाने लगी थी। जो हमारी संस्कृति को भी ठेस पहुँचाती आधुनिक समाज का विकृत रूप है। जिस संस्कृति की रक्षा हेतु संगीता की नानी संस्कृति के मूल्य बच्चों को समझा रही हैं।

''हर समृद्धि के लिए एक कीमत चुकानी पड़ती है। आर्थिक प्रगति तो बेशुमार हुई, आधुनिक तो हम बहुत बने, लेकिन हमारे आचरण हमारे कुछ मूल्य कुछ रिश्ते खंडित होते गये। मैं स्कूल में अपने छात्रों को केवल परीक्षा के लिए तैयार नहीं करती थी, बल्कि अच्छे आदमी बनाने का पाठ भी पढ़ाती थी। कुछ शब्द 'जैसे कि?' यह सवाल भी संगीता का ही था।

जैसे कि बड़ों के प्रति आदर, आपसी सहयोग, संस्कृति तथा भाईचारा जैसे मूल्यों का आज अवमूल्यन हो गया है। उनकी जगह ले ली है धन के पीछे दौड़ने की प्रवृत्ति ने दूसरों की नकल, फिजूलखर्ची, ईर्ष्या, नफरत ने। कहाँ तक कहूँ इन खो गये मूल्यों के अभाव में आदमी अपने परिवार, दफ्तर समाज हर जगह तनाव लिए हुए है। शांति-शांति की दुहाई देकर भी हम अशांत हैं समृद्ध होकर भी कंगाल हैं।''[64]

इस उपन्यास में अनत सांस्कृतिक मूल्यों के महत्व को संगीता और उसकी नानी में पाते हैं। और इन दोनों के माध्यम से आधुनिक समाज में आधुनिक होने की होड़ में समाज के बिगड़ते रूप पर चिंतन किया है। जो हमारे संस्कृति मूल्यों को कुचलकर आधुनिकता की ऊँचाइयाँ छूने को आतुर समाज अपनी संस्कारी सभ्यता को नष्ट कर रहा है।

### 5.3.2 आधुनिक नर नारी संबंध

आधुनिकता के नाम पर समाज में युवा वर्ग अति स्वच्छंदता के रूप में सामाजिक मूल्यों का हनन करते हुए विकृत मानसिकता का परिचय देता है, किन्तु कहीं-कहीं इसका सकारात्मक रूप भी

---

[63] अस्ति -अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 142
[64] अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 54-55

रचनाकार ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। जैसे अमीता के जीवन में एक फ्रांसीसी से शादी करने पर उसकी पाँच साल की एक बेटी भी है जिसके साथ वह अपना एकाकी जीवन बहुत ही आराम से बिता रही है और मॉरिशस समाज की आधुनिक विचारधारा का परिचय यहाँ पर रचनाकार देते हुए बतलाते हैं। सारा वृत्तांत जानने के बाद भी उसके परिवार के सदस्य उसे भेदभाव वाली दृष्टि या हीन भावना से नहीं देखते और डॉक्टर विक्रम नन्दु चन्द तो अमिता को उसकी बेटी विमला के साथ स्वीकारने के लिए तैयार हो जाते हैं। यहाँ भी लेकिन अमिता अपने आपको बड़ी तटस्थता से संभालते हुए निर्णय लेती है कि उसके जीवन में दो रिश्तों ने उसे जख्म दिया है और वह इस रिश्ते को लेकर अपनी हिम्मत को तोड़ना नहीं चाहती और डॉ. नन्दू चन्द को अपना दोस्त ही बने रहने के लिए मना लेती है। 'क्यों न फिर से' उपन्यास में डॉ. जयराम  और महिमा एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं दोस्त बने रहते हैं। रिश्तों में आती निकटता होने के बावजूद दोनों एक दूसरे के जीवन के खालीपन को नहीं भर पाते क्योंकि जयराम राजनीति में होने के कारण महिमा के साथ अपने संबंध छिपाता है। और महिमा तलाकशुदा एक बच्ची की माँ है किन्तु पर पुरुषों के प्रति आकर्षण और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में उसे कोई गलती नहीं लगती किन्तु वह इसी तरह का संबंध जयराम के साथ रखना चाहती है। दोनों के मन में प्यार होते हुए भी अपने-अपने पद की गरिमा बनाए रखने के लिए वह न्यूयार्क में और जयराम मॉरिशस में साथ होते हुए भी साथ नहीं होते। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में नर नारी संबंधों में आपस में अगाध प्रेम तो बतलाया है अपनी प्रेम की पराकाष्ठा पूरी होने पर भी यूं संबंध स्थापित करते हैं किन्तु विवाह के बंधन में एक या दो पात्र को प्यार के वाद विवाह करते हुए बतलाया है। 'चलती रहो अनुपमा' में भी अनुपमा एक आदर्श पत्नी की तरह गीतेश की सेवा करती प्रेम विवाह करती है किन्तु दुर्घटना के कारण वहाँ उसे प्रेमिका से ज्यादा आदर्श पत्नी बतलाया गया है।

''हंस अपने पूरे होशो हवास के साथ सोचता ही रहा। ..... शोभा! उसके आने से पहले वह अपनेको सीमित पाता था, अधूरा-अधूरा। अब लगता है, आदमी अपने को सीसमित या अधूरा क्यों

माने। औरत और मर्द के अलग-अलग सत्य नहीं हो सकते। शोभा को अपने जीवन में पा लेने के बाद उसे यह विश्वास हो गया था कि स्त्री पुरुष की एक सूत्र में बंधी शक्ति से ही विश्व का संतुलन बना रह कसता है। उस रात उसने शोभा से कहा भी तो था, तुम्हारी ऊपरी कोमलता में जो अंदरूनी ताकत है उससे मेरा संकल्प और भी दृढ़ हो गया है। औरत और मर्द में और तुम नहीं हो सकते। उन्हें अपना अहम न होकर हम होना चाहिए। तुम्हें पाकर  अपने को पा सकता हूँ।''[65] यहां पर अभिमन्यु अनत ने शोभा और हंस के बीचप्रेम को उदात्त प्रेम के रूप में प्रस्तुत किया है। जहां अहंकार मैं नहीं हम का भाव है, अनत के अन्य पात्रों की तरह यहाँ हंस और शोभा के जीवन में पहले कोई और था और अब शोभा की बेटी को अपनी बेटी मुनमुन को अपना परिवार मानता है। हंस के परिवार में उसकी प्रेमिका की मृत्यु के बाद माँ बाप बहन पहले ही चल बसे थे। शोभा भी जीवन में अकेली थी अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में नर नारी संबंधों में अपार प्रेम है। माँसलता है किन्तु विवाह बंधनवाला प्रेम एक दो उपन्यास में है। हर उपन्यास में वे एक दूसरे के प्रति प्रेम रखते हैं किन्तु बंधन में नहीं बंधते। रेखा किशन का प्यार, मीरा और मदन का संबंध प्रकाश और सीमा शादी बंधन में बंधते हैं। स्त्री पुरुष के संबंधों में अनत ने इतनी स्वच्छंदता बतलाई है कि धर्म जाति पाति की दीवार को तोड़ने के लिए भी तैयार रहते हैं उसका विरोध करते हैं।

''तुम मेरी बात मान गये होते तो यह नौबत नहीं आती। तुमने वायदा तोड़ा फिर माफी मांगी और अब इन दोनों बातों को भूलकर फिर से हमारी दोस्ती को बदनाम करने की सोच रहे हो।''

''ब्रॉड माइंडिड इतनी आजादी मिजाज होकर भी तुम गुनाह और बदनामी जैसी बातें करने लगी हो।''

''शकील! आजाद मिजाज होने का मतलब यह नहीं हो जाता कि हम जूते को सिर पर और टोपी को पांव में पहनने लग जाएं।''

''लेकिन दिव्या, तुम्हीं तो यह कहती थी कि तुम्हें रस्म-रिवाजों की गुलामी पसंद नहीं।''

---

[65] अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 42-43

‘‘आज भी कहती हूँ।’’

‘‘पर करने से डरती हो।’’

नहीं मैं यह मानती हूँ कि कभी गलत कदम उठाते समय हमें यह मालूम नहीं होता कि हम गलत कदम उठा रहे हैं। पर गलत रास्ते पर फिसल जाने के बाद यह जान लेते हें। वह कदम गलत था। जान लेने के बाद गलत कदम को उठते रहने देने का मतलब होता है भूल को न सुधारना।’’ एक ओर अभिमन्यु अनत स्वच्छंद आधुनिक विचारधारा बतलाते हैं तो दूसरी ओर हमारे भारतीय मूल्यों को किस  तरह आधुनिकता के साथ-साथ अपनाया जा सकता है ऐसी सोच रखने वाले युवा वर्ग को भी दर्शाया है। आधुनिक समाज में नर नारी संबंधों के उद्धरण हमें अनत के उपन्यास ‘आसमान अपना आंगन’ में नंदिनी जो कि अपनी किशोर अवस्था में अपने फुफेरे भाई द्वारा यौन शोषण किये जाने पर विरोध कर अपनी माँ के सामने खुलकर बतलाती है किन्तु उसे दबा दिया जाता है। उसकी माँ उसे डांटकर चुप करा देती है और जब नंदिनी का दिनेश से ब्याह कर दिया जाता है और उससे उसे एक पुत्र भी होता है जिसकी वजह से वह दिनेश से डरती किन्तु दिनेश का  चाल-ढाल खराब देखत हुए वह उसके साथ नहीं रहना चाहती और उसकी जिंदगी से अलग हो जाती है। किन्तु फिर भी उसे वह बच्चे की खातिर बार-बार उसे डराकर ब्लैकमेल करता है।

‘‘नंदिनी जहाँ खड़ी थी वहाँ से दो कदम आगे आकर बोली ‘‘तुम कुछ भी बन जाओ इससे मेरा कोई सरोकार नहीं।’’

मैं तो तुम्हें भी कुछ-से-कुछ बनाना चाहता हूँ।’’

‘‘तुम चुप रहो और मुझे सुनो। मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं अपने को इस दुनिया के सबसे गए-गुजरे आदमी के हवाले कर सकती हूँ पर तुम्हारी परछाईं तक को अपनी परछाई से छूने नहीं दूँगी। आज के बाद तुमने अगर मुझे तंग करने की जरा भी कोशिश की तो मैं..... ’’

‘‘पुलिस के पास जाओगी’’

मैंने कहा है, तुम मुँह नहीं खोलोगे, केवल कान खोलकर सुनते रहो। मैं पुलिस के पास नहीं जाऊँगी। मैं जानती हूँ कि आजकल पुलिस तुम्हारे कल सत्ता मेरे हाथ में होगी।''

कानून भी तुम्हारे हाथ होगा। पर तुम जिस कल का सपना देख रहे हो वह अभी आया नहीं। अगर तुम मेरा पीछा नहीं छोड़ोगे तो वह कल तुम्हारा काल बन जाएगा।''[66]

नंदिनी आधुनिक युग की नारी है। वह अपनी रक्षा करना जानती है। दिनेश उसे अपने पालीटिकल पावर को लेकर उसे डराना चाहता है किन्तु वह उसकी इस धमकी का जवाब उसके विरूद्ध चुनाव लड़ कर उस चुनाव को जीतकर अपने आधुनिक विचारधारा और शिक्षा का साहस का परिचय देती है। अनैतिक राजनैतिक हथकंडों का विरोध कर अपने प्रभावपूर्ण भाषण से जनता मंत्रमुग्ध कर वह क्या उसे दिखाती है। आधुनिक नर नारी प्रेम भी विरोध भी है।

### 5.3.3 पारिवारिक विघटन

आधुनिक समाज में अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीने की चाह लिए समाज में पारिवारिक विघटन की स्थिति देखी जाती है। समाज में नई पुरानी दोनों पीढ़ियों के बीच वैचारिक मतभेद आधुनिक सोच, पुराने मूल्यों की आपस में टकराकर पारिवारिक विघटन की स्थिति लाती है। अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में मजदूर किसानों के आंदोलन वाले ऐतिहासिक उपन्यासों में पारिवारिक परिवेश अपने समाज जाति धर्म की बेड़ियों को तोड़ता हुआ छोटी-छोटी कुटिया में बड़ा छोटा सा गाँव या बस्ती के रूप में होता था। सब एक जगह खाते एक जैसा सुख दुख भोगते। आधुनिक उपन्यासों में परिवार सीमित दिखाए गये हैं जिसमें सिर्फ माँ-बाप उनके बच्चे घर में दादी या मौसी, चाची, फिरभी यहाँ परिवार में एकल परिवार का उल्लेख नाम मात्र के लिए हुआ है। यदि छोटा परिवार या एक दूसरे से दूर भी दिखलाए गये हैं तो तब भी इसके पीछे इनकी मजबूरियाँ होती है, जैसे 'लहरों की बेटी' में विदुला की माँ की मृत्यु हो जाती है और वह पिता और भाई के साथ रहती है। भाई भी जब सेना में चला जाता है, पिता पुत्री ही रहते हैं किन्तु गाँव बस्ती के सभी लोग दुलारी आदि

[66] आसमान अपना आंगन - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 106-107

उसे माँ की कमी महसूस नहीं होने देते। तो दूसरी ओर अचित्रिता में पिता की मृत्यु के बाद माँ का आर्थिक तंगी के कारण घर चला पाना कठिन हो जाता है और वह अपनी कुंठा अपनी बेटियों के साथ मार-पीट, गाली गलौच करके निकालती है। बिना बहनों बड़ी होने के कारण अपनी माँ की परिवार की स्थिति समझती है इसलिए वह कुछ छोटे मोटे काम कर अपने छोटी बहनों की भूख मिटाने के प्रयत्न करती उनकी दयनीय स्थिति और माँ का व्यवहार पारिवारिक विघटन की स्थिति लाता है और वह गलत संगत की लड़कियों में मिलकर अपना घर छोड़कर शहर भाग जाती है। यह पारिवारिक विघटन वहाँ की मार्मिक और बुरा परिणाम अभिमन्यु अनत के उपन्यास में दिखाया गया है जहाँ अपने परिवार की मजबूरी देखते हुए वह वेश्यावृत्ति अपनाती है।

‘‘किस्मत की बात तो मैं नहीं जानती पर मेरे अपने रसायन में भी कोई गड़बड़ी जरूर थी। माँ मुझे अचार छूने नहीं देती थी। उसका यह दावा था कि मेरे छू लेने से अचार जल्द ही खराब हो जाएगा। वह मुझे घी काढ़ने की छली भी मथने नहीं देती। कहती कि मेरे मथने से तो चम्मच भर घी भी नहीं निकल पायेगा। घर के जिस बिस्तर पर मैं सोती उसमें बाकी विस्तर से अधिक खटमल होते थे। मेरे अपने सिर में भी मेरी दो बहनों से अधिक जूएँ और लीखें होतीं।’’[67]

वीणा को उसके पिता से खूब प्यार और स्नेह प्राप्त था माँ की पिता की मृत्यु के बाद मानसिक तथा आर्थिक स्थिति बदलने के कारण परिवार में कलह के चलते वीणा खुद को माँ की नजरों में हीन मानते हुए घर छोड़ देती है। पारिवारिक विघटन समाज में उदासीनता की भावना लाता है।

‘‘जिस समय उसके बाप ने यह बड़ा सा घर बनवाया उस समय शायद उसने यही सोचा था कि उसका परिवार एक दिन चलकर बहुत बड़ा होगा पर ऐसा नहीं हुआ। दो कारणों से।एक तो आपरेशन के बाद राकेश की माँ की तीसरी औलाद नहीं हो सकी और दूसरा कारण था उसके बड़े भाई का अब तक शादी से कतराते रहना। इस बारे में घर वाले न सही पर राकेश बहुत कुछ सुन सका था1 उसके चंद मित्रों ही ने उसे यहाँ तक बताया था कि उसका बड़ा भाई कुछ इतनी अधिक औरतों

[67] अचित्रिता - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 31

को जानता है कि वह उनमें से किसी को अपनी पत्नी बनाये यह निर्धारित करना बड़ा ही कठिन है उसके लिए।''[68]

यहाँ पर भी आधुनिक जीवन शैली बच्चों के भविष्य को लेकर खूब पैसा कमाने की शै में पिता को अपनी संतान के प्रति ध्यान न जाना, आधुनिकता से भरे जीवन में सारी सुख सुविधा स्वच्छंदता की ओर ले जा रही है। जिस कारण राकेश के बड़े भाई का घर से लगाव नहीं रहा और राकेश स्वयं कुंठित रहता है। समाज और सरकार व्यवस्था के प्रति असंतोष का भाव रखता है। पारिवारिक विघटन के कारण मनुष्य को उदासीन बना देते हैं कभी-कभी तो इसके परिणामस्वरूप वह नशीली चीजों का सेवन करने लगता है।

''जो आशंका करन को पहले ही हो गई थी, वह सच हुई। सोमू की उस दयनीय दशा को देखकर वह अपनी बेटी को डांटने लगा, ''तुम दोनों सदैव साथ-साथ रहते थे। मैं यह कैसे मान लूँ कि इससे पहले तुम्हें उसकी इस लत की जानकारी नहीं थी। यह बात महीने- दो महीने की नहीं हो सकती।'' करन अपने स्थान से उठकर कमरे की दो दीवारों तक आता-जाता रहा, फिर धीमे स्वर में बोला, संगीता, मैं तुम्हें डाँटने लगा, पर मुझे तो अपने आपको डाँटना चाहिए। अपनी दफ्तरी जिम्मेदारियों के पीछे मैंने अपने धर की इस तबाही को देखा ही नहीं।''[69]

परिवार में पैसा कमाने की अंधी धुन में अपने बच्चों के साथ, समय न बीता पाने के कारण उनमें नैतिक मूल्यों के संस्कार में अभाव और खालीपन सोमू को तनहाइयाँ, नशाखोरी की ओर ले जाती है। और वह ड्रग्स लेने लगता है। जिससे उसके हालात और बिगड़ जाते हैं बढ़ती उदासीनता मनुष्य को सबसे काटकर तनहाइयों में ले जाती है और उसकी मानसिक कुंठा उसे नशाखोरी की लत ला देती है। इस उपन्यास में सोमू का इलाज करवा कर उसे ठीक भी कर दिया जाता है और परिवार में वापस आने के बाद भी उसका मन सब के बीच खुश नहीं रहता और वह इस्कान आश्रम वालों के साथ रहने चला जाता है। धन दौलत सब रहते हुए अपने बच्चे पर पूरा ध्यान नहीं दे पाने के कारण वह

---

[68] तीसरे किनारे पर - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 40
[69] अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 48

नशाखोरी के दलदल में फंस नशा सुधा वैद्य का इलाज करवाने के ठीक होने के बाद भी अपने परिवार के प्रति वह आत्मीयता पूरी तरह अपने मन में नहीं जगा पाया और उसने आश्रम में रहने का निर्णय लिया जो उसके परिवार को दुख में डूबो गया। पुत्र के वियोग में सारी कमाई दौलत शोहरत अब तुच्छ लगने लगी। ऐसी ही पारिवारिक विघटन की स्थिति अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'कुहासे के दायरे में' शक्ति के माध्यम से दिखाई गयी है कि किस प्रकार वह अपने पति के साथ भोजन करने की या फिर उसे साथ मायके जाने या आनंद से रहने का प्रयास करती है किन्तु धनेश अपनी आर्थिक सामाजिक स्थितियों की चिंता में खोया परिवार से कटा-कटा रहता जिसका प्रभाव दोनों के जीवन पर पड़ता है। वह हर बार उसके प्रति आशा रखती है कि और सभी पति पत्नियों की तरह उनका भी जीवन हो किन्तु हर बार धनेश की ओर से उसके जीवन में आशा निराशा में परिवर्तित हो जाती है। दोनों के बीच पारिवारिक विघटन है जिसे जबरदस्ती जिया जा रहा है क्योंकि धनेश का प्यार नीराथी शांति नहीं।

''लोगों की उमंगों को देखते हुए शांति के भीतर जो भाव पैदा हुआ वह दान्ट की भावना लिए हुए नहीं था, फिर अपनी कसक से बचा लेना उतना आसान नहीं था। पड़ोस ही में गोलमोह के सिंदूर पेड़ के नीचे कोठी के मजदूर झाल-ढोलक के साथ अपनी खुशी जाहिर कर रहे थे।''[70] यहाँ पति पत्नी के बीच खिंचाव पति की जिंदगी में पहले से किसी ओर का प्यार और उसकी यादें होने के कारण उनके आपस में प्रेम के अभाव के कारण उसमें दुख और असंतोष की भावना इनकी गृहस्थी को पारिवारिक विघटन की ओर ले जा रही थी जहाँ साथ तो था लेकिन संतोष नहीं था। जहाँ जीवन में प्रेम का अभाव होता है वहाँ घर में अलगाव आता है। और एकाकी जीवन निराशा देती है जो उदासीन समाज का निर्माण करता है जिसमें बदलाव परिवर्तन लाने की जिजीविषा घटती जाती है। मुख्यता अनत के उपन्यास में सामाजिक जीवन के सारे रंग देखे जा सकते हैं किन्तु वह एक चिंतक के समान उसमें व्याप्त बुराइयों पर प्रकाश व्यक्त करते हैं और अच्छाई का संदेश देते हुए समाज सुधार की बात करते हैं।

[70] कुहासे का दायरा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 60

### 5.3.4 संघर्षरत नारी

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में जितनी प्रधानता नायक की होती है उतना ही महत्व उनके नारी पात्रों को है। अनत अपने पहले उपन्यास से ही संघर्षशील नारी का चित्रण करते हैं। कृष्णावती नारी के जीवन की विवशताओं और उससे जूझते हुए संघर्षशील जीवन को जीने वाली कृष्णावती इन पुरुष पात्रों की तरह ही उपन्यास के केन्द्र में है। इनके जितने भी प्रसिद्ध उपन्यास हुए हैं 'आंदोलन', 'लाल पसीना' 'और पसीना बहता रहा', 'गांधी जी बोले थे', 'लहरों की बेटी', 'चलती रहो अनुपमा', 'अचित्रिता', 'शेफाली', 'चुन चुन चुनाव' आदि सभी उपन्यासों में स्त्री का संघर्षशील रूप प्रस्तुत किया है, जो समाज में उत्पन्न हर समस्या के समाधान के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। अपने परिवार को संभालकर खेती मजदूरी कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाकर। समाज के अपने वर्ग के विकास के लिए आंदोलन में भाग भी लेती है। किसन रेखा तथा हरि प्रभा 'और पसीना बहता रहा' के मुख्य पात्र 'गांधी जी बोले थे' के मदन, मीरा ये सब अपने जीवन को अपने पति के साथ संघर्ष, आंदोलन को समर्पित करते हैं। समाज सेवा में अपना जीवन बीताते हैं। अनत के उपन्यासों में नारी केन्द्रित उपन्यासों में 'लहरों की बेटी' उपन्यास की विदुला अपने भाईके सेना में जाने के बाद समुद्र में मछलियाँ पकड़कर उन्हें बेच अपना घर चलाती है। अपने पिता का पूरा ख्याल रखती है। इतना ही नहीं अपनी बस्ती के सामाजिक कार्यों में संघर्ष में अन्य नारी के दुख दर्द बांटने में अपना पूरा योगदान देती है। दुर्घटनावश जब उसके भाई जीवनदत्त के पांव घायल होने से चल पाने में कष्ट महसूस करता था ऐसे समय में सहकारी समिति की तरफ से प्रतियोगिता में सारे मछुआरों के साथ वह हिस्सा लेती है और इस प्रतियोगिता में सबसे अच्छा प्रदर्शन विदुला का होता है। वह समुद्र की लहरों मं अपनी नाव को नचाती गोते खाते लहरों से खेलती हुई मछलियां पकड़ती है।

''जिन लोगों ने झंडियों के रंग से अपने गाँव की नाव को पहचान लिया था वे उछलने लगे और परिणाम सुनने को अधीर हो उठे। न्यायाधीश की आवाज गूँजने में अधिक देर नहीं लगी और उन लोगों को इस बात से निराशा हुई कि चारों नावों में किसी की पकड़ तीस कीलों से ऊपर नहीं थी।

अपने पंद्रह मिनट तक तीन बाली नावों से से कोई भी नाव आती दिखाई नहीं पड़ी। कात्रशेर के सभी लोग भीड़ में सबसे उदास दिखाई पड़ रहे थे कि तभी एकाएक दूर ही से नीली झंडी को देखकर कुछ लोग खुशी से चिल्ला उठे .... पर नाव के भीतर की मछली की नस्ल और वजन न जानने के कारण उनकी खुशी कुछ दबी भी रही। नाव के तट से लगते ही हीरामन और सलीम सबसे आगे बढ़े। दुलारी और जीवनदत्त अपनी धड़कनों को थामे हुए कुछ दूरी पर ही खड़े रहे। लोगों ने नाव से बाहर लाई जा रही मछली की पूंछ देखी। कई लोग एक स्वर में बोल उठे ''मार्लिन है मार्लिन!!''

मछली की पूरी लंबाई नाव के बाहर पड़ते ही तालियों की गड़गड़ाहट शुरू हो गई।''[71] सभी हट्टे कट्टे मछुआरों में विदुला की मछली 35 किलो की थी जो एक पतले से शरीर वाली नाजुक लड़की के परिश्रम का परिणाम थी वह केवल शारीरिक परिश्रम में ही संघर्ष करने वाली नहीं अपितु सूझबूझ में भी आगे थी जो समाज में नारी की स्थिति और औरत के प्रति मन में संवेदना लिए हुए उनके अधिकारों की आवाज उठाने से भी पीछे नहीं हटती, हर काम में आगे रहती है। दुलारी की अपनी माँ का दर्जा देकर उसे अपने घर रखने आदि  में समझदारी का निर्णय लेती है जो 'चलती रहो अनुपमा' उपन्यास में अनुपमा अपने पिता की मृत्यु दुर्घटना में होने के बाद अपने परिवार के भरण पोषण के लिए चाय बागान फिर सुमित की फैक्टरी में काम करती है। साथ में गाँवकी बैठका में पढ़ाई भी करती है। अनुपमा को देख अभिजीत उस से काफी प्रभावित होता है और उसे अपने नाटक यातना में नायिक बनाता है जो अभिमन्यु में भी अपनी योग्यता दर्शाते हैं जिसे देख अभिजित उसमें अपनी बेटी की छवि देखता है, किन्तु उसका जीवन यातना की नायिका ही की तरह संघर्ष से भरा पड़ा है जो घर संभालने के साथ सदमें से आवाज खो बैठे  भाई की देखरेख गितेश से प्रेम करती है। वह आगे की

---

[71] लहरों की बेटी - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 343

पढ़ाई के लिए विदेश जाता है। कठिनाई से पढ़ाई चलती एक भाई छोड़कर चला गया एक भाई आवाज गंवाये बैठा इतनी कम उमर में पिता का साथ छूटने के बाद सह मानसिक रूप से एक संघर्षशील नारी के रूप में उभरकर सामने आई सुमित का अपनी ओर आकर्षण देख उसे ठीक कर अपनी प्रेमिका के प्रति उसका ध्यान केन्द्रित करती है किंतु इतने दुखों से संघर्ष करती अनुपमा अंत में अपने मंगेतर की सेवा कर उसे ठीक करती है। उसकी कमजोरी के साथ उसे स्वीकारती है जिसे जाति, आर्थिक स्थिति के नाम पर गितेश की माँ बहू बनाने से इंकार करती है। वही अनुपमा गितेश में कमी होते हुए भी उस अपने प्रेम को सहर्ष सी मानते हुए उपन्यास के केन्द्र में प्रगतिशील नारी के रूप में प्रस्तुत होती है।

‘‘सफीना अपने सामने की अनुपमा को देखती रही। उसके अपने भीतर भी अभी करने के लिए और कई बातें थी पूछने के लिए और भी कई सवाल थे पर वह चुप रही। अनुपमा के भीतर की गहराई को चुपचाप मापती रही और फिर बोली, अगर यह तुम्हारा आत्मविश्वास  है तो फिर तुम्हारे निर्णय के सामने मैं नतमस्तक हूँ। तुम जानती हो अनु कि हर व्यक्ति को सुहागरात देना नियति की अपने बस की बात नहीं होती। पर मुझे विश्वास है कि जिस तरह तुमने नियति से लड़कर अपने सुहाग को बचाया है उसी तरह अपनी सुहाग रात को भी हासिल कर सकोगी। मैं मेडिकल साइंस से कहीं अधिक विश्वास तुम्हारे प्यार पर कर रही हूँ। अपनी ओर से मैं तुम्हें एक ही सलाह दूंगी - तुम अपने विश्वासको हताश मत होने देना। प्यार से बहुत कुछ होते देखा गया है। तुम्हारा प्यार तुम्हारे गीतेश को सुहागरात के योग्य बनाकर रहेगा।’’[72]

ऐसे ही ‘आंदोलन’ उपन्यास में रमावती भी रवि के आंदोलन में उसकी मदद उसकी देखरेख बिना किसी स्वार्थ के करती है। उसके निज जीवन में भी दुख संघर्ष है जिसे अन्य स्त्री से संबंध रखने वाले उसके पति ने उसे त्याग दिया और वह इस दुख की निराशा में डूबकर अपने जीवन में संघर्ष को महत्व देते हुए आगे बढ़ती है। वैसे ही अचित्रिता की वीणा भी अपने छोटे बहन भाई के लिए वेश्या

---

[72] चलती रहो अनुपमा - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 338

वृत्ति में उतरकर अपने बहनों की शादी करवाने के लिए चोरी चुपके परिवार की आर्थिक रूप से मदद करती है और विक्रम नाम के राजनेता से इसकी दोस्ती बनती है। वह उसे विपक्ष के मंत्री को फंसाकर उसकी फिल्म बनाकर उसे बदनाम करने की साजिश रचता है किन्तु वह उसकी अच्छाई देखते हुए दोस्ती, प्रेम से भी ऊपर देश भक्ति देश की तरक्की के लिए ईमानदार नेता को कलंक से बचाती है।

''घड़ी में नौ बजने को थे।

किसी भी क्षणविक्रम का आदमी खिड़की के पास अपने कैमेरे के साथ पहुंच सकता था।

- मैं सोचता हूँ आजादी के बाद मैं राजनीति से हट जाऊँ। हम लोग चाह रहे हैं कि देश की आजादी में हर आदमी हिस्सेदार हो। मजदूर अध्यापक, व्यापारी, धनी, गरीब, पढ़ा, अनपढ़, बच्चे, बूढ़े, जवान, मर्द, औरत हर एक का इससे अपना-अपना हिस्सा हो, जबकि उधर वे दूसरे लोग यह नहीं चाह रहे हैं कि आजादी के इस संघर्ष में देश के सभी लोग हिस्सेदार बनें। वे भोले-भाले लोगों को भड़का रहे हैं। आजादी का लोगों को भय दिखा रहे हैं। बीमार लोग हैं वे।....

आवेग में बोलता हुआ वह एकाएक चुप हो गया।''[73] और वीणा ने मौका पाकर उस कैमेरे वाली जगह को अपने वस्त्र से ढंक दिया और देश के लिए चिंतन करने वाले नेता की छवि को दागदार होने से बचा लिया। अपनी देश भक्ति देश के विकास की कामना को लेकर वीणा वेश्यावृत्ति में संलिप्त होते हुए भी महान स्त्री बन गई जो अपने इस दलदल भरे संघर्षपूर्ण जीवन से निकल कमल की तरह खिल उठती है। वह शीर्षक के अनुसार अचित्रिता हो जाती है।

मेरा निर्णय उपन्यास की स्वस्ति भी संघर्षशील नारी के रूप में उभरकर आती है। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी जिसके कारण उसे अपने घर के पास छोटा मोटा काम कर कुछ पैसे का प्रबंध करने के सिलसिले में वह पड़ोस की चाची के पास जाती है किन्तु वह जिसे भईया के संबोधन से बुलाती नहीं थकती थी उसने उसके शील को भ्रष्ट किया जिस कारण उसके माता पिता ने इसको लगे मानसिक आघात को भुलाने के लिए इसे लंदन भेज देते हैं और कुछ निजी कारणों से

[73] अचित्रिता - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 186

वह जाने के लिए तैयार होती है और अपने परिवार की देख रेख में आर्थिक रूप से मदद करती है और अपने जख्मों को भुलाकर समाज में पढ़ लिखकर नौकरी कर सर उठाकर अपनी शर्तों पर जीती है।

''मॉरिशस का मेरा वह वर्तमान बोझिल जरूर था अपनी विधवा माँ, बीमार भाई और छोटे भाई को छोड़ने का वह निर्णय। उनसे अलग होना और सात समन्दर पार पहुँचने की हिम्मत इसलिए कर पायी थी कि मेरे भीतर एक विश्वास पैदा हो आया था कि मैं महज अपने लिए नहीं बल्कि अपने परिवार के हित के लिए उनसे दूर हो रही हूँ।

एक दूसरा कारण भी था इतनी दूर आने का। पर मैं उसे कारण नहीं मानती। लंदन में कम से कम छह महीने तो मॉरिशस का अतीत ही मेरा वर्तमान बना रहा।''[74] इस वर्तमान से बाहर निकलने की कोशिश में फ्रेडरिक नाम के फ्रांसीसी से प्रेम होता है उससे विवाह भी कर लेती है। जब इनके बालिका का जन्म होता है तो गोरे वर्ण के पति को स्वस्ति के चरित्र पर संदेह होता है और उस बच्ची को छुए बगैर वहाँ से लौट जाता है। और उससे तलाक मांगता है। जिसे वह जीवन में दूसरी बार धोखा खाना मानती है। और इन सब दुखों से ऊपर उठकर अपनी बेटी की परवरिश बहुत अच्छे ढग से करती है। जब इसके पूर्व पति को पछवाता होता है तो अपनी जायदाद बिटिया के नाम करता है। वह उस निर्णय को अपनी बेटी के बड़े होने पर छोड़ती है उसकी मदद लेने से इनकार करती है।

### 5.3.5 नशाखोरी का विरोध

नशा मनुष्य को अपने आपे में नहीं रहने देता है। वह उसे मिटा देता है। आजादी के बाद ड्रग्स की स्मगलिंग युवा पीढ़ी में ब्राउन शुगर, हिरोईन के प्रति बढ़ता चस्का मॉरिशस समाज की युवा पीढ़ी को कहीं न कहीं बर्बाद कर रहा था। कहीं इस नशाखोरी की समस्या अपनी जड़े मॉरिशस समाज में न जमा ले इस आने वाले खतरे से मॉरिशसीय समाज को अवगत करते हुए अभिमन्यु अनत अपने उपन्यास 'अस्ति अस्तू' में इस लत के पड़ने के बाद परिवार पर क्या बीतती है उसका चित्रण करते हैं

[74] मेरा निर्णय - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 9-10

कि एक सदस्य के लिए सारे परिवार को किस यातना से गुजरना पड़ता है। उसके परिणाम कितने भयानक हो सकते हैं उसका बड़ा ही मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण अभिमन्यु अनत ने किया है।

''जानकी चुप रही। अपनी बेटी की ओर उसने देखा तक नहीं। संगीता ने जब दोबारा प्रश्न किया तो जानकी ने आगे बढ़कर कमरे के दरवाजे को बंद कर लिया। संगीता के पास आकर धीरे से बोली ''संगीता, अब आइंदा तीनों अलमारियों की चाबियाँ मेरे और तुम्हारे पास रहेंगी।''

अनजान बन संगीता ने पूछा ''क्यों माँ, ऐसी क्या बात हो गई?''

''बात यह है कि इस घर में अब चोरी करनेवाला पैदा हो गया है। आज मेरी एक चूड़ी चोरी हो गई, कल सारे जेवर चोरी हो जाएंगे।'' माँ को इस बात की जानकारी है इससे संगीता को दुख और आश्चर्य हुआ।

यह आश्चर्य उसके लिए औरभी बड़ा और दु:खद तब हुआ जब उसकी माँ उसके समान सिक्रोट्रीप और कोदेईन की नशीली गोलियाँ बिखेरकर बोली,

''तुम्हारे भाई इन नशीले द्रव्यों के लिए इस पूरे घर को बेच सकता है।''

अपनी मेज की दराज में सिकोट्रोप की गोलियाँ न पाकर सोमु उन्हें अपने कमरे के चप्पे-चप्पे में ढूंढता रहा। पुस्तक को मेज और रेक से नीचे फेंकता गया चिल्लाते हुए पूरे कमरे को छान मारा।

संगीता अपने कमरे में उसकी चिल्लाहट को सुनती रही। जानकी भी अपने कमरे में खड़ी सोमू के आक्रोश भरे प्रश्नों को चुपचाप सुनती रही।

''कहाँ गई मेरी दवाएँ? संगीता! माँ! किसने मेरी दराज खोलने की हिम्मत की? किसने मेरी दवाएँ.... ? संगीता माँ मीनू! किसने मेरा दराज खोलने की हिम्मत की? किसने मेरी गोलियाँ यहां से गायब कर दी?''

संगीता उसकी गिड़गिड़ाहट सुनती रही। उसकी सिसकियाँ उसे द्रवित करती रही, फिर भी उसमें अपने कमरे से निकलकर सोमू तक पहुँचने का साहस नहीं हुआ।''[75] अभिमन्यु अनत ने एक

---

[75] अस्ति-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 31-32

ड्रग्स के सेवन करने वाले की मानसिक स्थिति, उसकी बौखलाहट का बड़ा ही यथार्थपूर्ण वर्णन किया है जहाँ वह अपनी दवाइयाँ न मिलने पर बेकाबू होकर चिल्ला रहा है। चीजों को तोड़ फोड़ रहा है। नशाखोरी की लत वाला व्यक्ति बौरा जाता है। और उस चीज को हासिल करने के लिए घर में चोरी चकारी भी करने लग जाता है। जिस पर काबू कर पाना बड़ा ही कठिन कार्य है जिसे देख परिवार वालों का हृदय द्रवित हो उठता है। उसके साथ वह भी तड़प उठता है।

नशाखोरी की लत भी आज की युवा पीढ़ी में पार्टीस में पब में नये-नये दोस्त बनाकर उनके साथ खाना-पीना मौज मस्ती के नाम पर ज्यादा से ज्यादा पैसा देकर इसे हासिल किया जाता है। इसका सारा काला सच अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों में उजागर किया है। इस देश के भ्रष्ट राजनेता अपने निजी स्वार्थ को साधने के लिए खूब काला धन जमा करने की चाह में अपने देश की ही युवा पीढ़ी को बर्बाद करने पर लगे हैं। 'फैसला आपका' उपन्यास में अभिमन्यु अनत हेमराज नाम के राजनेता ने अपनी दोस्त को अपना काम निकालने के लिए मंत्री पद दिलाने के लोभ में फांस कर उसके हाथों बिना उसके ज्ञान के ड्रग्स और सोने की स्मगलिंग करवाता है। औरपकड़े जाने पर मंत्री साफ बचकर निकल जाता है और प्रिया बेगुनाह होते हुए भी शीघ्र उच्च पद प्राप्त करने की चाह उसे आज सलाखों के पीछे पहुँचा देती है। उस पर मुकदमा चलता है।

''योर ऑनर अदालत अपने फैसले को सुनाने से पहले एक सवाल कर सकती है - श्रीमती प्रिया शिबालिक ने जो कि सरकार में अच्छे खासे ओहदे पर थी ऐसा क्यों किया? धन के प्रलोभन में या अपने पति के साथ टूट रहे अपने रिश्ते के कारण? अपने लिए सुरक्षा के विचार से या किसी न किसी तरह के प्रतिशोध के कारण? हो सकता है कि तीनों कारणों से उसने ऐसा किया।

पर्याप्त प्रमाणों से यह प्रमाणित हो चुका कि इस औरत ने गहनों और अफीम की तस्करी की है। वह सरकारी उच्च ओहदे में है, इसलिए अदालत उस पर रियायत करके गुनाह को प्रोत्साहन दी जाएगी। मेरी यह दरखास्त है कि इसे सात साल की सजा मिले जो किसी भी हालत में पांच साल की

कड़ी सजा से कम की न हो। क्योंकि यह औरत समाज की नासूर है। ईमानदारी की शत्रु और राष्ट्र के चरित्र की कातिल है।''[76]

इस प्रकार हेमराज ड्रग्स का धंधा अपने कर्मचारियों को उनके ज्ञान के बिना उनसे करवाता है। इस कुचक्र में भ्रष्ट राजनीति है। जो समाज में महत्वाकांक्षी लोगों को जल्द ही उच्च पद देने के लालच में उन्हें ऊँचाइयों के ख्वाब दिखाकर उनसे ऐसे काम करवाते हैं। अब जब प्रिया इस जाल में फंस जाती है तब उसकी कही सारी पुरानी बातों को याद कर वह सोचती है कि कैसे-कैसे प्रलोभन से उसे उल्लू बनाकर किन-किन तरीकों से काला धन जमा कर रहा था जो देश के युवा वर्ग में जहर बांटने के काम आयेगा।

''तुम भूल जाती हो कि मैं राजनीति में हूँ।''

''राजनीति से उसका क्या संबंध?"

''मैं शक्ति का उपयोग कर रहा हूँ राजनीति में। और राजनीति से मिली यह शक्ति किसी के लिए स्थायी नहीं रहती। यह तुम्हारी सरकारी नौकरी नहीं है। इसमें आदमी पहाड़ पर से गिरकरचटाई पर पसर जाता है। यह जो कुछ मैं इकट्ठा कर रहा हूँ उस कल के लिए है, जब सलाम बोलने के लिए आगे पीछे कोई नहीं रहेगा। राजनीति की सीधी-सादी कमाई चुनावों के दौरान खत्म हो जाती है। यह दूसरे ढंग की कमाई न हो तो आज के मंत्री को कल का कुत्ता भी न पूछे। और फिर मैं सामाजिक सुरक्षा का मंत्री हूँ। जो आदमी समाज की सुरक्षा का ख्याल रखता हो, उसे कम से कम अपनी सुरक्षा का भी तो ख्याल रखना है।''[77] मॉरिशस समाज में राजनैतिक तेवरों की पोल खोलते हुए नेताओं के पैसे कमाने के तरीके व अपना निजी स्वार्थ पूरा करने के लिए देश के भविष्य के प्राणों से खेलने का मौत के सामान की तस्करी करके अपना भविष्य सुरक्षित रखना चाहते हैं। अनत के उपन्यासों में इस तरह ड्रग्स डीलिंग में सारा सरकारी तंत्र संलिप्त है।' अस्ति अस्तू' में ड्रग्स स्मगलिंग में पुलिस और राजनेताओं की मिलीभगत बतलाया है।

---

[76] फैसला आपका - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 94

[77] फैसला आपका - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 66-67

''हाँ करन सब कुछ पहले से तय था। वह ड्रग्स पुलिस के हाथों परमेश्वर यानी कि वित्त मंत्री के पास पहुँचा और वहाँ से.... ''

''धंधा करने वाले ड्रग्स चरन के पास''

''तुम्हारे मंत्री को उसका हिस्सा देने के बाद। उतनी ही बड़ी रकम जो पुलिस कस्टम और ड्रग्स यूनिट को दी गई। लेकिन इसका सबूत नहीं छोड़ते। इसे परफेक्ट स्मगलिंग कहते हें, परफेक्ट क्राइम। लोग यह पूछते रहते हैं कि आखिर ड्रग्स माफिया का सरकार क्यों कभी पुलिस के हाथ नहीं आता। इसलिए कि उसे पुलिस और राजनीति दोनों का संरक्षण प्राप्त है।''[78]

अब तक करन यह मानकर चल रहा था ड्रग्स की स्मगलिंग हमजा भाई अपने कपड़ों के कारोबार की आड़ में कर रहे हैं किन्तु जब हमजा को सारा सत्य पता चलता है तो वित्त मंत्रालय की पोल खोलता है कि किस प्रकार सरकारी तंत्र और पुलिस की मिलीभग में ये सारा अनाचार कालाबाजारी का नशाखोरी का कारोबार चल रहा है। इस विषय को लेकर अभिमन्यु अनत ने एक पूरा उपन्यास लिखा जो ड्रग्स और इसके कारोबार का पर्दाफाश करने का बीड़ा एक पत्रकार उठाता है और इस कार्य में कैसे आवाज उठाने वालों का शब्द भंग किया जाता है। उसे हमेशा के लिए चुप कर दिया जाता है। वह इस राज को फाश करने की चाह लिए इस सिस्टम में नाराज मामले की तह तक जाता है। राजनेता सरकारी तंत्र, पुलिस यहाँ तक कि दोनों धर्मों के धर्म गुरु भी इस धंधे में लिप्त हैं और अपने फायदे के लिए सब मिले हुए हैं। उन्हें एक पत्रकार घर का न्यायालय तक कानून के जरिए लाता है। किन्तु न्यायालय का फैसला भी उन्हीं के पक्ष में होता है। धर्म गुरु बने धर्म की आड़ में यतीम खाने चलाते हें और अधिक कमाने की चाह लिए बच्चों को मौत की नींद सुलाते हैं नशे के नाम पर।

''अपनी आंखों वह देख आया था ब्राउन शुगर से मरते लोगों को उनमें औरतें भी थीं। बच्चे भी। शहर से शुरू हुआ वह जहर गाँव तक फैलने लगा था। कॉलिज के जिन छात्रों के साथ उसने बातचीत करके जो गवाहियाँ पायी थी उन्हें वह अपने ही तक रखकर जी नहीं सकता। वह उन सारी

---

[78] असित-अस्तु - अभिमन्यु अनत, पृ.सं. 137

गवाहियों को जनता तक पहुँचाना चाहता था। हर हालत में पर कैसे? बार-बार यही एक प्रश्न उसे नोचता रहा। उस सारी काली कमाई और मुखौटों के पीछे सफेदपोशों और धर्माधिकारियों के मुखौटे नोच फेंकने को व्याकुल था। वह सबूत भी हासिल कर लेता है। किन्तु उसे एक्सीडेंट में मरवाकर उसकी आवाज को हमेशा के लिए दबा दिया जाता है। शब्द भंग कर उसकी हत्या कर उसे दुर्घटना करार दिया जाता है।

**निष्कर्ष**

इस अध्याय में प्रगतिशील समाज के विभिन्न प्रगतिशील सरोकारों को अभिव्यक्त किया गया है। किसी भी विकास की कामना के पीछे बेहतर जीवन की कामना होती है। वैसे ही अभिमन्यु अनत के उपन्यासों के अंतर्गत प्रगतिशील मॉरिशसकीय समाज के विविध रूपों को देखा गया है। जिसमें सर्वप्रथम प्रगतिशीलता को बतलाते हुए उस समाज की प्रगतिशीलता, जिसमें शिक्षा को कितना महत्व दिया है। समाज में व्याप्त विभिन्न अर्थ नीतियों को लेकर परिवर्तन  और उसके लिए चलाए आंदोलन उनकी सफलता का हिन्दी भाषा का विकास के लिए किये गये संघर्षों को दिखलाया गया है। प्रवासी भारतीयों को अपनी स्थिति को सुधारने के लिए परिवर्तन लाने की कामना हेतु किये गये प्रयत्नों को दिखलाते हुए अनत के उपन्यासों में व्याप्त प्रगतिशीलता को दर्शाया है। जिसमें समन्वयवाद तथा मॉरिशसियों हिन्दू मुस्लिम संबंधों में आपसी प्रेम तथा समानता का भाईचारे की अभिव्यक्ति को उपन्यासों के उद्धरणों से दर्शाया है। स्वतंत्रता के बाद मॉरिशस में राजनीति को लेकर लोगों के मन में उठी उदासीनता और राजनैतिक हथकंडों उसके कुचक्रों से समाज में व्याप्त उदासीनता को बतलाते हुए सरकारी गतिविधि और समाज में उसके प्रति निराश नेताओं के प्रति युवा वर्ग में विरोध की भावना को प्रस्तुत किया गया है। जिसका कारण राजनीति में सांप्रदायिकता जो फुटकल रूप में दिखाई देती है उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है और उसके विविध रूप, उसके प्रभाव आधुनिक जीवन में नर नारी संबंध, पारिवारिक विघटन की स्थिति नारी का संघर्ष आदि सामने आता है।

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## I. आधार ग्रंथ


| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| 1. | अचित्रित | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990 |
| 2. | अस्ति-अस्तु | अभिमन्यु अनत | प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 3. | आंदोलन | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 1971 |
| 4. | आसमान अपना आँगन | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000 |
| 5. | और पसीना बहता रहा | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993 |
| 6. | एक बीघा प्यार | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1972, चौथी आवृत्ति 2000 |
| 7. | एक उम्मीद और | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 8. | कुहासे का दायरा | अभिमन्यु अनत | राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978 |
| 9. | क्यों न फिर से | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 |
| 10. | गांधी जी बोले थे | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 |
| 11. | चलती रहो अनुपमा | अभिमन्यु अनत | किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998 |
| 12. | चुन चुन चुनाव | अभिमन्यु अनत | अक्षरा प्रकाशन, नई दिल्ली, पुनर्मुद्रित 2001 |
| 13. | चौथा प्राणी | अभिमन्यु अनत | ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 14. | जम गया सूरज | अभिमन्यु अनत | सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, संस्करण 1973 |
| 15. | पर पगडंडी नहीं मरती | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983 |
| 16. | मेरा निर्णय | अभिमन्यु अनत | भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 |
| 17. | मार्क ट्वेन का स्वर्ग (दो उपन्यास इस पुस्तक में है) फैसला आपका | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983 |
| 18. | तीसरे किनारे पर | अभिमन्यु अनत | नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 |
| 19. | लाल पसीना | अभिमन्यु अनत | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977 |
| 20. | लहरों की बेटी | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995 |
| 21. | शब्द भंग | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989 |
| 22. | हम प्रवासी | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 |

**II. सहायक ग्रंथ**

| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| 1. | अब कल आएगा यमराज (कहानी संग्रह) | अभिमन्यु अनत | ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 |
| 2. | अभिमन्यु अनत का उपन्यास जगत | जनार्दन कालीचरण | हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 |
| 3. | आधुनिक हिन्दी आलोचना संदर्भ एवं दृष्टि | डॉ. रामचन्द्र तिवारी | विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संसकरण 1997 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4. | आत्मविज्ञापन | अभिमन्यु अनत | प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 |
| 5. | आलोचनात्मक लेखों का संग्रह | डॉ. देवराज | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966 |
| 6. | आलोचना के प्रगतिशील आयाम | डॉ. शिवकुमार मिश्र | पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण 1987 |
| 7. | अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएँ | संपादक कमल किशोर गोयनका | नटराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999 |
| 8. | गुलमोहर खौल उठा | अभिमन्यु अनत | ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994 |
| 9. | प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास | कर्ण सिंह चौहान | प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998 |
| 10. | प्रगतिवाद पुनर्मूल्यांकन | हंसराज रहबर | विभूति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987 |
| 11. | प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य | रेखा अवस्थी | मेकमिलन इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978 |
| 12. | प्रगतिशील आलोचना | रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव | साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1962 |
| 13. | प्रगतिशील आलोचना की परंपरा और डॉ. रामविलास शर्मा | राजीव सिंह | विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संसकरण 2000 |
| 14. | प्रगतिशील कविता में सौंदर्य शास्त्र | डॉ. तनुजा तिवारी | भारतीय भाषा पीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987 |
| 15. | हिन्दी की प्रगतिशील कविता | डॉ. रणजीत | हिन्दी साहित्य संस्करण, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976 |
| 16. | मॉरिशस का इतिहास | प्रह्लाद राम शरण | समानांतर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988 |
| 17. | मॉरिशस का इतिहास | पं. आत्माराव विश्वनाथ | आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1923 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 18. | मॉरिशस में हिंदी साहत्य का उद्भव और विकास | डॉ. श्यामधर तिवारी | विनसर पब्लिशिंग, प्रथम संस्करण 1997 |
| 19. | मॉरिशसीय हिन्दी साहित्य (एक परिचय) | डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि | हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996 |
| 20. | मार्क्सवादी साहित्य चिंतन इतिहास तथा सिद्धांत | शिवकुमार मिश्र | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010 |
| 21. | मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य | डॉ. रामविलास शर्मा | वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994 |
| 22. | मार्क्सवाद और पिछड़े हुए समाज | रामविलास शर्मा | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986 |
| 23. | मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र की भूमिका | रोहिताश्व | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991 |
| 24. | मार्क्सवाद | यशपाल | विप्लव प्रकाशन - 8, प्रथम संस्करण 1940 |
| 25. | वाद विवाद संवाद | नामवर सिंह | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989 |
| 26. | विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम | जगदीश प्रसाद बरनवाल कुन्द | मेधा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005 |
| 27. | शब्द और कर्म | मैनेजर पाण्डेय | |
| 28. | साहित्य की समस्याएँ | शिवदान सिंह चौहान | स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कररण, 1959 |
| 29. | साहित्य समीक्षा और मार्क्सवाद | कुंवर पाल संह | पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985 |
| 30. | हिन्दी की विश्व यात्रा | डॉ. सुरेशा ऋतुपर्ण | गौरव प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996 |
| 31. | हिन्दी का विश्व संदर्भ | करुणाशंकर उपाध्याय | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 32. | हिन्दी की प्रगतिशील आलोचना | श्याम कश्यप<br>डॉ. कमला प्रसाद<br>डॉ. खगेन्द्र ठाकुर | राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986 |

**III. सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी)**

| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | लेखक | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| 1. | Marxism & Literature | Raymond Williams | Oxford University Press, First Published 1977 |
| 2. | Marxist cultural movement in India chronicles and documents (1936-1947), Vol. I | Compiled and Edited by Sudha Pradhan | Published by Mrs. Santi Pradhan, Calcutta, First Edition July 1976 |

## IV. पत्र पत्रिकाएँ

1. कल्पनांत, मुराली लाल त्यागी, फरवरी 2009
2. आलोचना, नन्द दुलारे वाजपेयी, जुलाई 1957
3. आलोचना, नामवर सिंह, 1969
4. आलोचना, परमानंद श्रीवास्तव, अप्रैल जनवरी 2001
5. आलोचना, अरुण कमल, अक्टूबर-दिसम्बर 2004
6. आलोचना, अरुण कमल, जनवरी-फरवरी 2005
7. वर्तमान साहित्य, कुंवर पाल सिंह, नवम्बर 2008
8. वर्तमान साहित्य, कुंवर पाल सिंह, जनवरी फरवरी 2006
9. भाषा, जगदीश चतुर्वेदी, अक्टूबर 1982